CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंडल ट्रैक्ट नम्बर १४३

2-6 UHP

प्रकाशित जैन साहित्य

संयोजक

श्री पन्नालाल जैन अग्रवाल

सम्पादक

श्री ज्योतिप्रसाद जैन

एम. ए., एल एल. बी. (पी. एच. डी.)

3831

प्रकाशक

जैन मित्र मंडल, दिल्ली

प्रथमावृत्ति १००० प्रति | आषाढ़ वीर सं० २४८४, वि० सं० २०१५ जून १९५८ | मूल्य २)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक
जैन मित्र मंडल
धर्मपुरा, दिल्ली

सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
श्री देशभूषण प्रेस,
४११, एप्सलेनेड रोड, दिल्ली - ६

क : स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

3837

विषयानुक्रम

प्रकाशकीय वक्तव्य	आदीश्वर प्रसाद एम० ए०	५
२ प्राथमिक	डा० हीरालाल जैन	६
३ प्राक्कथन	डा० वासुदेव शरण अग्रवाल	११
४ संकेत-सूची		१४
५ प्रास्ताविक	श्री जुगल किशोर मुख्तार	१५
६ भूमिका		१—८६

जैन साहित्य २
ग्रंथ सूची ५
प्रशस्ति आदि ७
साहित्यिक इतिहास ८
मुद्रणकला का प्रभाव १०
पुस्तक सूची की आवश्यकता १०
जैन प्रकाशनों की दशा १३
जैन लेखकों की दशा १८
मुद्रणकला का इतिहास २४
जैन प्रकाशन का इतिहास २६
युगविभाजन=आन्दोलन युग ३४, प्रगतियुग ४२, वर्तमान युग ५२
सामयिक पत्र-पत्रिकायें ५६
विवरण-सूची का संक्षिप्त सार ६३
जैनाध्ययन का महत्त्व और प्रगति ६८

७. विज्ञप्ति ८६
८. प्रकाशित जैनसाहित्य विवरण-सूची ६१—२८१
हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश विभाग ६१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन धर्म पर प्रकाशित महत्त्वपूर्ण भाषण	२५८
जैन सामायिक पत्र-पत्रिकाएं	२६०
उर्दू पुस्तकें	२६६
मराठी भाषा की पुस्तकें	२७६
गुजराती भाषा की पुस्तकें	२८१
बंगला भाषा का जैन साहित्य	२८५
Jaina Literature in English	२८६
९. परिशिष्ट	३०६-३११
(१) सार्वजनिक जैन पुस्तकालय, शास्त्र भंडार	३०६
(२) जैन साहित्यिक संस्थाएं	३०७
(३) जैन पुस्तक विक्रेता	३०६
(४) वर्तमान के ग्रंथप्रणेता साहित्य सेवी विशिष्ट विद्वान	३०६
(५) वर्तमान के जैन-साहित्यसेवी प्रसिद्ध अजैन विद्वान्	३११
१०. आवश्यक निवेदन	३१२
११. शुद्धिपत्र	३१३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशकीय वक्तव्य

आज से ४३ वर्ष पूर्व समाज के कुछ नवयुवकों के हृदय में जैन धर्म के सिद्धान्तों के प्रचार की भावना जागृत हुई। उन्होंने ३० मार्च १९१५ को इस संस्था की नींव 'जैन मित्र मण्डल' के नाम से देहली में डाली। जैन मित्र मण्डल ने अब तक केवल एक ही उद्देश्य रखा है और वह है 'जैन धर्म का साहित्य द्वारा प्रचार'। मण्डल का सारा कार्य, मण्डल की सारी लगन और उसकी—सारी चिन्ताएं इसी दिशा में लगी रही हैं।

२. मण्डल ने अपने शै"व काल के ६ वर्षों में ही जैन धर्म तथा साहित्य-प्रचार में इतना अधिक कार्य किया कि सन १९२१ की सरकारी जनगणना census में इसको भारत की 'Chief jain literary Society 'प्रमुख साहित्यिक संस्था' घोषित किया गया।

३. जैन मित्र मण्डल जिस समय दो वर्षों का ही था इसने भारत—प्रसिद्ध देहली शास्त्रार्थ "ईश्वर-कर्तृत्व और तीर्थंकर सर्वज्ञ हो सकते हैं या नहीं" इस विषय पर 'आर्यकुमारसभा' से देहली में किया।

४. अभी मण्डल इस कार्य से निबटा ही था कि डाक्टर गौडने 'हिन्दू कोड" 'Hindu Code' नाम की एक पुस्तक लिखी जिसमें जैन धर्म तथा जैनों के विषय में बहुत सी गलत बातें लिख डाली। यह पुस्तक भारत सरकार द्वारा मान्यता दी जाने को ही थी कि मण्डल ने इस विषय में आन्दोलन चलाया और एक पृथक 'जैन कोड' बनाने का विचार किया। डाक्टर गौड के आक्षेपों का करारा उत्तर दिया। दो पुस्तकें 'Jainism and Hindu Code' और 'Jains of India and Dr. H. S. Gour' प्रकाशित की। इस सबके फलस्वरूप डा० गौड ने अपनी पुस्तक की दूसरी आवृत्ति में अपनी गलतियों को ठीक किया।

५. मण्डल ने, अपनी स्थापना के १० वर्ष पश्चात् यह कटु अनुभव किया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि जहाँ देश में अन्य सर्व धर्मों के प्रवर्तकों के-भगवान कृष्ण, राम, मौहम्मद, ईसा, गुरु नानक के—जन्म उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाये जाते हैं वहाँ जैन धर्म के किसी भी तीर्थंकर का जन्म उत्सव नहीं मनाया जाता, इसी भावना से ओत प्रोत होकर जैन मित्र मण्डल ने सर्व प्रथम सन् १९२५ में 'महावीर जयन्ती महोत्सव' देहली में मनाया जिसमें मौलाना मौहम्मद अली, महात्मा भगवानदीन, पं० अर्जुनलाल सेठी जैसे विद्वानों के भाषण हुए। समाज में इस प्रकार के उत्सव मनाने पर विरोध भी हुआ, मंडल के कर्मठ सैनिकों को आक्षेप भी सहने पड़े; परन्तु उत्सव की उपयोगिता तथा उसकी सफलता ने उनके उत्साह को बढ़ाया और उसके बाद ३३ वर्षों में मंडल ने महावीर जयन्ती को एक बहुत ही प्रभावशाली, सुन्दर आकर्षक तथा सार्वजनिक रूप दे डाला।

आज मण्डल को इस बात का गौरव है कि समस्त भारत में महावीर-जयन्ती मनाने तथा मनवाने का श्रेय इसी संस्था को है।

महावीर जयन्ती को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने के हेतु मंडल कविसम्मेलन, संगीतसम्मेलन, उर्दु मुशायरा तथा व्याख्यानों का बड़ा ही सुन्दर तथा रोचक प्रोग्राम रखता है। इस अवसर पर मंडल भारत के राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, विदेशों के राजदूत, भारतसंघ के मन्त्रीगण, भारत राज्य के राज्यपालों तथा अन्य सभी जाति तथा धर्म के नेताओं को आमंत्रित करता है और उनसे इस आयोजन के विषय में तथा भगवान महावीर के सिद्धान्तों व आजके युग में उनकी आवश्यकता पर सुन्दर तथा प्रभावशाली लेख तथा सन्देश मंगाता है और उन्हें सहस्रों की संख्या में प्रकाशित कर देश तथा विदेशों में वितरण करता है।

६. जैन मित्र मंडल देहली जैन समाज में पुस्तक प्रकाशन में एक अद्वितीय स्थान रखता है। मंडल ने अपना उद्देश्य जैन धर्म के शास्त्रों के प्रकाशन का नहीं रखा बल्कि इसने अंग्रेजी नागरी तथा उर्दू में नये प्रकार के सहित्य का निर्माण कराया। आज के युग में जनता के पास इतना भी समय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं है कि वह अपने धर्म के मोटे मोटे शास्त्रों को पढ़ सके, आज का युग चाहता है छोटी छोटी पुस्तकें जो कि वह अवकाश के समय सुगमता से पढ़ सकें। मंडल ने अपनी कार्य पद्धति इसी ओर रखी। उसने समाज के प्रकाण्ड विद्वानों से, जैन ही नहीं किन्तु अजैनों से भी जैनधर्म तथा इसके सिद्धान्तों पर छोटे छोटे ट्रैक्ट लिखवाए, जिनको हजारों की संख्या में प्रकाशित कर विना मूल्य देश-विदेशों तथा जैन व अजैन जनता में वितरण किया। संसार का कोई भी देश ऐसा नहीं होगा जहाँ जैन मित्र मंडल के ट्रैक्ट न पहुंचे हों। इस प्रकार की १४२ पुस्तकें मंडल प्रकाशित कर चुका है। शायद कोई ही दूसरी ऐसी जैव संस्था होगी कि जो इतने 'पुष्प' अबतक प्रकाशित कर सकी हो।

७. पिछले वर्ष साहित्य प्रचार में जैन मित्र मंडल ने एक बहुत ही बड़ा कदम उठाया। संसार को चकित कर देने वाला राष्ट्रपति द्वारा कहा गया 'संसार का आठवाँ आश्चर्य' ७१८ भाषामयी ग्रन्थराज 'भूवलय' के प्रकाशन का कार्य इस संस्था ने उठाया। और गत वर्ष 'इसका मंगल प्राभृत' 'इसके कतिपय सारगर्भित श्लोक' तथा इसमें अन्तर्गत 'भगवद्गीता' नाम की तीन पुस्तकें प्रकाशित कीं जिनका उदघाटन काँग्रेस के मनोनीत अध्यक्ष श्री ढेबर भाई ने आचार्य श्री १०८ देशभूषण जी महाराज की उपस्थिति में किया।

८. मण्डल के पास सदैव 'जैनसाहित्य' के विषय में प्रश्नात्मक पत्र आते रहते हैं और जैन धर्म जानने तथा जैन साहित्य के पढ़ने के इच्छुक सदैव जैन साहित्य की माँग जैन मित्र मंडल से करते रहते हैं। अब तक 'दिगम्बर जैन समाज' में इस प्रकार की कोई पुस्तक या सूची नहीं थी कि जिससे प्रकाशित जैन साहित्य का पता चल सकता हो। इसी कमी को दृष्टि में रखते हुए जैन समाज के सर्व अधिक 'मूक' तथा ठोस सेवक ला० पन्नालाल जी अग्रवाल देहली द्वारा संयोजित तथा प्रसिद्ध ऐतिहासिक लेखक डा० ज्योति-प्रसाद जी लखनऊ द्वारा सम्पादित 'प्रकाशित जैन साहित्य' की सन् १९४५ तक की यह सूची प्रकाशित करते हुए हमें बड़ा हर्ष हो रहा है। हम इन दोनों ही के बहुत कृतज्ञ हैं कि उन्होंने इसमें अपना अमूल्य समय देकर यह पुस्तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्पादित की है। साथ ही हम आचार्य श्री जुगलकिशोर जी मुख्तार अधिष्टता वीरसेवामन्दिर, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, प्रोफेसर बनारस विश्वविद्यालय तथा डा० हीरालाल जी अध्यक्ष प्राकृत विद्यापीठ मुजफ्फरपुर (बिहार) के भी बहुत आभारी है जिन्होंने इस पुस्तक के प्रास्ताविक, प्राक्कथन, प्राथमिक लिखकर इस पुस्तक की उपयोगिता को बहुत बढ़ा दिया है। श्री पं० परमानन्द जी तथा श्री मुनीन्द्रकुमार जी ने इस पुस्तक के कुछ प्रूफ देखे हैं, जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं

हम श्री रामचंद्र जैन भारत सरकार **valuation officer**, पुनर्निवास मंत्रालय तथा श्री अखिल भा० दिगम्बर जैनकेन्द्रीय महासमिति देहली के आभारी हैं जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन में १३१ क्रमश: तथा ५१) दान देकर इस पुस्तक की उपयोगिता को अपनाया है।

हमें आशा है कि पुस्तक की उपयोगिता से जनता प्रभावित होकर इस पुस्तक को अपनायेगी।

अजितप्रसाद जैन ठेकेदार सभापति
महतार्बसिंह जैन महामन्त्री

आदीश्वरप्रसाद जैन मंत्री
पन्नालाल जैन मंत्री
जैन मित्र मंडल, धर्मपुरा, देहली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राथमिक

जैन संस्कृति की धारा बहुत प्राचीन और महत्त्वपूर्ण है। किन्तु दुर्भाग्यतः जैन धर्मानुयायी अपनी वस्तु को स्थिर रूप देने व उसे संसार के सम्मुख उपस्थित करने में बहुत शिथिल और दीर्घसूत्री रहे हैं। उदाहरणार्थ, जबकि वैदिक परम्परा के ग्रंथ कम से कम चार हजार वर्ष पुराने पाये जाते हैं, तब महावीर भगवान से पूर्व का कोई जैन साहित्य सुरक्षित नहीं है। भगवान महावीर की वाणी को उनके शिष्यों ने उन्हीं के जीवन-काल में द्वादशांग रूप रच लिया था, ऐसी जैन श्रुत-परम्परा है। किन्तु इसे कोई एक हजार वर्ष तक लिखित रूप नहीं दिया जा सका। दिगम्बर परम्परानुसार तो वह समस्त द्वादशांग श्रुत कोई छह सातसो वर्षों में ही क्रमशः विस्मृत और विलुप्त हो गया, और जो रहा उसके आधार पर नये सिरे से षट्खंडादि ग्रंथों की रचना की गई। श्वेताम्बर परम्परा में महावीर निर्वाण से लगभग एक हजार वर्ष पश्चात् उसके बचे खुचे अंशों का संकलन कर उन्हें पुस्तकों का रूप देने का प्रयत्न किया गया।

चीन देश में ग्रंथों के मुद्रण का कार्य नौवीं शती में प्रारम्भ हो गया था। यूरोप में मुद्रण कार्य पन्द्रहवीं शती में तथा भारत में सोलहवीं शती में प्रारम्भ हुआ। किन्तु जैन ग्रंथों का प्रकाशन सन १८५० से पूर्व का कोई नहीं पाया जाता। अभी अभी तक धार्मिक ग्रंथों के मुद्रण का समाज में विरोध भी होता रहा है। आज सभ्य संसार का उपलब्ध प्राचीन साहित्य प्रायः समस्त ही प्रकाशित हो चुका है और उसके प्रमुख भाग अन्य भाषाओं में भी अनुदित हो गये हैं। किन्तु एक जैन साहित्य ही ऐसा है जिसका अति प्रचुर भाग, नष्ट होते होते जो कुछ बचा है, वह अभी भी शास्त्र भंडारों की अंधेरी कोठरियों में बन्द पड़ा है। यह दशा आज सभ्यता के विकास की दृष्टि से नितान्त शोचनीय है। हमारी साहित्यिक निधि का लेखा-जोखा लगाने में और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशा सुधारने में प्रस्तुत पुस्तक वहुत उपयोगी सिद्ध होगी, इसमें सन्देह नहीं।

श्रीयुत पन्नालाल जैन अग्रवाल जैन साहित्य की बहुत कुछ सेवा कर चुके हैं और उन्हें जैन साहित्य प्रकाशन का खासा परिचय है। प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने जैन साहित्य की प्रकाशित हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश आदि भाषा की रचनाओं की अकारादि क्रम से संक्षिप्त सूची प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। इसके आधार से साहित्यक विद्वान जैन प्रकाशन की गति-विधि का पता लगा सकेंगे। जिन्हें ग्रंथ-संग्रह करना है वे इसके द्वारा अपने पुस्तकालय को पूर्णता की ओर अग्रसर कर सकते हैं। और जिन्हें यह समझना है कि अभी भी कितना साहित्य प्रकाशित होना शेष है, वे इस सूची में उल्लिखित आधुनिक रचनाओं के अतिरिक्त प्राचीन संस्कृत की केवल १८०, प्राकृत की ४४, अपभ्रंश की १८ और प्राचीन हिन्दी की २७५ पुस्तकों को डा० वेलणकर कृत 'जैन रत्न कोश' तथा विविध जैन भंडारों की नई सूचियों आदि से मिलान कर देखें, तो उन्हें पता चलेगा कि अभी भी सैकड़ों नहीं सहस्रों प्राचीन जैन रचनायें अंधेरे में पड़ी हुई हैं। इस सूची की भूमिका रूप जो "जैनियों की साहित्य सेवा और प्रकाशित जैन साहित्य" शीर्षक निबन्ध सम्पादक द्वारा प्रस्तुत है वह अपने विषयगत वहुत महत्वपूर्ण सामग्री को लिए हुए है।

मैं इस ग्रंथ का हृदय से स्वागत करता हूं और उसके संयोजक, सम्पादक तथा प्रकाशक और साथ ही वीर सेवा मन्दिर को, जिसके तत्त्वावधान में सम्पादन का सब कार्य सम्पन्न हुआ है, विशेष धन्यवाद देता हुआ यह आशा करता हूं कि इसके द्वारा भविष्य में जैन साहित्य के प्रकाशन और प्रसार का मार्ग अधिक प्रशस्त बनेगा।

१४-२-१९५८

मुजफ्फरपुर

हीरालाल जैन

डायरेक्टर 'प्राकृत जैन विद्यापीठ'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राक्कथन

श्री पन्नालाल जैन की इस छोटी किन्तु उपयोगी पुस्तक का मैं स्वागत करता हूँ। इसमें जैन वाङ्मय के क्षेत्र में अब तक के साहित्यिक कार्य का अच्छा परिचय दिया गया है। उस वर्णन में पर्याप्त जानकारी का संग्रह है। श्री पन्नालालजी ने अध्यवसाय पूर्वक अपने आप को उस विभाग से अद्याव-धिक अवगत रक्खा है। जहाँ तक भारतीय संस्कृति और वाङ्मय का सम्बन्ध है हम उसके अखंड स्वरूप की आराधना करते हैं। ब्राह्मण और श्रमण दोनों धाराओं से उसका स्वरूप सम्पादित हुआ है। श्रमण संस्कृति के अंतर्गत जैन संस्कृति साहित्य, धर्म, दर्शन, कला इन चार क्षेत्रों में अति समृद्ध सामग्री प्रस्तुत करती है। नई दृष्टि से उसका अध्ययन और प्रकाशन आवश्यक है। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि जैन विद्वान् निष्ठा के साथ इस कार्य में लगे हैं। उनके प्रयत्न उत्तरोत्तर फलवान् हो रहे हैं। प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं की सामग्री में तो अब प्रायः देश के सभी विद्वानों की अभिरुचि बढ़ रही है।

वह समय परिपक्व है जब इन ग्रंथों को नए ढंग से संशोधित रूप में सम्पादित करके प्रकाशित किया जाय। जो कार्य अब तक हुआ है उसका एक लेखा-जोखा जान लेने पर नवीन कार्य की प्रेरणा प्राप्त हुआ करती है। इस दृष्टि से यह वृत्तान्त उपयोगी है। इसके अन्त में जैन भंडारों और पुस्तकालयों की एक सूची जोड़ दी जाय तो और अच्छा रहेगा। हमें यह देखकर आनन्द होता है कि सरस्वती भंडारों के स्वामी और प्रबन्धक अब प्रायः उदार दृष्टि-कोण अपनाने लगे हैं। सम्पादन और प्रकाशन के लोकहितकारी कार्यों में उन से मिलने वाले सहयोग की मात्रा बढ़ रही है। इस महती शताब्दी के उत्तरार्ध में जैन साहित्य के समुचित प्रकाशन की धारा और अधिक वेगवती बन सकेगी, ऐसी आशा होती है। अनेक केन्द्रों से वितत कार्य के सूत्रों का सम्मिलित पट और सुन्दर बनेगा, ऐसे शुभ लक्षण प्रकट हो रहे हैं। इस समय जो विद्वान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और जो संस्थाएं इस पुनीत कार्य में संलग्न हैं उनकी नामावली ग्रंथ के प्रारम्भिक भाग में आ गई है उन–उन विशिष्ट मित्रों के यशस्वितम परिश्रम को दृष्टि पथ में लाते हुए मन आश्वस्त होता है कि इस वाङ्मय रूपी कल्प वृक्ष का अगले पचास वर्षों में शतशः सहस्रशः विस्तार सम्भव हो सकेगा।

यद्यपि प्राचीन आगम साहित्य प्रकाशित हो चुका है, किन्तु उसको निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य, टीका आदि के साथ अभिनव रूप में भूमिका, टिप्पणी, शब्दानुक्रमणी आदि के साथ पुनः प्रकाशित करने के कार्य शेष ही है। जब वे इस रूप में उपलब्ध होंगे तभी उनसे सांस्कृतिक सामग्री के दोहन का कार्य पूरा किया जा सकेगा। इस युग का महनीय उद्देश्य तो भारतीय राष्ट्र का सर्वांग पूर्ण सांस्कृतिक इतिहास है। यह कितना विशाल कार्य और कैसा उदात्त लक्ष्य है इसकी कल्पना सहसा मन में नहीं आती। किन्तु अभी तो कार्य का आरम्भ मात्र है। सांस्कृतिक इतिहास के निर्माण की कला अभी विकसित होने लगी हैं। यह महान् कार्य अनेक संकल्पवान् साधकों की अपेक्षा रखता है। एक-एक शब्द का मूल्य मणिमुक्ता की भाँति चतुराई से परखना होगा, उसके सूत्रों को बौद्ध साहित्य, संस्कृत साहित्य एवं प्रादेशिक भाषाओं के साहित्य में ढूंढना होगा। तब सब की सम्मिलित आभा से ऐतिहासिक के मन में अर्थों का पूरा आलोक प्रकट हो सकेगा। इसकी कल्पना से ही रोमाञ्च होता है। भारत के भावी इतिहासकारों के लिए सांस्कृतिक सामग्री के सुमेरु स्तब्ध खड़े हैं, जिनकी परिक्रमा लगानी होगी। हम जिस दृष्टि कोण की कल्पना कर रहे हैं उसमें इतिहास, साहित्य, संस्कृति, कला, धर्म, दर्शन और जीवन-परम्परा–इन सात सूत्रों को एक साथ मिलाकर भारती महाप्रजा के राष्ट्रीय पुरावृत्त का दिव्य इन्द्रायुधाम्बर सम्पन्न करना होगा। यहाँ अभेद, समन्वय, सप्रीति का दृष्टिकोण मुख्य है। काल के प्रवाह में जो कुछ बचा रह गया है वह मात्रा में कितना विस्तृत है इसकी टकसाली साक्षी जैन शास्त्र भंडारों में उपलब्ध ग्रंथ राशि से प्राप्त हुई है। श्री वेलणकर द्वारा संगृहीत 'जिनरत्नकोश' इस क्षेत्र का भव्य प्रयत्न है। यह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जानकर प्रसन्नता होती है कि वीर सेवा मंदिर दिल्ली की ओर से लगभग ६००० अप्रकाशित ग्रन्थों की एक सूची तैयार कराई गई है। राजस्थान के भंडारों की छान बीन श्री कस्तूरचन्द्र कासलीवाल और श्री अगरचन्द नाहटा बराबर आगे बढ़ा रहे हैं। आशा है अगले बीस वर्षों में भंडारों के पर्यवेक्षण का कार्य पूरा कर लिया जायगा। और तदनुसार प्रकाशन की शक्तिशाली योजनाएं भी राष्ट्र में बन जाएंगी।

इस पुस्तक में प्रकाशित जैन साहित्य की एक अकारादि क्रम से नाम सूची संग्रहीत की गई है। इसमें लगभग २७०० पुस्तकों का संक्षिप्त परिचय दिया है। तैयार यादी की भांति यह सूची पाठकों के लिये उपयोगी रहेगी। जो ग्रंथ इस सूची में छूट गए हों उनके नाम भी अपनी जानकारी के अनुसार जोड़ लिए जा सकते हैं। श्री पन्नालाल जी का यह उत्साहमय प्रयत्न बहुत अच्छा है।

काशी विश्वविद्यालय

फाल्गुन शुक्ल १२, सं० २०१४

वासुदेवशरण अग्रवाल

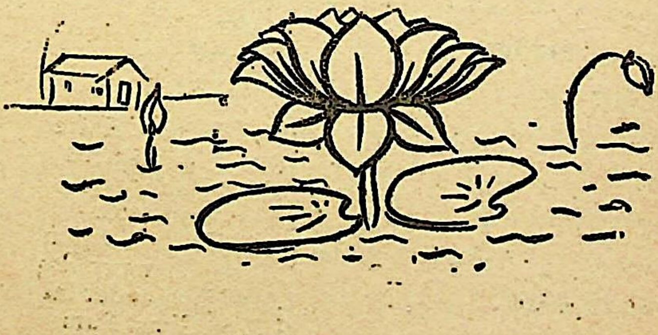

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संकेत-सूची

अ०नु=अनुवाद-अनुवादक
अप०=अपभ्रंश
अं=अंग्रेजी
आ०=आवृत्ति, आचार्य
ई०=ईस्वी
का० ती०=काव्यतीर्थ
गु०=गुजराती
जि०=जिला
टी०=टीका-टीकाकार
डा०=डाक्टर
दा० वी०=दानवीर
दि०=दिगम्बर
नं०=नम्बर
न्या०आ०=न्यायाचार्य
न्या० ती०=न्यायतीर्थ
न्या० लं०=न्यायालंकार
पं०=पंडित
पृ०=पृष्ठ
प्र०=प्रकाशक-प्रकाशित
प्रा०=प्राकृत
प्रो०=प्रोफ़ेसर
बा०=बाबू
ब्र०=ब्रह्मचारी
भा०=भाषा
म० र०=महिलारत्न
मा०=मास्टर
मि०=मिस्टर
मु०=मुन्शी
मू०=मूल्य
ले०=लेखक-लेखिका
व०=वर्ष
वा०=वार्षिक
वि० र०=विद्यारत्न
स० भ०=सत्यभक्त
सं०=संस्कृत, संपादक
संक०=संकलनकर्ता
संग्र०=संग्रहकर्ता
संपा०=संपादक-संपादिका
संशो०=संशोधक
सा० आ०=साहित्याचार्य
सा० र०=साहित्यरत्न
सि०=सिद्धांत
सि० च०=सिद्धांत चक्रवर्ती
सि० शा०=सिद्धांत शास्त्री
से०=सेठ
स्व०=स्वर्गीय
हि०=हिन्दी
Ed.= Editor, Edited
Trad.= Translated
Pub.= Publisher
Tr.= Translator
Dj.= Digambar jain
C.R.= Champat Rai
J.L.= jagmander lal
G.R.= Ghasi Ram

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रास्ताविक

इस पुस्तकके संयोजक बा० पन्नालालजी जैन अग्रवाल अपने चिर-परिचित मित्र हैं। आप बड़े ही सेवाभावी और साहित्य-प्रेमी सज्जन हैं—साहित्य-सेवियों को अपनी सेवाएं प्रदान करनेमें सदा ही उदार एवं परिश्रम-शील रहा करते हैं। कई वर्ष तक आप वीर-सेवा-मन्दिरके मंत्री रह चुके हैं। इस पुस्तक का आयोजन भी आपके उक्त मंत्रित्व-कालमें ही हुआ है। पुस्तक के आयोजनादि-सम्बन्धकी कुछ रोचक-कथा इस प्रकार है, जिसे उन पत्रोंसे जाना जाता है जिन्हें संयोजकजीने अपने पास सुरक्षित रख छोड़ा है:—

डा० माताप्रसादजी गुप्त एम० ए० प्रयाग सन् १९४३ में 'हिन्दी पुस्तक-साहित्य' नामकी एक ग्रन्थसूची लिख रहे थे, जिसमें हिन्दीकी चुनी हुई पुस्तकोंका परिचय उन्हें देना था और वह भी सन् १८६७ से १९४३ तक १०० वर्ष के भीतर प्रकाशित पुस्तकोंका—लिखितका नहीं। नवम्बर १९४३ में डा० साहब के तीन पत्र बा० पन्नालालजी (संयोजकजी) को प्राप्त हुए, जिनमें यह इच्छा व्यक्त की गई कि यदि हिन्दीके जैन ग्रन्थोंकी कोई अभीष्ट सूची उनके पास तय्यार हो या वे तय्यार कराके दे सकें तो उसका उपयोग उक्त सूची में किया जा सकता है। इन पत्रों पर से संयोजक-जीको हिन्दी जैन ग्रन्थोंकी एक ऐसी सूची तय्यार करनेकी प्रेरणा मिली जिसमें वे ग्रन्थ भी शामिल थे जो मूलतः भले ही संस्कृत-प्राकृतादि भाषाओं में हों परन्तु उनके अनुवादादिक हिन्दी भाषामें लिखे गये हों। तदनुसार उन्होंने हिन्दी जैन ग्रन्थों की एक सूची तय्यार की और उसे देखने-जाँचने के लिये मेरे पास सरसावा वीर-सेवा-मन्दिर में भेज दिया। यह सूची अपने को जनवरी १९४४ के अंतमें प्राप्त हुई और उसे संस्था के विद्वान पं० परमा-नन्दजीको जाँच आदि के लिये सुपुर्द कर दिया गया। पं० परमानंद जीने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाँचने, सुधारने और कितने ही नये ग्रंथों की उसमें वृद्धि करने के बाद उसे फर्वरी के अन्त में वापिस कर दिया और वह दूसरी मार्चको डा० सा० के पास प्रयाग भी पहुंच गई, जिसकी पहुंच देते हुए डा० मा० ने सूची को बड़े ही परिश्रमसे तैयार हुई बतलाया और अपनी सूची के प्रेस चले जाने की सूचना करते हुए यह परामर्श दिया कि यदि विषयों के अनुसार वर्गीकृत होकर वह अनेकान्त (मासिक) में प्रकाशित हो जावे तो बड़ा अच्छा हो। साथ ही उसी पत्र तथा २० मार्च के पत्र में यह आश्वासन भी दिया कि वे यथा संभव उस सूची का उपयोग करके उसे वापिस लौटा देंगे। १६ अप्रेल १९४५ से पहले तक यह सूची वापिस नहीं लौटी, २२ जुलाई तथा २ नवम्बर के पत्र में सूची के उपयोग-सम्बंध में इतनी ही सूचना की गई—'सूची जरा देर से प्राप्त हुई थी इस कारण उससे पूरा लाभ नहीं उठा सका। आपकी सूची के प्राचीन ग्रथों से नितान्त अपरिचित होने के कारण कुछ को चुनना और शेष को छोड़ना ठीक नहीं लगा। आधुनिक ग्रंथों में से जो महत्व पूर्ण हैं उनमें से अधिकांश मेरी सूची में पहले से थे। जैनधर्मका परिचय कराने वाले आधुनिक ग्रंथ एकाध आपकी सूची से भी मिलगए हैं।'

डा० माताप्रसादजी की उक्त सूची 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' नाम से अप्रेल १९४५ में प्रकाशित हो गई, उसे देख कर हमारे संयोजक जी को प्रकाशित जन ग्रंथों की एक बड़ी सूची तय्यार करने की विशेष प्रेरणा मिली। फलतः उन्होंने हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, प्राकृत, और अपभ्रशं भाषा के ग्रंथों की भी एक सूची संकलित की और उसे आरा के जैन सिद्धान्तभास्कर (त्रैमासिक) में छपाना चाहा, परन्तु वहाँ क्रमशः प्रकाशित करने की बात उठी, जो उचित नहीं जँची। तदनंतर भारतीय ज्ञान पीठ के प्रधान विद्वान न्यायाचार्य पं० महेन्द्र कुमार जी से इसके विषय में पत्र व्यवहार हुआ और वह मार्च १९४६ में उनके पास बनारस भेज दी गई। न्यायाचार्य जीने उसे देखकर ८ अप्रेल के पत्र में लिखा कि "इस (सूची) में बहुत परिश्रम करनेकी आवश्यकता है, तब कहीं यह छपने योग्य होगी। अभी हमारे यहां छपाई का सिलसिला भी ठीक नहीं हो सका है"। इस बीच में संयोजकजीने बा० ज्योतिप्रसादजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एम० ए० लखनऊसे भी पत्रव्यवहार किया, जिन्हें हाल में पी एच० डी० की उपाधि भी प्राप्त हो गई है, और उन्हें सूचीके सम्पादन की प्रेरणा का, जिसके उत्तर में उन्होंने अपने ४ अप्रेल १९४६ के पत्र में लिखा कि "हिन्दी सूची भी मैं सम्पादन करदूंगा आप मंगालें।" इस स्वीकृति के अनुसार वह सूची उन्हें बनारस से भिजवादी गई और उन्हें ११ अप्रेल को मिल गई, जिसकी पहुंच के पत्र तथा बाद के भी कुछ पत्रों में उन्होंने सूची के सम्पादन की कुछ कठिनाइयों तथा अपने इकले की असमर्थतादि का उल्लेख करते हुए मुझ से परामर्श करने तथा वीरसेवामन्दिर की मार्फत इस कार्य के सम्पन्न होने आदि का सुझाव रक्खा। फलतः इस ग्रंथसूची पर उस वक्त तक कोई खास काम नहीं हो सका जब तक कि श्री ज्योतिप्रसादजी की नियुक्ति १ ली अक्तूवर १९४६ को वीरसेवामन्दिर में नहीं हो गई।

मुझे उक्त सूची की स्थिति आदि का पहले से कोई विशेष परिचय नही था, और इस लिये यह समझ लिया गया था कि बा० ज्योतिप्रसाद जी, जिन्होंने सूचीका सम्पादन स्वीकार किया है, अपने अवकाशके समयों में उस काम को भी करते रहेगे, तदनुसार ही उन्हें उसकी याददिहानी करा दी गई; परन्तु वैसा कुछ नहीं हो सका। साथ ही, यह मालूम पड़ा कि सूची में कितना ही संशोधन, परिवर्तन और परिबर्द्धन किया जाने को है। अतः आफिस वर्क के रूप में इस कार्य सम्पादन के लिए बाबू ज्योतिप्रसाद जी की खास तौर से योजना की गई और कार्य की रूप-रेखा भी प्रायः निर्धारित कर दी गई। उस वक्त तक वह सूची कोष्ठकों के रूप में थी, अकारादि क्रम से ग्रंथ उसमें जरूर दिये थे परन्तु वह क्रम बहुधा कोश-क्रम के अनुसार ठीक नहीं था—कितने ही ग्रन्थ आगे पीछे लिखे हुए थे, कुछ दोबारा तिबारा प्रविष्ट हो गये थे, बहुत से ग्रन्थ लिखने से छूट गये थे और कुछ ग्रंथों का परिचय भी कहीं कहीं त्रुटित तथा गलत हो रहा था। इन सब दोषोंको दूर करते हुए प्रत्येक ग्रन्थके परिचयको जिनरत्नकोशादि की तरह धाराप्रवाह (running) रूप में एक साथ देने की व्यवस्था की गई और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह भी निश्चय किया गया कि जैनियोंकी साहित्य-सेवाको प्रदर्शित करने-वाली एक अच्छी प्रभावक भूमिका भी साथ में रहे, जिससे इस पुस्तक की उपयोगिता बढ़ जाय। तदनुसार ही वीरसेवामन्दिर में उक्त सूची पर नये-कार्डीकरणादि द्वारा सम्पादन-कार्य हुआ, जिसके फल स्वरूप उसे वर्त्तमान रूप प्राप्त हुआ है और उसमें सामयिक पत्रों तथा भाषणों के अतिरिक्त लगभग साढ़े छह सौ ग्रन्थों का नई वृद्धि हुई है—उर्दू, मराठी, गुजराती, बंगला और अंग्रेजी की तो सभी पुस्तकें नई प्रविष्ठ की गई हैं।

बा० ज्योतिप्रसाद जी का कार्य-काल वीरसेवामन्दिर में ३१ जुलाई १९४७ तक रहा। अपने इस दस महीने के कार्यकाल में उनका अधिकांश समय प्रस्तुत सूची के सम्पादन में ही व्यतीत हुआ, जिसे ६-७ महीने का पूरा समय कहा जा सकता है। जुलाई के अन्त में जैसे-तैसे भूमिका का कार्य पूरा होकर सूची का सम्पादन-कार्य समाप्त हुआ। अपने इस सम्पादन-कार्य में, जिसमें वीरसेवामन्दिर के दूसरे विद्वानों पं० परमानन्द जी शास्त्री तथा न्यायाचार्य पं० दरबारी लालजी का भी कुछ सहयोग प्राप्त होता रहा है, सम्पादक जी कहाँ तक सफल रहे उसे विज्ञपाठक स्वयं समझ सकते हैं।

सूची का सम्पादन समाप्त होनेसे पहले ही संयोजक जी को उसके शीघ्र छपाने की चिन्ता थी; जिसके लिये उन्होंने अनेक पुस्तक प्रकाशकों से पत्र व्यवहार किया—बड़ौदा के ओरियंटल इनिस्टट्यूट, इलाहाबाद लाजर्नल कम्पनी, डा० माताप्रसादजी गुप्त और इलाहाबाद के रायसाहब रामदयाल जी अग्रवाल तक को पुस्तक-प्रकाशन के लिये प्रेरणा की गई; परन्तु कहीं से भी सफलता प्राप्त नही हुई—सभी ने अपनी अपनी परिस्थितियो के वश छपाने में असमर्थता व्यक्त की। उस समय कागज का भी बड़ा अकाल था, सारे देश में उसका संकट व्याप्त था और कागज के सरकारी कोटे की भारी झंझट थी, इसी से पं० नाथूराम जी प्रेमी ने उन्हें बम्बई से लिखा था कि "प्रकाशित करने के लिए में किसे बताऊँ! इस समय तो शायद ही कोई छापने को तय्यार हो।" वीरसेवामन्दिर को कागज का कोटा बहुत ही कम प्राप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

था और कोटे से अधिक कागज दूसरे मार्ग से भी खरीद कर नहीं लगाया जा सकता था, यह बड़ी दिक्कत दरपेश थी और इसलिये मैंने संयोजकजी-को लिख दिया था कि 'ऐसी हालत में यदि आप किसी दूसरे प्रकाशक से इसे प्रकाशित करना चाहें तो उसमें अपने को कोई खास आपत्ति नहीं हो सकती ।'

इस तरह प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन जो उस समय रुका तो वह अनेक परिस्थितियों के वश अर्से तक रूका ही पड़ा रहा। वीरशासनसंघ कलकत्ता के मंत्री बा० छोटे लाल जी के पास भी यह दो एक वर्ष प्रकाशन की वाट जोहता हुआ पड़ा रहा। कलकत्ता से ग्रन्थ की प्रेस कापी वापिस आने पर संयोजक जी जैनमित्रमंडल दिल्ली के मंत्रियों बा० महतावसिंहजी बी० ए० और बा० आदीश्वरप्रसाद जी एम० ए० से इस ग्रंथ को मंडल से छपाने की अनुमति प्राप्त करने में ही नहीं किन्तु उसे प्रेस को दे देने में भी सफल हो गये, और इस तरह इस ग्रंथ के दुर्भाग्य का उदय समाप्त हुआ, यह बड़ी खुशी की बात है और इसके लिये जैन मित्र मंडल और उसके उक्त दोनों मंत्री विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। बा० पन्नालालजी का सम्वन्ध जैन मित्र मंडल से बहुत पुराना है, आप कई वर्ष तक उसके सहायक मंत्रीं रहे हैं और आप के उस मंत्रित्व-काल में जैनमित्रमंडल चमक उठा था। ऐसी स्थिति में आपकी एक उपयोगी कृति चिरकाल तक यों ही पड़ी रहे यह उसे कहाँ तक सहन हो सकता था। आखिर काल-लब्धि आई और उसे ही उस पुस्तक को छपाने के लिये विवश होना पड़ा, जिसके छपाने में वह भी पहले उपेक्षा-भाव दर्शा चुका था।

यह है इस पुस्तकके आयोजनादि-सम्बन्धी की कुछ रोचक कथा।

मुझे इस पुस्तक के प्रेसे में जाने का हाल उस समय मालूम पड़ा जब कि ५-७ फार्म ही छपने को बाकी रह गये थे। यदि प्रेसमें जानेसे पहले मुझसे इस विषय में परामर्श कर लिया गया होता तो उसमें कितना ही सुधार हो जाता—कम से कम मुद्रणकला की जो खटकने वाली त्रुटियां पाई जाती हैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वे तो न रहने पातीं, और छपाने में भी इतनी अशुद्धियाँ न रहतीं। अस्तु; जैसी कुछ भी है यह पुस्तक अब पाठकों के सामने उपस्थित है और अपने उस उद्देश्य को पूरा करने में वहुत कुछ समर्थ है जिसे लेकर यह प्रस्तुत की गई है। जिस पुस्तक के पीछे वीरसेवामन्दिर की भारी शक्ति लगी हो और कितना ही अर्थ-व्यय हुआ हो; उसे इतने वर्षों के बाद पाठकों के हाथोंमें जाता हुआ देखकर मेरी प्रसन्नताका होना स्वा- भाविक है।

अन्त में यह जान कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल और डा० हीरालालजी जैसे प्रमुख विद्वानोंने अपने अपने वक्तव्यों (प्राथमिक, प्राक्कथन) में इस पुस्तक का अभिनन्दन किया है, और इसके लिए मैं दोनों ही विद्वानों का हृदय से आभारी हूँ।

आशा है समाज की सभी संस्थाएँ और साहित्य-प्रेमी सज्जन इससे इधर-उधर बिखरे हुए अपने अज्ञात साहित्यका एकत्र परिचय प्राप्त कर उससे यथेष्ट लाभ उठाने में समर्थ हो सकेंगे।

वीर सेवा मन्दिर
२१ दरियागंज, दिल्ली
ज्येष्ठ वदि ३, सं० २०१५

जुगलकिशोर मुख्तार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूमिका

जैनियों की साहित्य सेवा
और
प्रकाशित जैन साहित्य

किसी भी देश अथवा जाति के सांस्कृतिक विकास का मापदण्ड उसका साहित्य होता है। जातीय साहित्य की विपुलता, विविधता और उत्कृष्टता ही जातीय संस्कृति की उन्नतावस्था की द्योतक होती हैं। भारतीय संस्कृति की श्रमणधारा की प्रधान एवं सर्व प्राचीन प्रतिनिधि जैन संस्कृति विशुद्ध भारतीय होने के साथ ही साथ प्रायः सर्व देशव्यापी भी रही है। जैनधर्म का सम्बन्ध कभी भी देश के किसी एक ही भाग विशेष अथवा जाति या वर्ग विशेष से नहीं रहा वरन सदैव से ही न्यूनाधिक अंश में यह धर्म सम्पूर्ण देशव्यापी रहता चला आया है और प्रायः प्रत्येक जाति तथा वर्ग के व्यक्ति इसके अनुयायी रहे हैं। एक प्रसिद्ध पुरातत्त्वज्ञ के कथनानुसार तो सम्पूर्ण भारतवर्ष में शायद एक भी ऐसा स्थान नहीं मिल सकता जिसे केन्द्र बना कर यदि बारह मील व्यास का एक काल्पनिक वृत्त खींचा जाय तो उसके भीतर एक या अधिक जैन मन्दिर, तीर्थ, बस्ती या पुराना अवशेष न मिले।

वर्तमान में जैन धर्मानुयायियों की संख्या यद्यपि अत्यल्प-लगभग २५-३० लाख रह गई है, तथापि आज भी वे देश में सर्वत्र फैले हुए हैं और विभिन्न प्रान्तों, जातियों, वर्गों और श्रेणियों के व्यक्ति उनमें सम्मिलित हैं। साथ ही वर्तमान जैन समाज प्रधानतया वर्तमान भारतीय समाज के समुन्नत, सुशिक्षित एवं समृद्ध भाग का ही एक महत्त्वपूर्ण अंश है। वह प्रगतिमान है और अपने लोकोपयोगी कार्यों के लिए प्रसिद्ध है। उसके अनगिनत तीर्थ, देवालय,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शास्त्र भंडार तथा अन्य साहित्यिक एवं लोकोपकारी संस्थाएं सुव्यवस्थित और सुचारू रूप से संचालित हैं। धर्म वैशिष्टय और संस्कृति वैशिष्टय के रहते हुए भी जैन समाज ने सदैव से अपने आपको अखिल भारतीय समाज एवं भारतीय राष्ट्र का अविभाज्य अंग समझा है और आज भी समझती है। जैन हिन्दू हैं या नहीं इस सम्वन्ध में जो मतभेद है उनका कारण धर्म वैभिन्य ही है। धार्मिक एवं तत्सवधित सांस्कृतिक परम्परा की दृष्टि से जैन अवश्य ही हिन्दू नहीं हैं किन्तु राष्ट्रीयता एवं भारतीयता की दृष्टि से वे हिन्दू ही हैं इसमें कोई संदेह नहीं। उनका धर्म, संस्कृति और वे स्वयं प्राचीन काल से भारत के ही मूलतः शुद्ध अधिवासी रहे हैं। वे यहीं जन्मे और फले फूले हैं। वे भारत के ही हैं और भारत उनका है।

जैन साहित्य–एक अत्यन्त प्राचीन काल से चली आई देश व्यापी संस्कृति के रूप में जैन संस्कृति ने अखिल भारतीय संस्कृति की धर्म, दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान, राजनीति, समाज-व्यवस्था, रीति रिवाज एवं आचार-विचार इत्यादि विविध शाखाओं को अनगिनत, अमूल्य एवं स्थायी महत्त्व की देनें प्रदान की हैं। ज्ञान संवर्द्धन एवं साहित्य निर्माण के क्षेत्र में ही जैनों ने प्राचीन व अर्वाचीन विभिन्न भारतीय भाषाओं में विविध विषयक विपुल साहित्य का सृजन करके, भारती के भंडार को सुसमृद्ध एवं समलंकृत किया है। संस्कृत साहित्य को जैन विद्वानों की देनें साधारण नहीं है, किन्तु उन्होंने प्राचीन काल से प्राकृत एवं तत्पश्चात् अपभ्रंश जैसी अपने-अपने समय की लोक भाषाओं को विशेपकर इसी कारण अपनाया और साहित्य का माध्यम वनाया जिससे कि सर्व साधारण उक्त रचनाओं का लाभ उठा सके। इसी उद्देश्य को लक्ष्य बनाते हुए उन्होंने विभिन्न प्रान्तीय, देसी भाषाओं में ग्रंथ रचनाएं करके उक्त भाषाओं के विकास में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योग दान दिया। तामिल भाषा के प्राचीन 'संगम' साहित्य का पर्याप्त एवं श्रेष्ठतर भाग जैन विद्वानों की ही कृति है, और कनाड़ी भाषा का तो तीन चौथाई से अधिक साहित्य जैनों द्वारा ही निर्मित हुआ है। गुजराती एवं राजस्थानी भाषाओं के साहित्य की जैनों द्वारा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महती अभिवृद्धि हुई और तैलगु, मलयालम्, मराठी, उड़िया; बंगाली, बिहारी गुरुमुखी आदि प्रायः प्रत्येक प्रान्तीय भाषा में अल्पाधिक जन साहित्य उपलब्ध है। आधुनिक देसी भाषाओं की जननी अपभ्रंश पर तो जैनों का प्रायः स्वाधिकार सा रहा ही था, हिन्दी की भी प्राचीनतम ज्ञात एवं उपलब्ध रचनाएं जैनों की ही प्रतीत होती हैं। पुरातन हिन्दी के गद्य-पद्य साहित्य का एक बड़ा अंश जैन प्रणीत है, और वह कोई साधारण अथवा उपेक्षणीय कोटि का भी नहीं है। व्यापार की प्रधान संकेत लिपि 'मुंडिया' में एकमात्र साहित्यिक रचना अभी जैनों की ही उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त उर्दू, फारसी, अंगरेजी, जर्मन, फ्रेन्च, इटालियन आदि भाषाओं में भी जैन साहित्य विद्यमान है।

जहां तक लेखन शैली का प्रश्न है, जैन साहित्यकारों ने विभिन्न भाषाओं की गद्य पद्यमयी अनेक नवीन शैलियों का आविष्कार किया और प्रायः सर्व ही प्रचलित शैलियों को अपनाया एवं विकसित किया। मुक्तक एवं स्फुट काव्य, खण्ड काव्य, महा काव्य, नाटक, चम्पू, आख्यान उपाख्यान, चारित्र पुराण, ऐतिहासिक, कल्पित, घटनात्मक, नीत्यात्मक, वर्णनात्मक अथवा भावात्मक, सूत्र, वृत्ति, वार्तिक, निर्युक्ति, चूर्णि, टीका टिप्पणि, भाष्य व्याख्या, वैज्ञानिक विवेचन, से युक्त निबंध प्रबंध, रासा विलास, ढमाल चौपई, स्तुति स्तोत्र, पद भजन प्रायः सर्व ही प्राचीन अर्वाचीन शैलियों में रचनाएं कीं तथा विभिन्न प्रचलित एवं नवीन छन्दों, रस अलंकार आदि का सफल प्रयोग किया। आधुनिक जैन साहित्यकार भी वर्तमान में प्रचलित सभी शैलियों का सफल प्रयोग कर रहे हैं। यद्यपि जैन साहित्य की सृष्टि में प्रधानतया धार्मिक प्रकृति ही कार्य करती रही है तथापि उसके सृजकों ने उसे लोकरंजक एवं लोकोपयोगी बनाने का भी यथाशक्य प्रयत्न किया और वे इसमें सफल भी हुए। भाषा एवं शैली के सुचारू एवं उपयुक्त चुनाव के द्वारा उन्होंने अत्यन्त शुष्क एवं नीरस विषयों और प्रसंगों को भी रुचिकर, पठनीय, सुबोध एवं सर्व ग्राह्य बनाने का प्रयत्न किया।

जैन श्रमण संस्कृति निवृत्ति प्रधान है, अतएव स्वभावतः उसके साधकों एवं उपासकों द्वारा निर्मित साहित्य सामान्यतः वैराग्यमयी, चारित्र प्रवण और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्त रस प्रधान रहा, तथापि प्रायः प्रत्येक लोकोपयोगी एवं समयापयुक्त विषय पर इन विद्वानों ने अपनी प्रमाणीक लेखनी का चमत्कार दिखलाया। धर्म-शास्त्र, तत्व ज्ञान, आचार शास्त्र, पुराण चारित्र, पूजा प्रतिष्ठा पाठ, स्तुति स्तोत्र आदि विविध धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त काव्य, नाटक, चम्पू, कथा साहित्य, जीवन चरित्र, आत्म चरित्र, इतिहास, राजनीति, नीत्योपदेश, समाज शास्त्र, दर्शन, अध्यात्म, न्याय, तर्क, छन्द, व्याकरण, अलंकार, काव्य शास्त्र, कोष, भाषाविज्ञान, मन्त्र शास्त्र, ज्योतिष, सामुद्रिक, वैद्यक, पशु चिकित्सा, स्थापत्य मूर्तकला एवं वास्तु विज्ञान, गणित, सामान्य विज्ञान, रसायन, भौतिक, जन्तु विज्ञान, भूगोल, खगोल, रत्न परीक्षा, भ्रमण वृत्तान्त, स्थान परिचय, इत्यादि प्रायः सब ही विषयों पर ग्रन्थ रचना की। इन बातों का विस्तृत परिचयात्मक विवेचन साहित्यिक इतिहास का विषय है। तथापि जैन साहित्य की विपुलता, विविधता और महत्व का बहुत कुछ अनुमान केन्द्रिय, प्रान्तीय तथा रियासती सरकारों द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज सम्बंधी विभिन्न विवरण पत्रिकाओं, म्यूजियम रिपोर्टों, पुरातन पुस्तक भंडारों तथा सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत संग्रहालयों के सूची पत्रों, विभिन्न स्थानीय दिगम्बर श्वेताम्बर जैन ग्रंथ भण्डारों की उपलब्ध सूचियों तथा जैन पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित तत्सम्बंधी फुटकर लेखादिकों से हो जाता है। इस प्रकार ऐसे बीसियों सहस्र जैन ग्रन्थों का पता चलता है जो उपलब्ध हैं। जिसपर अनेक प्राचीन जैन ग्रन्थ भंडार, विशेषकर दिगम्बर सम्प्रदाय के, अभी तक बन्द ही पड़े हुए हैं। उनमें कितने, कैसे और क्या-क्या साहित्य रत्न छिपे पड़े हैं यह कहा भी नहीं जा सकता। जो भंडार खुल गये हैं उनमें से भी कितनों की ही कोई व्यवस्थित सूची निर्मित एवं प्रकाशित नहीं हो पाई हैं। वैसे तो प्रायः प्रत्येक नगर, कस्बे और ग्राम में जहां जैनियों की थोड़ी बहुत भी आबादी है तथा देश भर में यत्र तत्र फैले हुए बहुसंख्यक जैन तीर्थों में से प्रत्येक पर एक वा अधिक जिन मन्दिर प्रायः अवश्य ही विद्यमान हैं और प्रायः प्रत्येक जिनालय अथवा उपाश्रय आदि में छोटा बड़ा एक शास्त्र भंडार भी अवश्य ही होता है जिसमें कि ताड़पत्रीय, भोजपत्रीय अथवा कागज आदि अल्पाधिक प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का ही संग्रह प्रायः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहता है। कितने ही जैन कुटुम्ब भी ऐसे हैं जिनके पूर्वजों में साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले विद्वान होते रहे हैं और उक्त विद्वानों द्वारा संग्रहीत लिखित अथवा रचित कितने ही ग्रंथ वपौती के रूप में चले आये उनके वंशजों के पास आज भी सुरक्षित हैं, और जिनका सदुपयोग वे लोग चाहे भले ही न कर सकें, किन्तु किसी अन्य को देना क्या कभी भी दिखाने में भी संकोच करते हैं। इस प्रकार के असंख्य फुटकर जैन शास्त्र भंडारों का कोई व्यवस्थित या अव्यवस्थित भी अन्वेषण अभी तक हुआ ही नहीं और उनमें एक अकस्मात् दर्शक को वहुधा कितनी ही महत्वपूर्ण एवं अलभ्य साहित्यिक सामग्री का दर्शन हो जाता है। अभी हाल में ही काशी नागरी प्रचारणी सभा के अन्वेषक श्री दौलतराम जुआल के प्रसंग से लखनऊ के केवल एक ही दिगम्बर जैन मन्दिर के शास्त्र भंडार के कुछ मात्र हिन्दी हस्तलिखित ग्रंथों का निरीक्षण करने का सुयोग मिला था। परिणाम स्वरूप कई एक अधुना अज्ञात हिन्दी के प्राचीन जैन साहित्यकारों और उनकी कृतियों का पता चला तथा कई एक अन्य ज्ञात प्राचीन साहित्यिकों के ऐतिह्य पर महत्त्वपूर्ण नवीन प्रकाश पड़ा।

ग्रन्थ सूची—जैन ग्रंथों की 'वृहत्टिप्पणिका' नामक एक प्राचीन ग्रंथसूची पहिले से ही विद्यमान थी और आधुनिक युग में भी कई स्वतन्त्र ग्रंथसूचियें प्रकाशित हो चुकी हैं। जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्स ने 'जैन ग्रंथ नामावली' नामक एक सूची प्रकाशित की थी और पाटन, जैसल्मेर, सूरत, अहमदावाद, लींवड़ी आदि स्थानों के श्वेताम्बर ग्रंथ भंडारों की व्यवस्थित सूचियें प्रकाशित हो चुकी हैं। दिगम्बर सूचियों में सर्व प्रथम ग्रंथ सूची जयपुर निवासी बावा दुलीचन्द श्रावक के अपने मन्दिर में स्थित शास्त्र भंडार की थी। जिसे उन्होंने 'जैन शास्त्र माला' के नाम से सन् १८९५ ई० में प्रकाशित किया था। सन् १९०१ में लाहौर निवासी बा० ज्ञान चन्द्र जैनी ने 'दिगम्बर जैन भाषा ग्रंथ नामावली' नाम से एक अन्य सूची प्रकाशित की। सन् १९०५ में फ्रान्सीसी विद्वान डाक्टर ए० गिरनोट ने अपनी 'जैना विवलियोग्रेफिका' (फ्रान्सीसी भाषा में लिखित) में ज्ञात वहुसंख्यक जैन ग्रंथों की सूची दी। ऐलक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पन्नालाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, वम्बई, की सन् १९२३ से १९३२ तक प्रकाशित ६ वार्षिक रिपोर्टों में उक्त भंडार में संगृहीत हस्तलिखित ग्रंथों की परिचयात्मक सूचियें प्रकाशित हुईं। इसी भवन की झालरापाटन स्थित शाखा की ग्रंथ सूची भी 'ग्रंथ नामावली' के नाम से प्रकाशित हो चुकी है। वीर सेवा मन्दिर, सरसावा से प्रकाशित मासिक अनेकान्त की विभिन्न किरणों में दिल्ली के कई बड़े बड़े ग्रंथ भंडारों की सूचियें तथा सोनीपत, इन्दौर, नागौर आदि के भी कुछ भंडारों की सूचियें में प्रकाशित हो चुकी हैं। उपरोक्त वीर सेवा मन्दिर में कई एक दिगम्बर ग्रंथ भंडारों के लगभग ६००० अप्रकाशित तथा अन्य सूचीयों में न दिये हुए हस्तलिखित ग्रंथों की प्रमाणिक परिचयात्मक सूची के प्रकाशन की योजना चल रही है। अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी तीर्थक्षेत्र कमेटी, जयपुर ने आमेर (जयपुर) के प्रसिद्ध प्राचीन भंडार की तथा स्वयं महावीर जी क्षेत्र (चाँदन गाँव, जयपुर) के भंडार की संयुक्त ग्रंथ सूची पुस्तकाकार प्रकाशित की है। इतना ही नहीं किन्तु महावीर जी तीर्थ क्षेत्र कमेटी की ओर सें श्री पं० कस्तूर चंद काशलीवाल एम० ए० ने जयपुर के शास्त्रभंडारों से दो ग्रन्थ सूचियें तैयार की और एक जैन ग्रन्थ प्रशास्ति संग्रह तैयार किया जो उस क्षेत्र कमेटी के द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं। आगे और भी ग्रंथ भंडारों की सूचियों के निर्माण का कार्य चालू हो रहा है। इसके सिवा धर्मपुरा, दिल्ली, नये मन्दिर के संचालकों की ओर से पं परमानन्द शास्त्री उक्त मन्दिर के शास्त्र भंडार की सूची बना रहे हैं जो प्रायः तय्यारी के लगभग है, उसका प्रकाशन भी जल्दी ही होगा। दक्षिण कर्णाटकस्थ मूड़बद्री आदि के बृहत् जैन भंडारों में संग्रहीत कन्नडी ग्रंथों की श्री पं० के० भुजवलि शास्त्री द्वारा सुसम्पादित एक बृहत्सूची भारतीय ज्ञान पीठ, काशी से प्रकाशित हुई है। यत्र तत्र अन्य भंडारों की सूचियें प्रकाशित करने की ओर भी लोगों का ध्यान आकर्षित हो रहा है। किन्तु इस दिशा में अब तक का सर्वाधिक महत्व-पूर्ण एवं प्रमाणीक प्रयत्न विल्सन कालिज, वम्बई के विद्वान प्रोफेसर डा० हरि दामोदर वेलङ्कर द्वारा सम्पादित "जिनरत्न कोष" है। इस ग्रंथ का प्रका-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शन सन् १९४४ ई० में भंडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना द्वारा 'गवर्नमेंट ओरियंटल सीरीज़, क्लास 'सी' नं० ४ के रूप में हुआ है। इस ग्रंथ में जो कि लीपजिंग (जर्मनी) से प्रकाशित टी० आफ्रेक्ट के सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'कैटेलोगस कैटेलोगोरम' की शैली पर निर्मित हुआ है, विद्वान सम्पादक ने १२१ विभिन्न रिपोर्टों, ग्रंथ सूचियों, सूचीपत्रों आदि के आधार पर लगभग दस हजार जैन ग्रंथों का तथा उनकी विभिन्न ज्ञात प्रतियों का संक्षिप्त परिचय अकारादि क्रम से दिया है। इस कोष में दिगम्बर, श्वेताम्बर व उभय सम्प्रदायों के ग्रंथों को समान रूप से समाविष्ट किया गया है। किन्तु जैसा कि विद्वान सम्पादक ने ग्रंथ के प्राक्कथन में स्वयं स्वीकार किया है, वे दिगम्बर साधन सामग्री का अत्यल्प उपयोग ही कर पाये। इसी कारण से उक्त कोष में समाविष्ट दिगम्बर ग्रंथ संख्या में भी कम हैं, उनकी विवेचित प्रतियें भी न्यूनतर हैं और उनका परिचय अपेक्षाकृत अधिक न्यूनतर होने के साथ ही साथ कहीं कहीं त्रुटित एवं दोषपूर्ण भी है।

प्रशस्ति आदि—उपरोक्त ग्रन्थ सूचियों के अतिरिक्त, जैन ग्रन्थों के आदि अथवा अन्त में पाई जानेवाली उनके रचियताओं, टीकाकारों, अतिलेखकों, दातारों आदि की प्रशस्तियों के भी कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, यथा मुनि श्री जिनविजय द्वारा सम्पादित 'जैन पुस्तक प्रशस्ति संग्रह,' जैन सिद्धान्त भवन आरा से प्रकाशित 'प्रशस्ति संग्रह,' तथा वीर सेवा मन्दिर, दिल्ली द्वारा निर्मित दो जैन ग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह जिनमें से एक में संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों की प्रशस्तियें संकलित हैं और दूसरे में अपभ्रंश ग्रन्थों की। श्री महावीर जी तीर्थ क्षेत्र कमेटी (जयपुर) भी आमेर भंडार के ग्रन्थों में प्राप्त प्रशस्तियों का एक संग्रह प्रकाशित करा रही है। किन्तु अभी तक हिन्दी जैन ग्रन्थों की प्रशस्तियों का संकलन करने की ओर किसी का ध्यान नहीं गया है। मेरे स्वयं के अवलोकन में अवतक लगभग ५०-६० ऐसी प्रशस्तियें आ चुकी हैं जिनके प्रकाशन से न केवल हिन्दी जैन साहित्य के इतिहास पर ही वरन मध्य कालीन भारत के राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास पर भी अच्छा प्रकाश पड़ने की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर्याप्त संभावना है। अपने ऐतिहासिक महत्त्व के अतिरिक्त ये ग्रन्थ प्रशस्तियें तत्तद ग्रन्थों, उनके कर्त्ताओं, उक्त ग्रन्थों की प्रतियों आदि से सम्बन्धित जानकारी के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होती हैं।

साहित्यिक इतिहास—जैन साहित्य की अतीत कालीन प्रगति और इतिहास पर अभी तक कोई भी एक पूर्ण एवं प्रमाणिक ग्रन्थ निर्मित नहीं हुआ है। भारतीय साहित्य के सामान्य इतिहास में, हिन्दी संस्कृत आदि भाषाओं के साहित्य से सम्वंधित अथवा दर्शन, कला, विज्ञान आदि विविध विषयक साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में, किसी भी कारण से क्यों न हो, प्रायः जैन साहित्य की उपेक्षा ही की जाती रही है। प्रथम तो इन पुस्तकों में जैन साहित्य का कोई उल्लेख ही नहीं रहता, और यदि किसी किसी में रहता भी है तो अत्यल्प, संक्षिप्त, गौण और वहुधा त्रुटिपूर्ण भी। उसे कोई महत्त्व भी नहीं दिया जाता और न साहित्यक विकास में उसके उपयुक्त स्थान पर कोई प्रकाश डाला जाता है। किन्तु विभिन्न भाषाओं में रचित जैन साहित्य के इतिहास पर जो कुछ थोड़ा वहुत साहित्य अव तक प्रकाशित हो चुका है वही पढ़कर उसके वास्तविक महत्त्व तथा भारतीय साहित्य में उसके सम्माननीय स्थान का वहुत कुछ अनुमान हो जाता है। जैन साहित्य के इतिहास विषय पर निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—पं० नाथूराम प्रेमीकृत 'दिगम्बर जैन ग्रन्थ कर्त्ता और उनके ग्रन्थ,' 'हिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास,' 'कर्णाटक जैन कवि,' 'जैन साहित्य और इतिहास'। श्रीयुत आर-नरसिंहाचार्य कृत 'कर्नाटक कवि चरितें' श्री मोहनलाल देसाई कृत 'गुर्जर कवि'-२ भाग, प्रो० ए० सी० चक्रवर्ती कृत 'जैन लिटरेचर इन तामिल'। श्री मूलचन्द वत्सल कृत जैन कवियों का इतिहास,' वावू कामताप्रसाद कृत 'हिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास। राजस्थानी भाषा के जैन साहित्य पर श्री अगरचन्द नाहटा ने अच्छा कार्य किया है। हिन्दी के पुरातन जैन गद्य साहित्य पर हम स्वयं एक पुस्तक लिख रहे हैं। इन पुस्तकों के अतिरिक्त सुयोग विद्वानों द्वारा सम्पादित प्राचीन ग्रन्थों के आधुनिक संस्करणों की विद्वत्ता पूर्ण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विस्तृत प्रस्तावनाओं में, गत वर्षों में प्रकाशित विभिन्न जैन अभिनन्दन ग्रन्थों में, जैन हितैषी, जैन साहित्य संशोधक, जैन विद्या आदि भूत कालीन सामायिक पत्रों की फाइलों में तथा जैन सिद्धान्त भास्कर, अनेकान्त, जैन सत्यप्रकाश, वीरवाणी आदि वर्तमान पत्र पत्रिकाओं में फुटकर लेखों के रूप में जैन साहित्य और उसके इतिहास से सम्बन्धित विपुल सामग्री विखरी पड़ी है। अंग्रेजी प्रभृति विदेशी भाषाओं में जैन सम्वंधी साहित्य के स्वरूप एवं प्रगति का ज्ञान डा० ए० गिरनोट (Dr A. Guirnot) कृत 'जैना विवलियोग्रेफिका,' रा० वावू पारसदास द्वारा सम्पादित 'जैन विवलियोग्रेफी,' नं० १ तथा वावू छोटेलाल जी कृत 'जैन विबलियोग्रेफी' से हो सकता है। किन्तु इन पुस्तकों में सन् १९२५ के उपरान्त का विवरण नहीं है। जैन कथा साहित्य पर डा० जे० हर्टल का कार्य श्लाघनीय है।

साहित्य के इतिहास और प्राचीन ग्रन्थों तथा ग्रन्थ प्रतियों के परिचय से जहाँ वर्तमान युग की बहुज्ञता वढ़ती है तथा विद्वानों एवं अन्वेषकों को अपने कार्य में भारी सहायता मिलती है वहाँ उनके कारण वर्तमान प्रकाशन प्रगति को भी भारी प्रोत्साहन मिलता है। साहित्यक क्षेत्र को समुन्नत एवं प्रगतिशील वनाने के लिए युगानुसारी मौलिक ग्रन्थ रचना और उनका प्रकाशन तो आवश्यक है ही, प्राचीन अप्रकाशित ग्रन्थ रत्नों के आवश्यक अनुवादादि सहित सुसम्पादित संस्करणों का प्रकाशन भी अतीव आवश्यक एवं वाञ्छनीय है। जो साहित्य शताब्दियों और सहस्राब्दियों से कराल काल को चुनौती देता हुआ अपने लोक हितकारी अथवा लोकरंजक रूप और स्थायी महत्त्व के कारण अक्षुण्ण रहता चला आया है, अपनी इस अत्यन्त मूल्यवान बपौती का संरक्षण, प्रचार, प्रसार एवं सदुपयोग करना वर्तमान सन्तति का प्रधान कर्तव्य है। इस प्रकार न केवल तत्तद संस्कृति की धारा अनवरोध रूप से प्रवाहित होती चली जायगी वरन उसके पुनीत जल में निमज्जन करते रहने से मानव समाज सदैव अपना कल्याण करता रहेगा, उसे नव स्फूर्ति प्राप्त होती रहेगी और उसे अपना जीवन पथ-प्रशस्त रखने में सहायता मिलेगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुद्रण कला का प्रभाव—अस्तु छापेखाने के प्रचार के पश्चात् भारतवर्ष में जब से साहित्य का मुद्रण प्रकाशन प्रारम्भ हुआ है, विशेषकर जैन समाज में तब ही से प्राचीन ग्रन्थों के प्रकाशन का ही बाहुल्य रहा है। उत्तरोत्तर उत्कृष्टत्तर यान्त्रिक अविष्कारों को प्रसूत करने वाले इस यन्त्र प्रधान युग में साहित्य का मुद्रण एवं प्रकाशन भी अधिकाधिक शीघ्रता एवं विपुलता के साथ वृद्धि को प्राप्त होता रहा है। विविध प्रकार के बहुसंख्यक शिक्षालयों की स्थापना के साथ साथ मुद्रित ग्रंथों के अल्प मूल्य में सहज सुलभ होने के कारण साक्षरता, शिक्षा, बहुविज्ञता एवं पठनाभिरुचि अधिकाधिक व्यापक होती जा रही हैं। विभिन्न प्रकार के असंख्य पुस्तकालयों तथा अनगिनत सामयिक पत्र पत्रिकाओं के द्वारा उन्हें भारी प्रोत्साहन मिल रहा है। आज यह समस्या नहीं है कि 'पुस्तकें तो हैं ही नहीं, पढ़े क्या और कैसे ? आज तो वास्तविक कठिनाई यह है कि पुस्तकें तो प्रत्येक स्थान में सहज सुलभ हैं, और बहुसंख्या में, उन सब ही को पढ़ लेना असंभव सा है, और आवश्यक अथवा उपयोगी भी नहीं है। तब अपने लिए उनका किस प्रकार चुनाव करें, उनमें से कौन-कौन सी को पढ़ें और किस-किस को न पढ़ें ? मनुष्यों के बढ़ते हुए ज्ञान, शिक्षा एवं साहित्यिक संस्थाओं की संख्या वृद्धि शिक्षा प्रणाली के द्रुत विकास तथा मानव जीवन की अत्यन्त वेग के साथ वृद्धि, को प्राप्त होती हुई आवश्यकताओं और विषमताओं के कारण साहित्यगत विषय भी संख्यातीत होते जा रहे हैं। अपनी-अपनी रुचि, आवश्यकता एवं साधनों के अनुसार पृथक-पृथक विषय में विशेषज्ञता प्राप्त करना आवश्यक होता चला जा रहा है।

पुस्तक सूची की आवश्यकता—इन सब कारणों से आज मुद्रित प्रकाशित पुस्तकों की परिचयात्मक सूचियों की आवश्यकता एवं उपयोगिता बहुत अधिक हो गई है। प्रगतिशील पाश्चात्य भाषाओं के साहित्य के संबंध में ऐसी अनेक सूचियें विद्यमान हैं और निर्मित होती रहती हैं। दूसरे उनके प्रकाशकों के सूची पत्र भी इतने सारपूर्ण और प्रमाणीक होते हैं—विषय विशेष सम्बन्धी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साहित्य के प्रकाशक भी बहुधा प्रथक-प्रथक हैं—कि उक्त व्यवसायिक सूचीपत्रों से ही तत्सम्बन्धी आवश्यकता की अधिकांश पूर्ति हो जाती है। किन्तु भारतवर्ष के और विशेषकर हिन्दी के प्रकाशकों की अवस्था इससे नितान्त भिन्न है। यहाँ विशेषज्ञता को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता, प्रकाशक अनगिनत हैं किन्तु उनमें सुव्यवस्था और संगठन का सर्वथा अभाव है। उनके सूचीपत्र मात्र व्यवसायिक दृष्टि से प्रेरित सस्ती विज्ञापन बाजी के नमूने भर होते हैं अतः पर्याप्त दोष पूर्ण भी होते हैं। उनसे पुस्तक विशेष का वास्तविक, ठीक-ठीक तथा पूर्ण परिचय प्राप्त नहीं होता। ऐसे सब ही प्रकाशित सूचीपत्रों का प्राप्त करना भी दुष्कर है, हिन्दी की सभी प्रकाशित पुस्तकों की यथार्थ जानकारी भी उनसे नहीं हो सकती। अतएव हिन्दी की पुस्तकों की एक ऐसी सार्वजनिक सूची की आवश्यकता थी जिससे हिन्दी ग्रन्थ प्रकाशन के स्वरूप, प्रगति, इतिहास, त्रुटियों और आवश्यकताओं का ज्ञान हो सके। इस अभाव की पूर्ति अनेक अंशों में प्रयाग विश्व विद्यालय के प्रोफेसर डा० माता प्रसाद जी गुप्त द्वारा सम्पादित तथा हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग द्वारा हाल में ही प्रकाशित 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' नामक ग्रन्थ से हो जाती है। इस पुस्तक में विद्वान सम्पादक ने एक विस्तृत महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना के अतिरिक्त लगभग ५,५०० मुद्रित प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों की संक्षिप्त परिचयात्मक अनुक्रमणिका दी है, जिसमें प्राचीन अर्वाचीन, मौलिक एवं टीका अनुवादादि, धार्मिक, सम्प्रदायिक (अधिकांशतः वैदिक परम्परा के ही हिन्दू समाजगत विभिन्न सम्प्रदायों से सम्बन्धित), लौकिक विविध विषयक, छोटी-बड़ी, महत्त्वपूर्ण तथा अति सामान्य कोटि की साधारण-प्रायः सर्व ही हिन्दी संस्कृत पुस्तकें सम्मिलित हैं। स्कूली पाठ्यक्रम की साधारण पुस्तकें, पारसी थ्येटर कम्पनियों में खेले जाने वाले सस्ते नाटक, सिनेमा के गायन आदि की पुस्तकें, पुराने ढंग के सांग, ख्याल, नौटंकी, आल्हा, आदि की पुस्तकें तथा फुटकर वा अज्ञात ट्रैक्ट आदि छोड़ दिये गये हैं। साथ में युग-विभाजनगत विषयानुसार पुस्तकानुक्रमणिका तथा लेखकानुक्रमणिका से पुस्तक की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किन्तु एक सहृदय साहित्यिक विज्ञान के द्वारा रचित साहित्यिक विज्ञान संबंधी ऐसी निर्देशात्मक पुस्तक के अवलोकन से जिस बात पर साश्चर्य खेद हुआ वह यह है कि इस पुस्तक में भी जैन साहित्य की उपेक्षा ही की गई है और उसके प्रति अन्याय भी हुआ है। पुस्तक में निर्देशित लगभग ४,५०० लेखकों में से केवल ५० लेखक जैन हैं जिनमें २० ऐसे हैं जिन्होंने जैन संबंधी कुछ नहीं लिखा, और यदि उनमें से किसी की कोई जैन रचना है भी तो उनका उल्लेख नहीं किया गया, शेष ३० लेखकों में दो हजार वर्ष प्राचीन आचार्य कुन्दकुन्द से लेकर आधुनिक काल के अति गौण लेखक तक सम्मिलित हैं। कुल ७०-७५ जैन पुस्तकों का उल्लेख है जिनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी के मौलिक तथा टीका अनुवादादिक और कथा कहानी, पूजा पाठ, पद भजन, अध्यात्म, तत्वज्ञान, निमित्त शास्त्र आदि कितने ही विषयों के दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानक वासी सभी सम्प्रदायों के एक-एक दो-दो ग्रन्थ वानगी के लिए दे दिये गये हैं। इन गिने चुने लेखकों और उनकी कृतियों के परिचय भी बहुधा दोष पूर्ण एवं भ्रामक हैं, उदाहरणार्थ, कुन्दकुन्दाचार्य कृत 'समयसार' को नाटक लिखना, 'बारह मासा नेमिनाथ' पुस्तक को केवल बारह मासा लिखकर उसके लेखक के रूप में नेमिनाथ को लिखना, 'जैन रामायण' के कर्त्ता का नाम रामचन्द्र के स्थान पर हेमचन्द्र लिखना, कवि वृन्दावन दास कृत 'अर्हंत पाशा केवलि' नामक शकुन शास्त्र को प्राचीन युग का एक जीवन चरित्र(!) लिखना। 'जाति की फेहरिस्त' और 'अग्रवालों की उत्पत्ति' जैसी पुस्तकों को 'धर्म-तत्कालीन' विषय के अन्तर्गत तथा 'जैन स्तवनावली' और 'जैनग्रन्थ संग्रह' जैसे प्रकीर्णकस्फुट पाठ संग्रहों को 'साहित्य का इतिहास-तत्कालीन' विषयके अन्तर्गत देना, इत्यादि। और यह तब जबकि सम्पादक महोदय को जैन साहित्य की पूर्वोल्लिखित इतिहास पुस्तकें और ग्रन्थ सूचियें आदि तथा कम से कम पं० नाथूराम प्रेमी के जैन ग्रन्थ कार्यालय के बृहत्सूचीपत्र के अतिरिक्त, जोकि सब सहज सुलभ थे, किसी भी अच्छी जैन साहित्यिक संस्था अथवा प्रकाशन संस्था या एक वा अधिक जैन साहित्यिकों से ही पत्र व्यवहार द्वारा प्रकाशित जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साहित्य के सम्वन्ध में वहुत कुछ जानकारी सरलता से प्राप्त हो सकती थी। स्वयं लाला पन्नालाल जी अग्रवाल देहली निवासी ने जो कि ऐसे कार्यों में सदैव अत्यधिक उत्साह रखते हैं और अपना पूर्ण सहयोग देने में तत्पर रहते हैं, डा० माता प्रसाद जी की इस पुस्तक के लिए लगभग चार सौ मुद्रित जैन पुस्तकों की एक परिचयात्मक सूची तैयार करके उनके पास भेजी थी। किन्तु संभवतया कुछ विलम्व से प्राप्त होने के कारण, या क्या, डाक्टर साहव ने पन्नालाल जी की सूची का भी उपयोग नहीं किया। डाक्टर गुप्त की इस जैन साहित्य संबंधी उदासीनता का जो कि भारत के वहुभाग अजैन विद्वानों और साहित्यिकों में आज इस बीसवीं शताब्दी के मध्य में भी पाई जाती है वहुत कुछ अनुमान प्रस्तुत पुस्तक के अवलोकन से तथा गुप्त जी की पुस्तक के साथ उसका तुलनात्मक अध्ययन करने से हो जायगा। इसमें संदेह नहीं है कि किसी जैन पुस्तक का मात्र मुखपृष्ठ देखकर अथवा किसी सूचीपत्र में उसका नाम मात्र पढ़कर जैन साहित्य से अनभिज्ञ एक अजैन विद्वान के लिए उसका यथोचित परिचय देना वहुधा दुष्कर है। स्वयं काशी नागरी प्रचारिणी सभा की हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज सम्वंधी विवरण पत्रिका में जैन साहित्य विषयक अनेक उल्लेख सदोष एवं भ्रान्तिपूर्ण हैं, जिनका एक लेख के रूप में संशोधन करके मैंने अभी हाल में ही सभा के अन्वेषक श्री दौलतराम जुग्राल द्वारा प्रकाशनार्थ सभा को प्रेषित किया है। किन्तु ये कठिनाइयाँ जैन विद्वानों के सहज सुलभ सहयोग से सरलता से दूर की जा सकती हैं। गत वर्ष में सभा के अन्वेषक महोदय ने लखनऊ के जैन शास्त्र भंडारों में संग्रहीत लगभग एक सौ हिन्दी ग्रन्थों के विवरण लिये, इस कार्य में उन्हें मेरा पूर्ण सहयोग प्राप्त था, अपने लिये हुए विवरणों को वे मुझ से पूर्ण तथा संशोधित करवाकर ही भेजते थे, अतएव उक्त विवरणों में कोई भारी या खटकने वाली भूलें रह जाने की तनिक भी संभावना नहीं है।

जैन प्रकाशनों की दशा—हिन्दी प्रकाशन कार्य की जिस कुव्यवस्था का उल्लेख ऊपर किया गया है, किंतु पुस्तक प्रकाशन की दशा उससे भी बुरी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामान्य भारतीय तथा हिन्दी पुस्तक प्रकाशन के प्रायः सर्व दोष तो इसमें बढ़े चढ़े रूप में पाये ही जाते, उनके अतिरिक्त कई एक अन्य त्रुटियाँ भी हैं। जैन पुस्तक प्रकाशन अभी तक एक लाभदायक व्यवसाय नहीं बन पाया है। उसके यथोचित सुविकसित एवं सुव्यवस्थित होने में अनेक बाधक कारण रहे हैं। जैन संस्कृति जैसी सर्वांगीण है, उसके दर्शन, साहित्य, कला और विज्ञान जैसे सुविकसित, उत्कृष्ट और व्यापक हैं, उनके विशेषाध्ययन, शोध खोज एवं अनुसंधान के लिए एक केन्द्रीय जैन विश्व विद्यालय का होना अत्यन्त आवश्यक था। ऐसे एक विश्व विद्यालय की स्थापना के लिए कई बार कुछ आन्दोलन भी चले, लगभग २५—३० वर्ष पूर्व वर्णत्रय-पूज्य पं० गणेश प्रसाद जी वर्णी, स्व० बाबा भागीरथ जी वर्णी तथा स्व० पं० दीपचंद्र जी वर्णी ने जैन विश्वविद्यालय की स्थापना का बीड़ा उठाया था, किन्तु समाज से उपयुक्त सहायता सहयोग न मिलने के कारण असफल रहे। भारतवर्ष के विद्यमान विश्व-विद्यालयों में भी जैनाध्ययन की कोई साधन सुविधाएं नहीं हैं। बनारस के जैन कलचरल रिसर्च इन्स्टीटयूट द्वारा श्वेताम्बर बन्धु गत दो तीन वर्षों से इनमें से कुछ विश्व विद्यालयों में जैन रिसर्च फेलोशिप स्थापित करने की ओर प्रयत्न शील हैं, किन्तु इस कार्य में उन्हें दिगम्बर समाज का प्रायः कोई सहयोग प्राप्त नहीं है। ज्ञानोदय मासिक में एकाध बार इस योजना का समर्थन तो किया गया, किन्तु सेठ शान्ति प्रसाद जी द्वारा साहित्यिक कार्यों के लिए स्थापित ट्रस्ट के प्रबंधकों ने भी कोई सक्रिय उपक्रम इस दशा में अभी तक नहीं किया, यद्यपि यह उनके लिए सहज था। कोई ऐसा उत्कृष्ट जैन कालिज भी विद्यमान नहीं है जिसमें जैनालॉजी का एक पृथक विभाग हो और जैनाध्ययन की समुचित साधन सुविधाएं हों। जैन कालिजों और स्कूलों की संख्या भी कुछ कम नहीं है, किन्तु वे नाम मात्र के लिए ही जैन हैं, अर्थात् वे केवल इसी कारण जैन नामांकित हैं क्योंकि वे जैनों द्वारा उन्हीं के धन से स्थापित और उन्हीं के उद्योग से संचालित हैं। किन्तु उनके पाठ्यक्रम में जैन साहित्य और संस्कृति का किसी प्रकार का कोई स्थान नहीं है। इसके अध्ययन अध्यापन के लिए उनमें कोई साधन सुविधाएं नहीं हैं। उनके पुस्तकालयों में बिना मूल्य, भेंट,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

या दानादि द्वारा जैन पुस्तकें और पत्र पत्रिकाएं भले ही आ जांय किन्तु उनके ऊपर कुछ व्यय करने की अथवा उनका संग्रह करने की कोई प्रवृत्ति नहीं है और न कोई आवश्यकता ही समझी जाती है। उनमें अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की जैन साहित्यादि के अध्ययन में अभिरुचि और आकर्षण तो तब हो जबकि उनके अध्यापकों में से भी कुछ की हो। यही दशा जैन छात्रावासों—जैन बोर्डिंग हाउसों और होस्टलों की है।

यह ठीक है कि वर्तमान युग धर्म स्वातन्त्र्य और असाम्प्रदायिकता का है अतएव सार्वजनिक लौकिक शिक्षा में किसी धर्म अथवा सम्प्रदाय विशेष की धार्मिक शिक्षा का सम्मिलित किया जाना उचित नहीं समझा जाता, वरन् न्याय विधान द्वारा उत्तरोत्तर वर्जित किया जा रहा है। किन्तु किसी संस्कृति और तत्सम्बंधित लोकोपयोगी साहित्य एवं विचार धारा का अध्ययन साम्प्रदायिक अथवा धार्मिक कदापि नहीं कहला सकता। जब वेदों, उपनिषदों, हिन्दू धर्म शास्त्रों और पुराणों का, वैदिक परम्परा के न्याय, मीमांसा, सांख्य वैशेषिक आदि षट् दर्शनों का, निर्गुण सगुण सम्प्रदायों और मध्यकाल के विभिन्न सन्तमतों का तथा धर्म सुधार आन्दोलनों का, बौद्ध दर्शन और संस्कृति का, इस्लाम के इतिहास और परम्परा का, क्रिश्चियन थियोलाजी का अध्ययन अध्यापन जो कि भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्वीकृत है, साम्प्रदायिक धार्मिक नहीं समझा जाता तो फिर जैनोलाजी का, जैन संस्कृति—दर्शन, साहित्य और इतिहास का अध्ययन अध्यापन साम्प्रदायिक अथवा धार्मिक क्यों समझा जाय और भारत के सांस्कृतिक अध्ययन में उसी की उपेक्षा क्यों की जाय। अवश्य ही उसे अनिवार्य विषय न बनाकर ऐच्छिक या वैकल्पिक विषय बनाया जा सकता है।

उपरोक्त जैन कालिजों, स्कूलों, छात्रालयों आदि के लिए जिन स्थानों में वे संस्थाएं स्थित होती है, उनकी स्थानीय जैन समाज से तो भरसक द्रव्य एकत्रित किया ही जाता है, देश के अन्य विभिन्न प्रान्तों और स्थानों की जैन समाज से भी पर्याप्त द्रव्य संग्रह किया जाता है। इस द्रव्य प्राप्ति के लिए समाज से जो लिखित अथवा मौखिक अपीलें की जाती हैं उनमें सर्वाधिक बल इसी बात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर दिया जाता है कि विकसित जैन संस्था जैनत्व की प्रभावना के लिए ही विद्यमान है, जैन धर्म, संस्कृति और साहित्य की अथक सेवा करना ही उनका व्रत है अतः जैनों का कर्तव्य है कि उसके लिए यथा शक्य द्रव्य दान देकर विद्या दान का पुण्य लूटें। किन्तु यह सब वाग्जाल और धोका है, इन संस्थाओं में से प्रायः किसी ने भी अब तक कम से कम अपनी ओर से जैन साहित्य और संस्कृति की कुछ भी सेवा नहीं की है। उनसे जैन साहित्य के लौकिक ग्रंथ के भी पठन पाठन और प्रकाशन को कोई प्रोत्साहन नहीं मिला है।

जो जैन संस्कृत विद्यालय हैं उनसे भी जैन साहित्य के संवर्धन में विशेष सहायता नहीं मिल रही है, उनके कुछ फुटकर स्नातक व्यक्तिगत रूप से जैन साहित्य की अवश्य ही प्रशंसनीय सेवा कर रहे हैं, पर वह अति सीमित और एकांगी ही है। जैन समाज में कई एक परीक्षा बोर्ड हैं, किन्तु उनके पठन क्रम बहुत सीमित और रूढ़ हैं, उनके वैकल्पिक विषय अत्यल्प संख्यक हैं, इतिहास पुरातत्त्व और संस्कृति जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय भी उनमें सम्मिलित नहीं हैं, तुलनात्मक अध्ययन की कोई व्यवस्था नहीं है। इसके अति रिक्त उनके अधिकारीगण जो जैसी पुस्तकें उपलब्ध हैं उन्हीं को अपने पठनक्रम में रखकर संतोष कर लेते हैं। पठनक्रम के उपयुक्त नवीन पुस्तकों के निर्माण कराने में वे प्रवृत्त ही नहीं होते।

जैन साहित्य का बाह्य जैनेतर समाज में सम्यक् प्रचार करने की जैनों की दिली प्रवृत्ति ही प्रतीत नहीं होती अतएव उसके लिए उपयुक्त साधन भी नहीं जुटाये जाते। कितना ही सुन्दर, लोकोपयोगी या लोकरंजक तथा प्रमाणीक प्रकाशन हो, सार्वजनिक पत्र पत्रिकाओं में उसके विज्ञापन, समालोचनाएं आदि निकलवाने की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। अजैन उसे एक साम्प्रदायिक रचना मान कर उपेक्षणीय समझते हैं और जैन उसे दूसरों को दिखाने की आवश्यकता नहीं समझते।

देश में यत्र तत्र अनेक सार्वजनिक जैन पुस्तकालय एवं वाचनालय भी खुलते जा रहे हैं, किन्तु उनमें भी जैन कालिजों और स्कूलों आदि की भाँ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं को क्रय करके संग्रह करने की आवश्कता नहीं समझी जाती, बल्कि सस्ते, जासूसी, ऐयारी, घटना प्रधान अथवा रोमांचक उपन्यास कहानियों के ही संग्रह को विशेष महत्त्व दिया जाता है।

जैन साहित्य के स्वरूप का सम्यक् प्रचार न होने से नवयुवक विद्यार्थी वर्ग तथा पठनाभिरुचि रखने वाले वयस्क व्यक्ति भी पहले से ही यह मान बैठे हैं कि पठन क्रमान्तर्गत विषयों की दृष्टि से, लौकिक ज्ञानवर्द्धन की दृष्टि से, जीवन सम्बंधी दैनिक आवश्यकताओं की दृष्टि से अथवा मनोरंजन की दृष्टि से जैन साहित्य एक निरर्थक-बेकार की वस्तु है, उसका यदि कोई मूल्य है तो केवल धार्मिक है सो भी श्रद्धालुओं के लिये ही। और एक औसत व्यक्ति वास्तव में इस दृष्टि को कोई विशेष महत्त्व नहीं देता, जो कुछ महत्त्व देता है वह रिवाजन या लिहाजन अथवा नाम और पुण्य दोनों एक साथ कमाने की ही नियत से देता है। किन्तु वास्तविकता तो यह है कि जैन साहित्य में किसी भी अन्य साम्प्रदायिक साहित्य की अपेक्षा-और पुरातन भारतीय साहित्य का अधिकांश किसी न किसी सम्प्रदाय से ही सम्बन्धित है—उपरोक्त लोकतत्त्वों का बाहुल्य ही पाया जाता है। उसकी सहायता से पठनक्रमान्तर्गत अधिकांश विषयों को भी संवर्द्धित किया जा सकता है। यहां तक कि उसके गूढ़ सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक मन्तव्यों की भी कैसी समयानुसारी, लौकिक एवं व्यावहार्य व्याख्या की जा सकती है यह बात भारतीय ज्ञानपीठ, काशी से हाल में ही प्रकाशित तथा काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय के प्रोफेसर महेन्द्रकुमार जी द्वारा लिखित तत्त्वार्थवृत्ति की प्रस्तावना में 'सम्यग्दर्शन' के विवेचन से सहज अनुमानित की जा सकती है। किन्तु जैन साहित्य के लोकरूप का अभी प्रचार ही नहीं हुआ, यद्यपि वर्तमान जैन पत्र-पत्रिकाओं तथा नव प्रकाशित जैन साहित्य में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं, पर उसे खरीद कर पढ़नेवालों का अभाव है। जैन समाज में अनेकों श्रीमान ऐसे हैं जिनके यहाँ बहुभाग जैन पत्र-पत्रिकाएं पहुंचती रहती हैं प्रकाशित जैन पुस्तकें भी पर्याप्त मात्रा में आ जाती हैं, उन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सबका मूल्य प्रायः धर्मादे की रकम में से दे दिया जाता है । किंतु इन पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं में से अल्पांश का भी कोई उपयोग वे श्रीमान अथवा उनके परिवार का कोई व्यक्ति शायद ही करता हो। ये चीज़ें प्रायः फालतूमद और रद्दी की टोकरी के उपयुक्त समझ ली जाती हैं—उन्हें विना देखे और पढ़े ही, हज़ार हज़ार, और दो दो हज़ार की जैन जनसंख्या वाले स्थानों में भी दो चार से अधिक ऐसे व्यक्ति न मिलेंगे जो मूल्य देकर जैन पत्र पत्रिकाएं और जैन साहित्य मंगाते हों। कितनी भी उच्च कोटि की पुस्तक हो अधिक से अधिक एक हज़ार छपती हैं और वही संस्करण वर्षों के लिये पर्याप्त होता है, दूसरे संस्करण की नौबत ही नहीं आती। अत्यन्त उच्चकोटि की पत्रिकाएं निकल रही हैं किंतु पांच छः सौ से अधिक किसी की भी ग्राहक संख्या शायद नहीं है। साप्ताहिक पत्रों में से दो एक की एक हजार से कुछ ऊपर भले ही हो। इसमें दोष प्रकाशकों और पत्र सम्पादकों आदि का भी है। वे स्वयं अपने साहित्य और पत्रों के व्यापक प्रचार के लिये प्रायः कुछ भी सुव्यवस्थित उद्योग नहीं करते।

इन्हीं सब कारणों से जैन पुस्तक प्रकाशन, जैन पुस्तक विक्रय तथा जैन सामयिक पत्रों का व्यवसाय बहुत ही कम सफल और लाभदायक हो पाता है। अतएव व्यावसायिक जैन प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता और पत्रकार अत्यल्प संख्यक हैं।

जैन लेखकों की दशा:—जैन लेखकों की दशा और भी बुरी है जैन समाज में विद्वानो, और अच्छे उच्चकोटि के लेखकों की भी को कमी नहीं है, किंतु उपरोक्त परिस्थितियों में कोई भी जैन विद्वान या लेख निराकुलता पूर्वक साहित्य साधना नहीं कर सकता और न उसके द्वार अपना और अपने परिवार का निर्वाह ही कर सकता है। अधिकतर लेखक अपनी कृतियों के लिए किसी प्रकार के पारिश्रमिक को प्राप्त करने का विच ही नहीं करते, और यदि कोई कोई वैसा विचार भी रखते हैं और उसकी आ श्यकता अनुभव करते हैं तो वे उन्हें प्रकट करने का अथवा पारिश्रमिक की मां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करते का साहस ही नहीं रखते, वैसा करने में बहुधा लज्जा और संकोच अनुभव करते हैं, परिणाम स्वरूप भले ही वह अपनी साहित्य साधना को त्याग दें, गौण अथवा शिथिल कर दें। बहुभाग जैन लेखक अपनी साहित्यिक अभिरुचि, साहित्य अथवा समाज सेवा की लगन या धार्मिक श्रद्धा के वश होकर अथवा केवल स्वान्तः सुखाय ही लिखते हैं। उनकी साहित्य साधना में कोई आर्थिक प्रयोजन प्रायः रहता ही नहीं, विशेषकर इसी कारण से क्योंकि वह दुष्कर है, लोकमत उसके अनुकूल नहीं है और क्योंकि वैसा करने में अपनी मान हानि के सिवाय और कोई लाभ नहीं दीखता। इन जैन लेखकों का कोई संगठन नहीं है, कोई आवाज़ नहीं है। वे जो कुछ लिखते हैं उसके लिये बदले में कुछ इच्छा या आकांक्षा न रखते हुए भी उसका प्रकाशन कराने में भी बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। एक व्यक्ति अपने जीवकोपार्जन के प्रयत्न को बाधा पहुंचा कर अथवा उसके समय में से ही जो कुछ अवकाश मिले उसमें तथा अपने स्वास्थ्य की परवाह न करके और आराम को तिलाँजली देकर, स्वयं ही सर्व साधन सामग्री जुटाये और परिश्रम तथा आवश्यक द्रव्यादि व्यय करके कोई पुस्तक लेखादि तैयार करे और फिर सामर्थ्य हो तो स्वयं ही उसे प्रकाशित भी कराये तथा हो सके तो अमूल्य ही वितरण भी करदे, वर्नः अपनी पांडुलिपि को देख देख कर खुश हुआ करे। अथवा वह किसी व्यवसायिक प्रकाशक या साहित्यिक संस्था, किसी धार्मिक या सामाजिक सभा सोसाइटी, अथवा किसी धनी मित्र अथवा रिश्तेदार की खुशामद करे। सम्भव है कि इस प्रकार उसकी रचना प्रकाशित हो जाय और यह भी सम्भव है कि सर्व प्रयत्नों के बावजूद भी वह प्रकाशित न हो। प्रकाशित होने पर उसे पुरस्कार या पारिश्रमिक मिलने की बात तो दूर है, यदि प्रोत्साहन और प्रशंसा के दो शब्द तथा सूखा धन्यवाद मिल जाय तो बहुत है। जैन पत्रकार किसी भी लेखक के लेख का मूल्य, चाहे वह लेख किसी कोटि का क्यों न हो, अधिक से अधिक अपने पत्र के उस अंक की जिसमें कि उक्त लेख प्रकाशित हुआ है, एक प्रति समझते हैं और उसे भेजकर भी बेचारे लेखक के ऊपर एक प्रकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का एहसान ही करते हैं। चाहे कितना ही महत्त्व पूर्ण लेख हो उसकी अतिरिक्त प्रतियाँ लेखक को प्रदान करने की तो प्रथा ही नहीं है, लेख की पहुंच या स्वीकृति की सूचना देने अथवा अस्वीकृत होने पर उसे लौटा देने की तो आवश्यकता ही नहीं समझी जाती। आर्थिक प्रतिदान की आशा न होने से लेखक व्यय साध्य सामग्री के संकलन एवं उपयोग द्वारा अपनी रचनाओं को यथोचित प्रमाणीक, उपयोगी एवं आकर्षक भी नहीं बना पाता। जैन समाज में साहित्य की शोध, खोज एवं निर्माण करने कराने वाली कई एक अच्छी संस्थाएं भी विद्यमान हैं जो प्रायः सार्वजनिक अथवा सामाजिक द्रव्य की सहायता से संचालित हो रही हैं और जिनके संचालन में कोई आर्थिक अथवा व्यवसायिक प्रयोजन नहीं है। किन्तु क्योंकि वे स्वयं इस दृष्टि से शून्य सी हैं अतः जिन विद्वानों से वे साहित्य सृजन कराती हैं उन्हें भी स्वतः इस दृष्टि से शून्य ही मान लेती हैं। ऐसी अवस्था में सुलेखकों का पर्याप्त संख्या में सद्भाव होना और उच्च कोटि के साहित्य की सृष्टि करना दुष्कर व दुस्साध्य है, यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

तथापि जब प्रकाशित हो चुके तथा हो रहे जैन साहित्य पर दृष्टि जाती है तो वह किसी भी अन्य भारतीय सम्प्रदाय अथवा समाज के साहित्य की अपेक्षा मात्रा में भी कम नहीं है और किसी अंश में भी निम्नतर कोटि का नहीं है तथा लोकतत्त्व की प्रचुरता भी उसमें अपेक्षाकृत पर्याप्त मात्रा में है। इसका कारण यह है कि जैन समाज में साक्षरों और शिक्षितों की संख्या एक पारसी समाज को छोड़ कर सर्वाधिक है, और उसकी सामान्य दशा भी इतनी समृद्ध अवश्य है कि नितान्त भूखे और दरिद्री इसमें बहुत थोड़े हैं। धार्मिक साहित्य सृजन अधिकतर धार्मिक भावना के वश ही किया और कराया जाता है। व्यवसायिक प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं के अतिरिक्त अनेक अव्यवसायिक साहित्यिक संस्थाएं, ग्रन्थ मालाएं, ट्रस्ट आदि तथा स्थानीय पंचायतें, धार्मिक सामाजिक सभा समितियें और अनेक स्त्री पुरुष जो ज्ञानदान वा शास्त्रदान को एक आवश्यक धार्मिक कृत्य समझते हैं, व्यक्तिगत रूप से भी पुस्तकें प्रका-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शित करते कराते रहते हैं। कुछ उच्च कोटि की संस्थाओं में तो सवैतनिक विद्वान भी साहित्यिक शोध खोज एवं निर्माण कार्य करने लगे हैं। कभी-कभी पुरस्कार अथवा पारिश्रमिक देकर ठेके पर भी ये कार्य कराये जाने लगे हैं—यद्यपि ऐसे दोनों प्रकार के उदाहरण अभी अत्यल्प संख्यक ही हैं। कितने ही लेखक श्रेष्ठ विद्वान होने के साथ-साथ सुसमृद्ध भी हैं और वे निस्वार्थ भाव से उच्च कोटि के साहित्य सृजन में पर्याप्त योगदान देते रहे हैं। ऐसे भी कितने ही उदाहरण हैं जबकि उक्त विद्वानों ने स्वयं लिखा, अच्छा लिखा और बहुत लिखा और फिर अपनी सर्व या अधिकाँश कृतियों को स्वद्रव्य से स्वयं ही प्रकाशित करवाया अथवा अपने प्रभाव से एक वा अधिक धनी व्यक्तियों द्वारा प्रकाशित करवाया। त्यागी साधु महात्माओं के स्वप्रयत्न अथवा प्रभाव और प्रेरणा से भी बहुत सा साहित्य निर्मित और प्रकाशित होता रहता है।

वास्तव में जैन समाज प्रधानतया दिगम्बर और श्वेताम्बर नामक दो सम्प्रदायों में विभक्त है। लेखकों और प्रकाशकों आदि की जिस दशा का वर्णन ऊपर किया गया है वह यद्यपि सामान्यतः समस्त जैनसमाज पर लागू होती है तथापि ये दोष दिगम्बर समाज में विशेष रूप से बढ़े चढ़े मिलते हैं। श्वेताम्बर जैनसमाज में ग्रन्थ प्रकाशन व्यवस्था अपेक्षाकृत अधिक सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित है। उनके विद्वानों और लेखकों की दशा भी पारिश्रमिक, पुरस्कारादिक की दृष्टि से बहुत अच्छी है। स्व साहित्य का बाह्य समाज में प्रचार करने की श्रेयस्कर प्रवृत्ति भी उनमें रही है। उनका साधु समाज साहित्यिक कार्य में यथाशक्य योग दान देता है किन्तु उनके साथ जो कमी है वह यह है कि इन बातों की ओर से श्वेताम्बर गृहस्थ, दिगम्बर गृहस्थ की अपेक्षा कहीं अधिक उदासीन एवं अयोग्य हैं। उनमें सुविज्ञ विद्वान् एवं सुलेखक संख्या में अत्यल्प हैं, अतएव साहित्यिक संस्थाओं, निर्मित साहित्य की उत्कृष्टता एवं विपुलता तथा सामयिक पत्र पत्रिकाओं की दृष्टि से दिगम्बर समाज श्वेताम्बर समाज की अपेक्षा कुछ आगे ही है।

अस्तु, यदि जैन समाज को समय की गति के साथ-साथ सजीव रूप में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्नति पथ पर अग्रसर होना है, सभ्य संसार की दृष्टि में उसे अपने आप को ऊंचा उठाना है और स्वयं उस ऊंचाई के उपयुक्त बनना है तो उसे अपने साहित्य को प्रगतिशील एवं समुन्नत बनाना ही होगा, अपने प्राचीन साहित्य रत्नों को ढंग से संसार के सामने प्रस्तुत करके उनका तथा उनकी जननी जैन संस्कृति का महत्त्व प्रदर्शित करना और मूल्य अंकवाना होगा, लोक हितार्थ एवं ज्ञान वर्द्धन के लिए उसका उपयुक्त सदुपयोग कराना होगा, उसका अधिकाधिक प्रचार एवं प्रसार करना होगा, समाज के स्त्री पुरुष आबालवृद्ध में सर्व व्यापी पठनाभिरुचि–पुस्तक आदि क्रय करके पढ़ने और अध्ययन करने की प्रवृत्ति जागृत करनी होगी, जो व्यक्ति तनिक भी प्रतिभा सम्पन्न एवं साहित्यिक अभिरुचि वाला हो उसे सर्व प्रकार प्रोत्साहन, जिसमें समुचित पुरस्कार पारिश्रमिक अत्यावश्यक है, प्रदान करके उस व्यक्ति में जो सर्वोत्तम तथ्य है उसे साहित्य के रूप में संसार को प्रतिदान कराने की सुचारु योजना करनी होगी और साहित्यिक अनुसंधान, निर्माण एवं प्रकाशन कर्त्री संस्थाओं, परीक्षा बोर्डों, विद्या केन्द्रों, सामयिक पत्र पत्रिकाओं तथा व्यक्तिगत विद्वानों और लेखकों का केन्द्रीकरण नहीं तो कम से कम एक सूत्रीकरण करके उन्हें सुव्यवस्थित रूप से सुसंगठित करना होगा, साहित्यगत अथवा संस्कृतिजन्य विविध विषयों का सुचारु विभाजन करके विषय विशेषों में विशेषज्ञता प्राप्ति के प्रयत्नों को प्रोत्साहन देना भी वाञ्छनीय होगा। यह सब किये बिना इस द्रुत वेग से प्रगतिशील संघर्ष प्रधान युग में जबकि न किसी व्यक्ति को अनावश्यक अवकाश है, न व्यर्थ के शौक पूरा करने की रुचि और साधन हैं और न धार्मिक श्रद्धा जीवन का कोई वास्तविक महत्वपूर्ण अंग रहती जाती है, प्रत्युत परिगुणित होती हुई मानवी इच्छाएं, वासनाएं और आवश्यकताएं तथा जीविकोपार्जन की जटिल समस्या एवं स्वार्थ परता प्रत्येक व्यक्ति का गला बेतरह दबाये हुए हैं, किसी समाज और उस समाज की संस्कृति के लिए, चाहे वह कितनी भी महत्व पूर्ण क्यों न हो, उन्नति पथ पर अग्रसर होते रहना तो दूर की बात है, जीवित रहना भी अत्यन्त कठिन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसी परिस्थितियों में, प्रकाशित साहित्य का एक प्रकार का लेखा-जोखा और विवरण इसलिये परम आवश्यक हो जाता है कि इसके द्वारा जहां एक ओर लोक की तत्सम्बंधी अनभिज्ञता दूर होकर उसे समाज विशेष अथवा वर्ग विशेष द्वारा किये गये योगदान का परिचय प्राप्त हो जाता है, राष्ट्र अथवा विश्व के भी साहित्य में उसका उचित स्थान एवं प्रगति निश्चित करने में सुभीता हो जाता है, तथा उसके समुचित सदुपयोग द्वारा मानव की ज्ञानवृद्धि होती है उसकी ज्ञान साधना को नवीन साधन सहायता आदि मिलती है, वहां दूसरी ओर तत्तद समाज को भी यह ज्ञात हो जाता है कि उसके साहित्य की क्या स्थिति है, उसकी प्रगति की क्या अवस्था है, तथा उनमें कहाँ क्या त्रुटियें और दोष हैं, उसकी क्या आवश्यकतायें हैं, जिनसे कि उक्त दोषों का निवारण और आवश्यकताओं की पूर्ती का प्रयत्न किया जा सके। विद्वानों अन्वेषकों, पाठकों, शिक्षकों और संग्रह कर्ताओं, लेखकों और प्रकाशकों सभी को इस प्रकार के विवरण से अपने अपने कार्य में पर्याप्त सुविधा हो जाती है। दूसरे, जैन साहित्य प्रकाशन की जिस दुरवस्था का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है, उसकी अवस्थिति में सभी प्रकाशित जैन पुस्तकों का परिचय किसी भी व्यक्ति को सरलता से प्राप्त होना अत्यन्त कठिन है। अतः प्रकाशित जैन पुस्तकों के एक यथासंभव पूर्ण तथा संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण की आवश्यता एवं उपयोगिता स्पष्ट ही है। श्वेताम्बर जैन साहित्य के सम्बंध में ऐसी दो-एक सूचियें पहिले ही प्रकाशित हो चुकी हैं, यथा अध्यात्म ज्ञान भंडार प्रसारक मंडल, पादरा (गुजरात) द्वारा प्रकाशित 'मुद्रित जैन श्वेताम्बर ग्रन्थ नामावली', तथा श्री आत्मानन्द जैन सभा, भावनगर द्वारा प्रकाशित 'श्री जैन श्वेताम्बर ग्रन्थ गाइड' जिनमें कि उक्त समाज की मुद्रित प्रकाशित पुस्तकों का विषयानुसार परिचय दिया गया है। इन दोनों सूचियों में प्रथम सूची अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, प्रसिद्ध श्वेताम्बर पुस्तक विक्रेता—सरस्वती पुस्तक भंडार, हाथीखाना, रतन पोल, अहमदाबाद के सूची पत्र में प्रायः सब ही प्रकाशित श्वेताम्बर जैन पुस्तकें दी हुई हैं। इन सूचियों की अवस्थिति में तथा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शोधन एवं समय के अभाव के कारण प्रस्तुत पुस्तक में श्वेताम्बर साहित्य को सम्मिलित नहीं किया गया और प्रधानतया दिगम्बर समाज की ही मुद्रित प्रकाशित पुस्तकों का विवरण दिया गया है।

मुद्रण कला का इतिहास—प्राचीन साहित्य की खोज करने वाले प्रसिद्ध विद्वान काका कालेलकर जी के शब्दों में "यह बात बिल्कुल सही है कि जैसे लेखन कला के प्रचार से ज्ञान प्राप्ति का मार्ग सुलभ हुआ है वैसे ही छापने की कला के प्रचार से यह मार्ग सहस्त्र गुना अधिक सुलभ और विस्तृत हो गया है।" × जहां तक लेखन कला के प्रारंभ का प्रश्न है वह सर्व प्रथम भारतवर्ष में ही हुआ प्रतीत होता है। जैन अनुश्रुति के अनुसार कर्मयुग के आदि में आदि पुरुष महा मानव ऋषभदेव ने अपनी प्रिय पुत्री ब्राह्मी के उपलक्ष से सर्व प्रथम मानवी लिपि का आविष्कार किया था। सिन्धु पुरातत्त्व में उपलब्ध मुद्रालेख भी पांच छः हजार वर्ष प्राचीन हैं और उनसे अधिक प्राचीन लेख संसार के किसी अन्य भाग में अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं। लेखन-कला के सर्व प्राचीन उदाहरण पाषाण आदि पर ही अंकित मिलते हैं। तत्पश्चात् ताम्रपत्र आदि धात्वी साधनों का भी उपयोग होने लगा। फिर ताड़पत्र, भुर्जपत्र आदि वानस्पतिक पत्रों पर लिखाई आरंभ हुई। अन्ततः सन् ईस्वी प्रथम सहस्त्राब्द के मध्य के लगभग कागज का प्रयोग आरंभ हुआ।

छापे खाने का सर्व प्रथम आविष्कार चीन देश में हुआ, और सर्व प्रथम ज्ञात मुद्रित चीनी पुस्तक की मुद्रण तिथि ११ मई सन् ८६८ ई० है। इस पुस्तक की छपाई ब्लाक प्रिन्टिग में हुई थी, किन्तु अलग अलग बने टाइपों से छापने की कला का आविष्कार चीन देश में ही पो० शेंग नामक व्यक्ति के द्वारा सन् १०४१–४९ के मध्य हुआ। यूरोप में मुद्रण का प्रारंभ जर्मनी देश के निवासी जॉन गटेनबर्ग नामक व्यक्ति ने १५ वीं शताब्दी ई० के मध्य में किया था।

× प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० १६७,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारतवर्ष में छापेखाने का प्रथम प्रवेश पुर्तगाली उपनिवेश गोश्रा के सेंट पॉल कालिज में, जेसुइट पादरियों की अध्यक्षता में जुआन बुस्टामान्टे नामक मुद्रक द्वारा सन् १५५६ ई० में हुआ। और भारत में मुद्रित सर्व प्रथम पुस्तक लातीनी भाषा की 'कनक्लूसोस फिलोसोफिकास' नामक दार्शनिक पुस्तक थी जो उसी वर्ष उक्त छापेखाने में छपी थी। यह पुस्तक तथा इसके बाद छपने वाली दूसरी पुस्तक भी अब उपलब्ध नहीं हैं। भारतवर्ष में मुद्रित सर्व प्रथम उपलब्ध पुस्तक उसी मुद्रणालय में सन् १५६० में छपी 'कोम्पेंदिपु स्पिरितु आलद व्हिद क्रिस्तॉं' है जो न्यूयार्क (अमेरिका) के राष्ट्रीय सार्वजनिक पुस्तकालय में विद्यमान है।

इसके कुछ काल पश्चात् गोश्रा प्रदेश के अन्तर्गत ही रायतूर नामक स्थान के सेंट इग्नेशस कालिज में एक अन्य मुद्रणालय चालू हुआ जिसमें भारतीय भाषाओं में भी पुस्तकें छपने लगीं। इस छापेखाने में मुद्रित भारतीय भाषा की सर्व प्रथम ज्ञात पुस्तक फादर थॉमस स्टीफेन्स कृत 'क्राइस्ट पुराण' थी। यह पुस्तक मराठी भाषा में ओवी नामक छन्द विशेष में लिखी गई थी किन्तु रोमन लिपि में थी, और यह सन् १६१६ ई० में मुद्रित हुई थी। चालीस वर्ष के बीच में इसके क्रमशः तीन संस्करण प्रकाशित हुए थे, किन्तु उनकी एक भी प्रति आज उपलब्ध नहीं है, यद्यपि उसकी रोमन, कन्नडी, देवनागरी लिपियों में निबद्ध अनेक हस्तलिखित प्रतियां विद्यमान हैं उसी छापेखाने से सन् १६२२ में मुद्रित 'ख्रिस्ती धर्म सिद्धान्त' नामक मराठी भाषा और रोमन लिपि की पुस्तक आज भी उपलब्ध है। इसके उपरान्त डेनिश मिशनरियों और फिर अंग्रेज पादारियों ने इस दिशा में प्रयत्नशील होकर छापेखाने के प्रचार में योग दिया।

देवनागरी अक्षरों में ब्लाक प्रिंटिंग से छपा सर्व प्रथम लेख सन् १६७८ ई० का है। सन् १७९६ ई० में लियोग्रफी का आविष्कार हुआ। उनमें टाइप बनाने की कठिनाई न होने के कारण शीघ्र ही उसका अत्यधिक प्रचार हो गया और १९ वीं शताब्दी में तो देशी भाषाओं के अनेक प्राचीन ग्रंथ लिथो से छपे। १८ वीं शताब्दी के अन्त के लगभग ही बम्बई और बंगाल में सर्व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम एक-एक मुद्रणालय स्थापित हुआ। भारतीय मुद्रणकला के इतिहास में सीरामपुर (वंगाल) के मुद्रणालय, मुद्रणकला विशारद सर चार्लस विल्किन्स, उनके सहयोगी शिष्य पंचानन और ग्रहस्थ मिशनरी डा० विलियम कैरी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। उक्त सीरामपुर छापेखाने से १९ वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं में बाइविल के अनुवाद धड़ाधड़ प्रकाशित हुए। धीरे-धीरे भारतीय पुस्तकें भी देशी भाषाओं में छपने लगी। नागरी लिपि की सर्व प्रथम मुद्रित पुस्तकें कुरियर प्रेस, वम्बई द्वारा प्रकाशित 'विदुर नीति' (१८२३ ई०) और 'सिंहासन वत्तीसी' (१८२४ ई०) हैं, किन्तु इन दोनों की भाषा मराठी है। हिन्दी भाषा और नागरी लिपि की सर्व प्रथम पुस्तक इंग्लैंड में छपी थी और १९ वीं शताब्दी के मध्य से वे भारतवर्ष में भी छपने लगीं।

जैन प्रकाशन का इतिहास—जैन साहित्य में हिन्दी भाषा और नागरी लिपि की सर्व प्रथम पुस्तक प्रसिद्ध दिगम्बर विद्वान पं० बनारसीदास (१७ वीं शताब्दी) कृत 'साधु वन्दना' थी जो सन् १८५० में आगरा नगर में छपी थी। अतएव जैन पुस्तक साहित्य का अथवा उसके मुद्रण व प्रकाशन का प्रारम्भ सन् १८५० ई० से ही मानना उचित है।

वैसे तो, जहाँ तक पाश्चात्य जगत का प्रश्न है, यूरोपीय विद्वानों और प्राच्यविदों ने तो १९ शताब्दी के प्रारंभ से जैन धर्म और संस्कृति में दिलचस्पी लेनी प्रारंभ करदी थी। सन् १७९९ ई० में लेफ्टिनेन्ट विल्फ्रेड का 'त्रिलोक दर्पण' नामक जैन ग्रंथ की एक प्रति हाथ लग गई। उनके स्वयं के कथनानुसार ब्राह्मण पंडितों ने साम्प्रदायिक विद्वेष के कारण उस पर कुछ भी प्रकाश डालने से साफ इन्कार कर दिया। × अतएव विल्फ्रेड साहव स्वयं ही उस ग्रन्थ पर से जैनो के सम्बन्ध में जो कुछ जान सके वह उन्होंने 'एशियाटिक रिसर्चेज' भाग तीन पृष्ठ १९२ पर प्रकाशित कर दिया। विदेशी भ्रमणार्थियों

× विलफ्रेड आन दी एन्टीपेथी आफ दी ब्राह्मिन्स टू दी जेन्स—एशियाटिक रिसर्चेज भा० ३ पृ० ५१.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के द्वारा किये उल्लेखों को छोड़कर पाश्चात्य विद्वानों द्वारा लिखित सर्व प्रथम जैन सम्वन्वी रचना यही है। सन् १८०६ में कर्नल मेकेन्जी का निवन्ध 'ऐन एकाउन्ट आफ दी जेन्स' और एच० टी० कोलब्रुक का निवन्ध 'आबजरवेशन्स आन दी जेन्स' कलकत्ते के एशियाटिक रिसर्चेज (जिल्द ६, पृ० २४३-२८६) में प्रकाशित हुए। सन् १८२५ में पादरी जे० ए० डुवाइ के संस्मरण पेरिस (फ्रान्स) से प्रकाशित हुए जिनमें जैन धर्म और जैन जाति के विषय में वहुत कुछ लिखा है उसी वर्ष ए० स्टरलिंग ने 'उड़ीसा की जैन गुफाओं' पर अपना लेख प्रकाशित किया। सन् १८२७ में फ्रेन्कलिन, हैमिल्टन, डेलमेन आदि विद्वानों ने जैन विषयक लेख लिखे। तदुपरान्त उक्त शताब्दी के मध्य पर्यन्त एच० एच० विल्सन, जेम्स टाड, जे० स्टीवेन्सन, जे० प्रिन्सेप, जे० फर्गुसन आदि विद्वानों ने अपने लेखों द्वारा जैन सम्वंधी लोक ज्ञान की अभिवृद्धि की। किन्तु जैनधर्म संस्कृति साहित्य पुरातत्त्व और इतिहास पर व्यवस्थित शोध खोज और साहित्य सृजन सन् १८५० के पश्चात् ही प्रारंभ हुए और इस दिशा में पिशेल, होर्नले, फर्लांग, पुल्ले, ब्लूलर, जैकोवी, वेवर, लेसन, फलीट, राइस द्वय, टामस, लूडर्स, वर्गेस, कीलहार्न, गिरनाट, स्मिथ, हुल्टज्श, क्लैट, ओल्डन वर्ग, किटेल, कनिंगहम हर्टले, मोनियर, विलियम्स, विन्टर निट्ज, पीटरसन, ल्यूमेन आदि विभिन्न जातीय प्रसिद्ध यूरोपिय प्राच्यविदों तथा भगवान लाल इन्द्र जी आर० जी० भंडारकर, भाऊदजी, के० वी० पाठक, ध्रुव, तैलंग, राजेन्द्र लाल मित्र, सतीश चन्द्र विद्याभूषण, टी० के० लड्डू, के० पी० जायसवाल आदि प्रख्यात भारतीय विद्वानों ने प्रशंसनीय कार्य किया। किन्तु इस शताब्दी के प्रारंभ से ही इस कार्य में कुछ शिथिलता आने लगी। प्रथम विश्व युद्ध के समय से तो उपरोक्त प्रकार के स्वतंत्र प्रकांड यूरोपीय विद्वानों का इस क्षेत्र में प्रायः अभाव ही हो गया। केवल पुरातत्त्वादि विभागों से सम्बंधित कतिपय राजकाय अधिकारी ही प्रसंगवश कुछ कार्य करते रहे। किन्तु साथ ही साथ यह संतोष है कि अनेक जैनाजैन भारतीय विद्वान इन कार्यों के सम्पादन में लगे हुए हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यद्यपि प्रथम जैन पुस्तक दिगम्बर सम्प्रदाय द्वारा ही सन् १८५० में मुद्रित कराई गई थी, किन्तु प्रारंभ में रूढ़िग्रस्थ अन्धश्रद्धालु जैन समाज ने छापे का अत्यन्त विरोध किया। एक जैन समाज ने ही क्या, प्रारंभ में हिन्दू समाज ने भी उनका तीव्र विरोध किया। सन् १८६३ में प्रकाशित श्री गोविन्द नारायण माडगांवकर कृत 'मुम्बई वर्णन' नामक पुस्तक के पृ० २४८ पर लिखा है कि— "हमारे कुछ भोले व नैष्ठिक ब्राह्मण छपे कागज का स्पर्श करते डरते थे और आज भी डरते हैं। बम्बई में और बम्बई के बाहर भी ऐसे बहुत से लोग हैं जो छपी हुई पुस्तक को पढ़ना तो दूर रहा, छपे कागज को स्पर्श तक नहीं करते हैं।"

यही दशा, बल्कि इससे भी कुछ बुरी दशा जैन समाज की थी। जैनी लोग अपने मन्दिरों के शास्त्र भंडारों में संग्रहीत हस्तलिखित ग्रन्थों को देव प्रतिमा तुल्य पवित्र और पूज्यनीय मानते थे और उनका विधिवत् दर्शन पूजन करना ही अलम् समझते थे। यदि किसी साधु या विद्वान् पंडित आदि का समागम हुआ तो पुनः स्नानादि द्वारा शरीर शुद्धि करके मन्दिर में रखे शुद्ध वस्त्रों को पहन कर दरी आदि के फर्श पर भी चटाई बिछाकर और शास्त्र जी को चौकी पर विराजमान करके बड़ी विनय पूर्वक उनका वाचन कर श्रद्धालु जनता को सुनाया जाता जाता था। शास्त्र सभा का डिसप्लिन बड़ा भक्ति और विनय पूर्ण होता था, और प्रायः अब तक यही प्रथा है। जिन गृहस्थों को शास्त्र स्वाध्याय का नियम होता वे भी शरीर शुद्ध कर पूजादि के उपयुक्त शुद्ध वस्त्र धोती दुपट्टा आदि पहन मन्दिर के स्वाध्याय भवन में ही बैठकर विनय पूर्वक उक्त ग्रन्थों का स्वाध्याय कर सकते थे। सामान्य दैनिक वस्त्र चाहे वे कितने भी शुद्ध क्यों न हों उन्हें पहने हुए शास्त्र जी को स्पर्श भी नही किया जा सकता था। शूद्रों का तो मन्दिर में या शास्त्र भंडार में प्रवेश भी नहीं हो सकता था और स्त्रियाँ भी शास्त्रों को नहीं छू सकती थीं। अन्य धर्मावलम्बी सवर्ण व्यक्तियों को भी ये शास्त्र इसलिए नहीं दिखाये जाते थे कि वे लोग मिथ्याश्रद्धानी होने कारण हमारी देव गुरु के समकक्ष पूज्य जिनवाणी की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनय, निन्दादि करेंगे। तव फिर उनके छपाने में तो जिसमें कि किसी भी जाति का कोई भी व्यक्ति कैसी भी अपवित्र अवस्था में, चमड़े के जूते आदि पहने हुए ही उन्हें छूएगा, कहीं भी पटक या डाल देगा, छापे की स्याही में चर्वी आदि महा अपवित्र पदार्थों के होने की संभावना और छापे के विकास के साथ साथ अविष्कृत मशीन से बने महा अशुद्ध कागज पर उनका छपना, छपने के पश्चात् भी उनकी पूर्ववत विनय वनाये रखना असंभव होना आदि सर्व प्रकार उन परम पूज्य शास्त्रों की अविनय और विडम्बना ही होगी जो कि एक महापाप होगा। यह सब उस समय की रूढ़िभक्त और आधुनिक प्रकाश की दृष्टि से अविकसित श्रद्धालू समाज जिसके लिए उक्त शास्त्रों का महत्व केवल धार्मिक ही था, कैसे सहन कर सकती थी। उसकी दृष्टि में तो यत्न पूर्वक वेष्ठनों में लिपटे हुए और देव मन्दिरों के सरस्वती भंडारों में विराजमान वे सब ग्रन्थ विला लिहाज भाषा, भाव, विषय, कर्ता, प्राचीनता, प्रमाणीकता आदि के समान रूप से पूजनीय एवं माननीय थे। उनका अन्य कोई महत्त्व या मूल्य उसकी दृष्टि में था ही नहीं।

छापे के इस प्रवल विरोध का बहुत कुछ आभास दिगम्बर जैन महासभा के मुख पत्र हिन्दी जैन गजट वर्ष २ अंक १४ (८ मार्च सन् १८९७ ई०) के पृष्ट १३ पर प्रकाशित निम्नलिखित समाचार से हो जाता है—"जैन शास्त्रों का छपना—ता० २४ जनवरी सन् १८९७ को जैनोन्नति कारक सभा प्रयाग का १७ वां समागम हुआ। यह समागम इस विषय पर विचार करने के लिये किया था कि 'जैन शास्त्र छपने चाहियें या नहीं।' सभा के नियतानुसार स्थानिक जैनियों को इस विषय की सूचना दी गई थी। लाला वच्चूलाल ने जो इस विषय के व्याख्यान दाता नियत किये गये थे वड़े जोर शोर से एक घंटे तक जैन शास्त्रों के छपने के निषेध में बहुत कुछ कहा। उनके पश्चात् वहुत से भाइयों ने उनकी बात को पुष्ट किया किन्तु उनके विपक्ष में किसी ने कुछ भी नहीं कहा। और उपस्थित महाशयों में से सबने एक मत होकर इस बात को स्वीकार किया कि हम छपे हुए ग्रंथ न लेंगे न पढ़ेंगे न पढ़ावेंगे और इसके प्रचार को यथा शक्ति रोकेंगे। ....

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो कि आजकल इस विषय का बहुत कोलाहल है इस वास्ते इस सभा ने प्रयागस्थ जैनियों की अनुमति सर्व साधारण पर प्रकाशित करने के अभिप्रा से इस लेख को मुद्रित कराना आवश्यक समझा।—सभा की आज्ञानुसार सुमति चन्द्र मन्त्री जैनोन्नति कारक सभा, प्रयाग।

लाला वच्चू लाल जी तथा इनके सहयोगियों के छापा विरोधी कितने ही लेख भी जैन गजट आदि पत्रों में प्रकाशित हुए थे और अन्य कितने ही स्थानों की जैन पंचायतों ने भी उपरोक्त जैसे प्रस्ताव पास किये थे। ता० १७ जनवरी सन् १८९८ के जैन गजट में प्रकाशित अपने एक लेख में इन्हीं वच्चू लाल ने स्पष्ट लिखा था कि "जैन शास्त्रों का छपाना महान अविनय है अतः भयङ्कर पाप बंध का कारण है, और जो जैन शास्त्र अजैनों के हाथ में पहुंचे भी हैं श्वेताम्बर आम्नाय के ही पहुंचे। दिगम्बरों को ऐसी मूर्खता नहीं करनी चाहिए उन्हें अपने शास्त्र कदापि नहीं छपाने चाहियें और न दूसरों के हाथ में देने की भूल करनी चाहिये।"

इसमें सन्देह नहीं कि उनके धर्म भीरु और अदूरदर्शी साधर्मियों ने इन सदुपदेशों पर आचरण करने का अथक प्रयत्न किया। अभी १०-१२ वर्ष पूर्व ही जब धवलादि दिगम्बर आगम ग्रन्थों का मुद्रण प्रकाशन प्रारम्भ हो रहा था तो कई एक अनेक पदवियों एवं उपाधियों से अलंकृत दिग्गज जैन पण्डितों ने आगम ग्रंथों के छपाये जाने और गृहस्थों द्वारा उनका पठन पाठन किये जाने का भारी विरोध किया था। आज सन् १९५० में भी यत्र तत्र ऐसे धर्म भीरु श्रीमान मिल ही जाते हैं। जो छपे शास्त्रों का पढ़ना तो दूर रहा उन्हें छूने में भी पाप समझते हैं और परम पूज्य जिन वाणी की इस दुर्दशा पर आंसू बहाया करते हैं।

किन्तु, समाज में अब ऐसे विवेकशील व्यक्ति भी उत्पन्न होने लगे जिन्होंने नवीन प्रणाली के अनुसार शिक्षा प्राप्त की थी और जिन्हें पाश्चात्य विचार धाराओं के सम्पर्क में आने का सुयोग मिला था। शनैः शनैः उनकी संख्या बढ़ने लगी। ये नव युवक समय के साथ-साथ चलना चाहते थे, प्रगति शी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युग की प्रगति से पिछड़ जाने के लिए तैयार नहीं थे, वे नवीन सभ्यता के नित्य प्रकाश में आने वाले आविष्कारों को अपनाना अन्य समाजों के उन्नतिशील वर्गों की भांति ही अपनी समाज के लिए भी परम आवश्यक समझते थे। उनका विश्वास था कि अब अन्धकार को भेद कर वाहर प्रकाश में आने का युग है, अतएव उन्होंने इरादा कर लिया कि अपने अमूल्य साहित्यिक रत्नों को मुद्रण कला की सहायता से बहुलता के साथ प्रकाश में लाकर स्वयं उनसे अधिकाधिक लाभ उठावें ही, साथ ही दूसरे जिज्ञासुओं को भी अपने धर्म, साहित्य और संस्कृति के अध्ययन करने का तथा महत्व समझने का सुयोग प्रदान करें।

फलस्वरूप १९वीं शताब्दी के मध्य के लगभग छापे के पक्ष में आन्दोलन आरम्भ हुआ। प्रथम पच्चीस वर्षों में वह कुछ प्रगति न कर पाया किन्तु सन् १८५७ के पश्चात् इस आन्दोलन ने उग्र रूप धारण किया। उधर इस आन्दोलन के वढ़ते हुए वल के साथ-साथ स्थिति पालकों का विरोध भी अधिकाधिक जोर पकड़ने लगा। वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ तक यह द्वन्द बड़े संघर्ष के साथ चला। आन्दोलन कर्त्ताओं को धमकियें दी गईं, पीटा गया, जाति से वहिष्कृत किया गया, उनका मन्दिर में आना बन्द किया गया, स्थान स्थान में इस प्रश्न को लेकर दल बन्दियें हो गईं। हमारे नगर मेरठ का ही एक दिलचस्प उदाहरण है। एक महाशय एम० ए० एल० एल० बी० वकील थे और वे उस युग के एम० ए० थे जब प्रान्त भर में दर्जन दो दर्जन से अधिक एम० ए० नहीं थे। किन्तु वे इतने कट्टर स्थिति पालक थे और धर्म ग्रन्थों की छपाई के तथा छपी पुस्तकों को मन्दिर में लाने के इतने भारी विरोधी थे कि एक वार जब कुछ नवयुवक आन्दोलन कर्त्ताओं ने देव पूजन को उपयुक्त शुद्ध वस्त्रादि पहन और सामग्री लेकर एक छपी पुस्तक की सहायता से पूजन करने का इरादा किया तो जिस वेदी में देव प्रतिमाएं विराजमान थीं, वे महाशय उक्त वेदी के सामने दोनों हाथों से दुपट्टे का पर्दा तानकर और वेदी को ढक कर खड़े हो गये और यह कहा कि किसी प्रकार भी छपी पुस्तक से पूजन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं करने देंगे। जवतक वे पूजोद्यत नवयुवक वेदी गृह में रहे ये महाशय अपने स्थान से तनिक भी टस से मस न हुए। इसी प्रकार की छापा विरोधी विविध घटनाएं स्थान स्थान में हुई। तथापि अन्ततः २०वीं शताब्दी के प्रथम दसक में आन्दोलन सफल हो गया और विरोध शिथिल प्रायः हो गया।

इसमें भी सन्देह नहीं कि उक्त आन्दोलन में श्वेताम्बर सम्प्रदाय ने कुछ शीघ्र ही सफलता प्राप्त करली थी। श्वेताम्बर समाज में धार्मिक विषयों में उनके बहु संख्यक साधु वर्ग का ही प्रभुत्व रहता आया है, उनके निर्णयों और आदेशों को गृहस्थ जन 'वावा वाक्यं प्रमाणम्' मानते हैं और इस प्रसंग में उनकी यह प्रवृत्ति सुफलदायी ही हुई। इन साधुओं में से कुछ दूरदर्शी महात्माओं को यह सुवुद्धि शीघ्र ही उत्पन्न हो गई कि जव छापा देश में आ ही चुका है और देर सवेर इसे अपनाना ही होगा तो क्यों न धर्म ग्रन्थों की छपाई पर से शीघ्र ही प्रतिवन्ध हटा दिया जाय। फल यह हुआ कि दिगम्बर साहित्य की अपेक्षा श्वेताम्बर साहित्य वहुत पहिले छपने लगा और सन् १८७० से १८९० के बीच सैंकड़ों श्वेताम्बर ग्रन्थ प्रकाश में आ गये। सौभाग्य से यह समय ऐसा था जव दर्जनों उच्च कोटि के पाश्चात्य विद्वान् और प्राच्यविद भारतीय धर्मों, दर्शनों, संस्कृति, पुरातन साहित्य एवं कला, पुरातत्त्व, जातियों के इतिहास आदि विविध विषयों के अध्ययन में गहरी दिलचस्पी ले रहे थे। छापे के समर्थक उक्त श्वेताम्बर साधुओं और गृहस्थों ने इन विद्वानों के लिए अपना साहित्य सुलभ कर दिया और उनके द्वारा उसके उपयोग में किसी प्रकार की रुकावट डालने के स्थान में उल्टा उन्हें भरसक प्रोत्साहन, सहयोग और सुविधा प्रदान की।

परिणामस्वरूप, जवकि १९ वीं शताव्दी के मध्य तक वाह्य जगत के विषयों में साधारण जीर्ण रुचि रखने वाले विद्वानों को जैन विषयक जो कुछ टूटी फूटी अल्प जानकारी जैनेतर भारतीय साहित्य से जैन समाज के किसी अंग विशेष वाह्य सम्पर्क के कारण, अथवा शीघ्र ही ध्यान को आकर्षित कर लेने वाले किसी जैन पुरातत्त्व से हुई थी तथा उसी से संतोष कर इन विद्वानों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने इस धर्म और समाज के विषय में अपनी अपनी धारणायें बनाली और प्रकट करदी थीं, अब उसी शताब्दी के अंतिम चतुष्पाद में इस दिशा में कार्य करने वाले प्रतिभाशाली विशेषज्ञों को स्वयं जैन साहित्य और जैनों का ही सहयोग प्राप्त हो गया। उन्हें यह भी बताया गया कि वास्तविक, मौलिक, सर्वप्राचीन और अधिकाँश जैन साहित्य यही (श्वेताम्बर आगमादि) हैं। ऐसा बताये जाने पर उसे वैसा ही न मानने का उनके लिए कोई कारण भी न था। अतएव उक्त विशेषज्ञों और उनके अनुकर्त्ता भारतीय विद्वानों का जैनाध्यन तथा उनके तत्संबंधी अधिकांश निर्णय उसी साहित्य के आधार पर आधारित हुए, और इस कारण वे कुछ सदोष रहे तथा अंशतः ही सत्य हो सके। किन्तु इसके लिए न वे जैनेतर विद्वान ही दोषी हैं और न दूर दर्शी श्वेताम्बर साधु और उनके ग्रहस्थ अनुयायी ही। यदि कोई दोषी है तो वे दिगम्बर जैन पंडित और श्रीमान हैं जो अपनी समाज में बहु संख्यक शिक्षितों और अनेक श्रेष्ठ विद्वानों के होते हुए भी परस्पर की तनातनी और आन्दोलन के पक्ष विपक्ष में पड़कर इतनी दूर तक देख ही नहीं सके और संभवतया आज भी इस दिशा में उपयुक्त दृष्टि प्राप्त करने में सफल नही हो सके।

अस्तु, जैन पुस्तक साहित्य के इतिहास का प्रारंभ सन् १८५० अथवा विक्रम संवत् १९०० के लगभग से होता है। आधुनिक शैली में व्यवस्थित जैनाध्यन का प्रारंभ और हिन्दी जैन साहित्य के आधुनिक युग का प्रारंभ भी इसी समय से होता है। स्वयं अखिल भारतीय दृष्टि से भी राष्ट्रीयता का उदय, सांस्कृति अध्ययन का प्रारंभ और हिन्दी साहित्य का आधुनिक युग भी सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य समर के उपरान्त ही सन् १८६० से अथवा वि० सं० १९२० के लगभग से ही माना जाता है।

युग विभाजन—की दृष्टि से, विशेषकर दिगम्बर जैन साहित्य के मुद्रण प्रकाशन के इतिहास को तीन युगों में विभाजित किया जा सकता है—(१) आन्दोलन युग सन् १८५०—१९०० ई०, (२) प्रगति युग सन् १९००—१९२५, और (३) वर्तमान युग—१९२५ के उपरांत।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) आन्दोलन युग (१८५०-१९००)—जैन साहित्य प्रकाशन के इस प्रथम युग में धार्मिक साहित्य के मुद्रण प्रकाशन का आन्दोलन आरंभ हुआ। प्रथम पचीस वर्षों (१८५०-७५) में इस आन्दोलन ने प्रायः कोई प्रगति नहीं की और इस बीच में दो चार पुस्तकें छपी हों तो छपी हों, किन्तु उनके विषयमें कुछ ज्ञात नहीं। सन् १८७५ और १९०० के बीच आन्दोलन ने वास्तविक जोर पकड़ा और प्रवल विरोध के होते हुए भी पुस्तकें छपने लगीं। यह समय भी आन्दोलन के अत्यन्त अनुकूल पड़ा। देश की तत्कालीन जैन समाज की बाह्य परिस्थितियें भी चाहे परोक्ष रूप से ही सही, उसकी प्रगति और सफलता में अत्यधिक सहायक सिद्ध हुई। सन् १८५७ के स्वातंत्र्य समर के उपरान्त दस पाँच वर्ष तो उक्त असफल महान राजनैतिक क्रान्ति से उत्पन्न व्यापक आतंक के शान्त होने में लगे, किन्तु धीरे धीरे महारानी विक्टोरिया की, कम से कम बाह्यतः उदार नीति के कारण तथा युद्ध, विद्रोह, दंगे आदि के अभाव में १९ वीं शताब्दी का शेष उत्तरार्ध भारतीय प्रजा के लिए विदेशी शासन के अंतर्गत सर्वाधिक शान्ति पूर्ण रहा। समय की आवश्यकता और राज्य के प्रोत्साहन से शिक्षा का भी प्रचार वढ़ा, विश्व विद्यालय स्थापित होने लगे, स्थान स्थान में स्कूल कालिज खुलने लगे। अंगरेजी में ही नही भारतीय भाषाओं में भी समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे। यूरोप आदि समुद्र पार विदेशों में भी कितने ही उत्साही एवं निर्भीक भारतीय गमनागमन करने लगे। रेल पथ की स्थपना और डाक तार आदि की द्रुत व्यवस्था, जन साधारण को कूप मंडूकता से बाहर निकालने लगी। अंगरेजी शासन में भारत वर्ष की सनातन एकता प्रत्यक्ष होने लगी, सम्पूर्ण देश और समाज की राष्ट्रीय तथा सामाजिक उन्नति के इच्छुक और उनके लिये प्रयत्न शील नेता भी उत्पन्न होने लगे। सन् १८८६ में राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस की स्थापना हुई जिससे एक प्रकार के राष्ट्रीय राजनैतिक आन्दोलन का भी श्रीगणेश हो गया। पाश्चात्य विचार धाराओं की निरन्तर लगने वाली टक्करों और बढ़ती हुई बहुज्ञता के फल-स्वरूप भारतीयों के सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टिकोणों में भी विवेक, उदारता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और विशालता लाने की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। धार्मिक, अन्धविश्वास अशिक्षा अथवा कुशिक्षा जन्य नाना प्रकार के वहम, जातिपांति, छुआछूत, रूढ़ि पालकता, स्त्री जाति के प्रति अन्याय, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, वहु विवाह, अनमेल विवाह, विधवा विवाह, दहेज आदि विनाशकारी कुरीतियाँ एवं कुप्रथाएं देश और समाज के भक्तों को वुरी तरह व्याकुल करने लगीं। फलस्वरूप राजा राममोहनराय तथा महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर आदि सुधारकों ने वंग प्रदेश में उत्कट सुधारवादी ब्राह्म समाज की स्थापना की, किन्तु यह संस्था वंगाली समाज में ही सीमित रही। ब्राह्म समाज से कहीं अधिक व्यापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का आर्य समाज आन्दोलन रहा। आर्य समाज ने जहाँ भोले हिन्दू समाज के ईसाई मिशनरियों और मुसलमान गुंडों के प्रयत्नों के कारण दिन प्रति दिन क्षीणतर होते जाने में सफल रोक लगाई, जहां उसने सनातन हिन्दू धर्म में आ घुसे अनेक वहमों, अन्धविश्वासों, पोपडम आदि के प्रति उसे सजग किया, और उसकी अनेक कुरीतियां छुड़ाईं, वहाँ मिथ्या धार्मिक दम्भावेश में और जान बूझ कर अनभिज्ञ रहते हुए वैदिक एवं हिन्दू धर्म के चिर कालीन संगी सम्वंधी जैनादि धर्मों का कुत्सित परिहास और खंडन भी किया तथा उनके विषय में मिथ्या एवं भ्रान्ति पूर्ण धारणाएं फैलाईं।

तथापि आर्य समाज और उसके नेताओं की इस प्रवृति का परिणाम जैन समाज के हक में अच्छा ही हुआ। वह भी सचेत हो गया और उसके सुधारवादी नेताओं को अपने पक्ष में एक और प्रवल युक्ति मिल गई। अब जैन धर्म और समाज की रक्षार्थ आर्य समाज के आक्षेपों का सयुक्तिक परिहार करना आवश्यक था, उन्हें समुचित प्रत्युत्तर देने थे, और अपने साहित्य को प्रकाश में लाकर उनके तथा उनके द्वारा फैलाये गये भ्रमों एवं मिथ्या कथनों का निराकरण करना था। अतएव आर्य समाज द्वारा किये गये आक्षेपों को लेकर जैनों द्वारा भी उस युग की शैली में अनेक खंडन मंडनात्मक पुस्तकें लिखी गईं और प्रकाशित की गईं। प्रारंभ में फर्रुखनगर निवासी ज्योतिषी वैद्य पं०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीयालाल जैनी ने इस आर्य जैन द्वन्द का नेतृत्व किया, उन्होंने स्वयं आ
समाज के मन्तव्यों के विरोध में कई पुस्तकें लिखीं, आर्य समाजी विद्वानों
अनेक शास्त्रार्थ किये, जैन ज्योतिष का भी प्रचार किया तथा जैन पन्
का प्रकाशन आरंभ किया, और सन् १८८४ में 'जैन प्रकाश' नामक एक स
चार पत्र निकाला जोकि जैन समाज का सर्व प्रथम सामयिक पत्र था। देव
निवासी स्व० वा० सूरजभान जी वकील ने, जोकि जैन छापा आन्दोलन
प्राण थे, इस परिस्थिति से पूरा पूरा लाभ उठाया। सामाजिक अत्याच
वहिष्कार, अपमान, लाञ्छना आदि अनेक विघ्न-बाधाओं और अड़चनों
अवहेलना करते हुए वे सफलता प्राप्त करते ही चले गये। आर्य समाज के
खंडन मंडन में भी उन्होंने पर्याप्त भाग लिया। शनैः-शनैः उनके सहयोगियों
संख्या पर्याप्त हो गई, जिनमें कि पं० चन्द्रसेन जैन वैद्य इटाया, पं० जुगलकि
मुख्तार सरसावा, पं० मंगलसेन जैन वेद विशारद, मा० बिहारीलाल च
बुलन्दशहरी, ला० शिव्वा मल, अम्वाला छावनी, ला०ज्योति प्रशाद प्रेमी,
वन्द विशेष उल्लेखनीय हैं। इस खंडन मंडन के लिए अपने आर्ष ग्रन्थों
निवद्ध जैन सिद्धांत के वास्तविक रहस्य को जानने और समझने की भी आ
श्वकता थी और इस त्रुटि की पूर्त्ती स्व० गुरुवर्य पं० गोपाल दास जी बै
ने की, जोकि अपने समय के सर्व श्रेष्ठ जैन सिद्धांत पारगामी एवं दार्श
तो थे ही साथ ही साथ उदार विचारक एवं सुधारवादी विद्वान भी थे। उन्
स्वयं भी आर्य समाजी विद्वानों के साथ कई शास्त्रार्थों में भाग लिया। उ
सहयोग से आर्य समाज विरोधी और छापा प्रचार सम्वंधी दोनों ही आन्दो
को भारी वल मिला। धीरे धीरे जैन आर्य द्वन्द शिथिल होने लगा, अब थो
ही विद्वान उनके लिए पर्याप्त थे, जिनके प्रयत्नों के फलस्वरूप और वि
कर ला० शिव्वामल के उत्साह पूर्ण सहयोग से आगे चलकर अम्वाला दिग
जैन शास्त्रार्थ संघ की स्थापना हुई। कई दशक पर्यन्त इस संघ के वि
विद्वानों और वादियों ने आर्य समाज से खूब लोहा लिया। कुछ सम
उपरांत इसकी भी आवश्यकता नहीं रह गई। फलस्वरूप उक्त संघ ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपने नाम, उद्देश्य, स्थान और कार्य क्षेत्र सभी में परिवर्तन कर डाला है।

गदर के वाद नवीन शासन व्यवस्था की स्थापना के साथ ही साथ ब्राह्मण जैन विद्वेष एक अन्य दिशा में भी चरित्तार्थ हुआ। विदेशी शासकों की अनभिज्ञता का अनुचित लाभ उठाकर सनातनी हिन्दुओं ने स्थान स्थान में जैन रथोत्सव और मन्दिर निर्माण का भी विरोध किया और ,जैनी दण्डिनम्' जैसी अत्यन्त आक्षेपपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित कीं। उभय पक्ष में मुकदमे बाजियाँ भी हुईं, और तत्सम्बंधी खंडन मंडनात्मक साहित्य भी प्रकाशित हुआ। किन्तु तत्कालीन सरकार ने सर्व धर्म स्वातन्त्र्य तथा किसी के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की अपनी नीति स्पष्ट घोषित करदी थी जिसके फलस्वरूप जैनी इस आक्रमण से भी अपने धार्मिक सत्त्वों की रक्षा करने में सफल हुए।

बा० सूरज भान जी वकील को जैन समाज का दादा भाई नौरोजी ठीक ही कहा जाता है। उनकी समाज सेवा का काल इस युग में सर्वाधिक दीर्घ होने के साथ ही सर्वतोमुखी भी रहा है। उन्होंने अपने उत्साही सहयोगियों के साथ समाज में शिक्षा प्रचार करने का, विशेषकर स्त्रियों और वालिकाओं की शिक्षा का, जिसका कि विरोध स्थिति पालक दल छापे की भांति ही दृढ़ता के साथ कर रहा था, बीड़ा उठाया। स्थान-स्थान में जाकर प्रचार करना, व्याख्यान देना, शास्त्र का पठन और स्वाध्याय प्रेम बढ़ाना, बाल एवं कन्या पाठशालायें खुलवाना, छोटे २ सरल ट्रैक्टों तथा व्याख्यान मालाओं द्वारा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न करना आदि अनेक समयोपयोगी प्रोग्राम इन्होंने अपनाये। बा० सूरजभान जी ने स्वयं अपने सम्पादकत्व में 'जैन ज्ञान प्रकाश' (हिन्दी) 'जैन हित उपदेशक' (उर्दू) जैसे समाचार पत्र निकाले। सन् १८८६ में पं० चुन्नीलाल, मुन्शी मुकन्दलाल व पं० प्यारे लाल आदि के सहयोग से मथुरा में दिगम्बर जैन महा सभा की स्थापना हुई और सन् १८६४ से उक्त सभा ने अपना पत्र 'जैन गजट' (हिन्दी) निकालना आरंभ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किया। कालान्तर में सभा की नीति से मतभेद होने के कारण कुछ अधिक सुधारवादी सज्जनों ने जैन यंग मेन्स एसोसियेशन (भारत जैन महा मंडल) की स्थापना की, जिसने जैन गजट नाम से ही अंग्रेजी भाषा में अपना एक मासिक पत्र निकालना प्रारंभ किया। हिन्दी जैन गजट अभी तक महा सभा की ओर से ही निकल रहा है। सन् १८९७ के अंत में महा सभा ने अपने एक अधिवेशनमें बालिका-शिक्षाके पक्षमें भी प्रस्ताव पास कर दिया था। महासभा के प्रचारक ग्राम २ में पहुंचे। उदाहरणार्थ लेखक के मातामह स्व० ला० शिताबराय जी ने, जो जिला मेरठ की तहसील बागपत, परगना बड़ौत के सुदूरस्थ ग्राम ख्वाजा नगला के निवासी थे और महासभा के एक उत्साही सदस्य और कार्यकर्त्ता थे, आस पास के कितने ही ग्रामों के जैनियों में शिक्षा प्रचार का स्तुत्य प्रयत्न किया था और कई एक जाट, बढ़ई आदि अजैनों को जैनी बनाया, जो कि आजन्म इस धर्म के भक्त रहे।

इसी युग में शोलापुर के प्रसिद्ध समाज सेवी सेठ रावजी हीराचन्द नेमचन्द दोशी ने समय की आवश्यकता का अनुभव करते हुए, सितम्बर सन् १८८४ ई० में 'जैन बोधक' नामक मराठी-हिन्दी-गुजराती पत्र की स्थापना की थी। सन् १८९३ में दि० जैन महासभा के मथुरा में होने वाले चतुर्वार्षिक अधिवेशन में जब छापे के प्रश्न को लेकर घोर वादविवाद हुआ तो उक्त राव जी ने छापे का जोरदार समर्थन किया था और उसी समय से उन्होंने अपने जैन बोधक में शास्त्रीय प्रमाणों और युक्तियों के द्वारा छापे के आन्दोलन को अत्यधिक प्रोत्साहन देना प्रारम्भ कर दिया। महासभा के इसी अधिवेशन में प्रबल विरोध के रहते हुए भी छापे के पक्ष में प्रस्ताव पास हो गया तथा महासभा के मुख पत्र जैन गजट के निकाले जाने की योजना हुई।

इसी समय प्राचीन आर्ष सैद्धान्तिक ग्रन्थों के अध्ययन की प्रवृत्ति भी चल पड़ी जिसमें पं० गोपालदास जी बरैया विशेष सहायक हुए। अभी तक दिगम्बर आम्नाय में आगम के रूप में ग्रन्थराज गोमट्टसार की ही प्रसिद्धि और प्रचलन था, किन्तु अब यह बात सुस्पष्ट रूप से प्रकाश में आई कि गोमट्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सारादि के भी आधार भूत अति प्राचीन एवं विशालकाय ग्रन्थ धवलादि हैं जिनकी एक मात्र ताड़पत्रीय प्रति मैसूर राज्य के अन्तर्गत मूड़वद्री के प्राचीन शास्त्र भण्डार में सुरक्षित है। अतएव उक्त राव जी ने उन महान आगम ग्रन्थों के उद्धार का प्रयत्न चालू कर दिया। इस कार्य में उन्हें उन्हीं जैसे धर्म प्राण समाज सेवी धनिक आरा निवासी स्व० वा० देवकुमार जी तथा वम्बई के दानवीर सेठ माणिकचन्द्र जी जौहरी जे० पी० आदि सज्जनों का वहुमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। इन महानुभावों के २५-३० वर्ष पर्यन्त सतत् उद्योग करते रहने के फलस्वरूप धवलादि ग्रन्थों की प्रतिलिपियां मूड़वद्री के भण्डार की सीमा के वाहर निकल आईं। वा० देवकुमार जी ने आरा में जैन सिद्धान्त भवन (दी सैन्ट्रल जैना ओरियंटल लाईब्रेरी) नामक महत्त्वपूर्ण जैन पुस्तकालय एवं संग्रहालय की स्थापना करके साहित्यिक शोध खोज एवं ग्रन्थ प्रकाशन के कार्य को और भी प्रगति दी। दान वीर सेठ माणिकचन्द के उद्योग से अखिल-भारतीय जैनों के विवरण से युक्त एक जैन डायरेक्टरी प्रकाशित हुई। माणिकचन्द्र दि० जैन० ग्रन्थ माला तथा माणिकचन्द्र दि० जैन परीक्षा बोर्ड बम्वई की स्थापना का श्रेय भी इन्हें ही है, और दि० जैन महासभा की बम्वई प्रान्तीय शाखा के प्रमुख कार्यकर्त्ता भी यही थे।

साहित्य प्रचार और छापे के भारी समर्थक बाल ब्रह्मचारी पं० पन्नालाल जी बाकलीवाल ने काशी में दिगम्बर जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था की स्थापना की और उसके अपने ही प्रेस में जयपुर आदि में हाथ से बने शुद्ध स्वदेशी कागज पर शास्त्राकार खुले पन्नों में, अपने यहाँ ही तैयार की गई स्याही से सवर्ण कर्मचारियों की सहायता द्वारा धार्मिक ग्रन्थों का मुद्रण प्रकाशन प्रारम्भ किया। इस योजना द्वारा उन्होंने स्थिति पालक दल के विरोध की तीव्रता को अत्यन्त शिथिल कर दिया। काशी में थोड़े ही काल रहने के उपरान्त यह संस्था कलकत्ते को स्थानान्तरित करदी गई। संस्था को वहां चालू करके बाकलीवाल जी बम्वई चले गये जहाँ उन्होंने 'देश-हितैशी पुस्तकालय' नामक एक सार्वजनिक हिन्दी प्रकाशन संस्था

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को जन्म दिया और 'देश हितैषी' नामक पत्र भी निकालना प्रारम्भ किया। थोड़े समय के उपरान्त उन्होंने इन दोनों को जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय और जैन हितैषी (मासिक) के रूप में परिवर्तित कर दिया। आगे चलकर उपरोक्त संस्था की ही एक शाखा 'हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई के नाम से प्रसिद्ध हुई। वाकलीवाल जी ने ही सर्व प्रथम बंगाली समाज में जैन धर्म का प्रचार करने का विचार किया और उसके हेतु बंगला भाषा में 'जैन धर्मेर किंचित परिचय' तथा 'जैन सिद्धान्त दिग्दर्शन' नामक पुस्तकें सन् १९१० में निर्माण कीं। बंगला पत्र 'जिनवाणी' के जन्मदाता भी यही थे।

इस प्रकार इस युग के अन्त तक छापा आन्दोलन प्रायः सफल हो गया था। विरोध उसके पश्चात् भी दसियों वर्ष चलता रहा किन्तु वह पर्याप्त शिथिल हो गया था। इस युग के प्रकाशनों में निम्नोक्त तीन प्रकार की पुस्तकों का ही वाहुल्य था—(१) धार्मिक खण्डन मण्डनात्मक, विशेषकर आर्य समाज के आक्षेपों को लक्ष्य में रखकर, (२) मोटी मोटी सामाजिक कुरीतियों के निवारणार्थं लिखे गये छोटे छोटे ट्रैक्ट आदि, (३) पूजा पाठ, भजन विनती, व्रत कथाएं, कतिपय पुराण चारित्र आदि ग्रन्थ।

इस युग में पुस्तक प्रकाशन का कार्य विभिन्न व्यक्तियों द्वारा स्वतन्त्र रूप में प्रायः निस्वार्थ एवं धर्मार्थ भाव से ही अधिक चला। लाहौर के हकीम ज्ञानचन्द्र जैनी तथा देववन्द-सहारनपुर के ला० जैनीलाल ने विशेषकर तीसरे प्रकार की छोटी छोटी पस्तकें बहु संख्या में प्रकाशित की। खण्डन—मंडनात्मक साहित्य विशेषकर फर्रुखनगर, इटावे, अलीगढ़ और सहारनपुर से प्रकाशित हुआ।

इन सबके अतिरिक्त, इसी युग में हिन्दी भाषा और साहित्य के आधुनिक युग का प्रारम्भ हुआ। लोक भाषा और लोक साहित्य के रूप में उसकी स्वतन्त्र सत्ता को प्रतिष्ठित करने के प्रयत्न चालू हुए। आधुनिक खड़ी बोली की नवीन गद्य पद्य शैलियों का सूत्रपात हुआ। हिन्दी के पुस्तक प्रकाशन और सामयिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पत्र संचालन का प्रारम्भ हुआ ; और इस सार्व-हिन्दी आन्दोलन का प्रवर्तन एवं प्रधान नेतृत्व किया राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द सी०आई०ई० ने। राजा शिवप्रसाद जी जैन सज्जन थे और राजकीय शिक्षा विभाग के एक उच्च पदाधिकारी थे। वे हिन्दी के भारी समर्थक, प्रचारक और पक्षपाती थे। उर्दू और अंग्रेजी के पक्षपातियों के तीव्र विरोध को चुनौती देकर उन्होंने हिन्दी की अकाल मरण से रक्षा की और शिक्षा विभाग में उसकी सत्ता को अक्षुण्ण बना दिया। उन्होंने हिन्दी में शिक्षा सम्बन्धी एवं लोकोपयोगी कितनी ही पुस्तकें स्वयं लिखीं तथा दूसरों से लिखाईं। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'इतिहास तिमिर नाशक' की कोई दिन बड़ी ख्याति रही। एक प्रकार से आधुनिक खड़ी बोली के आप जन्मदाता ही समझे जाते हैं। स्वयं भारतेन्दु बा० हरिश्चन्द्र इन्हें अपना गुरु मानते थे, और उन्होंने अपना 'मुद्राराक्षस नाटक इन्हें ही समर्पित किया था।

इलाहवाद निवासी, खण्डेलवाल जैन बा० रतनचन्द्र वकील भी हिन्दी के इस युग के अच्छे लेखक थे। उनका 'नूतन चरित्र' इंडियन प्रेस, प्रयाग ने प्रकाशित किया था। न्याय सभा नाटक, भ्रमजाल नाटक, चातुर्थार्णव, वीरनारायण, इन्दिरा, हिन्दी उर्दू नाटक आदि उनकी कई अन्य रचनायें भी, जिनमें से कुछ मौलिक कुछ अंग्रेजी आदि से अनूदित तथा कुछ आधार लेकर लिखी गई थीं, मुद्रित प्रकाशित हुई।

आरा के जमींदार अग्रवाल जैनी बा० जैनेन्द्र किशोर, आरा की नागरी प्रचारिणी सभा तथा प्राणेतृ समालोचक सभा के उत्साही कार्यकर्त्ता थे। ये हिन्दी के सुलेखक और सुकवि थे। उनके द्वारा रचित खगोल विज्ञान, कमलावती, मनोरमा उपन्यास आदि कई पुस्तकें तथा जैन कथाओं के आधार से लिखे हुए सोमासती प्रभृति कई नाटक प्रहसनादि छपे थे। इन्होंने हिन्दी जैन गजट का भी कई वर्ष सम्पादन किया और आरे की नागरी हितैषिणी पत्रिका में इनका जीवन चरित्र भी प्रकाशित हुआ।

श्री जवाहरलाल उपनाम मि० जैन वैद्य जयपुर के निवासी थे। ये रायल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एशियाटिक सोसाइटी तथा थियोसीफिकल सोसाइटी के भी सदस्य थे। अ देशीय भाषाओं पर इनका अधिकार था किन्तु हिन्दी के ये बड़े प्रेमी थे औ नागरी के प्रचार में सदैव प्रयत्नशील रहते थे। आपने हिन्दी के कई समाच पत्र निकाले जिनमें सर्वप्रसिद्ध 'समालोचक' था जिसे आपने बड़े परिश्रम अ अर्थ व्यय से चार वर्ष तक निकाला। इस पत्र में बड़े मार्के के लेख निक थे। इसके कारण हिन्दी संसार में आपकी बड़ी ख्याति हुई। नागरी प्रचारि सभा के बड़े सहायक थे और जयपुर में एक 'नागरी भवन' नामक श्रे पुस्तकालय स्थापित किया। कमल मोहिनी भँवरसिंह नाटक, व्याख्यान प्रबो और ज्ञान वर्णमाला, ये तीन पुस्तक उन्होंने स्वयं लिखी थीं तथा 'संस्कृ कवि पंचक' आदि हिन्दी के कई अच्छे ग्रंथ इन्होंने अपने ही खर्चे से प्रका कराये थे।

इस प्रकार, जैन साहित्य प्रकाशन के इस प्रथम युग में भी जैन समा सर्वतोमुखी योग दान किया।

२. प्रगति युग (सन् १६००---१६२५ ई०):—

पच्चीस वर्ष का यह काल जैन प्रकाशन का प्रगति युग कहा जा सकता इस युग में अन्य मतों के खंडन मंडन का कार्य, जैसा कि ऊपर संकेत कि जा चुका है, सीमित, संकुचित एवं शिथिल होता चला गया। तथापि, के कारण जो कितने ही जैन अनेक सनातनी हिन्दुओं की भाँति, स्वधर्म वास्तविकता से अनभिज्ञ होने के कारण धर्म त्याग करते चले जा रहे थे में भारी रोक थाम हो गई। प्रत्युत कुँवर दिग्विजयसिंह, बाबा भा जी वर्णी, पं० गणेश प्रसाद जी, मु० कृष्ण लाल वर्मा, महर्षि शिवव्रत वर्मन, प्रो० धर्मचन्द्र, स्वामी कर्मानन्द जी आदि अनेक कट्टर जैन वि जैनेतर विद्वान भी जैन धर्म के परम भक्त और उत्कट प्रचारक हो गये।

अब समाजगत मोटी मोटी कुरीतियों की ओर संकेत मात्र करना प नहीं रह गया। सामाजिक संगठन को दृढ़ करने और विवाह संस्था सम विभिन्न धार्मिक सामाजिक प्रश्नों की विशद मीमांसा करने की आवश्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुई। वाल विवाह वृद्ध विवाह वहु विवाह आदि का विरोध अन्तर्जातीय विवाह और विधवा विवाह का समर्थन, विवाह आदि में फिजूल खर्ची पर प्रतिवन्ध, वेश्या नृत्य, भड़वे, नक्कालों आदि का नाच गाना और कन्या विक्रय की वन्दी, दहेज़ में कमी, जैनविधि से संस्कारों का किया जाना, आदि सुधारों का प्रचार किया जाने लगा। स्त्री शिक्षा, दस्सा पूजाधिकार तथा शुद्धि आन्दोलन उठाये गये देववन्द के एक जैनी वकील जो मुसलमान हो गये थे उन्हें वा० सूरजभान जी और उनके साथियों ने तीव्र विरोध की उपेक्षा करके फिर से जैनी वनाया और समाज में शामिल किया। दस्सों के पूजाधिकार को लेकर मेरठ में एक युगान्तरकारी मुकद्दमे वाजी भी हुई जिसमें पं० गोपाल दास जी वरैया ने भी दस्सा पूजाधिकार का ही समर्थन किया। श्राविकाश्रम, विधवा-श्रम, अनाथालय, गुरुकुल, छात्रालय आदि खोले गये। और अखिल भारतीय जैन समाज के विभिन्न उपसंम्प्रदायों के वीच सद्भाव एवं सामंज्जस्य स्थापित करने के प्रयत्न चालू हुए। किन्तु साथ ही तीर्थों को लेकर उभय सम्प्रदायों के मध्य मुकद्दमेवाजी भी खूव चल निकली। इन कार्यों में भी प्राय: वा० सूरज भान जी ही अग्रणी थे, उनके कई एक साथियों ने अपनी शुद्ध साहित्यिक अभि-रुचि के कारण प्रचार कार्य में धीरे धीरे उनका साथ छोड़ दिया, किन्तु उनके स्थान में उन्हें कितने ही अन्य उत्साही साथी प्राप्त होते गये, और उपरोक्त विषयों एवं समस्याओं पर भी पर्याप्त साहित्य प्रकाशित हुआ।

समाज सुधार के अतिरिक्त इस युग की दूसरी प्रवृति धर्म प्रचार थी। आर्य समाज के वढ़ते हुए प्रचार से प्रभावित होकर जैन नेताओं ने भी वाह्य जनता में स्वधर्म प्रचार करना प्रारम्भ किया। इस कार्य का श्रीगणेश वस्तुत: पंजावी स्थानकवासी (वाद को श्वेताम्बर मन्दिर मार्गी) साधु स्वामी आत्मा-राम जी ने किया था। उन्होंने अन्य जैन नेताओं के साथ साथ आर्य समाज के विरोध का दृढ़ता से मुकावला किया, जैनियों का स्थितिकरण किया और कई एक अंग्रेजों को भी जैन वनाया। उन्होंने स्वयं कई पुस्तकें लिखीं तथा उनकी स्मृति में स्थापित आत्माराम जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला से अनेक उपयोगी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ट्रैक्ट प्रचारार्थ प्रकाशित हुए। जिस प्रकार स्वामी रामकृष्ण परमहंस के प्रतिभाशाली शिष्य स्वामी विवेकानन्द अमेरिका आदि देशों में हिन्दू धर्म का प्रचार करने के लिये गये थे, उसी प्रकार और लगभग उसी समय स्वामी आत्माराम के सुयोग्य शिष्य स्व० वीरचन्द राघव जी गांधी भी स्वगुरु की प्रेरणा से यूरोप अमेरिका आदि में जैन धर्म के प्रचारार्थ गये और उन्होंने शिकागो के सर्व धर्म सम्मेलन में भी महत्त्व पूर्ण भाग लिया। उनके पश्चात् स्व० बैरिस्टर, जगमन्दर लाल जैनी, चीफ़ जज इन्दौर ने तो यूरोप में जैन धर्म प्रचार को अपने जीवन का व्रत ही बना लिया था। उन्होंने कई वार विदेश यात्रा की और इग्लैंड में तो वे पर्याप्त समय तक रहे भी। कितने ही अंगरेजों को उन्होंने जैनी बनाया जिनमें श्री हर्वर्ट वारेन, जे० गौर्डन उनकी पत्नी आदि उल्लेखनीय हैं। इन जे० एल० जैनी ने ही लन्दन में 'ऋषभ जैन फ्री लैन्डिंग लायब्रेरी' नामक पुस्तकालय तथा जैन केन्द्र की स्थापना की, जैन धर्म पर अंग्रेजी में स्वयं कई स्वतन्त्र पुस्तकें लिखीं तथा तत्त्वार्थ सूत्रादि प्राचीन ग्रन्थों के अनुवादादि तैयार करके प्रकाशित कराये, वर्षों पर्यन्त अंगरेजी जैन गजट का योग्यता के साथ सुसम्पादन किया, और मृत्यु के समय अपनी समस्त सम्पत्ति का इन्हीं उद्देश्यों में उपयोग किये जाने के लिये एक ट्रस्ट कर गये। उन्हीं की भाँति स्व० बैरिस्टर चम्पतराय जी ने भी विदेशों में जैन धर्म प्रचार को ही अपना लक्ष्य बनाया, इसी उद्देश्य से अनेक वार यूरोप और अमेरिका की यात्रा की और कितने ही यूरपियन स्त्री पुरुषों को जैन धर्म में दीक्षित किया। जैन धर्म पर अंगरेजी में जो स्वतन्त्र पुस्तकें लिखी गई उनमें बैरिस्टर साहब की कृतियें ही सर्वाधिक हैं। इन्होंने अपने पिता की स्मृति में देहली में 'सोहन लाल बांकेराय जैन एकेडेमी' की स्थापना की और अपनी समस्त सम्पत्ति को विदेशों में जैन धर्म का प्रचार करने के लिये दान कर दिया। बाड़ीलाल मोतीलाल शाह, ऋषभदास वकील, पारसदास खजानची, रा० ब० लट्ठे, पूर्णचन्द्र नाहर, मुन्शी लाल एम० ए०, डा० बनारसी दास, बा० अजित प्रसाद, ब्र० शीतल प्रसाद आदि सज्जनों ने भी अंगरेजी पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निवन्धों तथा स्वतन्त्र पुस्तकों के रूप में अंगरेजी जैन साहित्य का निर्माण किया।

जे० एल० जैनी, पं० अर्जुनलाल सेठी, महात्मा भगवान दीन, मा० चेतन-दास, बा० अजित प्रसाद आदि महानुभावों की जो भारत जैन महामंडल को लेकर एक सुदृढ़ टीम बन गई थी उसके वास्तविक प्राण थे। आरा निवासी कुमार देवेन्द्र प्रसाद, ये महा उद्यमी, निस्वार्थ एवं सच्चे 'स्वयं सेवक' थे और हिन्दी के भी सुलेखक थे। स्याद्वाद विद्यालय काशी के सन् १९१४ के वार्षिकोत्सव जैसे कई महत्त्व पूर्ण आयोजन इन्होंने किये जिनमें उच्च कोटि के संसार प्रसिद्ध देशी विदेशी अजैन विद्वानों यथा डा० हर्मन जेकोवी डा० वान ग्लेजनेप, प्रो० जे हर्टल, डा० एनी वेसेन्ट, म० म० डाक्टर सतीशचन्द्र विद्याभूषण, डा० टी० के लड्डू, म० म० प्रो० राममिश्र, महर्षि शिवव्रत लाल वर्मन इत्यादि को निमन्त्रित करके जैन धर्म पर उनके महत्त्व पूर्ण ऐतिहासिक भाषण कराये और जैन साहित्य एवं कला की प्रदर्शनियें कीं। इन आयोजनों के परिणाम स्वरूप जैनधर्म के विषय में कम से कम जैनेतर विद्वत्समाज की अभिज्ञता तो बहुत बढ़ गई, उनके अनेक भ्रम दूर हो गये और यह धर्म तथा इसकी संस्कृति सम्मान पूर्ण अध्ययन की वस्तु समझे जाने लगे। कुमार देवेन्द्र प्रसाद जी के ही प्रयत्नों से 'सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस, की स्थापना हुई और उससे 'सेक्रेड बुक्स आफ दी जेन्स' सीरीज का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ जिसमें कि पंचास्तिकाय, समय सार, तत्त्वार्थ सूत्र, द्रव्य संग्रह, गोमट्टसार, परमात्म प्रकाश, नियमसार आदि कितने ही प्राचीन दिगम्बर जैन आर्ष ग्रन्थों के अंगरेजी अनुवादादि सहित उच्चकोटि के जैनाजैन विद्वानों द्वारा सुसम्पादित संस्करण प्रकाश में आये। मंडल का मुख पत्र अंगरेजी जैन गजट भी बड़े उपयोगी एवं आकर्षक रूप में निकलता रहा। मद्रासी, दक्षिणी, वंगाली, पंजाबी-विभिन्न प्रान्तीय अनेक जैनाजैन विद्वानों ने इन कार्यों में महत्त्व पूर्ण योग दान दिया।

इसी युग में जैन धर्म के सच्चे मिशनरी और त्यागी सेवक स्वर्गीय ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी थे। वे धर्म प्रचार और समाजोन्नति के लिये तड़पते हुए हृदय को लिये हुए देश के कोने कोने में—बर्मा, स्याम और लङ्का तक गये और स्थान स्थान में सार्वजनिक सभाएँ कराकर जैन धर्म की ओर सर्वसाधा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रण को आकृष्ट किया। जैन मित्र आदि कई पत्रों का योग्यता पूर्वक सम्पादन किया' तथा अनेक व्यक्तियों को प्रोत्साहन दे देकर अच्छा खासा लेखक बना दिया। स्वयं अकेले उन्होंने सर्व प्रकार की, मौलिक, टीका अनुवादादि, संकलन संग्रह, फुट कर लेख निवन्ध, धार्मिक, ऐतिहासिक, शिक्षा एवं समाज सुधार विषयक छोटी वड़ी रचनाएं संख्या एवं मात्रा में निर्माण की और छपा कर प्रकाशित करदी उतनी शायद छापे के आरम्भ से आज पर्यन्त कोई दूसरा व्यक्ति नहीं कर पाया। ब्रह्मचारी जी के जीवन का प्रत्येक क्षण जैन धर्म और साहित्य के प्रकाशन प्रचार में ही व्यीतत हुआ। रेल में यात्रा करते हुए तथा रोग की दशा में भी वे लिखते रहते थे। विधवा विवाह के प्रचार के लिये उन्होंने 'सनातन जैन समाज' तथा 'सनातन जैन' पत्र की स्थापना की। मध्य काल के एक जैन संत तारण स्वामी द्वारा प्रस्थापित तारण समाज और उसके पुरातन साहित्य को प्रकाश में लाने का श्रेय भी ब्रह्मचारी जी को है। साथ ही वे उत्कट देश भक्त भी थे और कांग्रेस के प्राय: सब ही अधिवेशनों में सम्मिलित हुए। जैन समाज में वे निरन्तर देशभक्ति की भावना फूंकते रहते थे।

तत्कालीन नेताओं ने शिक्षा प्रचार की ओर भी विशेष ध्यान दिया। बाल और कन्या पाठशालाएं तो स्थान स्थान में खुलनी प्रारंभ हो गई थीं अब बड़े वड़े जैन संस्कृत विद्यालय भी खुलने लगे। वनारस, इन्दौर, सहारनपुर, कारंजा सागर, मुरैना, मथुरा आदि स्थानो में ये विद्यालय स्थापित किये गये। पं० गोपाल दास जी वरैया की कृपा से जैन सिद्धांत एवं दर्शन के परिज्ञाता संस्कृतज्ञ युवक विद्वानों का एक अच्छा दल तैयार हो गया था। अतएव उन विद्यालयों के लिये योग्य अध्यापकों की कमी न रही। समाज के श्रीमानों और सेठों ने द्रव्य से सहायता की। इन विद्यालवों में जैन दर्शन, न्याय, सिद्धांत साहित्य आदि के अतिरिक्त कलकत्ता विश्वविद्यालय तथा क्वीन्स संस्कृत कालिज वनारस की परिक्षाओं के लिए भी विद्यार्थी तैयार किये जाने लगे। दि० जैन महासभा ने जैनशास्त्री आदि परिक्षाओं के निमित्त अपना एक परी-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बोर्ड स्थापित किया और उत्कट शिक्षा प्रेमी सेठ माणिक चंद्र बम्बई वालों ने भी एक 'माणिक चंद्र' दि० जैन परीक्षा बोर्ड स्थापित किया। उक्त विद्यालयों में अध्ययन करके सैकड़ों विद्यार्थी प्रतिवर्ष इन परीक्षा बोर्डों की परिक्षायें पास करने लगे। परीक्षा बोर्डों द्वारा निर्धारित पाठ्य क्रमों के लिए उपयुक्त पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता हुई जिसकी पूर्ति के प्रयत्न से भी जैन पुस्तक प्रकाशन को अच्छी प्रगति मिली। जैन बाल पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा देने की ओर विशेष ध्यान रक्खा गया और उसके लिये बाल बोध जैन धर्म जैसी अनेक छोटी २ बालकोपयोगी पुस्तकों का निर्माण हुआ।

किन्तु नित्य प्रति वृद्धि को प्राप्त होता हुआ आधुनिक अंग्रेजी प्रणाली से शिक्षित समुदाय इन बाल पाठशालाओं और संस्कृत विद्यालयों से ही सन्तुष्ट न रह सका, उसकी दृष्टि में जैन बोर्डिंग हाउस, स्कूलों और कालिजों का उपयुक्त केन्द्रों में स्थापित किया जाना समय की परम आवश्यकता थी। सेठ माणिक चन्द्र ने तो स्थान स्थान में जाकर जैन छात्रालय स्थापित कराने का बीड़ा ही उठा लिया था। अनेक स्थानों में जैन हाई स्कूल खुले और दो-एक जैन कालिज भी स्थापित हुए। कुछ एक महाप्राण जैन नेताओं की यह भी उत्कट अभिलाषा थी कि एक जैन विश्व विद्यालय स्थापित हो जाय। इसके लिए पं० गणेश प्रसाद जी, पं० दीप चन्द्र जी और बाबा भागीरथ जी—ये वर्णीमय प्रयत्न शील भी हुए, किन्तु समाज के श्रीमानों की ओर से कोई सहयोग न मिलने के कारण असफल रहे और आजतक भी जैन विश्व विद्यालय की स्थापना न हो पाई। इसी समय कुछ नेताओं का यह विचार हुआ कि पाश्चात्य शिक्षा प्रणाणी किन्हीं अंशों में उपयोगी होते हुए भी साँस्कृतिक नैतिक एवं राष्ट्रीय दृष्टि से अति दोष पूर्ण एवं हानिकर है, अतएव ऐसे गुरुकुल स्थापित किये जांय जिनमें भारतीय एवं पश्चिमी शिक्षा प्रणालियों का समन्वय करते हुए नवीन सन्तति को धार्मिक, चारित्रवान, देश भक्त एवं सुशिक्षित बनाया जा सके। फल स्वरूप सन् १९११ में बा० सूरजभान जी के प्रबन्ध और देश भक्त महात्मा भगवान दीन जी के अधिष्ठातृत्व में हस्तिनागपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(मेरठ) की प्राचीन पवित्र भूमि पर श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम नामक प्रथम गुरुकुल की स्थापना हुई। प्रारंभ में इस संस्था को देश भर के श्रीमानों, वि॰ एवं समाज सेवियों की सहायता और स्नेह प्राप्त हुआ, किन्तु प्रवन्धकों शीघ्र ही मतभेद हो जाने के कारण वह अपने मूल स्थान, मौलिक रूप उच्च आदर्शों पर तीन चार वर्ष से अधिक स्थिर न रह सका, वैसे दि० संघ के प्रवन्ध में मथुरा में वह अभी तक विद्यमान है। उपरोक्त जैन छ वासों, स्कूलों, कालिजों के विद्यार्थियों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए साहित्य प्रकाशित हुआ। तत्त्वार्थसूत्र, रत्न करंड श्रावका चार, पुरुषार्थ युपाय, द्रव्य संग्रह, छहढाला आदि प्राचीन मौलिक ग्रन्थों के शब्दार्थ भा टिप्पणि आदि सहित विद्यार्थियोपयोगी संक्षिप्त संस्करण निकले।

जैन स्त्री समाज में शिक्षा प्रचार का व्यवस्थित कार्य महिलारत्न मगनवेन, पंडिता ललिता वाई व पंडिता चन्दा वाई जी आदि विदुषि अपने हाथ में लिया। बम्बई और आरा में आदर्श जैन वाला विश्राम स्थ हुए, जैन महिला परिषद वनी और महिलाओं द्वारा ही सुसम्पादित, सञ्च 'जैन महिलादर्श' नामक मासिक पत्रिका चालू हुई।

इस युग में व्यवसायिक दोनों ही प्रकार के कई एक प्रकाशकों का भाव हुआ। हिंदी के कई मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक तथा मराठी, गुज कन्नडी, अंग्रेजी और उर्दू के भी कई अच्छे जैन सामयिक पत्र निकलने माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थ माला, मुनि अनन्तकीर्ति दि० जैन ग्रन्थ रायचन्द्र जैन शास्त्रमाला सनातन जैन ग्रंथ माला आदि कई एक उच्च की अव्यवसायिक ग्रंथ मालाएं चालू हुईं। इनके द्वारा प्राचीन जैन ग्रंथ रूप में ही सुसम्पादित होकर अथवा टीका अनुवादादि सहित प्रकाशित हों और प्रायः सर्व ही महत्त्वपूर्ण एवं उपलब्ध ग्रंथ जैसे तैसे प्रकाश में आ पं० जुगलकिशोर मुख्तार, पं० नाथूराम प्रेमी आदि कई योग्य विद्वान प्रकाशित प्राचीन साहित्य के साहित्यक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से तुल अध्ययन में जुट गये। फलस्वरूप अनेक ग्रंथों की समीक्षा परीक्षाएं प्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुई। इस प्रकार के विश्लेषण से नाम साम्य के कारण विभिन्न आचार्यों की रचनाओं को उसी नाम के किसी एक ही प्रसिद्ध आचार्य की कृति समझ लेना जैसी सर्व प्रचलित भ्रान्तियों का निराकरण हुआ। ग्रंथकार आचार्यों के समय, इतिवृत्त एवं कार्य कलापों पर प्रकाश पड़ा, विशेष सैद्धान्तिक विषयों पर विभिन्न आचार्यों की विभिन्न मान्यतायें रही हैं, ऐसी बातें भी प्रकाश में आईं। विशेष रूप से 'जैनहितैषी' मासिक ने इन प्रवृत्तियों में पर्याप्त एवं सफल दान दिया। और इस प्रकार सुव्यवस्थित जैनाध्ययन का बीजारोपण हुआ तथा जैन धार्मिक एवं साहित्यक इतिहास की सामग्री, फुटकर एवं असम्बद्ध रूप में ही सही, शनैः शनैः एकत्रित होने लगी।

संस्थाओं का भी प्रसार हुआ। दि० जैन महासभा की बम्बई आदि प्रान्तों में शाखाएं खुलीं। भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी तथा प्रान्तीय और स्थानीय तीर्थ क्षेत्र कमेटियों की स्थापना हुई। भारत जैन महामण्डल, जैन पोलिटिकल कान्फ्रेंस, दि० जैन शास्त्रार्थ संघ अम्बाला, जीव दया प्रचारिणी सभा आगरा, जैन मित्र मंडल देहली, भारत वर्षीय दि० जैन अनाथ रक्षक सोसाइटी देहली, और अन्त में महासभा की नीति से मतभेद होने के कारण उसके कतिपय सदस्यों द्वारा सन् १९२३ में अखिल भारत वर्षीय दि० जैन परिषद, इत्यादि संस्थाओं की स्थापना हुई। इन सभी संस्थाओं ने अपने२ कार्य क्रम के अनुकूल साहित्य के निर्माण और प्रकाशन में पर्याप्त सहयोग दिया।

जहाँ तक हिन्दी की सामान्य उन्नति का प्रश्न है जैनों ने उस में भी स्तुत्य योग दान किया। हिन्दी के तत्कालीन सार्वजनिक पत्रों में मि० जैन वैद्य का सुप्रसिद्ध 'समालोचक', देहली के सेठ माठूलाल का साप्ताहिक 'हिन्दी समाचार', देहरादून के ला० गुलशनराय का 'भारत हितैषी' इन्दौर के बा० सुख सम्पत्तिराय भंडारी के 'मल्हारि मार्तण्ड विजय' आदि और बम्बई से पं० पन्नालाल बाकलीवाल का 'हिन्दी हितैषी' श्रेष्ठ कोटि के पत्र थे। बम्बई हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय और हिन्दी गौरव ग्रन्थ माला के स्वामी व संचालक जैनी थे। झालरा पाटण की राजपूताना हिन्दी साहित्य समिति का लगभग बारह हजार रुपये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का स्थायी फंड श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह के उद्योग से केवल जैनों द्वारा प्रदत्त था और इससे हिन्दी के उत्तमोत्तम ग्रन्थ केवल लागत मूल्य से बेचे जाने की योजना थी। इन्दौर की मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति को भी जैनों से कई हजार रुपया प्राप्त हुआ था। खण्डवे की हिन्दी ग्रन्थ प्रसारक मण्डली के उत्साही संचालक एक बा. माणिकचन्द्र जैनी वकील थे और आरा की नागरी प्रचारिणी सभा के प्राण बा. जैनेन्द्र किशोर थे, इत्यादि। हिन्दी जैन साहित्य के प्रकाशन में बम्बई के जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय तथा रामचन्द्र जैन शास्त्रमाला ने प्रमुख भाग लिया। धार्मिक से अतिरिक्त विषयों पर लिखने वाले लगभग दो दर्जन जैन सुलेखक विद्यमान थे और उनकी संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही थी।

इस प्रकार इस युग में निम्नोक्त विविध प्रकार का साहित्य प्रकाश में आया—

(१) प्राचीन संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों के सम्पादित संस्करण:- मूल मात्र अथवा टीका अनुवादादि सहित। उल्लेखनीय सम्पादक अनुवादक टीकाकार आदि—बा० सूरजभान, पं० पन्नालाल बाकलीवाल, पं० पन्नालाल सोनी, उदयलाल काशलीवाल, पं० वंशीधर शास्त्री, पं० खूबचन्द शास्त्री, पं० लालाराम शास्त्री, पं० मनोहर लाल, पं० गजाधर लाल, जे. एल. जैनी, बा० ऋषभदास वकील, ला. मुन्शी लाल, मुनि माणिक जी, प्रो. ए. सी. चक्रवर्ती, ब्र. शीतल प्रसाद, शरच्चन्द्र घोषाल, पं० नाथूराम प्रेमी इत्यादि। पुरातन हिंदी जैन साहित्य को प्रकाश में लाने का अधिकतर श्रेय बाकली वाल जी और प्रेमी जी को है। प्रेमी जी ने तो हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जबलपुर में होने वाले सप्तम अधिवेशन में 'हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास' शीर्षक एक विस्तृत निबन्ध भी पढ़ा था जो जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई से सन् १९१७ में पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ।

(२) प्राचीन ग्रन्थों की समीक्षा परीक्षा:— साहित्यक, सैद्धान्तिक एवं ऐतिहासिक विश्लेषण सम्बन्धी साहित्य। उल्लेखनीय लेखक—पं० जुगल-किशोर मुख्तार, बा० सूरजभान वकील, पं० नाथूराम प्रमी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) जैन इतिहास सम्बन्धी स्वतन्त्र पुस्तकें तथा ऐतिहासिक सामग्री के संकलन ग्रन्थ यथा विज्ञप्ति संग्रह, प्रशस्ति संग्रह, शिला-लेख संग्रह आदि—उल्लेखनीय लेखक—डा. ए. गिरनाट, रा. ब. पारसदास, पूर्णचन्द्र नाहर, मुनि जिन विजय जी, उमराव सिंह टंक, पद्मराज रानीवाले, पं. नाथूराम प्रेमी, ब्र. शीतलप्रसाद, डा. बनारसीदास, विहारीलाल चैतन्य, प्रभुदयाल तहसीलदार, बा. सूरजमल, प्रो. आयंगर, प्रो. शेशागिरि राव, रा. ब. नरसिंहमाचर आदि।

(४) जैन धर्म और उसके अहिंसा आदि सिद्धान्तों तथा उपदेश को आधुनिक भाषा और शैली में स्वतन्त्र रूप से प्रस्तुत करने वाली पुस्तकें:—उल्लेखनीय लेखक—पं. गोपालदास बरैया (मुरैना विद्यालय तथा जैन मित्र पत्र के संस्थापक और प्रथम सम्पादक) बा. ऋषभदास वकील (मेरठ), जे. एल. जैनी, श्री लट्ठे, पूर्णचन्द नाहर, ब्र. शीतल प्रसाद, चम्पतराय बैरि-स्टर, बा. सूरजभान वकील, पं. पन्नालाल बाकलीवाल, ला. मुन्शीलाल, बा. माणिक चन्द, पं. दरयाव सिंह सोंधिया, मुनि शान्ति विजय, पं. जुगल-किशोर मुख्तार आदि।

(५) समाज सुधार एवं शिक्षा प्रचार सम्बन्धी पुस्तकें—उल्लेखनीय लेखक बा. सूरजभान, पं. जुगल किशोर, ज्योतिप्रसाद प्रेमी, दयाचन्द गोयलीय, पं. पन्नालाल बाकलीवाल, आदि।

(६) पाठ्य पुस्तकें—उल्लेखनीय लेखक—पं. पन्नालाल बाकलीवाल, बा. दयाचन्द गोयलीय, ब्र. शीतल प्रसाद, पं. गोपालदास बरैया, लाला मुन्शी-लाल आदि।

(७) उपन्यास नाटक कहानी आदि—उल्लेखनीय लेखक—पं. गोपाल दास बरैया (सुशीला उपन्यास), बा. सूरजभान, पं. अर्जुनलाल सेठी, ला. मुन्शी-लाल, बा. माणिक चन्द, बा. कन्हैयालाल, ला. न्यामतसिंह हिसार (इनके नाटकों और भजनों की बड़ी घूम रही), बा. कृष्णलाल वर्मा, पं. नाथूराम प्रेमी आदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(८) हिन्दी के सार्वजनिक पत्रों में फुटकर लेख तथा स्वतंत्र अनूदित सामयिक लेख निबन्ध चरित्र आदि—उल्लेखनीय लेखक-मि॰ जैन वैद्य, ला॰ मुन्शीलाल, बा॰ दयाचन्द्र गोयलीय, वाडीलाल मोतीलाल शाह, बा॰ सुपार्श्वदास गुप्त (इनका पार्लमेंट नामक ग्रन्थ ४०० पृष्ठ का था), बा॰ मोतीलाल, डा॰ वेणीप्रसाद, बा॰ मणिकचन्द्र, खूबचन्द सोंधिया, डा॰ निहालकरण सेठी, वालचन्द्राचार्य, सुखसम्पत्ति राय भंडारी, पं॰ नाथूराम प्रेमी, आदि।

(९) इस युग की स्फुट तथा फुटकर रचनाओं में जुगलकिशोर मुख्तार, नाथूराम प्रेमी, ज्योति प्रसाद प्रेमी आदि की हिन्दी कविताएं, मुं॰ द्वारका प्रसाद के तीर्थ यात्रा विवरण, ब्र॰ शीतल प्रसाद व बैरिस्टर चम्पतराय के अन्य धर्मों के साथ जैन धर्म के तुलनात्मक अध्ययन, इत्यादि।

(१०) दरखशां, माईल, पैकाँ, ऋषभदास, सूरजभान, ज्योतिप्रसाद, मामचन्दराय, सुमेरचन्द्र, ओसवाल, शिवव्रतलाल, नत्थूराम, चन्दूलाल अख्तर आदि की उर्दू जैन रचनाएं उल्लेखनीय हैं। अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में जैन साहित्य अथवा जैन सम्बन्धी साहित्योल्लेखों का विवरण रा॰ ब॰ पारसदास व बा॰ छोटेलाल की विवलियोग्रेफियों और जैन गजट (अंग्रेजी) की फाईलों से प्राप्त हो सकता हैं।

इस युग के जैन साहित्य प्रकाशन में विशेष योग देनेवाली संस्थाएं, प्रकाशक तथा व्यक्ति निम्नलिखित हैं—बम्बई की माणिकचन्द्र दि॰ जैन ग्रन्थमाला, मुनि अनन्तकीर्ति दि॰ जैन ग्रन्थमाला, जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय, जैन मित्र कार्यालय, कलकत्ते की सनातन जैन ग्रन्थमाला, जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्था, जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, और सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस आरा (अब लखनऊ), जैन तत्व प्रकाशिनी सभा इटावा, जैनेन्द्र प्रेस कोल्हापुर, दि॰ जैन पुस्तकालय सूरत, जैन मित्र मंडल देहली, हीरालाल पन्नालाल जैन बुक सेलर्स देहली, दि॰ जैन शास्त्रार्थ संघ अम्बाला, आत्मानंद जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैनीलाल जैनी देवबन्द, ज्ञानचन्द्र जैनी लाहौर, न्यामत सिंह जैनी हिसार, ला० जौहरीमल सर्राफ देहली (विशेष रूप से उत्कट समाज सुधार विषय के साहित्य के लिये), सेठ हीराचन्द व सखाराम नेमचन्द दोशी शोलापुर, सेठ गांधी नाथारंग आकलूज, गोपाल अम्बादास चवरे कारंजा—इन तीनों श्रीमानों ने प्राचीन ग्रन्थों के प्रकाशन में भारी हिस्सा लिया। इनके अतिरिक्त जयपुर निवासी बा० दुलीचन्द श्रावक, मुं० अमनसिंह, मुं० सुमेरचन्द, वैरि० चम्पतराय, कुमार देवेन्द्रप्रसाद, ला० देवीसहाय (फीरोजपुर) उम्मेदसिंह मुसद्दीलाल (अमृतसर) बुद्धिलाल श्रावक, मुं० नाथूराम लमेचू आदि उल्लेखनीय हैं। मद्रास में सी० मल्लिनाथ, प्रो० चक्रवर्ती आदि सज्जनों ने जैन साहित्य प्रकाशन का कार्य किया।

३. वर्तमान युग :—सन् १९२५ के उपरान्त जैन साहित्य प्रकाशन के वर्तमान युग का प्रारम्भ होता है।

अब विभिन्न मतों के द्वारा धार्मिक दृष्टि से किये जानेवाले विद्वेषपूर्ण खंडन मंडनों का समय नहीं रह गया था। आर्य जैन द्वन्द प्रायः समाप्त हो गया था। किसी भी धर्म के मन्तव्यों एवं मान्यताओं का मखौल उड़ाने, उसे तुच्छ, नीचा, नास्तिक या मिथ्या सिद्ध करने के प्रयत्न निन्दनीय समझे जाने लगे और सर्वधर्म समभाव स्थापित करने की चेष्टाएं की जाने लगीं। किंतु साथ ही एक नवीन प्रवृत्ति भी दृष्टिगोचर होने लगी। अनेक जैनेतर विद्वान अपनी साहित्यिक, दार्शनिक एवं ऐतिहासिक रचनाओं में जैन धर्म दर्शन, संस्कृति, आदि की प्राचीनता, इतिहास और मूल्यवान देनों की अज्ञान अथवा प्रमाद के वश होकर उपेक्षा तथा उनके सम्बन्ध में भ्रमपूर्ण एवं मिथ्या कथन भी करने लगे। फलस्वरूप उन विद्याओं के साथ तो अन्याय होता ही हैं साथ ही जैन धर्मावलम्बियों के स्वाभिमान को भी ठेस पहुंचती है और उन्हें क्षोभ होता है। स्वातंत्र्य प्राप्ति और सर्वतंत्र जनतन्त्र की स्थापना के उपरान्त बहुसंख्यक हिन्दू धर्मानुयायियों के द्वारा जिनका कि राजनैतिक आदि क्षेत्रों में बाहुल्य है, यह प्रवृत्ति और अधिक चरितार्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होने लगी। राष्ट्रीयता के नाम पर जैन धर्म और संस्कृति की स्वतन्त्र सत्ता का निषेध किया जाने लगा है और हिन्दू धर्म तथा संस्कृति द्वारा केवल अल्प संख्यक होने के कारण ही जैन धर्म और संस्कृति को हड़प लिये जाने की नवीन चेष्टाएं प्रारम्भ हो रही हैं। किंतु जिन अर्थों में एक सामान्य हिन्दू विशुद्ध भारतीय हैं उन्हीं अर्थों में एक जैनी भी वैसा ही विशुद्ध भारतीय है। हिन्दू धर्म के नाम से अभिप्रेत वैदिक परम्परा के जिन अनेक सम्प्रदायों और मत मतान्तरों का समुदाय जितना प्राचीन और भारत का अपना है उससे शायद कहीं अधिक प्राचीन और भारत की अपनी ही श्रमण परम्परा का प्रतिनिधि जैन धर्म और उसकी संस्कृति है। ये धार्मिक अथवा सांस्कृतिक भेद किसी व्यक्ति की राष्ट्रीयता, नागरिकता अथवा भारतीयता में वाधक नहीं हो सकते। फिर ऐसे विवादास्पद शब्द (अर्थात् हिन्दू) का इतना मोह क्यों जवकि वह एक परम्परा विशेष के अनुयायियों के लिये ही प्रयुक्त होते चले आने के कारण समग्र राष्ट्र का सूचक होने के लिए उपयुक्त नहीं है और जिसके उक्त रूप में प्रयोग करने से सदैव भारी भ्रान्ति उत्पन्न होते रहने की संभावना है। जव जैन धर्म और संस्कृति की पृथक एवं स्वतंत्र सत्ता है, उसकी परम्परा अत्यन्त प्राचीन है, उसका अपना अति स्वर्णिम इतिहास है और वह शुद्ध स्वदेशीय हैं तव उनके अपने आपको हिन्दू न कहने से या हिन्दूधर्म और संस्कृति का अंग न मानने से तो कोई वे विदेशी, अभारतीय, राष्ट्र के प्रतिविद्रोही या उसके लिए अजनवी हो नहीं जाते। वे भारत के और भारत उनका है यह तथ्य निर्विवाद है। जहाँ तक जैनाध्ययन के जिसमें कि जैन संस्कृति की सभी विविध शाखाओं के अध्ययन का समावेश है, महत्व और प्रगति का वहुत कुछ अनुमान इसी पुस्तक के अन्त में प्रकाशित स्वतंत्र लेख से हो सकता है। जैन ही नहीं अनेक उद्भट अजैन विद्वान भी अ... सहृदय एवं शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से जैनाध्ययन में दिलचस्पी ले रहे हैं और भारत के सांस्कृतिक विकास का पुनर्निर्माण कर रहे हैं। किन्तु आवश्यकता इस वात की है कि विभिन्न विश्वविद्यालयों में जैनाध्ययन को एक विशे...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्ययनीय विषय बनाकर उसके सम्बंध में सुव्यवस्थित शोध खोज अनुसंधानादि चालू किये कराये जांय।

अजैन लेखकों की उपरोक्त प्रकार की भ्रान्त धारणाओं और मिथ्या या अन्यथा कथनों के परिहार एवं निराकरण के उद्देश्य से भी बहुत कुछ साहित्य प्रकाशित होने लगा है, किन्तु इस आवश्यकता की पूर्त्ति जैसे सुचारु सुव्यवस्थित ढंग पर होनी चाहिये थी वैसी अभी नहीं हो पारही है।

जैन धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों के बीच समन्वय तथा ऐक्य के जो प्रयत्न पिछले युग में प्रारंभ हुए थे वे इस युग में शिथिल प्राय: होते गये। और जिस प्रकार भारतीय राजनैतिक क्षेत्र में हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के प्रयत्नों का परिणाम अतिकटु एवं विनाशकारी सिद्ध हुआ उसी प्रकार दिगम्बर श्वेताम्बर सम्प्रदायों में सद्भाव एवं एक-सूत्रीकरण के प्रयत्न भी उभय सम्प्रदायों के बीच की खाई को और अधिक विस्तृत एवं गहरी करते दीख पड़ रहे हैं। विभिन्न तीर्थों के प्रश्न को लेकर होने वाली चिरकालीन मुकदमेबाजी के अतिरिक्त नवीन साहित्यिक शोध खोज का लाभ उठा कर दोनों ओर के कितने ही विद्वान प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उभय सम्प्रदायों के साहित्यिक सैद्धान्तिक ऐतिहासिक आदि मतभेदों को और अधिक सूक्ष्मता के साथ पुष्ट करने लगे हैं। जो इने गिने नेता इतने पर भी समन्वय के प्रयत्न में लगे हुए हैं वे भी कुछ ऐसा भ्रमपूर्ण ढंग अख्त्यार किये हुए हैं कि जिससे वे सद्भाव उत्पन्न करने के बजाय शंका और द्वेष की पुष्टि करने में ही सफल हो रहे हैं। तथापि ऐसे उदाराशय विद्वानों का भी अब अभाव नहीं है जो कि अपनी दृष्टि की विशालता के कारण अनेकान्त मूलक सहिष्णुता के साथ सभी मतभेदों को गौण करते हैं तथा एक उपरिम समस्तर से ही विचार करते हैं। इस दिशा में ऐसे ही महानुभावों से कुछ आशा है।

सामाजिक संगठन की दृष्टि से भी जैन समाज कुछ आगे नहीं बढ़ा। पिछले युग के नेता संख्या में तो थोड़े थे किन्तु प्राय: सर्व ही सामाजिक क्षेत्रों पर उनका अधिकार था, उनमें परस्पर सहयोग और एक सूत्रता थी, वे अपना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुमूल्य समय देकर अनेक कष्ट लाञ्छना अपमानादि सहन कर, अपनी जेब से ही आवश्यक द्रव्य भी व्यय करके पूरी लगन और तत्परता के साथ समाजोन्नति के विविध कार्यक्रमों में जुटे रहते थे। संस्थाएं भी थोड़ी थीं पर वे ऐसे कर्मठ, निस्वार्थ एवं कर्त्तव्य शील नेताओं की अध्यक्षता में वहुत कुछ ठोस कार्य कर रहीं थीं। किन्तु अब आये दिन नई-नई संस्थाओं का जन्म होने लगा, उन्हें व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति का साधन बनाया जाने लगा, छोटी-छोटी व्यापारिक कम्पनियों जैसी उनकी स्थिति हो गई। उनके नेताओं और कार्यकर्ताओं में या तो पद और मान के लोलुपी अदीमुल फुर्सत वड़े-वड़े श्रीमान होने लगे या फिर वैतनिक अथवा नाम मात्र के लिए अवैतनिक ऐसे व्यक्ति होने लगे जो प्रायः करके न स्वल्प संतोषी ही होते हैं और न जीवन निर्वाह सम्बंधी द्रव्योपार्जन की चिन्ता से मुक्त ही। लोभ एवं अधिकार मोह के कारण बरसाती मेंढकों की भाँति नित्य प्रति बढ़ती जाने वाली इन संस्थाओं में परस्पर सहयोग, सद्भाव और एक सूत्रीकरण नहीं हो पाता। फलस्वरूप समाज की शक्ति और द्रव्य का तो पर्याप्त व्यय होता है किन्तु किसी दशा में भी वाञ्छनीय इष्ट सिद्धि नहीं हो पा रही है। इन संस्थाओं के अधिवेशन अवश्य ही वड़ी धूम धाम और शान के साथ होते हैं, उनके प्रचारक भी स्थान-स्थान में घूमते हैं, कई एक संस्थाओं के अपने मुखपत्र भी हैं, पुस्तकादि के रूप में भी साहित्य प्रकाशित होता है, किन्तु उपरोक्त दोषों के कारण तथा निस्वार्थ कर्त्तव्यशीलता के अभाव में न इन संस्थाओं का और न इनसे संबंधित व्यक्तियों का समाज पर कोई प्रभाव पड़ता है। वार्षिक कार्य विवरण आकर्षक रिपोर्टों के रूप में प्रकाशित होते हैं किन्तु ठोसकार्य कुछ भी होता नहीं दीखता। समस्याएं बढ़ती चली जाती हैं पर किसी समाज की समस्या का भी सन्तोषजनक समाधान नहीं होता। समाज सुधार शिक्षा, राजनैतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक किसी भी क्षेत्र में जो जो आवश्यकताएं हैं वे इन्हीं की पूर्ती के लिए स्थापित इतनी सारी संस्थाओं सैंकड़ों नेताओं, सैंकड़ों ही विद्वानों और सौ के ही लगभग सामयिक पत्रोंके होते हुए भी प्रायः कुछ भी पूरी नहीं हो पा रही हैं। गत बीस वर्षों में कई एक उच्च

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोटि की साहित्यिक शोध खोज निर्माण प्रकाशन आदि सम्बंधी संस्थाओं का जन्म हो चुका है। किन्तु उनमें भी प्रवन्ध और व्यवस्था की दृष्टि से अन्य सामान्य जैन संस्थाओं के ही अनेक दोष हैं। पृथक-पृथक उन सबकी शक्ति सीमित और अल्प है और व्यक्तिगत स्वार्थों अथवा ईर्ष्या द्वेषादि के कारण उनमें परस्पर सहयोग और एकसूत्रता नहीं हो पाती। फलस्वरूप साहित्य निर्माण और प्रकाशन प्रगति में भी जितना योगदान वे कर सकती थीं उसका अल्पांश मात्र ही हो रहा है।

फिर भी इस युग में साहित्यिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक खोज शोध का कार्य तथा ग्रन्थों का सम्पादन प्रकाशन बहुत कुछ व्यवस्थित एवं प्रमाणीक ढंग पर होने लगा है। विभिन्न उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियों का मिलान करके, विविक्षित विषय सम्बन्धी पूर्वापर साहित्य के साथ तुलना पूर्वक सावधानी के साथ पाठ संशोधन, अनुवाद, व्याख्या, आवश्यक टिप्पणादि और विद्वत्तापूर्ण विस्तृत विवेचनात्मक प्रस्तावनाओं सहित महत्त्वपूर्ण प्राचीन ग्रन्थों के सुसम्पादित संस्करण प्रकाशित होने लगे हैं। दिगम्बरों के प्राचीनतम् आगम साहित्य-धवलादि टीकाओं सहित षटखंडागम, कषाय पाहुड़, महावन्ध आदि ग्रन्थराजों के भी उपरोक्त प्रकार सुसम्पादित संस्करण प्रकाश में आ रहे हैं। प्राचीन जैन अपभ्रंश साहित्य का भी उद्धार हो रहा है। कितने ही अपभ्रंश ग्रन्थ प्रकाश में आ गये हैं, जिससे कि हिन्दी भाषा के विकास और इतिहास सम्बन्धी विचारों में भारी क्रान्ति उत्पन्न हो गई है। हिन्दी के पुरातन जैन कवियों और लेखकों का साहित्य भी प्रकाश में आ रहा है। जैन धर्म, जैन दर्शन, जैन संघ, जैन साहित्य, राजनीति में जैन नेतृत्व आदि विषयों पर विविध भाषाओं में स्वतन्त्र ऐतिहासिक ग्रन्थ, शिला लेख संग्रह, प्रशस्ति संग्रह विज्ञप्ति पत्रसंग्रह, ग्रन्थसूचियें, ग्रन्थ कोष, उद्धरण कोष आदि तथा मूर्ति विज्ञान, स्थापत्य, चित्रकला आदि विविध कलाओं और गणित ज्योतिष चिकित्सा विज्ञान आदि विविध विज्ञानों तथा सामान्यतया जैन सांस्कृतिक देनों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के सम्बन्ध में भी उत्तम कोटि की पुस्तकें प्रकाशित होने लगी हैं। पिछले युगों में ये कार्य प्रायः करके अंग्रेज, जर्मन, फ्रांसीसी आदि विदेशी व कतिपय जैनेतर भारतीय विद्वानों द्वारा ही सम्पादित हो रहा था, कि अब इस क्षेत्र में शायद ही कोई विदेशी विद्वान कार्य कर रहा हो, और दिशा में प्रयत्नशील उच्चकोटि के भारतीय विद्वानों में स्वयं जैन विद्वानों संख्या भी कम नहीं है तथा उसमें दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जाती है। एक यूनीवर्सिटियों में भी, विशेषकर श्वेताम्बर समाज के उद्योग से कुछ वि जैन रिसर्च का कार्य कर रहे हैं। मौलिक कविता, कहानी, उपन्यास, ना प्रहसन, निबन्ध, साहित्यिक आलोचन आदि शुद्ध साहित्यिक विषयों के अनेक श्रेष्ठ लेखक और कलाकार जैनों में विद्यमान हैं। किन्तु जैसा हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कराँची अधिवेशन में साहित्य परिषद के अ आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी ने अपने अभिभाषण में कहा था कि 'अ विद्वानों को यह शिकायत अभी तक है कि जैनियों का साहित्य महत्त्व एवं विपुल मात्रा में होते हुए भी अभी तक उसके ऐसे अनुवादित सम्पा संस्करण प्रकाश में नहीं आ पाये जो जैनेतर विद्वत्समाज द्वारा ग्राह्य हों पर वास्तव में बात बिलकुल ऐसी ही नहीं है। अनेक जैन ग्रन्थों के संस्करण प्रकट भी हो चुके हैं। हाँ जैनों ने उन्हें अजैन जनता और वि तक पहुंचाने का उपयुक्त प्रयत्न नहीं किया और अजैन विद्वानों ने उन्हें प्राप्त करके अध्ययन करने में उदासीनता भी दिखलाई है। कई वर्षों निरन्तर प्रयत्न करते रहने पर भी हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसी संस्था ने हिन्दी जैन साहित्य को अपने पाठ्यक्रम आदि में सम्मि करने में उपेक्षा ही बरती है। अधिकांश विश्वविद्यालय प्रेरणा करने पर जैन रिसर्च को अपने यहाँ स्थान देने में स्वतः तैयार नहीं होते। राज अथवा अखिल भारतीय साहित्यिक, ऐतिहासिक आदि परिषदों संस्थानों में भी उसकी उपेक्षा ही की जाती है। ऐसी परिस्थिति में जैनों ही प्रथम कर्त्तव्य है कि वे इन दिशाओं में दृढ़ निश्चय के साथ अग्रसर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्त विश्वविद्यालय आदि को तथा जैनेतर विद्वानों को जैनाध्ययन की ओर आकृष्ट करें और अपने साहित्य रत्नों को बाह्य समाज के लिये सुलभ कर दें, उनका यथोचित उपयोग किये जाने में प्रोत्साहन एवं सुविधाएं प्रदान करें तथा सभी महत्त्वपूर्ण पुरातन ग्रन्थों के ऐसे संस्करण भी प्रकाशित कर दें जो सर्वग्राह्य हों।

इस युग के प्रारम्भ के पूर्व से ही देश सार्वजनिक राष्ट्रीयता के प्रभाव से ओत प्रोत रहा है। सतत् आन्दोलनों और भीषण संघर्षों के पश्चात तथा अनेक त्याग और कष्ट सहन करके अब एक प्रकार से पराधीनता के पाश से मुक्त होकर स्वतंत्र वायुमंडल में सांस ले सका है। इस राष्ट्रीय आन्दोलन में भी जैन समाज ने अपनी संख्या के अनुपात से कहीं अधिक सहर्ष योगदान दिया, और धन एवं जन के यथेष्ठ बलिदान द्वारा स्वातंत्र आन्दोलन को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग और सहायता दी। राष्ट्रीयता के रंग में डूबा हुआ साहित्य भी निर्माण किया। और आज भी प्रायः समग्र जैन समाज तन मन धन से राष्ट्रीय महासभा तथा राष्ट्र के सर्वमान्य कर्णधारों के साथ है। राष्ट्र की समस्त राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रगतियों में वह अभिन्न रूप से उनके साथ है, अपनी स्वतंत्र धार्मिक एवं सांस्कृतिक सत्ता रखते हुये भी अखिल भारतीय राष्ट्र का अभिन्न एवं अविभाज्य अंग है।

सामयिक पत्र पत्रिकाएं

भारतवर्ष में छापेखाने के प्रारम्भ और इतिहास पर पीछे प्रकाश डाला जा चुका है। छापेखाने की स्थापना होने पर समाचार पत्रों का प्रकाशन स्वाभाविक था। अस्तु श्री बृजेन्द्रनाथ वन्द्योपाध्याय लिखित 'देशीय सामयिक पत्रेर इतिहास, 'खंड १' के अनुसार भारत का सर्व प्रथम समाचारपत्र २९ जनवरी सन् १७८० ई० को 'बंगाल गजट' के नाम से अंगरेजी भाषा में प्रकाशित हुआ। यह पत्र साप्ताहिक था, हिकि साहब इसके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्थापक थे और यह दो वर्ष तक चला। इसके पश्चात इन्डिया गजट, कलकत्ता गजट, आदि अंग्रेजी पत्र निकले। सन् १७६६ में भारत के गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली ने अखबारों पर कड़ा प्रतिबन्ध लगा दिया जो सन् १८१८ में लार्ड हेस्टिंग्ज द्वारा हटाया गया, और उसके स्थान में कुछ नियम बना दिये गये। अतः इस बीच में पुराने पत्रों का प्रकाशन और नवीन पत्रों की स्थापना प्रायः बन्द ही रही। सन् १८१८ के उपरान्त फिर से नवीन पत्र निकलने लगे। बंगला भाषा का सर्व प्रथम पत्र 'दिग्दर्शन' श्रीरामपुर मिशन द्वारा अप्रेल सन् १८१८ में निकाला गया। मई सन् १८१८ में बंगला का 'समाचार दर्पण' और तत्पश्चात् 'बंगला गजट' निकले। उर्दू का सर्व प्रथम पत्र 'जाम इ जहान् नूमा' २८ मार्च सन् १८२२ को और फारसी का 'मीरातुल अखबार १२ अप्रेल सन् १८२२ को निकले। ७अक्तूबर सन् १८२३ को समाचार पत्रों पर फिर से कड़े प्रतिबन्ध लगा दिये गये अप्रेल सन् १८२३ में प्रथम भारतीय प्रेस कानून बना जिसके अनुसार पत्रों के प्रकाशन के लिये सरकार की अनुमति लेना अनिवार्य थी। ४ दिसम्बर सन् १८२७ से यह कानून अंशतः रद्द हो गया और सन् १८३५ में बिलकुल हटा दिया गया, किन्तु सन् १८५७ से वह फिर से लागू कर दिया गया।

उन्हीं बनर्जी महोदय के एक दूसरे लेख 'हिन्दी का सर्व प्रथम समाचार पत्र' (विशाल भारत, फर्वरी सन् १९३१) से विदित होता है कि हिन्दी का सर्व प्रथम पत्र, जैसा कि प्रायः समझा जाता था, सन् १८४५ में स्थापित 'बनारस अखबार' नहीं था, वरन् ३० मई सन् १८२६ को कानपुर निवासी पं० जुगलकिशोर शुक्ल द्वारा कलकत्ते से निकाला जाने वाला साप्ताहिक 'उदन्त मार्त्तण्ड' था, जिसका वार्षिक मूल्य दो रुपये था, और जो प्रत्येक मंगलवार को ३७, आमडा तल्ला गली कोलू टोला, कलकत्ता से प्रकाशित होता था। इसके पश्चात् ९ मई सन् १८२९ को राजा राममोहन राय द्वारा दूसरा हिन्दी पत्र 'बंगदूत' प्रकाशित हुआ और अन्त में सन् १८४५ में बनारस से 'बनारस अखबार' निकला। मराठी के 'कल्प-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तह आणि आनंदवृत' सन् १८६७ में और 'केसरी' सन् १८८० में निकले।

जैन सामयिक पत्रों में सर्व प्रथम सम्भवतया गुजराती मासिक 'जन दिवाकर' था जो 'जैन श्वेताम्वर ग्रन्थ गाइड' तथा 'जैन साहित्यनो-संक्षिप्त इतिहास' के अनुसार अहमदावाद से श्री छगनलाल उमेदचन्द द्वारा वि० सं० १९३२ (सन् १८७५ ई०) में प्रकाशित किया गया था और लगभग दश वर्ष चला सन् १८७६ में केशवलाल शिवराम द्वारा गुजराती 'जैन सुधारस' निकला जो एक वर्ष चलकर ही वन्द हो गया।

दिगम्बर समाज का सर्व प्रथम सामयिक पत्र सन् १८८४ के प्रारम्भ में पं० जीयालाल जैन ज्योतिषी द्वारा फर्रुखनगर (उ० प्र०) से प्रकाशित साप्ताहिक 'जैन' था। इसका वार्षिक मूल्य ढाई रुपये था, और यह हिन्दी भाषा का भी सर्व प्रथम जैन पत्र था, दश बारह वर्ष पर्यन्त चला भी। इन्हीं पं० जीयालाल ने उसके कुछ ही समय पश्चात् उर्दू में 'जीयालाल प्रकाश' भी निकालना आरम्भ किया जो कि उर्दू का सर्वप्रथम जैनपत्र था। सितम्वर सन् १८८४ में शोलापुर से स्वर्गीय सेठ रावजी हीराचन्द नेमचन्द दोशी ने मराठी-गुजराती-हिन्दी का मासिक 'जैन बोधक' निकालना शुरू किया। यह पत्र मराठी का तो सर्व प्रथम जैन पत्र था ही, अब तक जीवित रहने के कारण वर्तमान जैन पत्रों में भी सर्व प्राचीन है और इने गिने सर्वाधिकजीवी भारतीय पत्रों में से एक है। इसके पश्चात् सन् १८८४ में ही जैनधर्म प्रवर्तक सभा अहमदाबाद से डाह्या भाई घोलशा जी के निरीक्षण में गुजराती 'स्याद्वाद सुधा' अप्रेल सन् १८८५ में जैन हितेच्छुसभा भावनगर द्वारा 'जन हितेच्छु' और इसी वर्ष अहमदावाद से गुजराती में श्वेताम्वर 'जैन धर्म प्रकाश' निकले, जिसमें से अन्तिम पत्र अभी तक चालू रहने के कारण वर्तमान श्वेताम्बर पत्रों में सर्व प्राचीन है।

इसके पश्चात् तो जैन सामयिक पत्र हिन्दी, गुजराती, मराठी, उर्दू, अंग्रेजी, कन्नडी आदि भाषाओं में दनादन निकलने लगे। केवल दिगम्बर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाज के द्वारा ही निम्नोक्त अनेक पत्र कुछ ही वर्षों के भीतर प्रकाश में आये—सन् १८९२ में मराठी मासिक 'जैन विद्यादानोपदेश प्रकाश' सन् १८९३ में बंगलौर से सेठ पद्मराज द्वारा हिन्दी 'काव्याम्बुधि' सन् १८९३-९४ में बम्बई से पं० पन्नालाल बाकलीवाल द्वारा 'जैन हितैषी' मासिक जिसका सम्पादन प्रकाशन सन् १९०४ से पं० नाथूराम प्रेमी ने किया, पं० जुगल किशोर मुख्तार भी कुछ समय तक इसके संपादक रहे यह पत्र अपने समय का सर्वश्रेष्ठ हिन्दी जैन मासिक रहा हैं। सन् १८९ में ही दि० जैन महासभा का हिन्दी साप्ताहिक 'जैनगजट' चालू हुआ और बाबू सूरजभान वकील ने उर्दू का जैनहितउपदेशक' नामक पत्र निकाला। सन् १८९५ में हिन्दी मासिक 'जैन प्रभाकर' निकला, १८९६ में हिन्दी साप्ताहिक 'जैनमार्त्तण्ड' और १८९७ में बाबू सूरजभान द्वारा ज्ञान प्रकाशक' नामक मासिक पत्रिका, बाबू ज्ञानचन्द जैनी लाहौर द्वारा 'जैन पत्रिका' तथा पंडित पन्नालाल बाकलीवाल द्वारा वर्धा से 'जैन भास्कर' निकले। सन् १८९८ में बम्बई प्रान्तिक दि० जैन सभा की ओर से पंडित गोपालदास जी बरैया ने हिन्दी साप्ताहिक 'जैन मित्र' की अपने ही सम्पादन में स्थापना की। ब्र० शीतल प्रसाद जी ने बहुत काल तक इसका सम्पादन किया। यह पत्र अभी तक चालू है और सूरत से प्रकाशित होता है। सन् १८९९ में हिन्दी मासिक 'जैनी' और १९०० में हिन्दी त्रैमासिक 'जैनेतिहास सार' निकले। सन् १९०२ में मराठी कन्नडी मिश्रित 'प्रगति आणि जिनविजय' निकला और सन् १९०४ में अंग्रेजी 'जैन गजट' का प्रारम्भ हुआ। यह पत्र वर्तमान में अजिताश्रम लखनऊ से बाबू अजितप्रसाद जी के सम्पादन काल में निकलता है। इसके कुछ ही समय पश्चात कन्नड़ी का 'विवेकाभ्युदय' निकला और सन् १९०७ में सूरत से हिन्दी गुजराती मिश्रित मासिक 'दिगम्बर जैन'। सन् १९२१ से ब्र० पंडिता चन्दा बाई आरा द्वारा सम्पादित हिन्दी मासिक 'जैन महिलादर्श' निकल रहा है, और सन् १९२३ में पंडित बाकलीवाल द्वारा एक बंगला पत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'जिनवाणी' निकला जो कुछ समय तक चलकर बन्द हो गया। मुनि जिन विजय जी द्वारा सम्पादित हिन्दी गुजराती अंग्रेजी का श्वेताम्बर 'जैन साहित्य संशोधक' त्रैमासिक भी अत्यधिक महत्वपूर्ण पत्र था जो कुछ वर्ष चलकर बन्द हो गया। पंडित दरबारीलाल सत्यभक्त के सम्पादन में बम्बई का 'जैन जगत' भी कई वर्ष बहुत अच्छा निकला था। उपरोक्त पत्रों के अतिरिक्त और भी अनेक पत्र पत्रिकाएं, विशेष रूप से सन् १९२० के पश्चात चालू हुई, जिनमें से अधिकतर अल्पाधिक काल तक चलकर बन्द हो गई। इस प्रकार छापे के प्रारम्भ से अब तक लगभग ढाई सौ जैन सामायिक पत्र पत्रिकाएं निकल चुकी हैं जिनमें से लगभग डेढ़सौ तो अस्तगत हो चुकीं और एक सौ के लगभग अभी भी चालू हैं। प्रारम्भ से अब तक लगभग एक दर्जन सार्वजनिक पत्र पत्रिकाओं का सञ्चालन अथवा सम्पादन भी जैनों द्वारा हुआ है।

विवरण सूची का संक्षिप्त सार

इन 'प्रकाशित जैन साहित्य' नामक ग्रन्थ में अनेक भाषाओं में मुद्रित–प्रकाशित जैन ग्रन्थों–पुस्तकों, सामयिक पत्रों, भाषणों, साहित्यिक संस्थाओं, प्रकाशकों और लेखकों आदि की जो संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण सूची दी गई है उसमें संकलित तथ्यों से जो निष्कर्ष प्राप्त होते हैं वे निम्न प्रकार हैं:—

उक्त विवरण सूची में २६८० पुस्तकों का उल्लेख है जिन्हें भाषा की अपेक्षा ६ विभागों में विभाजित किया गया है।

(१) प्रथम विभाग हिन्दी का है जिसमें संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भी सम्मिलित हैं। इसमें कुल २०५२ पुस्तकें जिनमें से—संस्कृत की १८०, प्राकृत की ४४, अपभ्रंश १८, हिन्दी प्राचीन (सन् १८५० अथवा सं० १९२० के पूर्व निर्मित)—२७५,—प्राचीन ग्रन्थों के अर्वाचीन टीका अनुवादादि–३७७.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आधुनिक हिन्दी मौलिक—१११३, और जैन धर्म के सम्बंध में प्रकाशित महत्व-पूर्ण हिन्दी भाषण व्याख्यानादि—४५.

(२) मराठी की ४८ जिनमें से मौलिक १३ और अनुवाद ३५ हैं।

(३) गुजराती की ७० जिनमें मौलिक ४७ और अनुवाद २३ हैं।

(४) बंगला की ५२ जिनमें मौलिक ४२ और अनुवाद १० हैं।

(५) उर्दू की १६८ जिनमें मौलिक १५१ और अनुवाद १७ हैं।

(६) अंगरेजी आदि यूरोपिय भाषाओं में २६० जिनमें से मौलिक २ और अनुवादादि ६० हैं। इनमें पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख निबन्ध आ सम्मिलित नहीं है।

पुस्तक निर्माता—उपरोक्त साहित्य के निर्माताओं की दृष्टि से जिन पूर्णयोग १३०३ है—संस्कृत ग्रन्थों के मूल लेखक १०७, टीकाकार ३८, १४५, प्राकृत ग्रन्थों के मूल लेखक १८, टीकाकार २, योग २०. अपभ्रं ग्रन्थों के लेखक ७.

हिन्दी प्राचीन पद्य लेखक ४०, गद्य लेखक १३, योग ५३. (बाद की खोज से हमें हिन्दी पुरातन गद्य के ५० से अधिक लेखकों और उनकी स के लगभग गद्य कृतियों का पता चला है). आधुनिक हिन्दी के मौलिक ले (गद्य पद्य दोनों के)——२६५, टीकाकार ४८, अनुवादक ६१, सम्पादक ११८, संग्रह या संकलन कर्त्ता २४, और १६५ ग्रंथ ऐसे हैं जिनके लेखक अज्ञात हैं। मराठी के मौलिक लेखक ७, और अनुवादक १४, अज्ञात ६. राती के मौलिक लेखक २३, और अनुवादक १५, अज्ञात ७. बंगला के मौ लेखक १५, अनुवादक ५, और अज्ञात १. उर्दू के मौलिक लेखक ५३ अनुवादक १२. अंगरेजी आदि के मौलिक लेखक १०३, अनुवादक ३५, अज्ञात ८.

प्रकाशक—इन पुस्तकों के निर्माण कराने और प्रकाशित करने में जिन संस्थाओं तथा व्यक्तियों ने भाग लिया है उनकी संख्या निम्न प्रकार है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) साहित्यिक शोध, खोज, निर्माण, प्रकाशन, प्रचार आदि उद्देश्यों को लेकर सामाजिक द्रव्य से अथवा व्यक्तिगत ट्रस्ट आदि के द्वारा स्थापित एवं सञ्चालित जैन साहित्यिक संस्थाएं और ग्रन्थ-माला समितियें—३९.

(२) अन्य विविध धार्मिक सामाजिक जैन संस्थाएं—९१.

(३) जैन व्यवसायी प्रकाशन और पुस्तक विक्रेता—३१.

(४) जैन स्त्री पुरुष, व्तक्तिगत रूप से—२६०

(५) अजैन सज्जन, संस्थाएं और प्रकाशक—२६.

पूर्णयोग ४४७.

विषय विभाजन—की दृष्टि से उक्त पुस्तकों की संख्या निम्न प्रकार है—

(१) धर्म २७५, (२) सिद्धांत एवं तत्त्व ज्ञान १२२.

(३) अध्यात्मिक ग्रन्थ १५९, (४) दर्शन एवं न्याय शास्त्र ६४.

(५) आचार शास्त्र १५२, (६) पुराण चारित्र ११९, (७) प्राचीन कथा साहित्य ७८, स्तोत्र स्तुति पद-भजनादि संग्रह—२११,

(९) पूजा प्रतिष्ठापाठ और तीर्थमहात्म्यादि १३९, (१०) मन्त्र तन्त्रादि ७. (११) नीति सुभाषितादि १९, (१२) तुलनात्मक अध्ययन, समीक्षा परीक्षा, खंडन मंडनादि १६५, (१३) साहित्य व्याकरण छन्द अलंकार कोषादि ५७, (१४) विज्ञान गणित ज्योतिष निमित्त शास्त्र, वैद्यक, रत्न परीक्षा, वास्तुसार आदि १८,

(१५) इतिहास पुरातत्त्व राजनीति, जीवन चरित्र आदि १९५,

(१६) भूगोल खगोल, यात्रा विवरण, स्थान परिचयादि ५५,

(१७) काव्य नाटक उपन्यास कहानी आदि २२८,

(१८) समाज सुधार व शिक्षा (१९) स्त्री व बालकोपयोगी ७५,

(२०) महत्त्वपूर्ण भाषण व्याख्यानादि ५०, (२१) शेष विविध १०१.

इस विषय विभाजन में अंगरेजी पुस्तकें सम्मिलित नहीं की गई हैं।

सामयिक पत्र पत्रिकाएं—अब तक लगभग अढ़ाई सौ जैन साम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यिक पत्र पत्रिकाएं विभिन्न भाषाओं तथा साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रिमासिक, षाठमासिक आदि विविध रूपों में निकल चुकी हैं। इनमें से जिनके विषय में कुछ ज्ञात हो चुका है ऐसी १६६ पत्र पत्रिकाएं (९० दिगम्बर और ६६ श्वेताम्बर आदि) तो अल्पाधिक समय तक चल कर वन्द हो चुकी हैं।

वर्तमान में ज्ञात चालू जैन पत्रों की संख्या ८४ है जिनमें से लगभग ५० दिगम्बर, २६ श्वेताम्बर और ८ स्थानक वासी हैं। इनमें से हिन्दी के ५०. मराठी ३, गुजराती १६, कन्नडी २, उर्दू १, अंगरेजी २, हिन्दी गुजराती मिश्रित ७, हिन्दी मराठी १, हिन्दी उर्दू १, हिन्दी अंगरेजी १ हैं। इन पत्रों में षाठमासिक २, त्रैमासिक ५, मासिक ४५, पाक्षिक १६ और साप्ताहिक १६ हैं। दैनिक कोई नहीं है।

सम्पादन प्रकाशन की उत्तमता तथा साहित्यिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से निम्नलिखित वर्तमान जैन पत्र पत्रिकाएँ पर्याप्त महत्त्व पूर्ण हैं—अनेकान्त (देहली), जैन सिद्धान्तभास्कर (आरा), दी जैना एंटीक्वेरी (आरा), ज्ञानोदय (बनारस), श्री जैन सत्य प्रकाश (अहमदावाद), जैन भारती (कलकत्ता), जैन गजट अंगरेजी (लखनऊ), आत्मधर्म (सोनागढ़), जैन महिलादर्श (सूरत) जैन मित्र (सूरत), दिगम्बर जैन (सूरत), जैन सन्देश (आगरा), वीर वाणी (जयपुर), जैन जगत (वर्धा), संगम (वर्धा), वीर (देहली), श्रमण (बनारस), जैन वोधक (शोलापुर), प्रगति आणि जिन विजय (वेल गाँव), तारण संदेश (दमोह), जैन प्रचारक (देहली) जैन प्रकाश (बम्वई), प्रबुद्ध जैन (बम्वई), जिनवाणी (भोपालगढ़), तरुण जैन (कलकत्ता), वीर लौंकाशाह (जोधपुर) श्वेताम्वर जैन (आगरा), जैन (भाव नगर) इत्यादि।

जैन सामयिक पत्रों के सम्बन्ध में जैन मित्र (कार्तिक सुदी ८, वी० सं० २४६४, पृ० ११-१२) में 'दिगम्बर जैन समाज के भूत और वर्तमान कालीन पत्र' शीर्षक से श्री शान्ति कुमार जैन ठवली, नागपुर ने ४८ भूतकालीन और २६ चालू पत्रों की सूची प्रकाशित की थी। उसके पश्चात श्रीयुत अगर चन्द्र नाहटा ने ओस वाल नवयुवक वर्ष ८ संख्या १, मई सन् १९३७ के अङ्क में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृष्ठ ४२ पर 'जैन समाज के वर्तमान सामयिक पत्र' लेख में उस समय चालू ६९ पत्रों की संक्षिप्त परिचयात्मक सूची दी थी तथा जैन सिद्धान्त भास्कर भाग ५ किरण १, पृ० ३९ पर प्रकाशित अपने लेख 'भूतकालीन जैन सामयिक पत्र' में समाचार पत्रों के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए १०५ भूतकालीन तथा ६६ चालू पत्रों की नाम सूची दी थी। और जैन मित्र वर्ष ५१, अङ्क ७ (ता० २२ दिसम्बर सन् १९४९) में जैन समाज के समाचार पत्र शीर्षक के अन्तर्गत ५७ चालू पत्रों को जिनमें ३३ दिगम्बर और २४ श्वेताम्बर हैं तथा ९२ भूतकालीन पत्रों की जिनमें ६८ दिगम्बर और २४ श्वेताम्बर हैं एक सूची दी है।

उपरोक्त विभिन्न सूचियों में से किसी में भी वे लगभग एक दर्जन सार्वजनिक पत्र सम्मिलित नहीं हैं जिनका सम्पादन, प्रकाशन अथवा संचालन जैनों द्वारा किया गया है और जिनमें से कई पत्र पर्याप्त लोक प्रिय भी रहे हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सामयिक पत्रों और पत्र कला की दृष्टि से भी अल्प संख्यक जैन समाज ने पर्याप्त उन्नति की है और वह किसी से पीछे नहीं है। यदि इसमें कोई दोष है तो यही कि जिन पत्रों की संख्या आवश्यकता से अधिक है, उनका पठन प्रायः जैन समाज के भीतर ही सीमित होने से एक भी पत्र की ग्राहक संख्या उसे स्वनिर्भर करने के लिये पर्याप्त नहीं है। फल स्वरूप लेखकों और पत्रकारों की भी अत्यधिक दुर्दशा है।

जहाँ तक पुस्तक साहित्य का सम्बन्ध है, उपरोक्त विवरण सूची में जो २६८० पुस्तकें उल्लिखित हुई हैं उनके अतिरिक्त भी कम से कम दो ढ़ाई सौ ऐसी पुस्तकें अवश्य निकल आयेंगी जिनका कि साधनाभाव अथवा ज्ञात न हो सकने के कारण कोई उल्लेख नहीं किया जा सका। गत तीन वर्षों में भी (अर्थात् उक्त सूची के निर्माण करने के बाद से) लगभग एक सौ पुस्तकें और प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें से अधिकांश हिन्दी की हैं और जिनमें से एक दर्जन से अधिक पर्याप्त उच्च कोटि के विशालकाय ग्रन्थ हैं। साथ ही उपरोक्त लगभग ३००० पुस्तकें प्रायः करके केवल दिगम्बर समाज द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ही हैं और उनमें भी कन्नडी, तामिल, तेलगू, मलयालम आदि भाषाओं में प्र-
शित जैन पुस्तकों का समावेश नहीं है। दो ढ़ाई हजार के लगभग पुस्तकें दि-
म्बर तथा स्थानकवासी आदि अन्य जैन सम्प्रदायों द्वारा भी प्रकाशि-
चुकी हैं।

अस्तु डा० माता प्रसाद गुप्त की पूर्वोल्लिखित 'हिन्दी पुस्तक साहित्य
दी हुई लगभग ५५०० पुस्तकों और लगभग ४५०० लेखकों के प्रायः व-
ही समग्र मुद्रित प्रकाशित जैन पुस्तक साहित्य और उसके निर्माता आदि
यदि केवल हिन्दी जैन पुस्तकों को ही लिया जाय तो वे भी समग्र हिन्दी पु-
के दो तिहाई से अधिक अवश्य हैं, और भाषा, शैली, विषय महत्त्व
लोकोपयोगिता की दृष्टि से भी सामान्यतः उनकी अपेक्षा निम्नकोटि
नहीं हैं।

सारांश यह है कि स्वतन्त्र भारतीय राष्ट्र, भारत के सांस्कृतिक विकास
साहित्यिक प्रगति के लिये यह परम आवश्यक है कि देश के साहित्यिक
विद्वान जैन साहित्य को भी समग्र भारतीय साहित्य का अभिन्न अविभ-
अङ्ग मानकर निष्पक्ष एवं सहृदय दृष्टि से ज्ञान की विविध शाखाओं में उ-
अध्ययन मनन और उपयोग करें। उनकी दृष्टि में वह उपनिषद जैन आ-
और बौद्ध त्रिपिटक, पाणिनी और पूज्यपाद, पातञ्जलि अश्वघोष व्यास
कुन्द कुन्द व समन्तभद्र, चरक सुश्रुत उग्रादित्य और नागार्जुन, शंकर
कीर्ति और अकलंक, कालिदास और जिनसेन, योगीन्दु सरहपा कबीर और
तुलसीदास और बनारसीदास इत्यादि महापुरुषों और उनके विचारों एवं रच-
का समान महत्त्व होना चाहिये। बिना किसी भेद भाव के इन सभी महा-
पुरुषों का सम्मान एवं अध्ययन ज्ञान के सर्वतोमुखी विकास, राष्ट्र की
सूत्रता तथा देश और समाज के कल्याण का अमोघ साधन है, इसमें कुछ
सन्देह नहीं।

जैनाध्ययन का महत्त्व और प्रगति

श्रमण संस्कृति की प्रधान धारा जैन संस्कृति सुदूर अतीत से चली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रायः सर्व प्राचीन विशुद्ध भारतीय संस्कृति है। अतः भारतीय संस्कृति का समुचित मूल्यांकन करने के लिए और आधुनिक भारत के ही नहीं वरन विश्व के भी सांस्कृतिक विकास में उससे पूरा पूरा लाभ उठाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि जैन श्रमण संस्कृति के विविध अंगों का विशद एवं गंभीर अध्ययन किया जाय। वैसे तो १८ वीं शताब्दी ई० की अंतिम पाद में सर विलियम जोन्स से प्रारंभ करके अनेक पाश्चात्य विद्वानों द्वारा भारतीय साहित्य, कला, पुरातत्त्व तथा अन्य साँस्कृतिक विषयों का अध्ययन प्रारंभ हो गया था। १९ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अनेक उद्भट भारतीय विद्वान भी उक्त कार्य में सक्रिय सहयोग देने लगे थे, और सौ वर्ष के उपरांत तो इस क्षेत्र में भारतीय विद्वानों का ही प्रायः एकाधिकार हो गया है। इन पाश्चात्य एवं पूर्वीय विद्वानों ने अपने उपरोक्त अध्ययन के दौरान में प्रसंगवश जब तब जैन-धर्म, संस्कृति, इतिहास, साहित्य, कला, पुरातत्त्व, प्रच्यतत्त्व आदि का भी अल्पाधिक अध्ययन एवं खोज शोध की और अपने महत्त्वपूर्ण गवेषणात्मक विवेचनों के द्वारा जैनाध्ययन को प्रगति प्रदान की। तथापि भारतीय अथवा विदेशी प्राच्यविदों का ध्यान अनेक कारणों से अभी तक भी उसकी ओर इतना आकृष्ट नहीं हो पाया जितना कि होना चाहिये था।

सांस्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से जन धर्म, सिद्धान्त, तत्त्वज्ञान, दर्शन और सामाजिक आचार विचार एवं पर्व आदि के अतिरिक्त वर्तमान भारत को प्रदत्त जैन संस्कृति की स्थूल पुरातन भेंटें निम्नप्रकार हैं---विविध भाषामय तथा विविध विषयक विपुल जैन साहित्य, जैन ग्रन्थों की प्राचीन हस्तलिखित प्रतियाँ, जैन चित्र कला, जैन मूर्त्त कला, जैनस्थापत्य और शिलाखंडों, प्रतिमाओं, ताम्रपत्रों आदि पर अंकित जैन पुराभिलेख, इत्यादि।

जैन ग्रहस्थ के देवपूजा,गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप एवं दान रूप दैनिक छह आवश्यक कार्यों में दान देना उनका एक महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक कर्त्तव्य है। शास्त्र, अभय, आहार एवं औषधिरूप चतुर्विध दान प्रणाली में शास्त्रदान का स्थान बहुत ऊंचा है। अतः शास्त्र दान संबंधी इस धार्मिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विधान, जैन साधु वर्ग की सदैव से चली आई ज्ञान पिपासा अध्ययन शील और साहित्यिक अभिरुचि तथा धनी श्रावक की उदारता पूर्ण सहा सहयोग एवं श्रुतभक्ति के कारण आज भी भारतवर्ष के विभिन्न भागों में अनेक जैन ग्रन्थ भंडार विद्यमान हैं जो अपने प्राचीन प्रमाणीक महत्त्व अंश समझे जाने योग्य हैं।

प्राकृत—प्राचीन भारतीय संस्कृति की अनेक विधि धाराओं का मह भली भांति समझने के लिए संस्कृत और प्राकृत, दोनों ही साहित्यों का साथ अध्ययन करने की आवश्यकता है। अभिलेखीय आधार स्पष्ट सूचित करते हैं कि सर्व साधारण में भावव्यंजना के लिये प्राकृत भाषायें धिक लोकप्रिय थीं। उत्तर तथा दक्षिण दोनों ही प्रदेशों में प्राचीनतम काव राजकीय आदेश तथा व्यक्तिगत लेखादि प्राकृत में ही लिखे मिलते हैं। संस नाटकों में स्त्री आदि पात्रों के द्वारा प्राकृत का बहुत प्रयोग इस बात को प्र णित करता है कि एक समय था जबकि प्राकृत भाषाएं ही लोक प्रिय साधारण बोल चाल की भाषाएं थीं। वस्तुतः कई एक महिला कवित्रियों प्राकृत में ही काव्य रचना की है।* इसमें भी सन्देह नहीं है कि जैन धार्मि एवं लौकिक गद्य पद्यात्मक प्राकृत साहित्य का सिलसिला अति प्राचीन से मध्य युग पर्यन्त अविच्छिन्न रूप से चला आया है, और यदि इस प्रा जैन साहित्य को सम्पूर्ण प्राकृत साहित्य में से निकाल दिया जाय तो अव नगण्य रह जाय।

किन्तु यद्यपि प्रायः समस्त श्वेताम्बर जैन अर्धमागधी आगमग्रन्थ अं अथवा पूर्णतः एकाधिक संस्करणों में प्रकाशित हो चुके हैं, तथापि मूल के समालोचनात्मक दृष्टि से सुसम्पादित संस्करण बहुत ही थोड़े हैं। नि क्तियों एवं चूर्णियों सहित इस समस्त अर्धमागधी साहित्य के ऐसे एक

---

*प्रो० जे० बी० चौधरी कृत 'संस्कृत कवित्रियों' भा० २। कपूर मंज नाटक का प्रथम अभिनय भी विदुषीरत्न अवन्ति सुन्दरी की प्रेरणा पर हुआ था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशनों की आवश्यकता है। पाटन के 'हेम चन्द्राचार्य ज्ञान मंदिर' ने हस्त-लिखित प्रतियों के स्थानीय संग्रहों को सुरक्षित एवं व्यवस्थित करने का जो स्तुत्य कार्य किया बह अन्य स्थानों के लिये भी अनुकरणीय है और वह उपरोक्त प्रकार के संस्करणों प्रकाशन के लिये आवश्यक अन्वेषण कार्य के लिये उपयोगी सिद्ध होगा। समग्र आगम ग्रन्थों के ऐसे प्रमाणिक सम्पादन से अर्धमागधी कोष,' 'पाइयसद्द महाण्णव' आदि वर्तमान कोष ग्रंथों की कभी पूर्त्ति हो जायगी। ऐसे जैन पारिभाषिक शब्दों या पदों का जिन के कि अर्थों का तारतम्य जैन साहित्य के विभिन्न स्तरों में अध्ययन किया जा सके, कोई भी प्रमाणीक संकलन अभी तक नहीं बन पाया है। सुआली और जैकोवी ने ऐसे एक प्राकृत कोष के निर्माण करने के प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया था, किन्तु उसका कोई विशेष परिणाम नहीं निकला। इधर वीर सेवा मंदिर देहली में भी एक ऐसे ही पारिभाषिक जैन शब्द कोष 'जैन लक्षणा वलि' का निर्माण कई वर्षों से हो रहा है।

हरिभद्र सूरि की 'समराइच्च कहा प्राकृत अथवा जन महाराष्ट्री कथा साहित्य का सुन्दर व श्रेष्ठ प्रतिनिधित्व करती है, किन्तु उसकी पूर्ववती 'कुवलय माला कहा' तथा उत्तरवर्ती 'वलासवई कहा' अभी तक संभवतया अप्रकाशित ही है।

प्राकृत साहित्य का वह थमिक स्तर जो दिगम्बर जैनों द्वारा मान्य एवं अत्यन्त पवित्र समझा जाता है, शिवार्य की भगवती आराधना, कुन्द कुन्द के पाहुड़ ग्रन्थ; वट्टेकर [1] कृत मूलाचार आदि विक्रम की प्रथम शताब्दी के ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। ऐसा विश्वास था और जो सत्य ही सिद्ध हुआ, [2] कि इनसे भी अधिक प्राचीनतर पाठ षट्खंडागमादि दिगम्बर जैन सिद्धान्त ग्रन्थों की धवल जयधवल आदि विशाल टीकाओं में जड़े पड़े हैं। इन महान ग्रंथों के

(१) ऐसा विश्वास करने के भी कारण है कि यह कुन्द कुन्द का ही अपलाम था, देखिये जैना सेटीक्वोरी; भा० कि०

(२) जै० ए०, भा० ६ पृ० ७५-८१, डा० हीरालाल का लेख।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुसम्पादित अनुवादित संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। ऐसे गूढ़ जैन पारिभाषिक तत्त्व ज्ञान विषयक महान ग्रंथों के, जो कि यत्र तत्र संस्कृत गद्यांशों से अलंकृत नैयायिक शैली की प्रौढ़ प्राकृत में है, प्रकाश में आने से भारतीय साहित्य की एक महत्त्व पूर्ण नवीन शाखा अध्ययनार्थ प्रस्तुत हो गई है। उपरोक्त संस्करणों की विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावनाओं में अनेक ऐतिहासिक तथ्यों पर भी नवीन प्रकाश पड़ा है तथा और नवीन ऐतिहासिक शोध खोज को प्रोत्साहन मिला है।[१] उपरोक्त सभी ग्रन्थों में बहुत सी सामग्री ऐसी है जो दिगम्बर श्वेताम्बर सम्प्रदाय भेद से भी प्राचीनतर हैं। यदि उसकी तुलना निर्युक्तियों आदि के साथ की जाय तो अनेक दिलचस्प तथ्यों के प्रकाश में आने की संभावना है।

दिगम्बरों एवं श्वेताम्बरों का प्राकृत एवं संस्कृत भाषाओं में निबद्ध विशालकाय टीका साहित्य अभी तक मूल पाठों के अर्थों को समझने के लिये ही अध्ययन किया जाता रहा है। जो टीका ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुके हैं उनमें से इने गिनों का ही आलोचनात्मक अध्ययन हुआ है। निर्युक्तियों, चूर्णियें तथा अन्य संस्कृत प्राकृत टीकाएं भी ज्ञातव्य सूचनाओं के ऐसे गहन भंडार हैं जिनमें पूर्व पक्ष के प्रतिपादन के अतिरिक्त अनेक जैन अजैन ग्रंथों के उद्धरण, अनुश्रुतियें नीति वचन, उपदेशात्मक आख्यान उपाख्यान, तथा अनेक तत्कालीन सांस्कृतिक सूचनाएं भी उपलब्ध होती हैं। किन्तु इन सब विषयों की व्यवस्थित छांट, गवेषणा' संकलन तथा यथोचित मूल्यांकन अभी तक प्रायः नहीं हो पाया। इनमें से अनेक ग्रन्थों की तिथियें ज्ञात हैं, अतः उनमें वर्णित विषय कालानुक्रम की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। अस्तु प्रो० विधु शेखर भट्टाचार्य ने दिखलाया कि गुणरत्न, धर्म कीर्ति के प्रमाण वार्तिक से भली भाँति परिचित था और उसने उक्त ग्रन्थ से अनेक उद्धरण भी दिये हैं।[२] श्री पी० के० गोडे ने अपने आकर्षक निबन्ध "शंकराचार्य के पूर्ववर्ती जैन आधारों में भगवत गीता" में ऐसे उद्ध-

---

(१) अनेकान्त तथा जैना एंटेक्वेरी में प्रकाशित धवला का समय तथा स्वामी वीर सेन संबन्धी हमारे विभिन्न लेख।

(२) इ० हि० क्वा, १६, पृ० १४३.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रणों की पाठगत विशेषताओं पर प्रकाश डाला है।[१] डा० उपाध्याय ने सिद्ध किया कि गोमट्टसार की संस्कृत 'जीवतत्त्व प्रदीपिका' टीका के कर्त्तव्य का श्रेय जो केशववर्णी को दिया जाता रहा है वह भ्रम पूर्ण है, और उसके वास्तविक कर्त्ता १६ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में दक्षिण कनारा के राजा सालुव मल्लिराय के समकालीन कोई नेमिचन्द्र थे।[२] इन उद्धरणों की जाँच बहुधा उक्त टीकाओं की समयावधि निर्धारित करने में भी सहायक होती है जैसा कि डा० उपाध्याय ने मूलाचार की वसुनन्दिवृत्ति पर से[३] तथा श्री गोडे ने मलयगिरि की तिथि के सम्बन्ध में[४] दिखाने का प्रयत्नकिया है। गतदर्शक में प्रकाशित कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की प्रस्तावनाओं में पं० महेन्द्र कुमार, पं० कैलाश चन्द्र, पं० जुगलकिशोर मुख्तार, पं० दरबारी लाल कोठिया आदि ने तथा अपने फुटकर लेखों के रूप में कई अन्य विद्वानों ने भी इस प्रकार की सामग्री का विश्लेषण एवं उपयोग किया है।

अपभ्रंश—भाषा और साहित्य का अध्ययन प्राच्य विद्या का एक नवीन क्षेत्र है। जैकोबी, दलाल, गुणे, शहीदुल्ला, गांधी, वैद्य, उपाध्ये, हीरालाल एल्सफोर्ड आदि विद्वानों ने अनेक मूल्यवान अपभ्रंश ग्रंथों का सम्पादन किया है तथा इस भाषा के स्वरूप के सम्बन्ध में महत्त्व पूर्ण विवेचन किये हैं। डा० पी० एल० वैद्य ने पुष्पदंत्त के महापुराण का विद्वत्तापूर्ण संम्पादन किया। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने महाकवि स्वयंभू की रामायण पर अभूत पूर्व प्रकाश डाला। प्रेमी जी ने भी इन प्रारम्भिक जैन अपभ्रंश कवियों के सम्बन्ध में ज्ञातव्य सूचनाएं दीं। डा० उपाध्ये ने जोइन्दु के परमात्म प्रकाश का और प्रो० हीरालाल ने भी कई अपभ्रंश ग्रंथों का सम्पादन किया है। पं० परमा-

(१) एनल्स भा० ओ० रि० इ०, २०, पृ० १८८ फुटनोट
(२) इपि० कर्णा, ७, १,
(३) बूल्नर कमेमोरेशन वाल्यूम, लाहौर १६४० पृ० २५७ फु० नो०
(४) जै० ए०, भा० ५, पृ० १३३ फु० नो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नन्द शास्त्री ने कतिपय मध्य कालीन जैन अपभ्रंश कवियों का परि[illegible] दिया है।[1]

अपभ्रंश भाषा और साहित्य के सम्बन्ध में जो कुछ अधुना ज्ञात है [illegible] उसकी तुलना में नगण्य सा है जो कि अभी भी राजपुताना, गुजरात आदि [illegible] ग्रंथ भंडारों में दबा पड़ा है। राजस्थान, मध्यभारत, गुजरात, महाराष्ट्र, सं[illegible] तया उत्तर प्रदेश में भी, सर्वत्र, ६ ठी शताब्दी पर्यन्त लगभग एक सह[illegible] वर्ष तक अपभ्रंश भाषा का अभ्यास और प्रचलन बहुलता के सा[illegible] रहा प्रतीत होता है, सो भी विशेष कर जैनों द्वारा। अपभ्रं[illegible] कविता अपनी भाषा सम्बन्धी विशेषताओं के अतिरि[illegible] छन्द शास्त्र, आलंकारिक प्रयोग, नीति तथा तत्कालीन जगत के निकट[illegible] अनुवीक्षण से ओत प्रोत हैं। उद्योतन सूरि के शब्दों में उसका शब्द प्र[illegible] पार्वतीय स्रोत की नाईं द्रुतवेग से प्रवाहित होता है। उसके युद्ध वर्ण[illegible] अत्यन्त रोमाञ्चक और प्रेम भक्ति करुणा आदि कोमल भावों के चित्र[illegible] आश्चर्यजनक रूप से सजीव होते हैं। यद्यपि अपभ्रंश साहित्य का सम्ब[illegible] प्रायः करके उच्चवर्गों से है तथापि वह सार्वजनिक जीवन के विविध अंगों [illegible] भली भांति प्रतिबिम्बित करता है। साहित्य के इस क्षेत्र में न केवल एक शु[illegible] भाषाविज्ञ को ही प्रचुर उपयोगी सामग्री उपलब्ध होती है वरन एक भावु[illegible] कलाकार अथवा काव्य रसिक को भी अति रुचिकर काव्यानन्द का आस्वा[illegible] प्राप्त होता है। भारतीय साहित्य में कहीं अन्यत्र शब्द और भाव का, बा[illegible] संगीत और अन्तरंग गेयतत्त्व का ऐसा सुन्दर सामंजस्य उपलब्ध नहीं होता [illegible] साथ ही, लेखीय प्रमाण के रूप में अपभ्रंश तथा प्राचीन गुजराती कवियों [illegible] कृतियों का महत्त्व उनके पश्चाद्वर्ती महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर, तुकाराम आ[illegible] लेखकों की रचनाओं से कहीं अधिक है।

---

(१) हमारे द्वारा सम्पादित जो इन्दु के मांगसार आत्मदर्शन की भूमि[illegible] तथा अनेकान्त १९४५; में प्रकाशित हमारा लेख 'नागभा[illegible] और नाग सभ्यता' भी पठनीय हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपभ्रंश साहित्य का गंभीर अध्ययन एक अन्य दृष्टि से भी आवश्यक है। वह गुजराती व राजस्थानी भाषाओं के विकास के इतिहास के लिए निश्चयतः अत्युपयोगी है। यहीं नहीं, बल्कि विद्वानों ने तो यह बात भी प्रायः निर्विवाद स्वीकार करली है कि कतिपय गौण स्थानीय भेदों को लिए हुए अपभ्रंश भाषा ही जोकि प्रायः सम्पूर्ण उत्तरी एवं मध्य भारत में बहुलता के साथ प्रचलित थी, आधुनिक भारतीय आर्य लोक भाषाओं का मूलाधार, उद्गम स्रोत एवं प्रकृत रूप है। अतएव इसमें सन्देह नहीं कि उसका अध्ययन उक्त प्रान्तीय भाषाओं के शब्द कोष तथा व्याकरण सम्बंधी नियमों को समृद्ध करने में अत्युपयोगी सिद्ध होगा और अन्तर प्रान्तीय व्यवहार संवर्द्धन के हित हमारी राष्ट्रीय भाषा के शब्द भंडार के समुचित निर्माण की वर्तमान समस्या को सुलझाने में भी सहायक होगा। जैनों के मूल आर्ष ग्रन्थों तथा उनकी टीकाओं में प्रयुक्त प्रयोगों के सम्बन्ध से यदि प्राकृत भाषाओं का लिपि विज्ञान, वर्ण विज्ञान एवं व्याकरण विषयक व्यवस्थित अध्ययन चालू किया जाय तो वह निश्चय ही मध्य कालीन भारतीय आर्य साहित्यिक ज्ञान के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

वास्तव में, स्वयं आचार्य हेमचंद्र ने अपभ्रंश भाषा की व्यवहार्य रूपरेखा प्रदान करदी थी और अब जैकोबी, हीरालाल, वैद्य, उपाध्याय, एल्सफोर्ड प्रभृति विद्वानों ने उसके आदर्श सम्पादित संस्करण भी प्रस्तुत कर दिये हैं। सामान्यतः काम चलान से लिए 'पाइयसद्दमहाण्णव' उसका एक अच्छा कोष भी है। अपभ्रंश साहित्य की यह भी विशेषता है कि उसमें भाषा के लिए उपयुक्त छन्दों का ही प्रयोग हुआ है। प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के छन्दोंनुशासन के सम्बंध में प्रो० एच० डी० वेलंकर द्वारा प्रस्तुत मूल्यवान सामग्री और विवेचन उक्त साहित्य के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। पूर्वी अपभ्रंश के सम्बंध में श्री हरप्रसाद शास्त्री, शहीदुल्ला, बागची, चौधरी आदि विद्वानों ने अच्छे ज्ञातव्य प्रदान किये हैं। अस्तु प्राकृत भाषाओं की अथवा मध्ययुगीन भारतीय आर्य भाषाओं की, जिनमें कि भगवान महावीर ने अपने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीव दया मूलक सिद्धान्तों का उपदेश दिया, जिनमें सम्राट प्रियदर्शिन ने अपने स्मरणीय अभिलेख खुदवाये, जिनमें सैंकड़ों कवियों ने जिनमें से कि हालकी सतसई और स्वयंभू के निर्देशों द्वारा हमें केवल कुछ एक के ही नाम प्राप्त हुए हैं--लोक जीवनके विविध अंगोंके सम्बंधमें आल्हाद पूर्णगान किया, जिनमें कालिदासके स्त्री पात्रोंने अपने पत्र लिखे, वाक्पति, प्रवरसेन, उद्योतन, हरिभद्र, राजशेखर, स्वयंभू, पुष्पदंत. गुणचन्द्र,रामपाणिवाद तथा अन्य विभूतियोंने अपनी मनोहारी गद्य-पद्य रचनाएं कीं, जोइन्दु तथा कान्ह जैसे सन्तों ने अपने रहस्यवादी विचारों की अभिव्यंजना की, जिनमें कि राजपूत चरणों के वीरतापूर्ण गीत आर्यावर्त के चारों कोनों में गूंज उठे, और जिनकी कि गोद में वे आधुनिक भारतीय लोक भाषाएं जन्मी और पनपी कि जिन्हें समृद्ध करने के लिए हम आज प्रयत्नशील हैं तथा जिनपर हमें इतना गर्व है---भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता को समझाने के लिए उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। ये प्राकृत और अपभ्रंश भाषाएं सहस्त्रों वर्ष पर्यन्त सार्वदेशिक और और सार्वजनीन रहीं, प्रायः सर्व ही प्रान्तीय भाषाओं को, यहां तक कि द्रविड़ वर्ग की कन्नड़ी आदि भाषाओं को भी इन्होंने पर्याप्त रूप में प्रभावित किया। और सर्वाधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि विभिन्न देशीय प्राकृत और अपभ्रंश भाषा में आधुनिक प्रान्तीय भाषाओं की भांति कोई भेद पक अन्तर ही न था। उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम सर्वत्र उनका प्रायः एकसा प्रयोग होता था, साहित्य में भी और बोलचाल में भी। उनके पैशाची, शौरसेनी, गौड़ी, महाराष्ट्री आदि भेद वास्तव में क्षेत्रपरक नहीं थे। जैसा कि डा० उपाध्याय ने स्पष्ट कहा है, यह कथन करना कि महाराष्ट्री प्राकृत के ग्रन्थ महाराष्ट्र में ही लिखे गये अथवा जैन महाराष्ट्री का प्रयोग महाराष्ट्र के जैनों ने किया और शौरसेनी का शूरसेन देश के जैनों ने, नितान्त भ्रमपूर्ण है। यही बात तथा कथित विभिन्न अपभ्रंशों के विषय में है। इन भाषाओं का प्रदेश विशेष के साथ कोई सम्बंध ही न था। वे तो चिरकाल पर्यन्त भारत वर्ष के सर्व साधारण की भाषाएं रहीं थीं, अन्तर्प्रान्तीय थीं और सच्चे अर्थों में अपने-अपने समय में इस देश की राष्ट्रीय लोक भाषाएं थीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्य भाषायें—मध्ययुगीय भारतीय आर्य भाषाओं के क्षेत्र के अतिरिक्त, जैन लेखकों ने भारतीय ज्ञान की विविध शाखाओं में न केवल संस्कृत प्राकृत आदि में ही वरन् कई द्रविड़ भाषाओं में भी पर्याप्त योगदान किया है। अनेक प्राच्यविदों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों में यथा शब्द शास्त्र, छन्द शास्त्र, काव्य शास्त्र, व्याकरण, राजनीति, न्याय, चिकित्साशास्त्र, गणित, ज्योतिष आदि में तद्विषयक जैन ग्रन्थों का अध्ययन भी किया जाने लगा है, किन्तु ये अध्ययन प्रायः करके संस्कृत साहित्य तक ही सीमित है।

इस सम्बंध में विचार करने के लिए जैन साहित्य को ही अध्ययन की इकाई मानकर चलना अधिक सुविधा जनक होगा, यद्यपि जैन ग्रन्थों से यह स्पष्ट है कि जैन विद्वानों की विविध विषयक साहित्यिक साधना भारतीय साहित्य की अन्य धाराओं से सर्वथा पृथक कभी नहीं रही। पूज्यपाद पातञ्जलि के महाभाष्य में पूर्णतया निष्णात थे, अकलंक ने अपने पूर्ववर्ती बौद्ध नैयायिकों की कृतियों का गंभीर अध्ययन किया और उनका सयुक्तिक खंडन एवं आलोचना की। हरिभद्र ने तो दिङ्नाग के न्याय प्रवेश पर टीका भी लिखी। रविकीर्त्ति एवं जिन सेन जैसे कवि पुंगव कालिदास और भारवि की कृतियों से भली प्रकार परिचित थे और उनमें आदर भाव रखते थे। सिद्धचन्द्र और चारित्रवर्धन जैसे ग्रन्थकारों ने बाण तथा माघ के ग्रन्थों की टींकाएं लिखीं। डा० हर्टल के कथनानुसार पंचतंत्र जैसे सर्व प्रसिद्ध ग्रन्थ के जितने संस्करण यूरोप आदि विभिन्न भारतेतर देशों में पहुंचे वे सब ही जैन विद्वानों द्वारा किये गये मूल ग्रन्थ के संवर्द्धित, परिवर्द्धित अथवा परिवर्तित रूप थे, तथा जैन 'शुक सप्तति' ही एक मात्र ऐसी भारतीय रचना है जो अपने मूल रूप में ही सम्पूर्ण जैसी की तैसी भारत के वाहर सुदूर देशों में पहुंची और प्रचार को प्राप्त हुई। अतएवर्ष भारतव के सम्पूर्ण साहित्यिक जाल के रूप एवं विकास को पूर्णतया समझने के लिए जैन साहित्य का अध्ययन परमावश्यक है।

जैन विद्वानों ने अपनी साहित्य साधना प्रायः साथ ही साथ प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, तामिल तथा कन्नड़ी भाषाओं में की। कितने ही जैन ग्रन्थ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार तो अपने आपको 'उभय भाषा कवि चक्रवर्ती' आदि विशेषणों से सूचित करने में गौरव मानते थे। उक्त विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध जैन रचनाएं इतनी परस्पर सम्बद्ध हैं कि एक ही नाम तथा एक ही प्रतिपाद्य विषय के ग्रन्थ विभिन्न कालों में विभिन भाषाओं में उपलब्ध होते हैं। उदाहरणार्थ जयराम ने प्राकृत में धर्म परीक्षा नामक ग्रन्थ की रचना की। उसी के आधार पर सन् ९८८ ई० में हरिषेण ने चित्तौड़ में अपभ्रंश में धर्म परीक्षा लिखी। सन् १०१४ में उज्जैन निवासी अमितगति ने संस्कृत में उसी ग्रन्थ की रचना की और १२ वीं शताब्दी मध्य के लगभग कर्णाटक निवासी वृत्तिविलास ने कन्नड़ी भाषा में की। इस प्रकार विभिन्न ग्रथों में अन्तर्भूत अन्तर्भाषयिक एवं अन्तर्प्रान्तीय प्रभावों को लक्ष्य करने से भारतीय साहित्य का जो ढांचा हमारे समक्ष है उसमें अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों की अवश्य ही वृद्धि होगी। ऐसा तुलनात्मक अध्ययन पूर्वापर तथा रचना तिथि आदि बातों के निर्णय में भी महत्त्व पूर्ण सिद्ध होगा।

संस्कृत एवं प्राकृत के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में रचे गये जैन साहित्य का वहुत कुछ आभास आर० नरसिंहाचार्य कृत 'कर्णाटक कवि चरिते' या उसके प्रेमी जी कृत अनुवाद 'कर्णाटक के कवि, श्रीयुत देसाई कृत 'गुर्जर कवियों-२ भाग; प्रोफेसर चक्रवर्ती का तामिल जैन साहित्य, प्रेमी जी व वा० कामता प्रसाद के हिन्दी जैन साहित्य के इतिहास, हमारा 'हिन्दी का पुरातन गद्य साहित्य' और राजस्थानी जैन साहित्य के सम्बन्ध में श्री अगरचन्द नाहटा के लेखों से हो सकता है।

वहु विषयक—वहुभाषयिक होने के साथ ही जैन साहित्य वहु-विषयिक भी है और नैयायिक अंग तो अत्यन्त समृद्ध एवं महत्त्वपूर्ण है। किन्तु भारतीय साहित्य की न्याय विषयक शाखा ने प्राच्य विज्ञों का ध्यान अपनी ओर अभी कम ही आकर्षित कर पाया है। जैन नैयायिक साहित्य तो प्रायः स्पर्श ही नहीं किया गया, यद्यपि लगातार अनेक शताब्दियों से प्रकांड जैन नैयायिक जैन धर्म के सिद्धान्तों का अन्य भारतीय विचारधाराओं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के अत्यन्त विशद तुलनात्मक विवेचन करते चले आये हैं । प्रारम्भ में डा० के० बी० पाठक और डा० सतीशचन्द्र वि० भू० उक्त ग्रंथों के काल-क्रम के विषय में वहुत कुछ लिखा था, किन्तु उसके पश्चात् अब इधर इतनी अधिक नवीन सामग्री प्रकाश में आ रही है कि विद्वानों को अपनी पूर्व निश्चित धारणाओं में परिवर्तन करना पड़ रहा है । प्रो० एच० आर० कापड़िया ने गायकवाड़ ओरियंटल सीरीज (भाग १, वड़ौदा १९४०) के अन्तर्गत स्वोपज्ञ वृत्ति एवं मुनिचन्द्र कृत टीका सहित 'अनेकांत जय पताका' का सम्पादन किया । पं० महेन्द्र कुमार ने अपने द्वारा सुसम्पादित 'अकलंक ग्रन्थत्रय' × की भूमिका में अकलंक के समय, शैली तथा अन्य अनेक तथ्यों पर विद्वतापूर्ण प्रकाश डाला है । उन्हीं के द्वारा सम्पादित न्याय कुमुदचन्द्र दो भागों की स्वयं उनके तथा पं० कैलाश चन्द्र द्वारा लिखित भूमिकाओं में नवीन दृष्टि कोण एवं प्रचुर सामग्री होने के साथ ही साथ अकलंक के समय सम्बंधी भ्रान्ति का भी प्रायः निरसन हो गया है । पं० महेन्द्रकुमार द्वारा सम्पादित प्रमेय कमल मार्तण्ड तथा न्याय विनिश्चय विवरण के संस्करण भी महत्त्वपूर्ण हैं । सकल भारतीय न्याय शास्त्र में निष्णात प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलाल संघवी अपनी गहरी पहुंच, ताजा दृष्टि कोण तथा खोज पूर्ण विश्लेषण के लिए प्रसिद्ध हैं । उन्हें तथा उनके साथियों को 'जैन तर्क भाषा' एवं 'प्रमाण मीमांसा' के उत्तम संस्करण सम्पादित करने का श्रेय है । उन्होंने सिद्धसेन दिवाकर के 'सन्मतितर्क' का भी गुजराती अनुवाद और विद्वत्तापूर्ण संपादन किया है, जिसका कि अंगरेजी अनुवाद प्रो० अथवले तथा गोपानी ने किया है । पं० दरबारी-लाल कोठिया ने धर्म भूषण की न्यायदीपिका तथा विद्यानन्द की आप्त-परीक्षा के उत्तम सम्पादन किये हैं । पं० जुगलकिशोर मुख्तार, समन्तभद्र के युक्त्यानुशासन का अनुवाद और सम्पादन कर रहे हैं, सन्मतितर्क और सिद्धसेन दिवाकर सम्बंधी उनका लेख भी बहुत महत्त्वपूर्ण है । स्याद्वाद मंजरी और माणिक्यनंदि कृत परीक्षा मुख सूत्र के सम्पादित संस्करण भी प्रकाशित हो चुके हैं ।

× सिंधी जैन ग्रन्थमाला न० १२, अहमदाबाद, १९३९.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कलकत्ता विश्वविद्यालय के डा० सातकौड़ी मुखर्जी ने जैन दर्शन पर एक स्व ग्रन्थ-दी फ़िलासफी ग्राफ नान एबसोल्यूटिज्म, लिखा है। समन्तभद्र, पूज्य अकलंक, विद्यानंद आदि आचार्यों के समय एवं इतिहास के सम्बंध में हमारे कई लेख प्रकाशित हो चुके हैं। इस समग्र नव प्रकाशित साहित्य से जो सा प्रकाश में आ रही है वह मध्यकालीन भारतीय न्याय दर्शन के सम्बन्ध में निर्धारित धारणाओं में भारी क्रान्ति करने वाली हैं। पूर्वपक्ष के प्रतिपा में ये जैन ग्रन्थ उल्लेखनीय निष्पक्षता प्रदर्शित करते हैं और विन्टरनिट्ज कथनानुसार, उनके दार्शनिक विवेचन अन्य भारतीय दर्शनों का अध्य करने में अत्यन्त मूल्यवान सिद्ध होते हैं।

तत्त्वज्ञान, न्याय, धर्म शास्त्र आदि के अतिरिक्त जैनों का काव्य, नाट चम्पू, कथा साहित्य, अलंकार, छंद, शब्द शास्त्र, गणित, ज्योतिष, चिकि शास्त्र, राजनीति, इतिहास आदि विभिन्न भाषामय विविध विषयक साहि भी पर्याप्त विशाल काय एवं महत्त्वपूर्ण है। तत्तद् विषयों से सम्बंधित भारतीय साहित्य के विकास एवं इतिहास का ज्ञान बिना उन विषयों के साहित्य के समुचित अध्ययन एवं उपयोग के अधूरा ही रहेगा। किन्तु खे कि इस विशाल जैन साहित्य के न्यूनांश का भी अभी प्रकाशन अथवा सदुप नहीं हो पाया है।

हस्त लिखित प्रतियां—भारतवर्ष के अनगिनत जैन शास्त्र भं में संगृहीत पुरातन ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रतियाँ देश की अमूल्य निधि हैं ऐसी वस्तु हैं जिनकी कि एक बार पूर्णतया नष्ट हो जाने पर पूर्ति कर असंभव है। परवर्ती साहित्यगत उद्धरणों, उल्लेखों अथवा निर्देशों ऐसे अनेक ग्रन्थों का पता चलता है जिनकी एक भी प्रति कहीं भी उप नहीं है। साहित्यिक इतिहासकारों के लिए हस्तलिखित प्रतियाँ अनुमान महत्त्व रखती हैं। उत्तर तथा दक्षिण दोनों ही प्रदेशों के जैन ग्रन्थकारों अपनी रचनाओं को केवल धार्मिक विषयों तक ही सीमित नहीं रक्खा, अपनी कृतियों से भारतीय ज्ञान की सभी विविध भाषाओं को सुसमृद्ध कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अतएव जैन ग्रन्थ भंडार ऐसे सुसम्पन्न रत्नागार हैं जिनका धैर्यपूर्ण अनुशीलन प्राच्य विद्याविदों के लिए आवश्यक एवं वाञ्छनीय है। एक समय था जब साम्प्रदायिक संकीर्णता इन कोषागारों को विद्वत्समाज के लिए भी उन्मुक्त करने में बाधक होती थी, किन्तु अब परिस्थिति बदल रही है। ब्र्लूर, कीलहार्न कथवटे, भंडारकर, पीटर्सन, वेवर, ल्यूमेंन, मित्रा, कीथ, दलाल, गाँधी, वेलंकर, हीरालाल,कापड़िया तथा अन्य विद्वानों के सतत् प्रयत्नों के फलस्वरूप ऐसी अनेक परिचयात्मक ग्रन्थ सूचियों का निर्माण हो चुका है जो पुरातन जैन साहित्य की भी विविध शाखाओं का विवरण प्रदान करती है और अनुसंधान कार्य के लिये अत्युपयोगी हैं।

वृहट्टिप्पनिका, जैन ग्रन्थ नामावली, जैन शास्त्र नाममाला आदि ग्रन्थ कोषों द्वारा उनके निर्माताओं ने उनमें, ज्ञात अथवा उपलब्ध, जैन ग्रंथों का विवरण एक ही स्थान में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है जिससे सामान्य प्राथमिक पर्यवेक्षण सुगम हो जाता है। किंतु प्रो० हरिदामोदर वेलङ्कर द्वारा संपादित तथा भंडारकर प्राच्य विद्यामंदिर, पूना, द्वारा प्रकाशित 'जिनरत्नकोष' नामक, जैन हस्त लिखित ग्रंथ सूची, इस दिशा में एक अत्यधिक सफल एवं महत्त्वपूर्ण प्रयत्न है। प्रो० वेलङ्कर ने यह कार्य, जिसे हाथ में लेने से एक सर्व साधन सम्पन्न संस्था भी शायद हिचकिचाती, एकाकी ही अतीव सुन्दरता के साथ सम्पादन किया है। इसके प्रकाशन से जैन साहित्य विषयक अध्ययन को एक नवीन दृष्टि प्राप्त होने की पूर्ण आशा है। वीर सेवा मंदिर, देहली में भी कई दिगम्बर जैन ग्रंथ भंडारों के अप्रकाशित तथा दूसरी सूचियों में सम्मिलित न किये गये, ऐसे लगभग ६००० ग्रंथों की एक विवरण सूची प्रायः तैयार हो चुकी है, जो कि 'जिनरत्नकोष' गत त्रुटियों की पूर्ति करने के साथ ही साथ अन्य प्रकार भी उपयोगी सिद्ध होगी। दक्षिण देश के मूड़बद्री आदि स्थानों के भंडारों के कन्नड़ लिपि में निबद्ध ताड़पत्रीय ग्रंथों की एक विवरण सूची पं० के० भुजबलि शास्त्री द्वारा सम्पादित होकर भारतीय ज्ञान पीठ काशी से प्रकाशित हुई है। आमेर भंडार की सूची भी जयपुर से प्रकाशित हो गई है। आफ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रोफ्ट के प्रसिद्ध 'कैटेलोगस केटेलोगोरम' के संशोधन, संवर्द्धन का कार्य मद्रास विश्वविद्यालय ने अपने हाथ में लिया था और यह योजना थी, कि उक्त सूची में ऐसे सर्व जैन ग्रंथों को भी सम्मिलित कर लिया जायगा जोकि प्राचीन भारत के सांस्कृतिक विकास संबंधी ज्ञान के लिए उपयोगी हैं, और यह कि उसमें आलोच-नात्मक एवं तुलनात्मक विवेचन के उद्धरण भी रहेंगे। योजना निस्सन्देह बड़ी सुन्दर है! इसकी सहायता से विशाल भारतीय साहित्य के अन्तर्गत जैन साहित्य का अब तक की अपेक्षा कहीं अधिक पूर्णता एवं यथार्थता के साथ अध्य-यन किया जा सकेगा।

यद्यपि इस प्रकार यह क्षेत्र सीमावद्ध किया जा रहा है, तथापि अभी तक ईडर, नागौर, जयपुर, दिल्ली, वीकानेर आदि अनेक स्थानों के महत्त्वपूर्ण शास्त्र भंडारों का व्यवस्थित रूप से निरीक्षण ही नहीं हो पाया है। दक्षिण में मूड़वद्री, हुम्मच, वारंगल, कारकल आदि स्थानों के भंडारों के भी, जहाँ कि ढेरों ताड़पत्रीय प्रतियाँ सुरक्षित हैं, प्रमाणीक विवरण तैयार नहीं हुए हैं। अपनी प्राचीनता एवं प्रमाणिकता के कारण ये संग्रह अध्ययन की विविध शाखाओं के लिए वहुमूल्य सामग्री प्रस्तुत करेंगे, ऐसी पूर्ण सम्भावना है।

आमेर, पाटन, पूना, कारंजा आदि के भंडारों में सुरक्षित प्राचीन देव-नागरी लिपि वद्ध कुछ ग्रन्थ प्रतियाँ १२ वीं शताव्दी(ई०)तक की हैं। निश्चित तिथि तथा लेखन स्थान से युक्त ऐसी प्रतियों की एक क्रमवद्ध श्रंखला छाँट लेने से नागरी अक्षरों में, समय के साथ साथ होने वाले क्रमिक विकास का एक कोष्ठक तैयार किया जा सकता है और उसके द्वारा स्व० पं० गौरीशंकर हीरा-चन्दा ओझा तथा व्हूलर साहव ने, शिलालेखीय आधारों पर जो तालिकाएं निर्माण की हैं, उनकी पूर्ति हो सकती है। कुछ विद्वानों का ध्यान ऐसी प्रतियों की ओर आकर्षित हो भी चुका है। मुनि पुण्य विजय जी द्वारा लिखित 'जैन चित्र कल्पद्रुम' (अहमदावाद १९३५) की भूमिका, अक्षर विज्ञान एवं लेखन कला पर एक ठोस देन है, और कम से कम जहाँ तक गुजरात के भंडारों में संग्रहीत प्रतियों का सम्बन्ध है, उक्त विषयों पर अच्छा प्रकाश डालती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रो० एच० आर० कापड़िया ने भी अपने निवन्धों में उक्त विषय के कुछ अंगों का विवेचन किया है।*

चित्र कला—इन हस्तलिखित प्रतियों पर से लघु चित्रकला (मिनियेचर पेन्टिंग) सम्बन्धी सामग्री का आंशिक उपयोग मि० ब्राउन, नवाब तथा अन्य विद्वानों ने किया है। अभी हाल में हमने नागौर के वर्तमान भट्टारक जी के पास, यशोधर चरित्र की १७ वीं शताब्दी की एक अति सुन्दर चित्र प्रति देखी थी, जो कि शिकागो विश्व प्रदर्शिनी में भी प्रशंसा प्राप्त कर चुकी है। जैन गुहा-चित्रों के संबन्ध में पुदुकोटा राज्य के श्री एल. गणेश शर्मा ने, अपनी पस्तक 'सित्तनवासल जैन गुहा चित्रावली एवं चित्रकला' में उक्त विषय पर अच्छा प्रकाश डाला है। डा० हीरानंद शास्त्री ने भी जैन चित्रकला पर लिखा है। सिंगनपुर (रायगढ़) आदि की प्राग्ऐतिहासिक चित्र कला में भी जैन प्रभाव लक्षित होता है।× अनेक प्राचीन अर्वाचीन जैन मन्दिरों में बहुलता से पाये जाने वाले भित्ति चित्र तथा जैन पौराणिक रूपक एवं संकेत चित्र भी पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हैं। किन्तु इस समस्त सामग्री के न्यूनांश का भी उपयोग नहीं हो पाया है।

प्रशस्त्यादि—अधिकतर हस्तलिखित प्रतियों में उनकी लेखन तिथि दी हुई होती है और उनमें ऐसी काल निर्णायक सामग्री पर्याप्त मात्रा में होती है जो कि जैन संघ के मध्यकालीन इतिहास के लिये तो अत्यन्त उपयोगी है ही, साथ ही भारत के राजनैतिक इतिहास संबन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं के तिथि निर्णय में तथा ज्ञात तिथियों की पुष्टि करने में बहुधा उपयोगी सिद्ध हुई है और हो सकती है।

जैन ग्रन्थ प्रतियों में पाई जाने वाली ये प्रशस्तियें, पुष्पिकाएँ आदि बहुधा तीन प्रकार की होती हैं—(१) ग्रन्थकार द्वारा निबद्ध—जिनमें वह अपने सम्बन्ध

*See Outlines of, Paleography and the Jaina Mss. J. U. B., VI 2, VII 2.

×See Prehistoric Jaina Paintings—J. A., X 2, XI,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की अनेक सूचना, अपनी गुरु परम्परा, कब, किसके लिये, किसके राज्य या आश्रय में अथवा प्रेरणा पर ग्रन्थ की रचना हुई, इत्यादि बातों का सूचना देता है। (२) प्रति लेखक अथवा लिपि कर्त्ता की प्रशस्ति, लिपिकार का परिचय, लेखन तिथि तथा जिसके लिये वह प्रति लिखी गई अथवा जिसके द्वारा लिखवाई गई, आदि सूचनाएं दी होती हैं। (३) दानी की प्रशस्ति में उक्तदानी का तथा उसके परिवार, वंश आदि का परिचय तथा किस साधु या मंदिर को वह प्रति दान की गई, आदि बातों का उल्लेख रहता है। इस प्रकार की सूचनाएं कर्णाटक एवं तामिल देश की प्रतियों की अपेक्षा गुजरात, मध्य भारत आदि की प्रतियों में अधिक बहुलता के साथ पाई जाती हैं। अहमदाबाद से एक विशाल, लेखक प्रशस्ति संग्रह, प्रकाशित हो चुका है, स्व० पूर्णचन्द नाहर ने भी, एक प्रशस्ति संग्रह, प्रकाशित किया था जैन सिद्धान्त भवन आरा से, ५४ दिगम्बर जैन ग्रन्थों की प्रशस्तियों का संग्रह प्रकाशित हुआ है। वीर सेवा मंदिर, देहली से संस्कृत तथा अपभ्रंश प्रशस्तियों के दो पृथक पृथक संग्रह प्रकाशित होने की योजना है, आमेर भंडार का प्रशस्ति संग्रह भी प्रकाशित होने वाला है। ऐ० पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवन बम्बई व झालरापटन की वार्षिक रिपोर्टों में भी कुछ प्रशस्तियें प्रकाशित हुई हैं। यदि प्रयत्न किया जाय तो ऐसे कितने ही अन्य संग्रह सुगमता से प्रकाशित किये जा सकते हैं। प्रो० एस० श्रीकंठ शास्त्री द्वारा संकलित 'कर्णाटक इतिहास के साधन—भा० १' (मैसूर १९४०) से स्पष्ट है कि ऐतिहासिक रचनाओं को अंशतः अथवा पूर्णतः संकलित करने के लिए, तथा उनका परस्पर संबंध बैठाने के लिए जैन ग्रन्थ प्रशस्तियां एक अत्यन्त मूल्यवान साधन हैं। हमने स्वयं कई प्राचीन एवं मध्यकालीन लेखकों के इतिवृत्त का निर्माण करने में विभिन्न प्रशस्तियों का उपयोग किया है। डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ने भी जैन ग्रन्थ प्रशस्तियों एवं पुष्पिकाओं के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। यदि इन प्रशस्त्यादि का सुचारू संकलन कर लिया जाय. तो उन अनगिनत प्रतिमाभिलेखों के साथ, जो जैन मूर्तियों पर खुदे मिलते हैं और जिनमें से कुछ प्रकाशित भी हो चुके हैं, तथा अन्य जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुराभिलेखों के साथ उनका तुलनात्मक अध्ययन करने से, न केवल नवीन तथ्य प्रकाश में आयेंगे वरन सुपरिचित घटनाओं तथा अन्य ऐतिहासिक तथ्यों का परस्पर सम्बंध भी स्थापित किया जा सकेगा और कालानुक्रमिक अध्ययन में महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त होंगे। इस प्रकार के पृथक २ विभिन्न सूचनांशों का परस्पर संबंध बैठाने से ही, ग्रन्थराज श्रीधवल की एक मात्र उपलब्ध मूल-प्रति के लेखन काल का निर्णय किया जा सका और मल्लिभूपाल को चीन्हा जा सका। आज यह विषय एक भाग्यानुसारी क्रीड़ा हो रही है, किन्तु इसमें से यह संयोगतत्व, गिरनाट की 'रिपर्टरी डी एपिग्रैफी जैना' नामक ग्रन्थ के आदर्श पर, इन सर्व साधनों से संबंधित नामादि अनुक्रमणिकायें निर्माण करके निकाल दिया जा सकता है। प्रशस्तियों और अभिलेखों से जो समय संबंधी सामग्री प्राप्त होती है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कभी-कभी तो ये तिथियें इतनी सुनिश्चित पाई जाती हैं, कि व्हिटने का बहुधा उद्धृत कथन, कि "भारतीय साहित्य के इतिहास की तिथियाँ ऐसे पूर्वापर असम्बद्ध तथा पृथक २ स्थापित संकेत चिन्ह हैं जो पुनः विचारनीय एवं चिन्तनीय हैं"—सन् १८७९ में भले ही सत्य रहा हो, किन्तु अब वह अनेक अपवादों के साथ ही ग्रहण किया जा सकता है।

पुराभिलेख—राइस, नरसिंहाचार्य, गिरनाट, आयंगर, शेशागिरि राव, सालतोर तथा अन्य विद्वानों ने उन जैन पुराभिलेखों का उपयोग सफलतापूर्वक किया है जो जैन धर्म के इतिहास के विविध अंगों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं और बहुधा तत्कालीन नरेशों, राजपुरुषों तथा अन्य राजनैतिक बातों का भी उल्लेख करते हैं। जैन मूर्तियों तथा मंदिरादिकों पर अंकित अभिलेख जिनमें से कितने ही बुद्धिसागर, जिन विजय जी, नाहर, कामता प्रसाद, कान्तिसागर, गोविन्द प्रसाद आदि विद्वानों द्वारा प्रकाश में लाये जा चुके हैं, साहित्यिक एवं ऐतिहासिक कालानुक्रम का निर्णय करने में बहुत उपयोगी हैं, क्योंकि उनमें प्रमुख आचार्यों का जोकि बहुधा ग्रन्थकार भी होते थे, प्रायः उल्लेख रहता है। 'एपिग्राफिका कर्नाटिका' में संकलित जैन अभिलेख, कर्णाटक प्रांत के इतिहास में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन धर्म का जो भाग रहा है, उसके व्यवस्थित ज्ञान के लिए अतीव उपयोगी सिद्ध हुए हैं। यह बात श्री बी० ए० सालतोर कृत मैडिवल जैनिज्म (बम्बई १९३८) तथा प्रो. एस. आर. शर्मा कृत 'जैनिज्म एंड कर्णाटक कल्चर' (धारवाड़ १९४०) से भली प्रकार प्रमाणित हो जाती हैं। निजाम राज्य के पुरातत्त्व विभाग द्वारा प्रकाशित, कोप्पल से प्राप्त कन्नड़ी शिलालेखों पर लिखे गये निबंध में राज्य के अन्य स्थानों से भी प्राप्त, जैन अभिलेखों के महत्त्वपूर्ण उदाहरण दिये गये हैं। यह विभाग प्रसिद्ध पुराविद, गुलाम यजदानी की अध्यक्षता में कार्य कर रहा था और आशा थी कि उसके द्वारा अन्य अनेक जैन शिलालेख शीघ्र ही प्रकाश में आयेंगे। देवगढ़ आदि स्थानों में प्राप्त, तथा 'एपिग्रेफिका इंडिका' में प्रकाशित शिलालेखों को देखने से पता चलता है कि अनेक जैन शिलालेख सरकार के पुरातत्त्व एवं प्राच्यतत्त्व विभागों के भंडार गृहों में केवल इसीलिये व्यर्थ पड़े हुए हैं कि राजनैतिक इतिहास की दृष्टि से वे प्रत्यक्ष उपयोगी नहीं जान पड़ते। इन समस्त अभिलेखों को तुरन्त प्रकाशित कर देना इन विभागों के लिए अवश्य ही कठिन कार्य था, विशेषत: जबकि बृटिश सरकार का व्यवहार ऐसे सांस्कृतिक विभागों की ओर विमाता सरीखा रहा है। अब स्वतंत्र भारत में, अपनी राष्ट्रीय सरकार से इस दिशा में बहुत कुछ आशा है। यदि सरकार इस कार्य को स्वयं हाथ में न भी लेना चाहे तो भी प्राच्याध्ययन के हित में यह अच्छा होगा कि वे लेख उन विद्वानों के सिपुर्द कर दिये जाँय, जो जैन पुराभिलेखों में दिलचस्पी रखते हैं तथा जो भंडारकर प्राच्यविद्या-मंदिर पूना, भारतीय विद्याभवन, बम्बई प्रभृति संस्थाओं में कार्य कर रहे हैं। इनमें से अनेक अभिलेख देश के राजनैतिक इतिहास की दृष्टि से भले ही महत्वपूर्ण न हों, किन्तु जैन साहित्यगत लेखकों तथा स्थानों को चीन्हने और विभिन्न प्रदेशों से संबंधित जन संघ का इतिहास निर्माण करने में, अवश्य ही उपयोगी कुंजियें प्रदान कर सकते हैं।

जिस प्रकार भंडारकर ने कीलहार्न द्वारा संकलित शिलालेख सूची का संशोधन संवर्द्धन करके, उसे आधुनिक काल तक पूर्ण कर दिया, उसी प्रकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह नितान्त आवश्यक है कि कोई विद्वान, जो ऐसे केन्द्र में कार्य कर रहा हो, जहाँ पुरातत्त्व व अभिलेखादि सम्बन्धी समग्र प्रकाशन एवं अन्य सामग्री उपलब्ध अथवा सुलभ हो, गिरनाट के उपर्युलिखित महत्वपूर्ण ग्रन्थ का संशोधन संवर्द्धन करके, उसे वर्तमान काल तक पूर्ण करने का प्रयत्न करे। बा० छोटेलाल ने अपनी 'जैन बिबलियोग्रेफी' में सन् १९०६ से १९२५ तक के प्रकाशित अंग्रेजी जैन साहित्य, उद्धरण एवं अभिलेख सूचनाओं को संकलित करने का प्रयत्न किया है। किन्तु शिलालेखों के सम्बन्ध में यह ग्रंथ उतना संतोषजनक एवं प्रमाणीक नहीं है। देश के विभिन्न भागों से प्राप्त अनेक जैन शिलालेख प्रकाश में आ चुके हैं। किन्तु एक पूर्ण 'जैना एपिग्रेफी' के अभाव में उनमें निहित तथ्यों का यथोचित लाभ उठाया जाना कठिन है। समस्त प्रकाशित जैन शिलालेखों के एक आधुनिकतम विवरण से जैनाध्ययन को निश्चयतः भारी प्रगति मिलेगी।

मूर्त्तिकला—जैन मूर्त्तिकला, भारतीय मूर्त्तिकला का महत्वपूर्ण अंग है। भारतवर्ष के अनगिनत मंदिरों में विद्यमान असंख्य जैन मूर्त्तियों तथा जन ग्रन्थों में उपलब्ध तत्संबंधी प्रचुर साहित्य के होते हुए भी, जैन मूर्त्तिकला एवं विज्ञान का अध्ययन अभी तक अपनी शैशवावस्था में ही है। इस दिशा में जो महत्त्वपूर्ण कार्य हुआ है, उसमें जे० बरगेस तथा जे० एल० जैनी की, 'दिगम्बर जैन' 'आइकोनोग्रेफियें' बी० सी० भट्टाचार्य की 'दी जैना आइकोनोग्रेफ़ी' (लाहौर १९३९) इत्यादि हैं किन्तु इनमें संशोधन संवर्द्धन की पर्याप्त आवश्यकता है। इस विषय की ओर अधिक उल्लेखनीय कृतियाँ, डा० एच. डी. साँकलिया कृत 'जैना आइकोनोग्रेफ़ी' (एन. आई. ए.,२८) 'जैन यक्ष यक्षणियां', 'बड़ौदा राज्य की तथा कथित बौद्ध मूर्त्तियाँ' (बुलेटिन आफ दी डेकन कालिज, आर. आई. I, २-४), 'नेमिनाथ के संसार त्याग कल्याणक का प्रस्तरांकन' (आई० एच० क्यू XVII, भा० २) 'एक जैन देवी की अद्भुत आकृति,' 'पीतल का जैन गणेश' (जे. ए.–IV पृ० ८४, V पृष्ठ ४६) इत्यादि हैं। डा० विनयदेव भट्टाचार्य (प्राच्य विद्याभवन, बड़ौदा) के निर्देशत्व में, बड़ौदा के श्री यू. पी. शाह ने जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्तिविज्ञान, पर कार्य किया है और तद्विषयक मूल आधारों से पर्याप्त साम- एकत्रित की है। उनके कुछ महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित भी हो चुके हैं, यथा जैन देवी अम्बिका, जैन सरस्वती आदि (जे. यू. बी., १९४०-४१) डा० अग्रवाल ने जैन शिलालेखों पर से जैन मूर्त्तिविज्ञान सम्बन्धी कतिपय शब्दों की व्याख्या की है (जे. ए. V पृ० ४३)। उन्होंने तथा श्री कृष्णदत्त वाजपेयी, एम० एम० नागर आदि ने, विशेषरूप से मथुरा की प्राचीन जैन मूर्त्तकला पर कई उपयोगी लेख लिखे हैं। मथुरा की जैन सरस्वती पर हमारा भी एक लेख प्रकाशित हुआ है। डा० मोतीचन्द्र के तद्विषयक लेख भी महत्वपूर्ण है। श्री के. के. गाँगुली के लेख 'वंगाल की जैन मूर्त्तियाँ' (जे. सी.--VI,२ पृ० १३७) से प्रकट हैं, कि देश के इस भाग की खोज और अधिक जांचपूर्वक किये जाने की आवश्यकता है। एक स्फुर्त्तिदायक लेख 'जैन धर्म और भट्टकल पुरातत्व' (बम्बई प्रान्तीय कन्नड अनुसंधान की वार्षिक रिपोर्ट, १९३९-४०, धारवाड़, १९४१, पृ० ८१) में, उक्त अनुसंधान निर्देशक श्री आर. एस. पंचमुखी ने, जैन मूर्त्ति विज्ञान के कतिपय अंगों पर सरसरी दृष्टि से विचार किया है। उनके कुछ सामान्य कथन अप्रमाणिक होते हुए भी, उसमें उन्होंने दक्षिणात्य जैन धर्म का शृंखला-बद्ध विवरण दिया है और भट्टकल तथा उन अन्य स्थानों की जो किसी समय जैन संस्कृति के प्रसिद्ध केन्द्र थे, कतिपय नवीन मूर्तियों को प्रकाश में लाये हैं। मुनि कान्ति सागर, अशोक कुमार भट्टाचार्य आदि कुछ अन्य विद्वानों ने भी इस विषय पर लेखादि लिखे हैं। जैन मूर्त्तिविज्ञान और जैन देववाद तथा जैनधर्म में मूर्त्तिपूजा का विकास, एवं इतिहास—इन्हें पृथक २ विषय मानकर ऐतिहासिक पूर्णपीठिका के साथ उक्त अध्ययन का प्रारंभ करना अधिक उपयुक्त होगा। ये दोनों विषय आगे चलकर एक में ही गर्भित हो जाते हैं अतः प्रारंभ में ही उनके बीच भ्रान्ति न होने देना ठीक होगा। ये अध्ययन अभी अपनी प्रारंभिक अवस्थाओं में हैं। हिन्दू, वौद्ध और जैन मूर्त्तिविज्ञान की परस्पर समानताओं पर लक्ष्य देना आवश्यक है, किन्तु विना ठोस प्रमाण के सहसा ऐसे कथन कर देना कि अमुक वात, अमुक ने, अमुक से ग्रहण की है, उचित नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थापत्य—जैन स्थापत्य का अध्ययन तो और भी कम हो गया है। विन्सेन्ट स्मिथ कृत 'मथुरा का जैन स्तूप तथा अन्य पुरातत्त्व' नामक ग्रन्थ बहुत महत्व पूर्ण है। आबू के जैन मन्दिरों पर पर्याप्त लिखा जा चुका है। फर्गुसन आदि ने भी प्रसंगतः जैन स्थापत्य पर किंचित प्रकाश डाला है किन्तु इस विषय का भी यथोचित अध्ययन अभी तक नहीं हो पाया है। स्तूप, निषद्या, मन्दिर, वसति, गुहा आदि विभिन्न रूपों तथा देश कालानुसार विविध शैलियों में उपलब्ध जैन स्थापत्य की अपनी निजी सांस्कृतिक विशेषताए भी हैं।

इस प्रकार जैनाध्यूयन की कतिपय स्थूल शाखाओं का यह संक्षिप्त निर्देश है। अनेक जैन व अजैन विद्वान इन विषयों में अपनी-अपनी रुचि एवं साधन सुविधाओं के अनुसार कार्य कर रहे हैं। कई एक साहित्यक अनुसंधान संस्थाए और उत्तम कोटि की पत्र-पत्रिकाएं भी चालू हैं। प्राच्याध्यूयन के अन्तर्गत जैनाध्यूयन का प्रारम्भ और बहुत काल तक नेतृत्व भी पाश्चात्य विद्वानों ने किया था। अतः तत्सम्बन्धी साहित्य भी अंगरेजी आदि विदेशी भाषाओं में ही लिखा जाता रहा है। किन्तु अब समय आगया है कि जैनाध्यूयन सम्बन्धी सर्व प्रकार के निर्देशात्मक ग्रंथ, कोष, सूचियें, विवरण, विवेचन, लेख, निबन्धादि राष्ट्रीय व लोकभाषा हिन्दी में ही लिखे जाँय। इससे जैनाध्ययन को विशेष प्राप्ति मिलेगी, जो कि भारतीय संस्कृति के समुचित ज्ञान, मूल्याँकन एवं विकास के लिये परमावश्यक है।

ज्योतिप्रशाद जैन एम० ए०

विज्ञप्ति

जैन धर्म, संस्कृति, इतिहास पुरातत्व, प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य आदि से सम्बन्धित, सर्व प्रकार की जिज्ञासा के समाधान के लिये निम्नांकित संस्थाओं, प्रकाशकों तथा व्यक्तियों को पत्र लिखने से यथोचित उत्तर प्राप्त हो सकता है:—

१. अधिष्ठाता, वीर सेवा मन्दिर, ७/२१ दरियागंज, देहली।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२. जैन सिद्धान्त भवन, आरा विहार।
३. भारतीय ज्ञानपीठ काशी, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस।
४. जैन कल्चरल इन्स्टीट्यूट, ७/३ हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस।
५. दिगम्बर जैन संघ, चौरासी मथुरा।
६. दि० जैन परिषद कार्यालय, दरियागंज, देहली।
७. जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग पो०, गिरगाँव, बम्बई।
८. दिगम्बर जैन पुस्तकालय, चान्दवाड़ी, सूरत।
९. लाला पन्नालाल जैन अग्रवाल, ३८७२, चर्खेवालान, गली कन्हैयालाल अत्तार, देहली।
१०. ज्योतिप्रसाद जैन, एम० ए०, एल० एल० बी०, ७४-७५, ठठेरवाड़ा, मेरठ शहर। अथवा—यूनियन मैडिकल स्टोर्स, कैसर बाग, लखनऊ।
११. जैन सूचना ब्युरो, ५८७, सदर बाजार, दिल्ली।
१२ जैन मित्रमंडल धर्मपुरा, देहली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशित जैन साहित्य
विवरण सूची

हिन्दी विभाग

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश की पुस्तकें

अकबर और जैन धर्म—ले० रामास्वामी आयंगर, अनु० कृष्णलाल वर्मा, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, भा० हि०, पृ० १४, व० १९८८।

अक्ल सीखने की पुस्तक—ले० श्रावक दुलीचन्द, प्र० लेखक स्वयं जयपुर, पृ० ३१, भा० हि०, आ० प्रथम।

अकलंक ग्रंथ त्रयम्—ले० श्रीमद्भट्टाकलंकदेव' संपा० पं० महेन्द्रकुमार न्या० आ०, प्र० सिंघी जैन ग्रंथ माला अहमदाबाद-कलकत्ता, भा० सं०, पृ० ३६४, व० १९३९ ई०, आ० प्रथम, (लघीस्त्रयम्, न्याय विनिश्चय, प्रमाण संग्रह)।

अकलंक चरित्र और अकलंक स्तोत्र—संपा० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० १८।

अकलंक देव की कथा—ले० बख्तावर रतनलाल, भा० हि०, पृ० १६, व० १९१२ ई०, प्र० जैन ग्रंथ प्रचारक कार्यालय देवबंद, आ० प्रथम।

अकलंक नाटक—ले० सिद्धसेन जैन गोयलीय, प्र० जैन पाठशाला रिवाड़ी, भा० हि०, पृ० १०३, व० १९२८ ई०, आ० प्रथम।

अग्रवाल इतिहास—ले० अज्ञात, अनु० बी० एल जैन, प्र० लेखक स्वयं बाराबंकी, भा० हि०, पृ० २४।

अंगपण्णत्ति—ले० शुभचन्द्र, भा० प्रा० सं०, (सिद्धान्त सारादि संग्रह में प्रकाशित)।

अच्छी आदतें डालने की शिक्षा—ले० दयाचंद्र जैन; भा० हि०, पृ० ३६, व० १९१५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अजिताश्रम पाठावली—संपा० संक०-पं० अजितप्रसाद एडवोकेट, ए० पी० जिंदल, अजिताश्रम, लखनऊ, भा० सं० हि०, पृ० ७२, व० १९३५ आ० प्रथम।

अजैन विद्वानों की जैन धर्म के विषय में सम्मतियाँ—(प्रथम भा० संक० मा० बिहारीलाल, प्र० ज्ञानवर्धक जैन पाठशाला अमरोहा, भा० हि० पृ० १७, व० १९१५ ई०, आ० प्रथम।

अजैन विद्वानों की जैन धर्म के विषय में सम्मतियाँ द्वितीय भाग संक० मा० विहारीलाल, प्र० ज्ञानवर्धक जैन पाठशाला अमरोहा, भा० हि० पृ० ३१, व० १९१५ ई०, आ० प्रथम।

अठाई रासा—प्र० बा० सूरजभान वकील देववंद, भा० हि०, व० १८९८।

अठारह नाते (पद्य)—ले० यति नयनसुखदास, प्र० ज्ञानचंद जैन लाहौर, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९१० ई०, आ० द्वितीय।

अठारह नाते की कथा—ले० अज्ञात, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा०, हि०, पृ० ६।

अढ़ाई द्वीप पूजन विधान—ले० पं० कमलनयन, प्र० मूलचंद किसनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० ३४९, व० १९४४ ई०, आ० प्रथम।

अतीत जिन चतुर्विंशतिका—ले० जयतिलक सूरि, भा० प्रा० सं०।

अद्भुत रामचरित्र (प्रथम तुंग-बनवास)—ले० यति नयनसुखदास, प्र० ला० होशियारसिंह सोनीपत, भा० हि०, पृ० २३, व० १९१५ ई०, आ० प्रथम।

अद्भुत रामचरित्र (दूसरा तुंग–युद्ध-कांड)—ले० निरंजनदास, प्र० ला० होशियारसिंह सोनीपत, भा० हि०, पृ० ६८, व० १९१६ ई० आ० प्रथम।

अद्भुत रामचरित (तीसरा तुंग-अयोध्या कांड)—ले० निरंजनदास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाo होशियार सिंह सोनीपत, भाo हिo, पृo २२, वo १९१५ ईo, आo हिo, आo प्रथम ।

अद्भुत रामचरित (चौथा तुंग-वैराग्य कांड)—लेo निरंजनदास, प्रo लाo होशियारसिंह सोनीपत, भाo हिo, पृo १८, वo १९१६, आo हिo ।

अध्यात्म संग्रह—(२८ रचनाओं का संग्रह)–भाo हिo संo, पृo ३८८ ।

अध्यात्म तरंगिणी—लेo सोमदेव; भाo संo; पृo १० ।

अध्यात्म पंचासिका—लेo अज्ञात; भाo हिo ।

अध्यात्म कमल मार्तण्ड—लेo कवि राजमल्ल; संपाo प्रोo जगदीश चन्द्र; प्रo माणिकचन्द दिo जैन ग्रन्थमाला बम्बई; भाo संo ।

अध्यात्म कमल मार्तण्ड—लेo कवि राजमल्ल; अनुo संपाo दरबारी लाल कोठिया और पंo परमानन्द शास्त्री; प्रo वीर सेवा मन्दिर सरसावा; भाo संo हिo; पृo ११०; वo १९४४; आo प्रथम ।

अध्यात्म विचार—ब्रo मोतीलाल; भाo हिo, पृo ३४, वo १९३० ।

अध्यात्म ज्ञान—संपाo ब्रo शीतल प्रसाद जी, प्रo मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भाo हिo, पृo १६, वo १९३१ ईo आo प्रथम ।

अध्यात्माष्टवाम्—लेo वादिराज सूरि, भाo संo ।

अध्यात्मिक निवेदन—संपाo ब्रo शीतल प्रसाद जी, प्रo आत्मधर्म सम्मेलन सूरत, भाo हिo, पृ१६, वo १९२५ ईo आo प्रथम ।

अनगार धर्मामृत—लेo पंo आशाधर जी, संपाo पंo वंशीधर व पंo मनोहरलाल, प्रo माणिकचन्द दिo जैन ग्रंथमाला बम्बई, भाo संo, पृo ६९२ वo १९१९ ईo आo प्रथम ।

अनगार धर्मामृत—(टीका) लेo पंo आशाधर जी, अनुo टीo-पंo खूबचन्द शास्त्री, प्रo सेठ खुशालचन्द मानाचन्द गांधी शोलापुर, भाo संo हिo, पृo ९३६, वo १९२७ ईo; आo प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनमोल बूटी—ले० मा० विहारीलाल, भा० हि०, पृ० १३, व० १९१४।

अनमोल रत्न अर्थात् आत्म कल्याण का उपाय—ले० शान्ति लमेचु, प्र० कुन्थूलाल इलाहाबाद, भा० हि०, पृ० १७, व०, १९१३ ई०।

अन्य धर्मों से जैन धर्म में विशेषताएँ—ले० अजितकुमार शास्त्री भा० हि०, पृ० ३१, व० १९२७।

अनन्तमती—ले० कृष्णलाल वर्मा, भा० हि०।

अनाथरुदन—ले० पं० न्यामतसिंह, प्र० स्वयं हिसार, भा० हि०, पृ० व० १९२४ ई०, आ० चतुर्थ।

अनादि गणित—ले० नत्थनलाल जैन, प्र० स्वयं देहली, भा० हि० पृ० ३२, आ० प्रथम।

अनावश्यक दि० जैन मूर्त्ति पूजा—ले० प्र० चम्पालाल जैन सोहागपुर भा० हि०, पृ० ४६, व० १९४०।

अनित्य भावना—(पद्मानुवाद)—ले० पं० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २०, व० १९ आ० प्रथम।

अनित्य भावना—ले० पद्मनन्द्याचार्य, अनु० संपा०-पं जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा, भा० सं० हि०, पृ० ४८, व० १९ ई०, आ० तृतीय, मूल्य।

अनुभव प्रकाश—ले० दीपचन्द, प्र० लखमीचन्द वेणीचन्द कुडुवाडी भा० हि०, पृ० ११८।

अनुभव माला—ले० ब्र० नन्दलाल, भा० हि० (पद्य), पृ० १ व० १९३२।

अनुभवानन्द—सं० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १२८, व० १९१२, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अबलाओं के आँसू—ले० अयोध्या प्रसाद जैन गोयलीय, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० ७६, व० १६२६, आ० प्रथम।

अभिषेक पाठ संग्रह—संपा० पन्नालाल सोनी, भा० सं०, पृ० ३६१, व० १६३५।

अभिषेक पाठ समीक्षा—ले० पं० राजकुमार शास्त्री, प्र० सेठानी गुलाब वाई प्यार कुंवर वाई जी इन्दौर, भा० हि०, पृ० १६, व० १६४१।

अभिषेक पूजा पाठ संग्रह—प्र० माणिकचन्द सरावगी कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४८, व० १६४२।

अनेकार्थं रत्न मंजूषा—संपा० प्रो० हीरालाल, भा० सं० पृ० १५६, व० १६३२।

अभिषेक पाठ—ले० पूज्यपादाचार्य, अनु० पं० जिनदास, भा० सं० हि०, पृ० ४८।

अमर जीवन और सुख का संदेश—ले० चम्पतराय जैन वैरिस्टर; अनु० वा० कामता प्रसाद जैन, भा० हि०; पृष्ठ १५।

अमितगति श्रावकाचार—ले० आचार्य अमितगति. अनु० टी० पं० भागचन्द्रजी; प्र० मुनि श्री अनन्तकीर्ति, दि० जैन ग्रन्थशाला बम्बई; भा० सं० हि०; पृ० ४४०; व० १६४२; आ० प्रथम।

अमृताशीति—ले० योगीन्द्रदेव; भा० सं०, पृ०, (सिद्धान्त सारादि संग्रह में पृ०।

अर्थ का अनर्थ—(वृहद विमल पुराण की समालोचना)—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०; पृ० ८७; व० १६२४; आ० प्रथम।

अर्थ प्रकाशिका—ले० पं० सदासुखदास जी; प्र० कलप्पा भरमप्पा निटवे कोल्हापुर; भा० हि०; पृ० ७४३; व० १६०२; आ० प्रथम।

अर्थ प्रकाशिका (तत्त्वार्थसूत्र टीका)—मूल ले० आचार्य उमास्वामि; अनु० टी०-पं० सदासुखदास जी; प्र०-भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता; भा० हि०; पृ० ५४३; व० १६१६; आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ प्रकाशिका—ले० आचार्य उमास्वामी; टी० पं सदासुखदास जी; प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़या सूरत; भा० हि०; पृ० ४१८; व० १९४० ।

अर्घावली—प्र० सुमतिलाल; भा० हि०; पृ० १७ ।

अर्जुनलाल सेठी का जीवन चरित्र—प्र० चन्द्रसेन जैन वैद्य; भा० हि०; पृ० १५ ।

अर्जुनमाली—ले० डी० टी० शाह; भा० हि० ।

अर्थसंदृष्टि अधिकार—ले० पं० टोडरमल जी; प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्था कलकत्ता; भा० हि०; पृ० ३०८; आ० प्रथम ।

अर्द्ध कथा—ले० पं० वनारसीदास जी; संपा० डा० माताप्रसाद गुप्त; प्र० हिन्दी परिषद प्रयाग; भा० हि०- पृ० ७३; व० १९४१; आ० प्रथम ।

अर्द्ध कथा—ले० पं० वनारसीदास जी; संपा० डा० माताप्रसाद गुप्त; प्र० प्रयाग विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद प्रयाग; भा० हि०; पृ० ५६; व० १९४३ ।

अर्द्ध कथानक—ले० पं० वनारसीदास जी; सं० पं० नाथूराम जी प्रेमी; प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०; पृ० १०२; व० १९४३; आ० प्रथम ।

अर्हत्प्रवचनम्—ले० प्रभाचन्द्राचार्य; भा० सं०; (सिद्धान्त सारादि संग्रह में) प्र० ।

अर्हंत पासा केवली—(अर्हन्त पासा केवलि)—ले० कविवर वृन्दावन जी; संपा० पं० नाथूराम प्रेमी; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि० पृ० २४; व० १९११; आ० द्वितीय ।

अलंकार चिन्तामणि—ले० अजितसेनाचार्य; प्र० सखाराम नेमचन्द दोशी शोलापुर; भा० सं०; पृ० १६२; व० १८२९ शक ।

अवध परिचय—(अवध प्रान्त की जैन डाइरेक्टरी)—संपा० पं० रामलाल पंचरत्न; प्र० जिनेन्द्रचन्द्र मन्त्री अवध प्रान्तीय दि० जैन परिषद्‌ लखनऊ; भा० हि०; व० १९४५; आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अशान्ति का प्रतिकार—प्र०-दिगम्बर जन आम्नाय संरक्षिणी सभा बुर्जा, भा० हि०; पृ० २६ ।

अष्ट पाहड़—ले० कुन्दकुन्दाचार्य; टी० पं० जयचन्द्र, प्र० मुनि अनन्त कीर्ति ग्रंथमाला वम्बई, भा० प्रा० हि०, पृ० ४१६; व० १९२४, आ० प्रथम।

अष्ट पाहुड़—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० टी० पं० पारसदास जैन न्याय तीर्थ, प्र० भारतवर्षीय जैन अनाथरक्षक सोसाइटी देहली, भा० प्रा० हि०, पृ० १४७, व० १९४३, आ० प्रथम ।

अष्ट शती—ले० भट्टाकलंकदेव, (आप्तमीमांसा तथा अष्ट सहस्त्री के साथ प्रकाशित) ।

अष्ट सहस्त्री—ले० विद्यानन्द स्वामी, संपा० पं० वंशीधर, प्र० सेठ गांधीनाथारंगजी आकलूज, भा० सं०, पृ० २९५, व० १९१५, आ० प्रथम ।

अष्ट सहस्त्री-तात्पर्य विवरणम्—ले० यशोविजय गणी, प्र० श्री जैन ग्रंथ प्रकाश सभा अहमदाबाद, भा० सं०, पृ० ४२८, व० १९३७ ।

अष्टांग हृदय—ले० श्रीमद्वाग्भट्ट, प्र० पन्नालाल जैन देश हितैषी आफिस बम्बई ।

अष्टान्हिका पूजन व महात्म्य—ले० हेमराज जी,संग्रह० सिंघई बंसीलाल, पन्नालाल, प्र० स्वयं अमरावती, भा० हि०, पृ० १८, व० १९३१।

असहमत संगम—ले० चम्पतराय बैरिस्टर, अनु० कामता प्रसाद जैन, प्र० लेखक स्वयं हरदोई, भा० हि०, पृ० ५१२, व० १९२२, आ० प्रथम ।

अहार—ले० यशपाल जैन, प्र० मधुकर कार्यालय टीकमगढ़, भा० हि०, पृ० ६६, व० १९४३, आ० प्रथम ।

अहिच्छेत्र पार्श्वनाथ पूजा—ले० कल्याण कुमार शशि, प्र०, सीताराम बजाज, भा० हि०, पृ० ३६, व १९४० ।

अहिंसा—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० २०, व १९२३, आ० द्वितीय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहिंसा—ले० पं० कैलाश चन्द शास्त्री, प्र० चम्पावती जैन पुस्तक माला अम्बाला छावनी, भा० हि० पृ० ४८; व० १९३०, आ० प्रथम।

अहिंसा अर्थात् आनन्द की कुंजी—ले० वा० सूरजभान वकील, प्र० प्रेम मंडल हरदा सी० पी०, भा० हि०, पृ० ११ ।

अहिंसा और कायरता—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, हिन्दी विद्या-मंदिर देहली, भा० हि० पृ० २६; व० १९३८, आ० तृतीय।

अहिंसा धर्म प्रकाश [पूर्वार्ध]—ले० फुलजारीलाल जैन, प्र० स्वयं जैन स्कूल पानीपत; भा० हि०; प्र० ८३, व १९२४, आ० प्रथम।

अहिंसा प्रदीप—ले० धीरेन्द्र कुमार शास्त्री, प्र० अहिंसा प्रचारक संघ काशी; भा० हि०; प्र० ३३; आ० प्रथम।

अहिंसा सिद्धांत—ले० मुनि अमर चन्द; भा० हि०; प्र० ४८, व० १९३२।

अहिंसा धर्म और धार्मिक निर्दयता—ले० प्र० अज्ञात, भा० हि० ।

अहिंसा धर्म और प्रेम—प्र० जीव दया सभा आगरा; भा० हि०; प्र० १० ।

अंजना—ले० अज्ञात; भा० हिन्दी।

अंजना पवञ्जय (काव्य)—ले० भंवर लाल सेठी; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० ३०, व० १९१५; आ० प्रथम।

अंजना पवञ्जय (नाटक)—ले० परमानन्द; भा० हि०, पृ० १२०, व० १९३९।

अंजना सुन्दरी नाटक—ले० कन्हैयालाल; प्र० खेमराज श्री कृष्णदास वम्बई, भा० हि०, पृ० ११२; व० १९०९; आ० प्रथम।

अंजना सुन्दरी—ले० रामचरित उपाध्याय; भा० हि०।

आगम प्रमाणता सम्बन्ध में शास्त्रार्थ—ले० कई विद्वान; प्र० हीराचन्द नेमचन्द दोशी शोलापुर; भा० हि०; पृ० ३९; व० १९२४।

आचारसार—ले० आचार्य वीरनंदि; संपा० पं० इन्द्रलाल शास्त्री पं० व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनोहरलाल शास्त्री; प्र० माणिक चन्द दि० जैन ग्रन्थमाला बम्बई; भा० सं०; पृ० ६८; व० १९१८, आ० प्रथम।

आचारसार—ले० आचार्य वीरनंदि; टी० पं० लालाराम शास्त्री; प्र० सेठ शाह जोतीचन्द भाई चंद सर्राफ बारामती, भा० सं० हि०; पृ० २६६; व० १९३६, आ० प्रथम।

आचार्य शान्तिसागर पूजन स्तवन—ले० पं० लालाराम व पं० मक्खनलाल प्र० श्रीलाल जैन जव्हेरी कलकत्ता; भा० हि०; पृ० २८; व० १९३४।

आचार्य शान्तिसागर महाराज का चरित्र—प्र० राव जी सखाराम दोशी शोलापुर; भा० हि०, पृ० ३६, व० १९२८, आ० प्रथम।

आत्मकथा—ले० पं० दरबारी लाल सत्य भक्त, प्र० सत्याश्रम वर्धा सी० पी०, भा० हि०, पृ० २९१, व० १९४०, आ० प्रथम।

आत्म तेज—ले० भगवत जैन, प्र० स्वयं; भा० हि०; पृ० ३०; व० १९३९।

आत्म दर्शन (सचित्र)—ले० मास्टर मेवाराम; प्र० पृथ्वीपाल जैन बड़ोदा, भा० हि०; पृ० ४८, व० १९४४; आ० प्रथम।

आत्म चिन्तन—ले० केशरी मल जैन, भा० सं० हि०; पृ० ९०।

आत्म दर्शन—ले० योगीन्द्र देव; भा० सं०।

आत्म धर्म—ले० ब्र० शीतल प्रसाद; प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत; भा० हि०, पृ० १५६; व० १९१९; आ० प्रथम।

आत्मध्यान का उपाय—संपा० ब्र० शीतल प्रसाद जी; प्र० सवाई सेठ खुशाल चंद चौरई छिन्दराड़ा; भा० हि०, पृ० ५६, व० १९२८, आ० प्रथम।

आत्म निवेदन—ले० के० भुजबलि शास्त्री, अनु० धरणीधर, भा० सं० हि०, पृ० ३२, व० १९४०।

आत्म प्रबोध—ले० कुमार कवि, अनु० पं० गजाधर लाल, संपा० पं० श्रीलाल; प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० १६४, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्म प्रमोद—ले० ब्र० नन्दलाल, भा० हि० पृ० ३८।

आत्म प्रमोद (प्रथम द्वितीय भाग)—ले० ब्र० नन्दलाल, संपा० बिहारी लाल कठनेरा, प्र० लेखक स्वयं कारंजा, भा० हि०; पृ० ७१, व० १९२८, आ० प्रथम।

आत्म भावना—ले० ब्र० नन्दलाल, भा० हि० पृ० १६, व० १९३५।

आत्म वन्दन (पद्य)—ले० ब्र० नन्दलाल; प्र० दुलीचन्द जैन कलकत्ता भा० हि० पृ० २७; व० १९३६, आ० प्रथम।

आत्मवाद और एकान्त परिहार—ले० प्र० ब्र० नन्दलाल, भा० हि० पृ० २०।

आत्म शुद्धि—ले० मुन्शीलाल एम० ए०, प्र० स्वयं; भा० हि०- पृ० ५६ व० १९१४, आ० द्वितीय।

आत्मसार छत्तीसी—ले० द्यानतं राय कवि; भा० हि०।

आत्म सिद्धि—ले० श्री मद्राज चन्द्र, संपा० पं० उदय लाल काशलीवाल, प्र० मनसुख लाल रावजीभाई वम्बई, भा० हि०, पृ० २०७, व० १९१८, आ० प्रथम।

आत्म सिद्धि—ले० पं दरबारी लाल सा० र०; प्र० आत्म जागृति कार्यालय व्यावर; भा० हि०, पृ० १७; व० १९३२।

आत्म सिद्धि और सम्यक्त्व—ले० पं० दरबारी लाल सा० र०, प्र० आत्म जागृति कार्यालय व्यावर, भा० हि०, पृ० १२, व० १९३२।

आत्मानन्द का सोपान—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किसनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० २०, व० १९२३; आ० प्रथम।

आत्मानंद जैन शताब्दी स्मारक ग्रंथ—प्र० आत्मानंद जैन सोसाइटी, भा० हि० ग्रं० गु०, पृ० ११, व० १९३६।

आत्मानुशासन—ले० गुणभद्राचार्य, टी० पं० टोंडरमल जी, अनु० हकीम ज्ञान चन्द, प्र० ज्ञान चंद जैनी लाहोर, भा० सं० हि०, पृ० ३४४, व० १८९७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्मानुशासन—ले० गुणभद्राचार्य; टी० पं० वंशीधर शास्त्री, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० स० हि०; पृ० ३४२, व० १९२६, आ० द्वितीय।

आत्मिक मनोविज्ञान—ले० चम्पतराय वैरिस्टर; प्र० साहित्य मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १०५, व० १९३२, आ० प्रथम।

आत्मोन्नति—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० २४, व० १९३६, आ० प्रथम।

आदर्श कहानियाँ—ले० पंडिता चन्दा वाई, प्र० मूलचंद किशनदास कापड़िया सूरत; भा० हि० पृ० २०४, व० १९३४ आ० प्रथम,

आदर्श जैन चर्या—ले० कामता प्रसाद जैन; प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९४४; आ० प्रथम, ।

आदर्श जैनी बनो —ले० ब्र० प्रेमसागर; प्र० वरातीलाल जैन लखनऊ; भा० हि०; पृ० १६; व० १९२६ ।

आदर्श नाटक—आ० प्रथम; भा० हि०, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; व० १९३३;

आदर्श निबंध—ले० पंडिता चन्दाबाई; प्र० जैन वालाविश्राम आरा; भा० हि०; पृ० १४९।

आदर्श भावना—ले० ब्र० सुन्दरलाल; भा० हि०; पृ० १६; व० १९३५ ।

आदर्श महिला पंडिता चन्दाबाई—ले० पं० परमानन्द जैन शास्त्री; प्र० वृजवाला देवी वालाविश्राम आरा, भा० हि०, पृ० २८३; व० १९४३; आ० प्रथम।

आदिनाथ स्तुति (भाषा भक्तामर)—ले० पं० हेमराज; संपा०, मुंशी अमनसिंह; प्र० मु० अमनसिंह देहली; भा० हि०, पृ० २८; व० १८९३; आ० प्रथम।

आदिनाथ स्तोत्र—ले० मानतुंगाचार्य; अनु० पं० लक्ष्मण जी अमर जी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भट्ट, प्र० सेठ हजारीलाल हरसुख राय सुसारी इन्दौर, भा० सं० हि०, पृ० २५, व० १६३६, आ० प्रथम।

आदिनाथ स्तोत्र व महावीराष्टक—ले० मानतुंगाचार्य अनु० पं० भागचन्द प्र० हीरालाल पन्नालाल जैन दिल्ली, भा० सं०, पृ० १६, व १६३६।

आदिनाथ स्तोत्र (विषापहार सहित)—ले० मानतुंगाचार्य, अनु० टी० पं० नाथूराम प्रेमी०, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ६०, व १६२३, आ० षष्टम्।

आदिपुराण—ले० जिनसेनाचार्य, टी० पं० दौलतराम जी, प्र० भारतीय जैन सिद्धाँत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ६६२, व० १६२०, आ० प्रथम।

आदिपराण—ले० जिनसेनाचार्य टी० अनु० पं० लालाराम शास्त्री, प्र० जैन ग्रंथ प्रकाशन कार्यालय इन्दौर, भा० सं० हि०, पृ० १७६८, व० १६१५ आ० प्रथम।

आदिपुराण—ले० जिनसेनाचार्य, अनु० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० दुलीचंद परवार देवरीसागर, भा० हि०, पृ० ४६०।

आदिपुराण—ले० जिनसेनाचार्य, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० सं०, पृ० २५८, आ. प्रथम।

आदिपुराण—(सचित्र)—ले० जिनसेनाचार्य, अनु० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २०२, व० १६३५ आ० द्वितीय।

आदिपुराण (संक्षिप्त हिन्दी गद्यात्मक)—ले० मा० बिहारीलाल; प्र० शान्ति चन्द्र जैन, भा० हि०, पृ० १८८, व० १६२६, आ० प्रथम।

आदिपुराण समीक्षा (प्रथम भाग)—ले० बा० सूरजभान वकील; प्र० चन्द्र सेन जैन वैद्य इटावा; भा० हि०; पृ० ५४; व० १६१८; आ० प्रथम।

आदिपुराण समीक्षा (द्वितीय भाग)—ले० बा० सूरजभान वकील; प्र० चन्द्रसेन जैन वद्य इटावा भा० हि० पृ० ७० ; व० ६१८ ; आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदिपुराण समीक्षा की परीक्षा—ले० पं० लालाराम शास्त्री; प्र० माणिक चन्द्र वैनाड़ा बम्बई, भा० हि० ; पृ० ६६, व० १९१८, आ० प्रथम।

आध्यात्मिक चौबीस ठाणा—ले० तारण तरण स्वामी, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० सेठ मन्नूलाल जैन आगासोंद, भा० हि०; पृ० १२४, व० १९३९, आ० प्रथम।

आध्यात्मिक निवेदन—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशन दास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ०, १६; व० १९१७, आ० प्रथम।

आध्यात्मिक पत्रावली (प्रथम भाग)—ले० पं० गणेश प्रसाद जी वर्णी, प्र० जिज्ञासु मंडल कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४०; व० १९४०, आ० प्रथम।

आध्यात्मिक पत्रावली (द्वितीय भाग)—ले० गणेश प्रसाद जी वर्णी, संपा० बा० छोटेलाल ; प्र० सर सेठ हुकम चन्द इन्दौर, भा० हि०; पृ० ७२, व० १९४१ आ० प्रथम।

आध्यात्मिक पत्रावली (तृतीय भाग)—ले० पंडित गणेश प्रसाद जी वर्णी प्र० जिज्ञासु मंडल कलकत्ता भा० हि०, पृ० १८३ व० १९४१, आ० प्रथम।

आध्यात्मिक सोपान—संपा० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३२५, व० १९३१, आ० प्रथम।

आधुनिक जैन कवि—संपा० रमारानी; प्र० भारतीय ज्ञानपीठ काशी। भा० हि०, पृ० २१४, व १९४४।

आनुपूर्वी—प्र० उम्मेद सिंह मुसद्दीलाल, भा० हि० पृ० २७, व. १९८८

आप्त परीक्षा—(मूल) ले० विद्यानन्द स्वामी, संपा० पं लालाराम, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं०; पृ० १४, व० १९०४ ; आ० प्रथम।

आप्त परीक्षा (सटीक)-ले० विद्यानन्द स्वामी; टी० अनु० पं० उमराव सिंह प्र० स्याद्वाद विद्यालय काशी, भा० सं० हि०, पृ० ७२ व० १९१५, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप्त परीक्षा (पत्र परीक्षा सहित)—ले० विद्यानन्द स्वामी ; संपा० पं० गजाधरलाल, प्र० पन्नालाल जैन बनारस; भा० सं० ; पृ० ७८, व० १९१३; आ० प्रथम ।

आप्तमीमांसा—ले० समन्तभद्राचार्य, संपा० पं० लालाराम, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० सं०; प्र० १४; व० १९०४, आ० प्रथम।

आप्तमीमांसा वचनिका—ले० समन्तभद्र आचार्य; टी० पं० जयचन्द्र जी, प्र० मुनि अनन्तकीर्ति ग्रन्थमाला बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ११८, आ० प्रथम।

आप्तमीमांसा प्रमाण परीक्षा—ले० समन्तभद्राचार्य, विद्यानन्द स्वामी संपा० पं० गजाधरलाल, प्र० पन्ना लाल जैन काशी, भा० सं०, पृ० ८०, व० १९१४, आ० प्रथम ।

आप्त स्वरुप—ले० अज्ञात, टी० पं० उग्र सेन जैन एम० ए०, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० २७२, व० १९४०, आ० प्रथम ।

आप्त स्वरुप—ले० अज्ञात, टी० पं उग्रसेन जैन एम० ए०, प्र० महावीर प्रसाद एण्ड सन्स देहली; भा० हि०, पृ० १८७; व० १९४१; आ० प्रथम ।

आरती व तीर्थ भजनावली—संग्र० पं० मंगल सैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फरनगर, भा० हि०, पृ० ४२, व० १९४०; आ० तृतीय ।

आरती संग्रह—संग्र० पुरुषोत्तम दास जैन, प्र० स्वयं सहारनपुर, भा० हि० पृ० १६, व० १९२६; आ० प्रथम ।

आराधनासार:—ले० देवसेनाचार्य; सं० टी० पंडिताचार्य रत्नकीर्ति देव; संपा पं० मनोहर लाल शास्त्री; प्र० माणिकचंद दिग० जैन ग्रन्थ माला बम्बई भा० सं०, प्रा० पृ० १३१, व० १९१६; आ० प्रथम ।

आराधना (टीका)—ले० देव सेनाचार्य; टी० „ ; अनु० पं० गजाधर लाल शास्त्री, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८८८; आ० प्रथम;

आराधनासार कथाकोष (प्रथम भाग)—ले० ब्र० नेमिदत्त, अनु० उदयलाल काशली वाल, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा सं० हि० ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आराधनासार कथाकोष (दूसरा भाग)—ले० ब्र० नेमिदत्त; अनु० उदय लाल काशलीवाल, प्र० जैन मित्र कार्यालय वम्बई भा० सं० हिन्दी पृ० २८२; व० १९१५; आ० प्रथम।

आराधना सार कथाकोष (तीसरा भाग)—ले० ब्र० नेमिदत्त अनु० उदय लाल काशली वाल, प्र० जैन मित्र कार्यालय वम्बई, भा० सं० हिन्दी पृष्ठ४६३; व० १९१६; आ० प्रथम।

आराधनासार कथाकोष (सचित्र-प्रथम भाग)—ले० परमानन्द विशारद; प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०; पृ० १६४; व० १९२७; आ० प्रथम।

आराधनासार कथाकोष (द्वितीय, तृतीय भाग)—ले०परमानन्द विशारद प्र० जिनवाणी कार्यालय कलकत्ता, पृ० १४९; आ० प्रथम।

आराधनासार कथा कोष (हिन्दी पद्य)—ले बख्तावर रतनलाल; प्र० मोतीलाल जैन कुटेसर, मुजफ्फर नगर; भा० हि० पृ० ५४५; व० १९०९ आ० प्रथम।

आराधनास्वरूप—संग्र० धर्मचन्द हरजीवनदास; भा० हि०; पृ० ४८; व० १९१६।

आर्यभ्रम निराकरण—ले० मक्खनलाल जैन; प्र० जैन तत्व प्रकाशनी सभा इटावा; भा० हि०; पृ० ३८; व० १९१३; आ० प्रथम।

आर्यभ्रमोच्छेदन—ले० उमरावसिंह जैन; प्र० चन्द्रसैन जैन वैद्य, इटावा; भा० हि०; पृ० १२; व० १९१३; आ० प्रथम।

आर्यमत लीला—ले० पं० जुगलकिशोर मुख्तार; प्र० चन्द्रसैन वैद्य इटावा; भा० हि०; पृ० १८४; व० १९११; आ० प्रथम।

आर्य समाज की डबल गप्पाष्टक—ले० पं० अजित कुमार शास्त्री; प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन संघ अम्बाला छावनी; भा० हि०; पृ० २७; व० १९३९; आ० द्वितीय।

आर्य समाज के एकसौ प्रश्नों का उत्तर—ले० पं० अजित कुमार;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्र० चम्पावती पुस्तकमाला अम्बाला छावनी ; भा० हि० ; पृ० ८६ ; व० १९३१ ; आ० प्रथम (दो अन्य पुस्तकें इसी प्रकार की प्रकाशित हुई हैं)।

आर्य समाज भ्रमोन्मूलन—लेखक पंडित अजित कुमार, प्रकाशक चम्पावती जैन पुस्तकमाला अम्बाला छावनी, भाषा हिन्दी; पृष्ठ २१, व. १९३३ आ० प्रथम।

आर्य संशयोन्मूलन—लेखक पंडित देवकीनन्दन, प्रकाशक जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १८ व १९१३; आ० प्रथम।

आर्यों का तत्त्वज्ञान—लेखक पंडित जुगलकिशोर मुख्तार, प्रकाशक चन्द्रसेन जैन वैद्य इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३१, व. १९१२, आ० चतुर्थ।

आर्यों की प्रलय—लेखक पंडित जुगलकिशोर मुख्तार, प्रकाशक जैन, तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा; भाषा हिन्दी पृष्ठ ४०; व. १९१३; आ० द्वितीय।

आलाप पद्धति—लेखक देवसेनाचार्य, अनु० पंडित दीपचन्द जी वर्णी; प्रकाशक सेठ सवाभाई लखमल शाह आरोण, भाषा प्रा० हिन्दी; पृष्ठ १३२, व० १९३३ आ० प्रथम।

आलाप पद्धति—लेखक देवसेनाचार्य; अनु० पंडित हजारी लाल, संपा० पंडित फूलचन्द सि० शास्त्री, प्रकाशन दिगम्बर जैन पंचान नातेपुते; भाषा प्राकृत हिन्दी; पृष्ठ १३६, व. १९३४।

आलोचना पाठ—प्रकाशन बा० सूरजभान वकील देवबंद, भाषा हिन्दी व० १८९८।

आलोचना पाठ सटीक—अनु० भाईलाल कपूरचन्द भाषा हिन्दी; पृष्ठ २४, व० १९०६।

आशाधर पूजा पाठ—लेखक पंडित आशाधर, संपादक नेमिशा उपाध्याय भाषा सं०; पृष्ठ १८३२, व १९२०।

आश्रम भजनावली (प्रथम भाग)—संग्र० प्रकाशक सुपरिंटेंडेंट प्रचार भारतवर्षीय जैन अनाथाश्रम देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३२; आ० द्वितीय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आस्रव त्रिभंगी—लेखक श्रुतमुनि; भाषा संस्कृत, व १९२०; (भाव संग्राहादि में प्र०) ।

आहारदान विधि—लेखक पंडित वंशीधर; प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर; भाषा हिन्दी; पृष्ठ ५६, व १९२८ ।

इन्द्रिय पराजय शतक—लेखक अज्ञात; भाषा० सं ,

इष्ट छत्तीसी—लेखक कविवर बुधजान जी; प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भाषा हिन्दी पृष्ठ १४, वर्ष १९०८ आ० तृतीय ।

इष्टोपदेश—लेखक पूज्यपादाचार्य; भाषा० सं , पृष्ठ ७२, व १९२० ।

इष्टोपदेश टीका—लेखक आचार्य पूज्यपाद देवनन्दी; टीका ब्र० शीतल प्रसाद जी; प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा सं० हिन्दी, पृष्ठ २५६- व १९२३; आ० प्रथम ।

ईश्वरास्तित्व—लेखक पंडित पुत्तूलाल; प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी; पृष्ठ १५, व १९१४, आ० प्रथम ।

उजले पोश वदमाश—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैन संगठन सभा देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३३, व १९२८, आ० प्रथम ।

उज्ज्वल जीवन के सात सोपान—लेखक मणिलाल नाथू भाई, अनु० मुनि तिलक विजय, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३०, व १९२० ।

उत्तर पुराण—लेखक गुणभद्राचार्य, अनु० टीका पंडित लालाराम शास्त्री प्र० जैन ग्रन्थ प्रकाशन कार्यालय इन्दौर, भाषा संस्कृत हिन्दी, पृष्ठ ७६०, व १९१८; आ० प्रथम ।

उद्गार (पद्य)—लेखक दलीपसिंह कागजी, प्रकाशक मोतीलाल जैन देहली; भाषा हिन्दी; पृष्ठ १६; व १९४२; आ० प्रथम ।

उन्नति शिक्षक—लेखक प्रकाशक छोटे लाल अजमेरा जयपुर; भाषा हिन्दी (१८ विविध विषयक निबंधों का संग्रह) ।

उपदेश और पुकार पच्चीसी—लेखक भैया देवीदास, प्र० जैन ग्रंथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रचारक पुस्तकालय देववन्द; भाषा हिन्दी पृष्ठ १०; व० १९१० ।

उपदेश छाया आत्मसिद्धि—लेखक श्रीमद्राज चन्द्र, अनु० पंडित जगदीश चन्द्र शास्त्री एम. ए., प्र० परम श्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ९४; व० १९३७; आ० प्रथम ।

उपदेश माला—लेखक त्यागी आनन्दी लाल, प्र० शाह केशव लाल त्रिभुवन दास वड़ोदा, भाषा हिन्दी पृष्ठ १३, व० १९१४, आ० प्रथम ।

उपदेश रत्नकोष—भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५०, प्र० जैन पुस्तक प्रकाशन कार्यालय व्यावर ।

उपदेश रत्नमाला—लेखक पंडिता चन्दा बाई, प्र० जन बालाविश्राम आरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १३६, व० १९२५ आ० चतुर्थ ।

उपदेश रत्नमाला (पद्य)—लेखक अज्ञात, अनु० दौलत राम जैन, संपा० मूल चंद वत्सल, प्र० साहित्य रत्नालय विजनौर, भाषा हिन्दी पृष्ठ १५; व० १९२९; आ० प्रथम ।

उपदेश रत्नावली—लेखक व प्र० पन्नालाल जैन मास्टर, लश्कर; भाषा हिन्दी ।

उपदेश शुद्धसार—लेखक तारण तरण स्वामी; अनु० ब्र० शीतल प्रसाद प्र० सेठ मन्नूलाल आगासौद; भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३२६; व० १९२६; आ० प्रथम ।

उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला—लेखक नेमिचंद भंडारी; टीका पंडित पन्ना लाल बाकलीवाल; प्र० जैचन्द सीताराम सैतवाल वर्धा; भाषा हिन्दी पृष्ठ ८० व० १८८९; आ० प्रथम ।

उपमिति भव प्रपंच कथा (प्रथम भाग)—लेखक सिद्धर्षि; अनु० पंडित नाथू राम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भाषा हिन्दी; पृष्ठ २०४, व १९११ आ० प्रथम ।

उपमिति भव प्रपंच कथा (द्वितीय भाग)—लेखक सिद्धर्षि; अनु पंडित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाथूराम प्रेमी प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकरक कार्यालय बम्बई भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६७; व० १९१२: ग्रा० प्रथम ।

उपासना तत्व—लेखक पंडित जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३२, व० १९२१ ग्रा० प्रथम ।

उमास्वामी श्रावकाचार परीक्षा—लेखक पंडित जुगलकिशोर मुख्तार, प्रकाशक वीर सेवा मंदिर सरसावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २९, व. १९४४, ग्रा० प्रथम ।

ऋग्वेद के बनाने वाले ऋषि—लेखक बाबू सूरजभान वकील, प्रकाशक ज्योति प्रसाद जी देवबन्द भाषा हिन्दी पृष्ठ ११२, व० १९१४ ग्रा० प्रथम ।

ऋषभ दास जी जैन के पवित्र जीवन की कुछ झलक—लेखक ज्योति प्रसाद प्रेमी; भाषा हिन्दी; पृष्ठ १०, वर्ष १८३६ ।

ऋषभ देव की उत्पत्ति असंभव नहीं है—लेखक कामता प्रसाद जैन; प्र० चम्पावती जैन पुस्तक माला अम्बाला छावनी; भाषा हिन्दी पृष्ठ ७६; व० १९३०; ग्रा० प्रथम ।

ऋषभ देव जी हत्या कांड का संक्षिप्त वृत्तान्त लेखक डा० गुलाबचंद पाटनी, प्रकाशक गुमानमल लुहाडचा अजमेर, भाषा हिन्दी पृष्ठ ३४; वर्ष १९२७ ।

ऋषभ देव में भयंकर हत्याकांड—लेखक जवाहरलाल जैन, प्र० स्वयं बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २० ।

ऋषभ पंचाशिका—लेखक धनपाल कवि; भाषा सं०; पृष्ठ ८, व० १८८६ (काव्य माला सप्तम गुच्छक में प्र०) ।

ऋषभ पुराण (पद्य)—ले० ब्र० मनसुख सागर; संपा० मा० बिहारी लाल चैतन्य; प्र० शान्ति चन्द जैन बुलन्दशहरी; भा०, हि०, पृ० ५६; व० १९२६; ग्रा० प्रथम ।

ऋषि मंडल मंत्र कल्प—ले० विद्याभूषण सूरि; टी० पं० मनोहर लाल, प्र० जैन ग्रन्थ उद्धारक कार्यालय बम्बई; भा० सं० हि०; पृ० ६०, व० ९१९, ग्रा० द्वितीय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋषि मंडल मंत्र कल्प—ले० विद्याभूषण सूरि; टी० पं० मनोहर लाल; प्र० नेमचंद देवचन्द शाह शोलापुर; भा० सं० हि०; पृ० ६४, व० १९२६; आ० तृतीय।

ऋषि मन्डल यन्त्र पूजा—ले० गुणनन्दि मुनींद्र; टी० पं० मनोहरलाल; प्र० जैन ग्रंथ उद्धारक कार्यालय वम्बई, भा० सं० हि०; पृ० ४२; व० १९१५, आ० प्रथम।

एक रात—ले० जैनेन्द्र कुमार; भा० हि०, पृ० २०९; व० १९३५।

एकीभाव स्तोत्र—ले० आचार्य वादिराज; सं० टी० भट्टारक चंद्रकीर्ति, अनु० संपा० पं० परमानंद शास्त्री, प्र० स्व० संपा०; भा० सं० हि०; पृ० ५२; व० १९४०; आ० प्रथम।

एकीभाव स्तोत्र—ले० आचार्य वादिराज; (काव्य माला सप्तम गुच्छक में प्र०)।

एकीभाव स्तोत्र—ले० आचार्य वादिराज, (पंच स्तोत्र में प्र०)।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह—संपा० अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, भा० हि०; पृ० ६१३; व० १९३७।

ऐतिहासिक स्त्रियाँ—ले० संपा० प्रेमलता देवी; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ८७, व० १९३६, आ० प्रथम।

ऐतिहासिक स्त्रियाँ—ले० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन आरा, भा० हि०।

एलक पन्नालाल दिग० जैन सरस्वती भवन—वार्षिक रिपोर्ट, ग्रन्थ सूची, प्रशस्ति संग्रह (प्रथम वर्ष)—प्र० ठाकुरसीदास जैन मंत्री बम्बई; भा० हि०; पृष्ठ १३६, व० १९२३।

वही	(द्वितीय वर्ष)	वही	पृ० ९८; व० १९२४।
वही	(तृतीय वर्ष)	वही	पृ० ११५; व० १९२५।
वही	(चतुर्थ वर्ष)	वही	पृ० १२०; व० १९२५।
वही	(पंचम वर्ष)	वही	पृ० १७७, व० १९३१।
वही	(षड वार्षिक)	वही	पृ० ४०३, व० १९३२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओसवाल समाज की वर्तमान स्थिति—ले० कालूराम, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ४६, वर्ष १९२१ ।

औदार्य चिन्तामणि—लेखक श्रुतसागर; संपादक एस. पी. वी. रंगनाथ स्वामी, भाषा प्राकृत संस्कृत; पृष्ठ ४४; वर्ष १९१७ ।

कथा कहानी और संस्मरण—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय; भाषा हिन्दी, पृष्ठ १२८; वर्ष १९४१ ।

कथा मंजरी (पहिला भाग)—लेखक पंडित देवीदयाल चतुर्वेदी, प्रकाशक सरल जैन ग्रंथमाला जबलपुर; भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३५; वर्ष १९४० आ. प्रथम ।

कथा मंजरी (दूसरा भाग)—लेखक भुवेन्द्र 'विश्व' प्रकाशक जैन ग्रंथमाला जबलपुर, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३८; वर्ष १९४१; आ. प्रथम ।

कनक तारा--लेखक बाबू सूरजभान वकील; प्रकाशक स्वयं; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३३, वर्ष १९२५; आ. प्रथम ।

कन्या विक्रम नाटक—प्रकाशक जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी ।

कमल श्री नाटक—लेखक पंडित न्यामत सिंह, प्रकाशक न्यामत जैन पुस्तकालय हिसार; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३८६; वर्ष १९२७, आ० प्रथम ।

कमला की सास—लेखक चन्द्रप्रभा देवी, भाषा हिन्दी; पृष्ठ १३, वर्ष १९२७ ।

करलक्खणं—सम्पादक प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी एम. ए. प्राकृत संस्कृत भाषा, प्रकाशक भारतीय ज्ञान पीठ काशी, पृष्ठ ५०, मूल्य १) व० १९४७ ।

क्या आर्य समाजी वेदानुयायी हैं—ले० पं० राजेन्द्र कुमार; प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन शास्त्रार्थ संघ अम्बाला छावनी; भा० हि० पृ० ४७; व० १९३५; आ० द्वितीय ।

क्या ईश्वर जगत कर्त्ता है—ले० बा० दयाचन्द्र; प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०; पृ० १२; व० १९१२; आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्या जैन समाज जिन्दा है—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय; प्र० हिन्दी विद्या मंदिर न्यू देहली; भा० हि; पृ० ३२; व० १९३८; आ० प्रथम।

क्या वेद ईश्वर कृत है—ले० पं० मंगलसेन; प्र० स्वयं अम्बाला छावनी भा० हि०; पृ० २०; व० १९३१; आ० प्रथम।

करकुण्डु चरिउ—ले० मुनि कनकामर; संपा० प्रो० हीरालाल, प्र० गोपाल अम्बादास चवरे कारंजा; भा० अप०; पृ० २८४; व० १९३४; आ० प्रथम।

करकुंड स्वामी की कथा—ले० अज्ञात; प्र०, जैन ग्रंथ प्रचार पुस्तकालय देवबन्द; भा० हि०; पृ० २०; व० १९०९; आ० प्रथम।

कर्णाटक जैन कवि—ले० पं० नाथूराम प्रेमी; प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०; पृ० ३६; व० १९१४; आ० प्रथम।

कर्म ग्रंथ भाग चौथा-षड शीति—ले० देवेन्द्र सूरि; अनु० पं० सुखलाल संघवी; प्र० आत्मानन्द पुस्तक प्रचारक मंडल आगरा, भा० प्रा० हि०, पृ० २९२; व० १९२२; आ० प्रथम।

कर्त्तव्य कौमुदी—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर, भा० हि० पृ० ५५०, व० १९२४।

कर्म प्रगति—ले० शिवशर्म सूरि; भाषा; पृ० २८; व० १९२७;

कर्मप्रकृति टीका—ले० शिवशर्मसूरी; टी० मलयगिरि व यशोविजय; भा० प्रा० सं०; पृ० ३९२; व० १९३४।

कर्मग्रंथ शतक—ले० देवेन्द्र सूरि; अनु० संपादन पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री प्र० आत्मानन्द पुस्तक प्रचारक मंडल आगरा, भा० प्रा० हि०; पृ० ३७०, व० १९४२; आ० प्रथम।

कर्मदहन विधान—ले० कविचन्द्र; प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० सं०; पृ० १२।

कर्मदहन व्रत विधान आदि—ले० पं आशाधर, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत; भा० सं०; पृ० ६८; व० १९३८; आ० प्रथम।

कर्मफल कैसे देते हैं—ले० स्वामी कर्मानन्द, प्र० जैन प्रगति ग्रंथमाला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहारनपुर; भा० हिं० पृ० ३८; आ० प्रथम ।

कलिकुंड पार्श्वनाथ पूजा मन्त्र स्तोत्र—प्र० मुन्शीलाल एंड संस कागजी देहली; भा० सं० हिं०; पृ० १८; व० १९४२, आ० प्रथम ।

कल्पित कथा समीक्षा—ले० उग्रादित्याचार्य; अनु० संपा० वर्धमान पार्श्वना० शास्त्री; प्र० सेठ गोविन्द जी रावजी दोशी शोलापुर भा० सं० हिन्दी; पृ० ८१२; व० १९४०; प्रथम ।

कल्याण कारक—ले० उग्रादित्याचार्य, अनु० संपा० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० सेठ गोविन्द जी राव जी दोशी शोलापुर, भा० सं० हि, पृ० ८१२, व० १९४०; आ. प्रथम ।

कल्याण भावना—ले० ताराचंद पाँडया; भा० हि०, पृ० १४, व० १९३४ ।

कल्याण मंदिर स्तोत्र—ले० कुमुद चन्द्राचार्य; अनु. पंडित बुद्धिलाल श्रावक; प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ४६, वर्ष १९१५; आ. प्र० ।

कल्याण मंदिर स्तोत्र—ले० कुमुदचन्द्राचार्य, (काव्य माला सप्तम गुच्छक में प्र०) व० १८९६ ।

कल्याण मंदिर स्तोत्र—लेखक कुमुदचन्द्राचार्य; व० १९०९, पंच स्तोत्र में प्र० ।

कल्याण माला—ले० पंडित आशाधर, भाषा सं०; व १९२१; (सिद्धांत सारादि संग्रह में प्र०) ।

कल्याण लोभणा (कल्याण लोचना)—लेखक अजीत ब्रह्म; भाषा प्रा० सं०; पृष्ठ १०; वर्ष १९२१, (सिद्धाँत सारादि संग्रह में प्र०)

कल्याण लोभणा (कल्याण लोचना)—लेखक अजित ब्रह्म; अनु० लाला राम; भा० प्रा० सं० हिन्दी; पृष्ठ २१, (दश भक्तयादि संग्रह में प्र०) ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कलियुग की कुल देवी—ले० अज्ञात; भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३६; वर्ष १९११।

कलियुग लीला भजनावली—लेखक पंडित न्यामत सिंह, प्र० स्वयं हिसार; भा० हिन्दी, पृ० २०, व० १९१५, आ० तृतीय।

कविवर भूधरदास और जैनशतक—ले० शिखर चन्द जैन प्रा० र० प्र० सार्वजनिक वाचनालय इन्दौर, भा० हि०; व० १९३८।

क्वारों की दुर्दशा—लेखक प्र० बाबू सूरजभान वकील; भा० हिन्दी पृष्ठ ३६; व० १९२७।

क्वारी बेवायें—लेखक अज्ञात, भा० हिन्दी।

कसाय पाहुड़ (जय धवल प्रथम खण्ड)—लेखक भगवत गुणधराचार्य, टी० स्वामी वीरसेन; जिनसेन; अनु० संपादक पंडित फूलचन्द; पंडित कैलाशचंद्र, पंडित महेन्द्र कुमार, प्र० भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ मथुरा, भाषा प्राकृत संस्कृत हिन्दी, पृष्ठ ५६८; व० १९४४, आ० प्रथम।

कंस वहो [प्राकृत काव्य]—सम्पादन ए. एन. उपाध्याय; भा० प्रा०।

कातन्त्र पंच संधि(भाषाटीका)—लेखक पन्नालाल जैन; प्र० देश हितैषी आफिस बम्बई; भा० सं०।

कातन्त्र व्याकरण—लेखक सर्व धर्माचार्य, टी० भावसेन त्रैविद्य, संपा० जीवाराम शास्त्री, प्र० हीराचंद नेमचंद; भा० सं०, प्र० २२२, व० १८९५ आ० प्रथम।

कातन्त्र रूपमाला व्याकरण—ले० सर्व धर्माचार्य, टी० भावसेन त्रैविद्य, प्र० पन्नालाल जैन, देशहितैषी आफिस बम्बई; भा० सं०।

काया पलट [रामकली]—लेखक ज्योति प्रसाद 'प्रेमी'; प्र० प्रेम पुस्तकालय देवबंद, भा० हि०; प्र० २२३६, व० १९२२, आ. प्रथम।

कालु भक्तामर स्तोत्र—लेखक स्वामी कादमल, अनु० कस्तूरी रंग नाथपा भाषा सं० हिन्दी; प्रष्ठ ५०; वर्ष १९३०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काव्य माला [२४ संस्कृत स्तोत्र पाठादि का संग्रह] संपादक पंडित काशीनाथ शर्मा; प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई; भाषा संस्कृत; प्रष्ठ १६१; व० १८६६; आ. द्वितीय, [इसके १३ या १४ गुच्छक प्रकाशित हुए हैं, जिनमें सातवां व तेरहवां महत्त्वपूर्ण हैं]।

काव्यानुशासनम्—ले० आचार्य हेमचंद्र, संपा० पं० काशीनाथ शर्मा; प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० सं०, पृ० ३६१, व० १९०१; आ० प्रथम

काव्यानुशासनम्—ले० श्री भट्टाग्भट्ट, संपा० पं० शिवदत्त व पं० काशीनाथ शर्मा; प्र० निर्णयसागर प्रेस बम्बई, भा० सं०, पृ० ६८, व० १८९४।

क्रिया कलाप—संपा० ० पन्नालाल सोनी, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृष्ठ ३४०, व० १९३६, आ० प्रथम।

क्रिया कोष—ले० पं० दौलतराम जी, प्र० जैन साहित्य प्रचारक कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी; पृ० १७८, व० १९१८, आ० प्रथम।

क्रिया कोष—ले० पं० किशन सिंह जी, प्र० हीराचंद नेम चंद, शोलपुर, भा० हि०, पृ० १३६, व० १८९२।

क्रिया मंजरी—संग्र० पंडित लालाराम; प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४२, व० १९१२; आ० प्रथम।

क्रिया रत्न समुच्चय—ले० गुणरत्न सूरि, भा० सं०; पृ० ३३५, व० १९०७।

कीर्ति कौमुदी—ले० कवि सोमेश्वर, भा० संस्कृत पृ० ७२, व० १८९७, (प्राचीन लेखमाला द्वितीय भाग में प्र०)।

कुन्दकुन्दाचार्य के तीन रत्न—लेखक श्री गोपालदास जीवा भाई पटेल, अनुवादक शोभाचंद्र भारिल्ल–भाषा हिन्दी प्रष्ठ १४२ प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ, काशी १९४८ मूल्य २)।

कुण्डलपुर महावीर पूजन—ले अज्ञात, भा० हिन्दी।

कुण्डलपुर महावीर परिचय—ले० अज्ञात, भा० हिन्दी।

कुन्ती नाटक—ले० पं० न्यायत सिंह, प्र० स्वयं हिसार, भा० हिन्दी, पृ०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०; व, १९१३, आ० तृतीय,

कुन्थसागर गुण गायन—संग्र. ब्र. विद्याधर वर्णी, प्र० आचार्य कुं सागर ग्रन्थमाला शोलापुर भा० हिन्दी पृ० ७६, व० १९४२; आ० प्रथम।

कुन्दकुन्द भजनावली—ले० ब्र० नन्दलाल. प्र० दिग० जैन ग्रंथमा भिंड, भा० हि०, प्र० ३४, व० १९४२, आ० प्रथम।

कुन्दकुन्दाचार्य चरित्र—लेखक तात्या नेमिनाथ पांगल, अनु० मूलच किशन दास कापड़िया, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हिन्दी, पृ ५३, व० १९१३।

कुन्दकुन्द वचनामृत—लेखक ब्र० नन्दलाल, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १ व० १९४५।

कुनयगज केसरी—संपा० प्रकाशक दिगंबर जैन आम्नाय संरक्षिणी स खुर्जा, भाषा हिन्दी पृष्ठ ४३, व० १९११।

कुम्भापुत्त चरियम्—संपा० ए. टी. उपाध्ये, भाषा प्राकृत, पृष्ठ १२६।

कुवलय माला कथा—लेखक रत्नप्रभ सूरि भाषा संस्कृत, पृष्ठ २ व० १९१५।

कुँवर दिग्विजय सिंह—प्रकाशक जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा हिन्दी, पृष्ठ १८, वर्ष १९१०।

कुसंग विष वृक्ष—लेखक पन्नालाल जैन, प्रकाशक देश हितैषी आफि बम्बई, भाषा हिन्दी।

केशरियां जी का हत्याकांड—ले० वाडीलाल मोतीलाल शाह; प्र० मूल किशन दास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० १३६; व० १९२७।

कृपण पच्चीसी—ले० कवि विनोदीलाल प्र० जैन ग्रंथ प्रचारक पुस्त लय देवबन्द; भा० हि०; पृष्ठ ८; व० १९१०।

कन्नड़ प्रान्तीय ताड़पत्रीय ग्रन्थ सूची—सम्पादक पं० के भुजबली भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, मूल्य १३)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain: Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खंडगिरि उदय गिरि पूजन—ले० मुनीम मुन्नालाल सुन्दर लाल, प्र० गुराबाई कटक, भा० हि०, पृ० ३२।

खंडेलवाल जैन इतिहास—ले० राजमल बड़जात्या, प्र० स्वयं, भा० हि० पृ० ४०, व० १९१०, आ० प्रथम।

खयाल जैन धर्म प्रकाश—ले० मास्टर घासीराम, प्र० स्वयं लखनऊ भा० हि०, पृ० २४, व० १८८८।

खुर्जा शास्त्रार्थ का पूर्व रंग—प्र० जन सभा खुर्जा, भा० हि० पृ० ५० व० १९०६, आ० प्रथम।

गडवाणी—ले० ऋषभ चरण जैन, प्र० स्वयं देहली, भा० हि०, पृष्ठ १२६, व० १९२४, आ० प्रथम।

गजपुर क्षेत्र पूजा—ले० पं० मक्खन लाल प्रचारक, प्र० त्रिलोक चन्द जैन देहली, भा० हि०, पृ० ८, व० १९३७।

गद्य चिन्तामणि—ले० वादीभसिंह सूरि, संपा० कुप्पुस्वामी शास्त्री एस० सुब्रह्मन्य शास्त्री प्र० जी० ए० नेटसमन कंपनी मद्रास, भा० सं०, पृ० २६९, व० १९०२, आ० प्रथम।

ग्रंथत्रयी (तत्त्वानुशासन, वैराग्य मणिमाला, इष्टोपदेश)—ले० आचार्य रामसेन, श्रीचन्द्र, व पूज्यपाद, अनु० पं० लालाराम शास्त्री, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० १९४, व० १९२१ आ० प्रथम।

ग्रंथ नामावली—प्र० दीपचन्द अग्रवाल मन्त्री ऐ० पन्ना लाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन झालरा पाटन, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १६०, व० १९३३।

ग्रंथ परीक्षा (प्रथम भाग)—लेखक पंडित जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११९, व० १९१७, आ० प्रथम।

ग्रंथ परीक्षा (दूसरा भाग)—लेखक पंडित जुगल किशोर मुख्तार,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११६, व० १६१७, आ० प्रथम ।

ग्रंथ परीक्षा (तृतीय भाग)—ले० पं० जुगल किशोर मुख्तार, प्रकाशक जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २६८, व० १६२८, आ० प्रथम ।

ग्रन्थ परीक्षा(चतुर्थ भाग)—ले० पंडित जुगल किशोर मुख्तार प्रकाशक जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हिन्दी, पृष्ठ १५६, व० १६३४, आ० प्रथम,

गागर में सागर—ले० दरबारीलाल सत्यभक्त, भा० हि०, पृ० ७२।

ग्रंथों की अक्षरानुसार सूची—संपा० सुपार्श्वदास गुप्त, प्र० जैन सिद्धान्त भवन आरा, भा० हि०, पृ० १२५, व० १६१६ ।

गरीब—लेखक भगवत जैन, प्र० भगवत भवन ऐतमाद पुर, भा० हिन्दी, पृ० ६८ ।

गायन गोष्ठी—ले० चन्द्र सेन जैन वैद्य, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० व० १६३६

गिरनार महात्म्य—ले० कवि हजारीमल, संपा० वंशीधर जैन, प्र० जैन ग्रंथ कार्यालय ललित पुर, भा० हि०, पृ० १०७, व० १६१६, आ० प्रथम।

गिरनारादि जैन मूड़ बद्री यात्रा विवरण (सचित्र)—ले० द्वारका प्रसाद, प्र० स्वयं फुलेरी, राजपूताना; भा० हि०, पृ० २६४, व० १६ आ० प्रथम ।

गुरु स्तुति—ले० वृन्दावन जी, भा० हि०, पृ० ७, व० १६१०।

गुर्वष्टक—ले० वृन्दावन जी, भा० हि०, पृ० ४, व० १६१०।

गृह देवी—ले० बा० सूरज भान वकील, प्र० महावीर ग्रन्थ कार्यालय आगरा, भा० हि० पृ० ६८, आ० द्वितीय ।

गृहस्थ धर्म—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० मा० चिम्मन लाल देहली भा० हि०, पृष्ठ २२, व० १६२६, आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गृहस्थ धर्म—ले० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० मूलचंद किशन दास कापड़िया सूरत; भा० हि०, पृ० ३०६, व० १९४३, आ० तृतीय।

गृहस्थ शिक्षा—ले० ज्योति प्रसाद प्रेमी, प्र० प्रेम भवन देवबंद, भा० हि० पृ० ३३, व० १९३५, आ० प्रथम।

गृहस्थ शिक्षा सार—लेखक व प्रकाशक ला० छोटे लाल अजमेरा जयपुर, भा० हि०।

गृहिणी कर्त्तव्य—लेखक पंडिता लज्जावती जैन, प्रकाशक दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २०४, वर्ष १९४१, आ० प्रथम।

गोमट्ट सार (कर्म कांड)—लेखक आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, टी० पंडित मनोहरलाल शास्त्री, प्रकाशक परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भाषा प्रा० सं० हिन्दी, पृष्ठ २८८, वर्ष १९१२, आ० प्रथम।

गोमट्ट सार (कर्म कांड)—लेखक आचार्य नेमि चंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, सं० टीका नेमि चंद्र मुनि, हिन्दी टीका पंडित टोडरमल जी, प्रकाशक भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता भाषा प्राकृत सं० हिन्दी, पृष्ठ २१००, आ० प्रथम।

गोमट्टसार (जीव कांड)—लेखक आचार्य नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती सं० टीका अभय चंद्र, हिन्दी टीका पंडित टोडरमल्ल जी, प्रकाशक, भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता भाषा प्राकृत सं० हिन्दी, पृष्ठ १३२९, आ० प्रथम।

गोमट्टसार (जीव कांड)—लेखक आचार्य नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती, टीका पंडित खूबचंद्र शास्त्री, प्रकाशक परम श्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भाषा प्राकृत हिन्दी, पृष्ठ २७३, व० १९१६, आ० प्रथम।

गोमट्टसार (जीव कांड)—लेखक आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धांत क्रवर्ती, टीका पं मनोहर लाल, प्रकाशक श्रेष्ठि नाथारंग जी गांधी आकलूज, भाषा प्राकृत हिन्दी, पृष्ठ १५१, वर्ष १९११ आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोमट्टसार पूजा—लेखक पंडित टोडरमल्ल जी, प्रकाशक भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १३।

गोमट्टसार पीठिका—ले० टी० पं० टोडरमल जी, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ७१।

गोमट्टेश्वर पूजन भजन व आरती—ले० ला० पूरनमल, प्र० स्वयं शमशाबाद आगरा, भा० हि०; पृ० १८, व० १६३६, आ० प्रथम।

गौतम चरित्र—ले० भट्टारक धर्म चन्द, अनु० पं लालाराम, प्र० मूलचंद किशन दास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० २०४, व० १६२७, आ० प्रथम।

गौतम चरित्र—ले० भट्टारक धर्म चन्द, अनु० नन्दन लाल जैन, प्रकाशक जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृ० १०४, व० १६३६ आ० प्रथम।

गौतम पृच्छा—ले० नन्द लाल, संपा० छोटे लाल, भा० हि०।

गौरव गाथा—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैन संगठन सभा देहली भा० हि०, पृ० २०, व० १६४०, आ० प्रथम।

घरवाली—ले० भगवत जैन, प्र० भगवत भवन ऐत्मादपुर; भाषा हि० व० १६४२।

घूंघट—ले० भगवत जैन, प्र० भगवत भवन ऐत्मादपुर; भा० हि०; पृ० ३१; व० १६३८।

चतुः विंशति संधानम्—ले० कवि जगन्नाथ; अनु० टी० पं० लालाराम; प्र० रावजी सखाराम दोशी, शोलापुर; भा० सं० हि०, पृ० १५२, व० १६२६, आ० प्रथम।

चतुः विंशति संधानम्—ले० कवि जगन्नाथ, अनु० टी० पं० लालाराम प्र० गाँधी नाथारंग जी शोलापुर; भा० सं० हि०, पृ० १५२; व० १६२६ आ० प्रथम।

चतुर्दशी महात्म्य—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, प्र० नेमिचंद जैसवाल अजमेर भा० सं; पृ० ७२ व० १६३७, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुर्विंशति का स्तुति---ले० मुनि सुधर्म सागर, अनु० लालाराम शास्त्री प्र० आचार्य शान्ति सागर ग्रंथ माला सागवाड़ा; भा० सं० हि०, पृ० १३६; व० १९३६।

चतुर्विशति जिन पूजा—ले० कवि रामचन्द्र; प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २१२; व० १९२४, आ० प्रथम।

चतुर्विंशति जिन पूजा (सचित्र)---ले० कविवर वृन्दावन जी, प्र० चन्दाबाई दिग० जैन ग्रन्थमाला देहली; भा० हि०; पृ० १३६; व० १९३८।

चतुर्विंशति जिन पूजा (सचित्र)---ले० बख्तावर रतन लाल; प्र० चंदा बाई दिग० जैन ग्रंथमाला देहली, भा० हि०, पृ० १४८।

चतुर्विंशति जिन पृजा विधान–ले० रामचन्द्र, प्र० भारतीय जैन सि० प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि० पृ० २१२; व० १९२३, आ० प्रथम।

चतुर्विंशति जिन स्तुति--ले० शोभन मुनि, भा० सं०; (काव्य माला सप्तम गुच्छक में प्र०)।

चन्द्र प्रभु चरितम्—ले० वीरनन्द्याचार्य; संपा० पं० काशीनाथ शर्मा; प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई; भा० सं०; पृ० १५०; व० १८९२, आ० प्रथम।

चन्द्र प्रभु चरित्र—ले० वीरनन्द्याचार्य, अनु० पं० रूप नरायण पांडेय, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० हि०, पृ० १८८, व० १९१६, आ. प्रथम।

चन्द्र प्रभु पूजा—ले० अज्ञात भा० हि०।

चन्द्र सागर का बहिष्कार क्यों–प्र० दिग० जैन मुनि धर्म रक्षक कमेटी इन्दौर; भा० हि०, पृ० ४१. व० १९४०।

चर्चा चन्द्रोदय (प्रथम भाग)—ले० पं० जीयालाल, प्र० स्वयं फरुखनगर भा० हि०,।

चर्चा चन्द्रोदय (द्वितीय भाग)—ले० पं० जीयालाल, प्र० स्वयं फरुख नगर भा० हि०; पृ० १०६, व० १८९२, आ. प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चर्चा चन्द्रोदय (तृतीय भाग)—ले० पं० जीयालाल; प्र० स्वयं फ
नगर भा० हि०, पृ० ६४, व० १८६४।

चर्चा मंजरी—ले० वैद्य शीतल प्रसाद, प्र० स्वयं देहली, भा० हि०; पृ
१६, व० १८६६, आ० प्रथम।

चर्चा शतक—ले० कवि द्यानतराय जी, प्र० नाना राम चन्द्र नाग फल्ट
भा० हि०, पृ० ७२, व० १९००, आ० प्रथम।

चर्चा शतक—ले० कवि द्यानतराय जी, टी० संपा० पं० नाथूराम प्रेमी
प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १५२, व० १९१
आ० प्रथम।

चर्चा समाधान—ले० पं० भूधर दास, प्र० जैन ग्रंथ प्रभाकर कार्याल
कलकत्ता, भा० हि० पृ० १६०, व० १९२०, आ० प्रथम।

चर्चा समाधान—ले० पं० भूधर दास, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्याल
कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १०४, व० १९२५, आ० प्रथम,—पृ० १२३, व०
१९२६, आ० द्वितीय।

चर्चा सागर—ले० पांडे चम्पा लाल, प्र० हंसराज महादुराम लुहाड्या
नांदगाँव, भा० हि०, पृ० ५३८, व० १९३०, आ० प्रथम।

चर्चा सागर उपनाम गंदा सागर—ले० अज्ञात, भा० हि०।

चर्चा सागर के विषय पर संक्षिप्त वक्तव्य—ले० पं० झम्मन लाल तर्क
तीर्थ, भा० हि० पृ० १३४, व० १९३३।

चर्चा सागर के शास्त्रीय प्रमाणों पर विचार—ले० पं० गजाधर लाल
शास्त्री, प्रकाशक दिग० जैन युवक समिति कलकत्ता, भा० हि० पृ० २८४; व०
१९३२, आ० प्रथम।

चर्चा सागर ग्रंथ पर शास्त्रीय प्रमाण—ले० पं० मक्खन लाल न्या०
प्र० दिग० जैन हितकारणी सभा बम्बई, भा० हि०, पृ० १७२, व० १९३
आ० प्रथम।

चर्चा सागर ग्रंथ पर शास्त्रीय प्रमाण का मुँह तोड़ उत्तर—ले० रत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाल भांभरी; प्र० दिग जैन युवक समिति कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४६, व० १६३२।

चर्चा सागर समीक्षा—ले० पं० परमेष्ठिदास प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ़ देहली; भा० हि०, पृ० २६४; व० १६३२; आ० प्रथम।

चाँदनी (काव्य)—ले० भगवत स्वरूप, प्र० स्वयं ऐतमादपुर; भा० हि०, पृ० ६५, व० १६४३।

चारदान कथा (छन्द बद्ध)—प्र० जैन ग्रन्थ प्रचारक पुस्तकालय देवबंद भा० हि० पृ० २६; व० १६०६, आ० प्रथम।

चारित्र प्राभृत—ले० कुन्दकुन्द आचार्य, (षट् प्राभृतादि संग्रह में प्र०)।

चारित्र पाहुड—ले० कुन्दकुन्द आचार्य; (अष्ठ पाहुड़ व षट् पाहुड में प्र०)।

चारित्र सार—ले० चामुंडराय, संपा० पं० इन्द्र लाल व उदय लाल काशलीवाल, प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रंथ माला बम्बई, भा० सं०, पृ० १०३, व० १६१७, आ० प्रथम।

चारित्र सार—ले० चामुंडराय, अनु० टी० लालाराम शास्त्री; संपा० गजाधर लाल व श्री लाल; प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता भा० हि०, पृ० २१८; आ० प्रथम।

चारुदत्त चरित्र (पद्य)—ले० कवि भारामल्ल, प्र० जैन भारती भवन बनारस, भा० हि०, पृ० १११, व० १६१२, आ० प्रथम।

चारित्र भक्ति—(दशभक्त्यादि संग्रह में प्र०)।

चारुदत्त चरित्र—ले० पं० परमेष्ठिदास, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत भा० हि०, पृ० १४८, व० १६३५, आ० प्रथम।

चारुदत्त चरित्र—ले० वैद्य पारसदास, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ११२, व० १६३५, आ० प्रथम।

चारुदत्त—ले० अज्ञात, भा० सं०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिकागो प्रश्नोत्तर—ले० स्वामी आत्माराम, भा० हि०, पृ० ११०, व० १९०४।

चित्रसेन पद्मावती चरित्र—ले० पूर्णमल, संपा० पं० के० भुजवलि शास्त्री, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ८२, व० १९३६, आ० प्रथम।

चित्रबन्ध स्तोत्र—ले० गुणभद्राचार्य, भा० सं०, (सिद्धान्त सारादि संग्रह में प्र०)।

चिदानन्द शिव सुन्दरी नाटक—ले० पं० न्यामतसिंह, प्र० स्वयं हिसार, भा० हि०, पृ० ६१, व० १९०६, आ० प्रथम।

चेतन कर्म चरित्र (पद्य)—ले० कवि भगवती दास, प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, भा० हि० पृ० ३६, आ० प्रथम।

चेलना चरित्र (पद्य)—ले० पं० राजकुमार, प्र० दिग० जैन संघ अम्बाला छावनी, भा० हि०, पृ० ३८, व० १९३८, आ० प्रथम।

चैत्य भक्ति—ले० पूज्यपादाचार्य, भा० सं० हि०, (दश भक्त्यादि संग्रह में प्र०)।

चौवीस ठाणा चर्चा—ले० अज्ञात, भा० प्रा० हि०।

चौवीस तीर्थंकरों की ज्ञातव्य बातों का नक्शा—ले० अज्ञात; भा० हि०।

चौवीस दंडक-(प्रकरण भाषा में प्र०)।

चौवीसी अखाड़ा—ले० यति नयनानंद, प्र० जैन ग्रन्थ प्रचारक पुस्तकालय देववन्द, भा० हि०, पृ० १५, व० १९०८।

चौवीस पाठ—ले० कविवर वृन्दावन, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

चौवीसो पूजा (संग्रह) व संस्कृत चौवोसी पाठ—ले० कवि रामचन्द्र, वृन्दावन, बख्तावरसिंह, प्र० ज्ञानचन्द जैनी लाहौर, भा० हि० सं०, पृ० ५८४, व० १९१०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौबीसी पुराण—ले० पं० पन्नालाल साहित्याचार्य, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २६३, व० १९३६, आ० प्रथम।

चौंसठ ऋद्धि पूजा—ले० अज्ञात, भा० हि०।

चौबीस स्थान चर्चा—ले० प्र० रामचन्द्र जैन, भा० हि०, पृ० १५०, व० १९०५।

छन्द शतक—ले० वृन्दावन दास; संपा० जमनालाल जैन; प्र० संस्करण सेठी हैदराबाद; भा० हि०, पृ० ६०, व० १९४७, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, टी० मुन्शी अमनसिंह; प्र० स्वयं देहली; भा० हि०, पृ० ५३, व० १८९६, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी; टी० बा० सूरजभान वकील; स्वयं देवबन्द; भा० हि०, पृ० ४५, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी; टी० ब्र० शीतल; प्रसाद प्र० माणिकचंद हीराचन्द बम्बई; भा० हि०, पृ० ५८; व० १९१२; आ० तृतीय।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी; संपा० पं० बुद्धिलाल श्रावक; प्र० मूलचन्द किसनदास कापड़िया सूरत; भा० हि०, पृ० ६६, व० १९२७; आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी; संपा० प्र० श्रीलाल जैन देहली, भा० हि० पृ० ७६, व० १९२९; आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी; टी० पं० मुन्नालाल रांधेलीय; प्र० स्वयं सागर; भा० हि०, पृ० २००, व० १९२९; आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी; संपा० पं० भुवनेन्द्र 'विश्व', प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८४; व० १९३८, आ० द्वितीय।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी; टी० पं० मोहनलाल काव्यतीर्थ; प्र० हरप्रशाद जैन वैद्य; भा० हि० पृ० १२८, व० १९४४; आ० पंचम।

छहढाला—ले० कविवर द्यानतराय जी; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी; पृष्ठ १२, व १९०९ आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छहढाला (बावनाक्षरी)—ले० द्यानत राय जी, टी० मुंशी नाथूराम लमेचू, प्र० स्वयं टी० कटनी, भाषा हिन्दी पृष्ठ १४ व० १८६८; आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर बुधजन जी; टी० मुन्शी नाथूराम लमेचू; प्र० स्वयं टी० कटनी मुडांवरा, भाषा हिन्दी; पृष्ठ १६; व० १८६८; आ० प्रथम।

छात्रों के लिए उपदेश—ले० मुन्शीलाल एम. ए., प्र० स्वयं भा० हि०।

छेदपिंड—ले० इन्द्रनन्दि; संपा० पन्नालाल सोनी; भा० सं०; (प्रायश्चित्त संग्रह में प्र०)।

छेदशास्त्र—ले० इन्द्रनन्दि, संपा० पन्नालाल सोनी; भा० सं०, (प्रायश्चित्त संग्रह में प्र०)।

जगत्सुन्दरी प्रयोगमाला—ले० मुनि यशपति; भा० प्र०, पृ० १३५; व० १९३६।

जकड़ी संग्रह—(१५ जकड़ियां) प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०।

जगदीश विलास—ले० कवि जगदीश राय; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली; भाषा हिन्दी पृष्ठ ५२; व० १९२५, आ० द्वितीय।

जगत्कर्तृत्व मीमांसा—ले० वालचन्द्र यति; भा० सं० हिन्दी पृष्ठ १०१; व० १९०८।

जगदुत्पत्ति विचार—ले० बा० सूरजभान वकील; प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५०, व० १९१३ आ० प्रथम।

जननी और शिशु—ले० बा० सूरजभान वकील; प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११७, व० १९२३ आ० प्रथम।

जम्बू गुण रत्नमाला—ले० जेठमल; भा० हि० पृष्ठ ८४, व० १९१६।

जम्बू द्वीप का नक्शा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद; व० १८९८।

जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति (२ भाग)-सटीक—भा० प्रा० सं० पृ० ५४५, व० १९१९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बू स्वामी चरित्र—ले० पं० राजमल्ल, संपा० पं० जगदीशचन्द्र एम. ए; प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई; भाषा सं० पृष्ठ २६००; व

जम्बू द्वीप षटमास—ले० उमास्वामि, भा० सं० पृ० २७; स० १६०२ १६३६; आ० प्रथम ।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले० अज्ञात; अनु० पं० दीपचन्द वर्णी, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत; भा० हि०, पृ० ५८; व० १६२७; आ० तृतीय ।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले० पडि रायमल्ल; अनु० ब्र० शीतल प्रसाद; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि० पृ० २१६, व० १६३६ आ० प्रथम ।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले० जिनदास; अनु० मुन्शी नाथूराम लमेचू; प्र० स्वयं अनु० कटनी मुन्डावरा; भा० हि०, पृ० ६२, व० १६०२, आ० प्रथम, ।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले० पं० दीपचन्द्र वर्णी; प्र० ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम मथुरा; भा० हि०; पृ० ३६, व० १६३६ ।

जय धवला टीका—प्र० अज्ञात, भा० प्रा० स०, व० १६३४ ।

जय विजय—ले० अशात; संपा० राजमल लोढ़ा, प्र० जैन धर्म प्रचारक मंडल अजमेर; भा० हि०, पृ० १६; व० १६३४; आ० प्रथम ।

जसहर चरिउ—ले० महाकवि पुष्पदन्त, संपा० पी० एल० वैद्य; प्र० जैन पब्लिकेशन सोसाइटी कारंजा; भा० अप०; पृ० २१७; व० १६३१ आ० प्रथम ।

जाति वर्ण और विवाह—ले० मोतीचन्द गौतमचन्द कोठारी, प्र० रावजी फूलचन्द कोठारी फलटण; भा० हि०; पृ० ८६; व० १६३५ आ० प्रथल ।

जातीय संगठन—ले० कुँवरलाल न्या० तो. प्र० ताराचन्द रपरिया आगरा, भा० हि०, पृ० ३२, आ० प्रथम ।

जिनचतुर्विंशतिका—ले० भूपाल कवि; भा, सं; पृ, ५; व; १८६६, काव्यमाला सप्तम् गुच्छक में प्र०; (तथा पँच स्तोत्र में प्र०) ।

जिनचतुर्विंशति काव्य—ले० पं० जियालाल, भा०, हि०, प्र० २६, व० १६१४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन चतुर्विंशतिका स्तुति—ले० पं० भूधरदास, भा; हि; पृ०, १६; व० १८९६ ।

जिन गुणगाथन मंजरी (प्रथम भाग)—पं० सद्वाधरत्नाकर कार्या… सागर; भा० हि०; पृ० ६४; व० १९१७; आ० प्रथम ।

जिनगुण मुक्तावली—ले० कवि भूधरदास; संपा० मुन्शी अमनसिंह; प्र… स्वयं संपा० देहली; भा० हि०; पृ० १२; आ० प्रथम ।

जिनदत्त—ले० धन्यकुमार सिंह; प्र० सन्तोषकुमार जैन उत्तरपाड़ा; भा… हि०; पृ० २८; व० १९२४, आ० प्रथम ।

जिनदत्त चरित्रम—ले० गुणभद्राचार्य; संपा० पं० मनोहरलाल; प्र… माणिकचन्द दिग० जैन ग्रंथमाला बंबई; भा० सं०; पृ० १००, व० १९१… आ० प्रथम ।

जिनदत्त चरित्र—ले० गुणभद्राचार्य, अनु० श्रीलाल जैन का० तो०, प्र… जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता; भा० हि०, पृ० १३६; आ० प्रथम ।

जिनदत्त चरित्र (भाषा पद्य)—ले० वख्तावर रतनलाल; संपा… प्र० मुंशी अमनसिंह सोनीपत; भा० हि०; पृ० १६२; व० १९०२; आ… प्रथम ।

जिन देव स्तुति (भाषा एकीभाव)—ले० कवि भूधरदास; प्र० मुं… अमन सिंह देहली; भा० हि० पृ० १६; व० १८९६; आ, प्रथम ।

जिन रत्नकोष (भाग १)—संपा० एच० डी० वेलंकर; प्र० भंडार… ओरियंटल रिसर्च इस्टीट्यूट पूना; भा० अं० सं०, पृ० ४७६; व० १९४… आ० प्रथम ।

जिन पूजाधिकार मीमांसा—ले० पं० जुगलकिशोर मुख्तार; प्र० … नाथारंग जी गांधी बंबई; भा० हि०; पृ० ५६; व० १९१३, आ० प्रथम ।

जिन वाणी माता की पुकार—ले० परमेष्टिदास लमेचू; प्र० उग्रसेन… बद्रीदास कलकत्ता; भा० हि०; पृ० २०, व० १९१३; आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनवाणी संग्रह—संग्र० संपा० पं० सतीशचंद्र, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता । भा० हिं० सं०; पृ० ४६४, आ० छठी ।

जिनशतक (स्तुति विद्या)—ले० समंतभद्राचार्य, सं० टी० नृसिंहभट्ट; हिं० अनु० पं० लालाराम; प्र० स्याद्वाद रत्नाकर कार्यालय काशी; भा० सं० हिं०, पृ० १२८; व० १९१२; आ० प्रथम ।

जिनशतकार—ले० जम्बू गुरु; भा० सं०; पृ० २२; (काव्यमाला सप्तमं गुच्छक में प्र०) ।

जिनशासन का रहस्य—ले० पं० माणिकचन्द न्या० आ०; प्र० जैन-मित्र मंडल देहली, भा० हि०; पृ० ६७ व० १९३८, आ० प्रथम ।

जिनसहस्रनाम—ले० जिनसेनाचार्य व० पं० आशाधर; प्र० जैनग्रंथ-रत्नाकर कार्यालय बंबई; भा० सं० ।

जिन सहस्र नामस्तोत्र—ले० जिनसेनाचार्य; अनु० पं० गौरीलाल सि० शा०, भा० सं० हि०, पृ० ९१; व० १९३ ; आ० प्रथम ।

जिनेन्द्र गुणगायन—संपा० मूलचन्द्र; गुप्त; प्र० जैन ग्रंथ प्रभाकर कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०; पृ० २८; व० १९१८ ।

जिनेन्द्र गुणानुवाद पच्चीसी—ले० कवि चुन्नीलाल; भा०; हि;० प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बंबई ।

जिनेन्द्र दर्शनपाठ—संग्र० पं० मुन्नालाल; प्र० स्वयं सिवनी; भा० सं० हि०; पृ० ३२, व० १९१२; आ० प्रथम ।

जिनेन्द्र पंच कल्याणक—ले० पं० रूपचन्द्र; प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त-प्रकाशनी संस्था कलकत्ता; भा० हि०; पृ० १६; व० १९२५, आ० प्रथम ।

जिनेन्द्र पंच कल्याणक पाठ—ले० पं० रूपचन्द्र; अनु० संपा० कुन्दनलाल जैन; प्र० दिगम्बरजैन पुस्तकालय सूरत; भा० हि०; पृ० ४८; व० १९२७; आ० द्वितीय ।

जिनेन्द्र भजन भंडार—ले० पन्नालाल जैन; प्र० स्वयं सिवनी; भा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हि०: पृ० ६०; व० १९२२; आ० प्रथम।

जिनेन्द्र भजन माला—ले० पं० न्यामतसिंह; प्र० स्वयं हिसार, भा० हि०; पृ० ३४; व० १९२४; आ० द्वितीय।

जिनेन्द्र मत दर्पण (प्रथम भाग)—ले० बा० बनारसीदास; संपा० ब्र० शीतलप्रसाद; प्र० जैन मित्र मंडल देहली; भा० हि० पृ० ३२; व० १९२६, आ० पंचम।

जिनेश्वर पद संग्रह—ले० जिनेश्वरदास; प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० ६४।

जीव और कर्म विचार—ले० क्षुल्लक ज्ञान सागर; प्र० दिगम्बर जैन महासभा; भा०; हि०, पृ० २६७; व० १९२१, आ० प्रथम।

जीव कर्म संवाद—ले० आत्माराम; प्र० मेलाराम, भा० हि०; पृ० ६७, व० १९४३।

जीवन चरित्र दा० वी० सेठ हुकमचन्द—प्र० मैनेजर जैन मित्र, भा० हि०; पृ० ७; व० १९१४।

जीवन निर्वाह—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बंबई; भा० हि,० पृ० २०३, व० १९२०, आ० प्रथम।

जीवंधर चम्पू—ले० महाकवि हरिश्चन्द्र, संपा० टी० एस० कप्पु स्वामी शास्त्री; प्र० संपादक स्वयं तंजोर, भा० सं०; पृ० १५२, व० १९०५, आ० प्रथम।

जीवंधर चरित्र—ले० गुणभद्राचार्य, संपा० टी० एस० कप्पूस्वामी; प्र० संपा० स्वयं तंजोर, भा० सं०, पृ० ६१, व० १९०७।

जीवंधर चरित्र—ले० अज्ञात संपा० विद्या कुमार सेठी व राजमल लोढा, प्र० जैन धर्म प्रचारक मंडल अजमेर, भा० सं०, पृ० १६।

जीवंधर चरित्र (पद्य)—ले० पं० नथमल विलाला, प्र० जैन मंदिर रोहतक, भा० हि० पृ० ३१०; व० १९४२ आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवंधर नाटक—ले० पं० कुञ्ज बिहारी लाल; प्र० स्वयं, हज़ारी बाग; भा० हि०, पृ० १२१, व० १९१७, आ० प्रथम।

जीव रक्षा दर्पण—संग्र० पारसदास खजांची, प्र० स्वयं देहली; भा० हि०, पृ० ७६, व० १९१६, आ० प्रथम।

जीव स्थानम् (प्रथम पुष्प)—ले० आचार्य पुष्पदंत भूतबलि; टी० वीरसेन स्वामी, संपा० पं० बंशीधर, प्र० गांधी हरीभाई देवकरण शोलापुर भा० प्रा० सं०, पृ० ३८०, व० १९३९, आ० प्रथम।

जीव स्थानम् (द्वितीय पुष्प)—ले० आचार्य पुष्पदंत भूतबलि, टी० वीरसेन स्वामी, संपा० पं० वंशीधर; प्र० गांधी हरीभाई देवकरण शोलापुर, भा० प्रा० सं० पृ० ३४४, व० १९४०, आ० प्रथम।

जीव स्थानम् (तृतीय पुष्प)—ले० आचार्य पुष्पदंत भूतबलि, टी० वीरसेन स्वामी, संपा० पं० बंशीधर, प्र० गांधी हरीभाई देवकरण शोलापुर, भा० प्रा० सं०, पृ० ३७६, व० १९४१; आ० प्रथम।

जीवाजीव विचार (प्रथम भाग)—ले० मास्टर पंचूलाल काला; प्र० शिक्षा प्रचारक कार्यालय देहली, भा० हि०।

जीवाजीव विचार (द्वितीय भाग)—ले० मास्टर पंचूलाल काला, प्र० शिक्षा प्रचारक कार्यालय देहली; भा० हि० पृ० ३२; व० १९३२ आ० प्रथम।

जेल में मेरा जैनाभ्यास—ले० सेठ अचल सिंह; प्रकाशक स्वयं आगरा; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ४४० ;वर्ष १९३४; आ० प्रथम।

जैनों शास्त्रार्थ—प्रकाशक अज्ञात, भाषा हिन्दी, वर्ष १९१७।

जैन आरती संग्रह—संग्रहकर्त्ता श्रीलाल जैन; प्रकाशक नन्नूमल जैन देहली; भाषा हिन्दी, पृष्ठ १६; व० १९४४, आ० प्रथम।

जैन इतिहास—लेखक अज्ञात; भाषा हिन्दी।

जैन इतिहास की पूर्व पीठिका और हमारा अभ्युत्थान—लेखक प्रो० हीरालाल जैन; प्र० हिन्दीग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हिन्दी, पृष्ठ १८३; व० १९३९; आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन इतिहास सोसाइटी—ले० बा० बनारसीदास, अनु० बाबू देवी सहाय, प्र० सेठ नाथारंग जी गांधी आकलूज, भा० हि०, पृ० ७६, व० १९०४, आ० प्रथम।

जैन और बौद्ध का भेद—ले० डा० हर्मन जैकोबी, अनु० संपा० राजा शिव प्रसाद सितारेहिन्द, भा० हि०, पृ० १०, व० १८९७, आ० द्वितीय।

जैन ऋषि (पद्य)—ले० श्री प्रेमी; प्र० प्रेमभवन पुस्तकालय सहारनपुर, भा० हि०, पृ० २०, आ० प्रथम।

जैन कथा कोष—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०।

जैन कथा द्वाविंशति—ले० प्रभाचन्द्राचार्य; भाषा संस्कृत, पृष्ठ ३६, व० १८९६।

जैन कथा संग्रह व स्त्री रक्षा—प्र० बा० ज्ञान चन्द जैनी लाहौर, भाषा हि०, पृ० २२०, व० १९०९, आ० प्रथम।

जैन कर्म सिद्धान्त—ले० पंडित अजित कुमार शास्त्री, प्रकाशक दि० जैन सभा अमरोहा, भाषा हिन्दी; पृ० ६०, व० १९३१; आ० प्रथम।

जैन कर्म सिद्धान्त—ले० चम्पतराय बैरिस्टर, अनु० कामता प्रसाद जैन, प्र० ले० स्वयं, भा० हि०, पृ० २३।

जैन कवियों का इतिहास—ले० मूलचन्द वत्सल; प्र० जैन साहित्य सम्मेलन दमोह; भाषा हिन्दी पृष्ठ १८७, व० १९३६, आ० प्रथम।

जैन क्रिया कोष—ले० पं० दौलतराम जी, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०; पृ० २२४, आ० प्रथम।

जैन क्रिया कोष—ले० पं० दौलतराम जी, संपा० बाबू लाल जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १८८, व० १९३५, आ० प्रथम।

जैन कीर्तन—ले० चन्द्रसेन वैद्य, प्र० स्वयं, भा० हि० पृ० ८, व० १९३५।

जैन कुतूहल—(पद्य)—ले० भारतेन्दु हरिश्चंद, भा० हि०; पृ० ५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन ग्रंथ प्रशस्ति संग्रह—संपा० पं० जुगलकिशोर मुख्तार व० पं० परमानंद शास्त्री; प्र० वीर सेवा मंदिर सरसावा; भा० सं० प्रा० अप० हि० ।

जैन ग्रन्थ संग्रह—संग्र० नन्द किशोर सिंघई; भा० सं० हि०, पृ० ३०८, व० १६२६ ।

जैन गाथाजली—ले० महर्षि शिवव्रत लाल वर्मन, प्र० संत कार्यालय प्रयाग; भा० हि०, पृ० ७४ ।

जैन गायन सुधा—संग्र० सूरज भान जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० ८०, व० १६३७; आ० प्रथम ।

जैन जगती—ले० कुंवर दौलतसिंह लोढ़ा 'अरविन्द'; प्र० शान्तिगृह धामनिया (मेवाड़); भा० हि० पृ० २५२; व० १६४२ ।

जैन ज्योतिष—संपादक शंकर पंढरीनाथ रणदेव; भा० सं० हि०; पृ० १५१; व० १६३१ ।

जैन जागरफी (प्रथम भाग) —ले पं० गोपालदास बरैया; प्र० जैन-सिद्धांत प्रचारिणी सभा मुरैना; भाषा हिन्दी; पृ० ३२, आ० प्रथम ।

जैन जाति का ह्रास और उन्नति के उपाय—ले० कामता प्रसाद जैन, प्र० संयुक्त प्रान्तीय दिग० जैन सभा, भाषा हि०, पृ० ५६, व० १६२४, आ० प्रथम ।

जैन जाति रक्षा—ले० मुरारीलाल जैन, प्र० दिग० जैन प्रान्तिक सभा जालन्धर, भा० हि०, पृ० १६, व० १६२६, आ० प्रथम ।

जैन जाति सुदशा प्रवर्तक—ले० सूरजभान वकील, प्र० दौलतराम जैन देहली, भाषा हिन्दी; पृ० ४०, आ० प्रथम ।

जैन जातियों में पारस्परिक विवाह—ले० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन तत्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० १६ ।

जैन जीवन संगीत—प्र० जैन साहित्य मन्दिर, सागर भा० हि०, पृ० ३२ ।

जैन झंडा गायन संग्रह—प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०; पृ ३६, व० १६४१ ।

जैन तीर्थमाला—ले० प्रभुदयाल ज्ञानचन्द्र, भा० हि० पृ० ३२१, व० १६०१ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन तीर्थ और उनकी यात्रा—ले० कामता प्रसाद जैन, प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन परिषद, भा० हि०, पृ० १४२, व० १६४३, आ० प्रथम।

जैन तीर्थ यात्रा—ले० अज्ञात भा० हि०, आ० द्वितीयं।

जैन तीर्थ यात्रा दर्पण—ले० डा० मित्रसेन जैन, प्र० कुलभूषण कुमार खतौली, भा० हि०, पृ० ८२, व० १६३६, आ० प्रथम।

जैन तीर्थ यात्रा दर्पण—ले० डाह्या भाई शिवलाल, प्र० स्वयं-कैरो भा० हि०, पृ० ६४, आ० प्रथम।

जैन तीर्थ यात्रा विवरण—ले० डाह्या भाई शिवलाल, प्र०, स्व भा० हि०।

जैन तीर्थ यात्रा दर्शक—ले० ब्र० गेवीलाल; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भाषा हि०; पृ० २१६; व० १६३०; आ० प्रथम।

जैन तीर्थ यात्रा दर्शक—ले० ब्र; गेबीलाल संशो० गुलजारीलाल चौधरी प्र० दि० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० २१४, व० १६३१, आ० द्वितीय।

जैन तीर्थ यात्रा दीपक—ले० पं० फतहचन्द; प्र० स्वयं दिल्ली, भा० हि०, पृ० २००, व० १६१४, आ० प्रथम।

जैन दर्शन और जैन धर्म—ले० हर्वर्टवारेन, अनु० मि० लालन, भा० हि० पृ० १६ व० १६२०।

जैन द्वितीय पुस्तक—ले० मु० नाथूराम लेमचू, प्र० स्वयं कटनी, भा० हि० पृ० १६० आ० प्रथम।

जैनधर्म—ले० हर्बर्ट वारेन प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ८, आ० प्रथम (अंग्रेजी निबंध का अनुवाद)

जैन धर्म और अहिंसा—ले० ए० पी० शुक्ल, प्र० साहित्य प्रकाशन मंडल हावड़ा, भा० हि०, पृ० १७, व० १६४४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन धर्म और अहिंसा—ले० माणिकचन्द्र, प्र० जैन युवक संघ हाथरस, भा० हि०, पृ० १६।

जैनधर्म—ले० नाथूराम डोंगरीय, प्र० जैन शिक्षा मन्दिर बिजनौर, भा० हि०, पृ० ११५, व० १६४१, आ० प्रथम।

जैन धर्म अव्यवहार्य नहीं है—ले० पं० दीपचन्द वर्णी, प्र० जैन मित्र मंडल देहली; भा० हि०, पृ० ४४, व० १६३६, आ० प्रथम।

जैन धर्म और डा० गौड़ का हिन्दू कोड—ले० चम्पतराय वैरिस्टर, भा० हि०, पृ० १२ व० १६२१।

जैन धर्म और मूर्ति पूजा—ले० विरधीलाल सेठी, प्र० ज्ञानचन्द जैन कोटा, भा० हि०, पृ० ६२, व० १६२६, आ० प्रथम।

जैन धर्म और विधवा विवाह (प्रथम भाग)—ले० सव्यसांची; प्र० जैन बालविधवा सहायक सभा, देहली, भा० हि०, पृ० ६०, व० १६२६, आ० प्रथम।

जैन धर्म और विधवा विवाह (द्वितीय भाग)—ले० सव्यसांची, प्र० जैन बाल विधवा सहायक सभा देहली भा० हि०, पृ० २३४, व० १६३१, आ० प्रथम।

जैन धर्म का परिचय—ले० सेठ हीराचन्द नेमचंद, प्र० दिग० जैन मालवा प्रान्तिक सभा बड़नगर, भा० हि०, पृ० ६४, व० १६१५; आ० प्रथम।

जैन धर्म का परिचय—ले० सेठ हीराचन्द नेमचन्द, प्र० सेठ नाथारंग गांधी, आकलूज, भा० हि०, पृ० ५६, व० १६०३; आ० प्रथम।

जैन धर्म का मर्म—ले० कुँवरसैन शर्मा, प्र० नन्नूमल जैन देहली, भा० हि०; पृ० १४; व १६१६, आ० प्रथम।

जैन धर्म का महत्त्व—ले० बा० ऋषभदास वकील; अनु० दयाचंद गोयलीय; प्र० जैन मित्र मंडल देहली; भा० हि०; पृ० १६; व० १६२३; आ० द्वितीय।

जैन धर्म का महत्त्व—संपा० बा० सूरजमल, प्र० जैनमित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०; पृ० १६६; व० १६११ आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन धर्म का स्वरूप—ले० स्वामी आत्माराम; भा० हि०, पृ० ४६, व० १६०५।

जैन धर्म का हृदय—ले० जुगमन्दर लाल जैनी वैरिस्टर, अनु० मुन्शीलाल एम. ए., प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, भा० हिं०, पृ० १६, व० १६१६।

जैन धर्म की उदारता—ले० पं० परमेष्ठिदास, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०; पृ० १०६; व० १६३६, आ० द्वितीय।

जैन धर्म की उदारता—ले० पं० परमेष्ठिदास, प्र० जौहरीमल जैन देहली, भा० हिं०, पृ० ६०, व० १६३४, आ० प्रथम।

जैन धर्म की प्राचीनता—संपा० दीनदयाल जैन, प्र० जैसवाल जैन कार्यालय आगरा, भा० हि० पृ० ४६, व० १६२६, आ० प्रथम।

जैन धर्म की प्राचीनता—प्र० जैन सुधारक संघ देहली, भा० हि० पृ० १६ व १६४२, आ० प्रथम।

जैनधर्म की विशेषताएं—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० २०, व० १६३८, आ० प्रथम।

जैन धर्म के विषय में अजैन विद्वानों की सम्मितियां—संग्र० मा० विहारीलाल, प्र० जैन धर्म संरक्षिणी सभा अमरोहा, भा० हि० पृ० १८, व० १६१५, आ० प्रथम।

जैन धर्म क्या है—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि० पृ० १८।

जैन धर्म क्या है—ले० चम्पतराय वैरिस्टर, अनु० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० २४, व० १६२०, आ० प्रथम।

जैन धर्म पर अन्य धर्मों का प्रभाव—ले० नाथूराम प्रेमी, प्र० आत्म जागृति कार्यालय जैन गुरुकुल व्यावर, भा० हि०, पृ० २६, व० १६३२।

जैन धर्म पर एक महाशय की कृपा—ले० पं० हंसराज शर्मा भा० हि० पृ० ४१, व० १६१६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन धर्म पर लोकमान्य तिलक का व्याख्यान—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ६ ।

जैन धर्म पर सेठी जी के विचार और उनकी समालोचना—ले० पं० मक्खनलाल न्या० ल०, प्र० स्याद्वाद प्रचारणी सभा कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १११, आ० प्रथम ।

जैन धर्म प्रकाश—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० परिषद पब्लिशिंग हाउस बिजनौर, भा० हि० पृ० २५०, व० १९२९ आ० द्वितीय ।

जैन धर्म प्रकाश (निबन्ध संग्रह)—प्र० धर्मचन्द्र घम्मावत बनारस, भा० हि०, पृ० ५८, व० १९४५ ।

जैन धर्म प्रवेशिका—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० जैन मित्रमंडल देहली, भा० हि०, पृ० ८७, व १९१६, आ० प्रथम ।

जैन धर्म प्रवेशिका (प्रथम भाग)—ले० मोहनलाल जैन का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन वैद्य लुहरी जि० झांसी, भा० हि० पृ० ३६, व १९४४, आ० तृतीय ।

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय भाग)—ले० मोहनलाल लैन का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन वैद्य लुहरी जि० झाँसी, भा० हि०. पृ० ४६; व १९४४, आ० द्वितीय ।

जैन धर्म प्रवेशिका (तृतीय भाग)—ले० मोहनलाल जैन का० ती०, प्र० हरप्रशाद जैन वैद्य लुहरी जि० झांसी, भा० हि०, पृ० ७२, व० १९४४, आ० द्वितीय ।

जैन धर्म प्रवेशिका (चतुर्थ भाग)—ले० मोहनलाल जैन का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन वैद्य लुहरी जि० झाँसी, भा० हि०, पृ० ११६ ।

जैन धर्म प्रवेशिका (प्रथम पुस्तक)—ले० पं० लालन, अनु० दरयावसिंह सोंधिया, प्र० धर्मचन्द पालीताणा, भा० हि०, पृ० ७१, व० १९१३, आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन धर्म बालबोध (प्रथम भाग)—ले० पं० लालन, अनु० दरयावसिंह सोंधिया, प्र० धर्मचन्द मुनीम, पालीताणा, भा० हिं०; पृ० ५६, व० १९१३, आ० प्रथम।

जैन धर्म बाल बोध (द्वितीय भाग)—ले० पं० लालन, अनु० दरयाव सिंह सोंधिया, प्र० धर्मचन्द मुनीम, पालीताणा; भा० हिं०, पृ० ६४, व० १९१३, आ० प्रथम।

जैनधर्म परिचय—ले० पं० अजितकुमार, प्र० चम्पावती जैन पुस्तकमाला अम्बाला; भाषा हिन्दी; पृष्ठ ४६, व० १९३०, आ० प्रथम।

जैनधर्म भजनमाला—संग्र० ऐ० धर्मसागर, प्र० पन्नालाल मोदी झाबुआ, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६३, व १९४१; आ० प्रथम।

जैन धर्म मीमांसा—प्रथम भाग—ले० पं० दरबारीलाल सत्यभक्त; प्र० सत्य समाज ग्रन्थमाला बम्बई; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३२८, व० १९३६, आ० प्रथम।

जैन धर्म मीमांसा (द्वितीय भाग) —ले० पं० दरबारीलाल सत्यभक्त; प्र० सत्यसमाज ग्रन्थमाला बम्बई; भा० हि०; पृ० ४१२, व० १९४०; आ० प्रथम।

जैन धर्म मीमांसा—(तृतीय भाग)—ले० पं० दरबारीलाल सत्यभक्त; प्र० सत्य समाज ग्रन्थमाला बम्बई; भा० हि०; पृ० ३६७; व० १९४२, आ० प्रथम।

जैन धर्म में अहिंसा—ले० ब्र० शीतल प्रसाद; प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत; भा० हि०, पृ० १४३; व० १९३९ आ० प्रथम।

जैन धर्म में दैव और पुरुषार्थ—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० हि०, पृ० १६७, व० १९४१, आ० प्रथम।

जैन धर्म श्रेष्ठ क्यों है—ले० मिलापचन्द कटारिया; प्र० अनेकान्त प्रभाकर मंडल देहली; भा० हि०; पृ० ३१; व० १९३१।

जैन धर्म सिद्धान्त—ले० शिवव्रत लाल वर्मन, प्र० वीर कार्यालय बिजनौर, भा० हि०; पृ० ८८; व० १९२८ आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन धर्म ही भूमंडल का सार्वजनिक सिद्धान्त हो सकता है—ले० माई-दयाल जैन; प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १४, व० १९२७; आ० प्रथम।

जैन धर्मादर्श—ले० रावजी नेमचन्द शाह; प्र० स्वयं; पृष्ठ २३२, व० १९१०।

जैन धर्मामृत—(प्रथम भाग)—संपा० सिद्धसेन गोयलीय; प्र० स्वयं किरठल (मेरठ); भा० हि०; पृ० ७४, व० १९३४, आ० प्रथम।

जैन धर्मामृत सार—ले० नेमिचन्द्र सीताराम (मराठी), अनु० पं० पन्नालाल वाकलीवाल; प्र० जैन-सभा वर्धा, भा० हि०, पृ०, १३१, व० १८९१, आ० प्रथम।

जैन धर्मोन्नति कारक—प्र० धन्ना लाल आसकरन दुर्गापुर, भा० हि०; पृ० ३४; व १८९१।

जैन नारी गीतावली—प्र० जैनी लाल; भा० हि०; पृ० ३०।

जैन नारी मंगलाचार—संपा० प्र० पी० सी जैन आगरा, भा० हि०, पृ० १६।

जैन नित्य पाठ संग्रह (१६ पाठों का संग्रह)—प्र० निर्णय सागर प्रेस बंबई, भा० सं०, पृ० १८८, व० १९१२, आ० चतुर्थ,

जैन नित्य पाठ संग्रह—संग्र० व प्र० अज्ञात, भा० हि०, पृ० १८०,

जैन नियम पोथी—संग्र० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बंबई, भा० हि०, पृ० ३२; व० १९३०; आ० चतुर्थ।

जैन पथ प्रदर्शक गीतांजली—ले० पन्नालाल जैन, प्र० स्वयं सिवनी, भा० हि०; पृ० ५२, व० १९२१, आ० प्रथम।

जैनपद संग्रह—ले० सन्तलाल, प्र० ज्ञानचन्द जैन लाहौर, भा० हि० पृ० ३२, व० १९००।

जैनपद संग्रह—प्रथम भाग—ले० कविवर दौलतराम जी, प्र० जैन ग्रन्थ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ११६, व० १९०९, आ० तृतीय ।

जैनपद संग्रह द्वितीय भाग—ले० कवि भागचन्द्र जी, प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६४, व० १९०९, आ० प्रथम ।

जैनपद संग्रह—तृतीय भाग—ले० कवि भूधरदास जी, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६८, व० १९०९, आ० प्रथम ।

जैनपद संग्रह—चतुर्थ भाग—ले० कवि द्यानतरायजी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १५५, व० १९०९, आ० प्रथम ।

जैनपद संग्रह—पंचम भाग—ले० कवि बुधजन जी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १००, व० १९१०, आ० प्रथम ।

जैन पद सागर—संपा० पं० पन्नालाल वाकलीवाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १९२, व० १९३० ।

जैनपाठमाला—प्रथमभाग—ले० गुणधरलाल जैन, प्र० मुन्नुलाल श्योसिंह राय शहादरा, भा० हि०, पृ० १७, व० १९२७, आ० प्रथम ।

जैन पाठमाला—दूसराभाग—ले० गुणधरलाल जैन, प्र० एस० एस० जैन लोअर मिडिल स्कूल देहली, भा० हिं०, पृ० २८, व० १९२७, आ० प्रथम ।

जैन पाठमाला—तीसराभाग—ले० गुणधरलाल जैन, प्र० एस० एस० जैन० लोयर मिडिल स्कूल देहली, भा० हि० ।

जैन पाठमाला—चौथाभाग—ले० गुणधरलाल जैन, संपा० पं० लालाराम, प्र० लेखक स्वयं देहली, भा० हि०, पृ० ७७, व० १९२८, आ० प्रथम ।

जैन प्रतिमा यंत्र लेख संग्रह—संपा० बा० छोटे लाल जैन, प्र० पुरातत्त्वान्वेषिणी जैन परिषद कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० ४०, व० १९२३ ।

जैन प्रथम पुस्तक—ले० नाथूराम लेमचू, भा० हि०, पृ० ७३, व० १९२५ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन प्रश्नोत्तर कुसुमावली—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर, भा० हि० पृ० १२०

जैन पुष्पमाला—प्रथम गुच्छक—ले० पन्ना लाल जैन, प्र० स्वयं विसाना, भा० हि०, पृ० १७; व० १९१४, श्रा० प्रथम।

जैन पुस्तक प्रशस्ति संग्रह (प्रथम भाग)—संपा० मुनि जिनविजय, बम्बई; भा० सं० प्रा० हि०, पृ० २००, व० १९४३।

जैन फिलासफी—ले० वीर चन्द राघव चन्द गांधी, प्र० चन्द्र सेन जैन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० २१, व० १९१४, श्रा० प्रथम।

जैनबद्री मूलबद्री क्षेत्र—ले० सुखदेव जी, भा० हि०, पृ० ३२, व० १८८५।

जैन बाल गुटका (प्रथम भाग)—संग्र० बा० ज्ञान चंद जैनी, प्र० स्वयं लाहौर, भा० हि०, पृ० १८६, व० १९०९, श्रा० चतुर्थ।

जैन बाल गुटका (दूसरा भाग)—संग्र० बा० ज्ञान चन्द जैनी; प्र० स्वयं लाहौर, भा० हि०, पृ० ३०६, व० १९०९।

जैन बाल बोधक (प्रथम भाग)—ले० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० नेमिचंद बाकलीवाल, कलकत्ता, भा० हि०; पृ० ८०; व० १९२२, श्रा० आठवीं।

जैन बाल बोधक (द्वितीय भाग)—ले० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० स्वदेशी कार्यालय बम्बई; भा० हि० पृ० १२८, व० १९०६ श्रा० प्रथम।

जैन बाल बोधक (द्वितीय भाग)—लेखक पं० पन्ना लाल बाकलीवाल; प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १२२, वर्ष १९१७।

जैन बालबोधक—(तृतीय भाग)—लेखक पंडित पन्नालाल बाकलीवाल प्रकाशक भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्था कलकत्ता; भा० हि०, पृ० २५१, व० १९२२ श्रा० प्रथम।

जैन बौद्ध तत्त्वज्ञान—लेखक संपा० ब्र० शीतल प्रसाद; प्रकाशक स्वयं सूरत, भा० हि०, पृ० २२२, व० १९३४, श्रा० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन बौद्ध तत्त्व ज्ञान (दूसरा भाग)—लेखक संपा० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०; पृ० २६४; व० १९३७, आ० प्रथम।

जैन भजन तरंगनी—ले० पं० न्यामत सिंह, प्र० स्वयं हिसार; भा० हि०, पृ० ३४; व० १९२६; आ० प्रथम।

जैन भजन पच्चीसी—ले० श्रीनिवास जैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुज़फ़्फ़र नगर, भा० हि० पृ० २४, व० १९३८, आ० प्रथम।

जैन भजन मुक्तावली—ले० पं० न्यामतसिंह, प्र० स्वयं हिसार, भा० हि० पृ० २८, व० १९१४, आ० प्रथम।

जैन भजन रत्नावली—ले० पं० न्यामत सिंह, प्र० स्वयं हिसार, भा० हि०, पृ० ५७, व० १९१८, आ० प्रथम।

जैन भजन शतक—ले० पं० न्यामत सिंह, प्र० स्वयं हिसार, पृ० ७१, व० १९२७, आ० सातवीं।

जैन भजन संग्रह—ले० यति नयनसुखदास, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुज़फ़्फ़र नगर, भा० हि०, पृ० ८०, व० १९३५, आ० द्वितीय।

जैन भजन संग्रह—ले० यति नयनसुखदास, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, भा० हि०, पृ० ७२, व० १९०९।

जैन भजन संग्रह—संग्र० ज्ञानचन्द जन, प्र० धनपाल जैन देहली, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९४२, आ० प्रथम।

जैन भजन संग्रह—प्रथम भाग—संग्र० पं० मंगतराय, प्र० जैनीलाल देववन्द, भा० हि०, पृ० ३४, व० १८९९।

जैन भजनावली—ले० गुणमाला देवी, प्र० मुमुक्षु महिलाश्रम महावीरजी, भा० हि०, पृ० ३२, आ० प्रथम।

जैन भारती—ले० गुणभद्र जैन कविरत्न, प्र० जिनवाणी प्रचारक, कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २०७, व० १९३५, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन मत के उत्पत्ति काल का निर्णय—ले० वाबूराम शर्मा; भा० हि०, पृ० ६।

जैनमत नास्तिक मत नहीं है—ले० हर्बर्ट वारेन, अनु० मुंशीलाल एम. ए., प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन शास्त्रार्थ संघ अम्बाला, भा० हि०, पृ० २३, व० १९३३, आ० द्वितीय।

जैन मत प्रबोधनी—ले० अज्ञात, भा० हि०, पृ० ६८, व० १८७४।

जैनमत भ्रमांधकार मार्तण्ड—ले० पं० शिवचन्द्र, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० ५२, व० १८८७, आ० प्रथम।

जैनमत समीक्षा—ले० प्रभुदत्त शर्मा भा० हि०, पृ० १२५।

जैन मित्र मंडल का इतिहास और कार्य विवरण—प्र० मन्त्री जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ६० व० १९२७, आ० प्रथम।

जैन मुनि—ले० आतमाराम, भाषा हिन्दी, पृ० २४, व० १९३५।

जैन मेला अल्लम—ले० पंडित न्यामत सिंह, भाषा हिन्दी, पृ० ११।

जैन यात्रा दर्पण—ले० दुलीचन्द, प्र० स्वयं, भाषा हि० पृ० २२, व० १८८७, आ० प्रथम।

जैन रामायण (पद्य)—ले० चुन्नी लाल, प्र० उग्रसेन जैन महलका (मेरठ) भाषा हिन्दी, पृ० ४०, व० १९२८, आ० प्रथम।

जैन रामायण नाटक—लेखक मूल चन्द, जैन, प्र० स्वयं महलका (मेरठ), भा० हि०, पृ० २६४, आ० प्रथम।

जैन लावनी बहार—संपा० प्रकाशक फूलचन्द जैनी, आगरा, भा० हिन्दी पृ० १६।

जैन ला—ले० चम्पतराय, बैरिस्टर, प्र० दिग० जैन परिषद बिजनौर, भा० हि०, पृ० १७२, व० १९२८, आ० प्रथम।

जैन लेख संग्रह (२ खंड)—पूरण चंद नाहर, भा० हि० सं०।

जैनबद्री मूलबद्री यात्रा—प्र० बा० सूरजभान वकील, देवबंद, भा० हि०, व० १८९८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन वनिता विलास—ले० पं० गोरेलाल पंचरत्न, प्र० सिंघई खेमचन्द जवेरी, भा० हि०, पृ० ३६, व० १६२४, श्रा० प्रथम।

जैनव्रत कथा कोष—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३२, श्रा० प्रथम।

जैनव्रत कथा रत्न—संग्र० मु० नाथूराम लेमचू, प्र० स्वयं कटनी, भा० हि० पृ० ४१, व० १८६८, श्रा० प्रथम।

जैन व्रत कथा संग्रह—ले० पं० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि० पृ० ११५, व० १९३८, श्रा० प्रथम।

जैनव्रत कथा संग्रह—प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० ४०, व० १६२२; श्रा० प्रथम।

जैनव्रत कथा संग्रह—प्र० वीरसिंह जैनी इटावा, भा० हिन्दी, पृ० ३२ व० १६०७, श्रा० प्रथम।

जैन व्रत कथा संग्रह—लेखक मा० दीपचन्द परवार, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० १८८, व० १६१६, श्रा० प्रथम।

जैन व्रत कथा संग्रह—ले० मु० नाथूराम लेमचू, प्र० खेमराज श्रीकृष्णदास बम्बई, भा० हि०, पृ० ४५; व० १६००।

जैन विवाह पद्धति—प्र० बा० सूरजभान वकील, भा० सं०, पृ० १०,

जैन विवाह पद्धति—संग्र० पं० गौरीलाल जैन, प्र० मिथ्यात्व तिमिर नाशनी दिग० जैन सभा देहली, भाषा संस्कृत हि०, पृ० ६४, व० १६१६ श्रा० द्वितीय,

जैन विवाह पद्धति—संग्र० पं० फत्तेलाल, प्र० लल्लूभाई लक्ष्मीचन्द बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ४०, व० १६०१,

जैन विवाह विधि—संपा० पं० चैनसुखदास न्या० ती०, प्र० सद्बोध प्रकाश कार्यालय जयपुर, भा० सं० हि० पृ० ६०, व० १९३२, श्रा० द्वितीय,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन विवाह विधि—सपा० मु० सुमेरचन्द जैन, प्र० स्वयं देहली ; भा० हि० ; पृ० ३४ ; व० १९४२; आ० प्रथम ।

जैन वाराँगनायें—ले० बा० कामता प्रसाद जैन ; प्र० वीर कार्यालय बिजनौर ; भा० हि० ; पृ० ८० ; व० १९३० ; आ० प्रथम ।

जैन वीरों का इतिहास ले० बा० कामता प्रसाद ; प्र० जैन मित्र मंडल देहली ; भा० हि०, पृ० ८६ ; व० १९३१ ।

जैन वीरों का इतिहास और हमारा पतन—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १५०, व० १९३०, आ० प्रथम, ।

जैन वैराग्य शतक—ले० बिहारी लाल चैतन्य, भा० हि०, पृ० ३२ व० १९२८ ।

जैन शतक—ले० कविवर भूधरदास, संपा० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन, ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३४, व० १९०७, आ० प्रथम ।

जैन शाखोच्चारण—प्र० जैन ग्रंथ प्रचारक कार्यालय देवबंद, भा० हि०, पृ० ८ ।

जैन शाखोच्चारण—प्र० बा० ज्ञानचंद जैनी लाहौर, भा० हि०, पृ० १०, व० १८९८ ।

जैन शास्त्र नाममाला—ले० दुलीचन्द श्रावक, प्र० स्वयं जयपुर, भा० हि०, पृ० ६१, व० १८९५ ।

जैन शासन—ले० पं० सुमेरचंद दिवाकर, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ बनारस, भा० हि०, व० १९४७ ।

जैन शिलालेख संग्रह (प्रथमोभागः)—संपा० प्रो० हीरालाल जैन, प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रंथमाला बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ५९०, व० १९२७, आ० प्रथम ।

जैन संगीत माला—प्रथम भाग—ले० बा० सुमेरचन्द जैन, प्र० स्वयं शिमला, भा० हि०, पृ० ९८, व० १९०३, आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन स्तव रत्नमाला—ले० पं० गिरधर शर्मा, प्र० सेठ लालचन्द सेठी झालरापाटन, भा० हि०, पृ० २६, व० १६२२, आ० प्रथम।

जैन स्त्री शिक्षा—(प्रथम भाग)—ले० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, भा० हि०।

जैन स्त्री शिक्षा—(द्वितीय भाग)—ले० पं पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० श्रीलाल जैन कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ६२।

जैन स्तोत्र संग्रह (५ स्तोत्र)—प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० सं०; पृ० ४०, व० १८६०, द्वि० आ०, व० १६००।

जेन संप्रदाय शिक्षा—ले० श्रीपाल चन्द्र, भा० हि०, (विविध विषय का वृहत ग्रंथ)।

जैन समाज का ह्रास क्यों—ले० अयोध्याप्रसाद गोयलीय, प्र० जैन संगठन सभा देहली, भा० हि०, पृ० ४०, व० १६३६, आ० प्रथम।

जैन समाज की वर्तमान दशा पर विचार—ले० से० ज्वालाप्रसाद, प्र० ज्योतिप्रसाद जैन देवबंद, भा० हि०, पृ० २२, व० १६३३।

जैन समाज दर्पण (पद्य)—लेखक पं० कमलकुमार जैन वि० र०, प्र० सूरजमल मोतीलाल छावड़ा खंडवा, भा० हि०, पृ० १३२, व० १६३५, आ० प्रथम।

जैन समाज दिग्दर्शन—ले० पं० न्यामतसिंह, प्र० स्वयं हिसार; भा० हि०, पृ० २८, व० १६२८; आ० प्रथम।

जैन संस्कार पद्धति—ले० मेंदालाल जैन, भा० हि०, पृ० १०२ व० १६१०।

जैन साहित्य और इतिहास—ले० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० हि० ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय वम्बई; भा० हि०, पृ० ६१५, व० १६४२; आ० प्रथम।

जैन सिद्धान्त दर्पण—ले० पं० गोपालदास बरैया; प्र० मुनि अनंतकीर्ति दि० जैन ग्रंथमाला वम्बई, भा० हि०; पृ० २४०, व० १६२८, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—ले० पं० गोपालदास बरैया, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २०६, व० १९१९, आ० पंचम।

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—ले० पं० गोपालदास बरैया, संपा० मनोहरलाल शास्त्री, प्र० गांधी रामचन्द्र नाथारंग बम्बई, भा० हि०, पृ० २०४, व० १९१६, आ० तृतीय।

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—ले० पं० गोपालदास बरैया, प्र० गांधी रामचन्द्र नाथारंग बम्बई, भा० हि०, पृ० १९६, व० १९०६, आ० प्रथम।

जैन सिद्धान्त संग्रह—संग्र० मूलचन्द, प्र० सद्बोध रत्नाकर कार्यालय सागर, भा० सं० हि० ; पृ० ४६०; व० १९२५, आ० तृतीय।

जैन सुधा बिंदु—ले० पं० जीयालाल चौधरी, प्र० चित्त विनोद पुस्तकालय फर्रुखनगर, भा० हि०; पृ० ३०, व० १८९४, आ. प्रथम।

जैनागार प्रक्रिया—संग्र० बा० दुलीचन्द्र, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० ४३८, आ० प्रथम।

जैनाचार्यों का शासन भेद—ले० पं० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृष्ठ ८०, व० १९२८, आ० प्रथम।

जैनार्णव-संग्र० चन्द्रसैन जैन वैद्य, प्र० स्वयं इटावा, भा० हि०, पृ० ४७३ व० १९२४, आ. पंचम।

जैनास्तिकत्व मीमांसा—ले० पं० हंसराज शर्मा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ४८, सं० १९१२।

जैनियों का अत्याचार—ले० पं० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० कुलवन्तराय ओवरसियर हरदा, भा० हि०, पृ० १६, आ० प्रथम।

जैनियों का तत्त्व ज्ञान और चारित्र—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १२, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैनियों में अशान्ति और उसे शान्त करने के उपाय—प्र० धन्नालाल काशलीवाल बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २४, वर्ष १९११।

जैनी कौन हो सकता है—ले० पं० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९३१, —व० १९१४, प्र० कुरीति निवारणी सभा घामपुर।

जैनेन्द्र के विचार—ले० प्रभाकर माचवे, भा० हि०, पृ० ३६३, व० १९३७।

जैनेन्द्र प्रक्रिया—ले० आचार्य गुणनन्दि, संपा० पं० श्रीलाल जैन, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था काशी, भाषा सं०, पृष्ठ ३००, व० १९१४, आ० प्रथम।

जैनेन्द्र पंचाध्यायी सूत्रपाठ—ले० पूज्यपाद स्वामी, संपा० वंशीधर शास्त्री, प्र० गांधी नाथारंग आकलूज, भा० सं०, पृ० ५६, व० १९१२, आ० प्रथम।

जैनेन्द्र व्याकरण—ले० पूज्यपाद स्वामी, टी. देव नन्दि (महाकृति), भा० सं०, पृ० ३७०।

जोग शिक्षा—ले० पं० भूधरदास, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भाषा हिन्दी, व० १८९८।

ज्योति प्रसाद—ले० माई दयाल जैन, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १६८, व० १९३८, आ० प्रथम।

ज्योति प्रसाद भजनमाला—ले० कवि ज्योति प्रसाद, प्र० ज्ञानानन्द बड़ौत (मेरठ) भा० हि०, पृ० ४८; व० १९१९, आ० चतुर्थ।

ज्योतिषसार (प्राकृत)—टी० संपा० पं० भगवतदास जैन, भा० प्रा. हि०, पृ० ८३, व० १९२३, आ० प्रथम।

झांझरी जी की नारदीय लीला का अन्त—ले० पं० रामप्रसाद शास्त्री, प्र० दिग० जैन हितकारी सभा बम्बई, भा० हि०; पृ० ३६; व० १९३२।

डा० सतीशचन्द्र की स्पीच—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि० पृ० १०; व० १९१४, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ढाढसी गाथा—ले० अज्ञात, भा० प्रा०, पृ० ६।

ढुंढक मत मीमांसा—ले० मूलचन्द्र ब्रह्मचारी, प्र० न्यामतसिंह टीकरी (मेरठ), भा० हि०, पृ० २६, आ० प्रथम।

णमोकार मंत्र का अर्थ—ले० ज्ञानचन्द्र जैनी, प्र० स्वयं (लाहौर) भा० हि०, पृ. ४८, व० १६०६।

णोय कुमार चरिउ—देखिये–नागकुमार चरित्र (कवि पुष्पदन्त कृत)।

णाणसार (ज्ञान सार)—ले० पद्मसिंह मुनि, टी० पं० तिलोकचन्द्र, भा० प्रा० हिंदी, पृष्ठ ४६, व० १६४३।

तत्त्वानुशासन—ले० नागसेनाचार्य, भाषा संस्कृत, पृष्ठ २३, (तत्त्वानुशासनादि संग्रह में प्र०)।

तत्त्व भावना (वृहत्सामायिक पाठ)—ले० अमितगति आचार्य, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० सं० हि०, पृ० ३४४; व० १६३० आ० प्रथम।

तत्त्वमाला—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० भारत जैन महा मंडल, भा० हि०, पृ० १०४, व० १६११; आ० द्वितीय।

तत्त्वसार—ले० देवसेन, भा० प्रा० (तत्त्वानुशासनादि संग्रह में प्र०)।

तत्त्वसार टीका—ले० देवसेनाचार्य; [टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० १६२, व० १६३८, आ० प्रथम।

तत्त्व ज्ञान तरंगिणी—ले० ज्ञान भूषण भट्टारक; अनु० पं० गजाधरलाल प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि. सं.; पृ० २१३, व० १६१६, आ० प्रथम।

तत्त्वानुशासनादि संग्रह (१४ मूल सं० प्रा० ग्रन्थों का संग्रह)—ले० विविध आचार्य; संपा० पं० मनोहरलाल शास्त्री, प्र० माणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रंथ माला बम्बई, भा० सं० प्र०, पृ० १७६, व० १६१८, आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ दीपिका (प्रथम खण्ड)—ले० उमास्वामी आचार्य; टी० पं०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बटेश्वरदयाल वकवेरिया; प्र० उदयराज जैन ग्रन्थमाला ग्रटेर (ग्वालियर); भाषा संस्कृत हिन्दी, पृ० २५६, व० १६३७ आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ राजकौस्तुभ (प्रथम खण्ड-२ अध्याय)—ले० भट्टाकलंक देव, टी० पंडित पन्नालाल दूनी वाले, संपा० पंडित सतीशचन्द्र पंडित कस्तूर चन्द, प्र० दुलीचन्द पन्नालाल परवार देवरी, भा० सं० हि०, पृ० १४१, व० १६२४, आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ राज वार्तिक—ले० भट्टाकलंक देव, अनु० संपा० पंडित गजाधर लाल पं० मक्खन लाल; प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था काशी; भा० सं० हि०; पृ० ४१५; व० १६१५।

तत्त्वार्थ राज वार्तिकालंकार (पूर्वार्ध)—ले० भट्टाकलंक देव, अनुवादक टी० पंडित गजाधर लाल पण्डित मक्खनलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि० पृ० १२५१, आ. प्रथम।

तत्त्वार्थ राज वार्तिकालंकार (उत्तरार्द्ध)—ले० भट्टाकलंक देव; अनु० टी० पण्डित गजाधरलाल पण्डित मक्खन लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता; भाषा सं० हिन्दी; पृष्ठ १२२७, आ. प्रथम।

तत्त्वार्थ श्लोक वार्तिकम्—ले० विद्यानन्दि स्वामी, संपा० पण्डित मनोहरलाल शास्त्री; प्र० रामचन्द्र नाथारंग जी बम्बई; भाषा सं०, पृ० ५१२, व० १६१८।

तत्त्वार्थसार (सटीक)—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० पण्डित वंशीधर, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०; पृ० ४२८, व० १६१६, आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ वृत्ति—भगवदुमास्वामि विरचित, टीका श्री श्रुतसागर सूरि, हिन्दीसार प्रो० महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य, प्रकाशक भारतीय ज्ञान पीठ, काशी मूल्य १६)।

तत्त्वार्थ सूत्र—ले० उमास्वामी, अनु० भगवान सागर ब्रह्मचारी, प्र० स्वयं अनु०, भा० सं० हि०, पृ० १४८, व० १६३३, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्त्वार्थ सूत्र—ले० उमास्वामी, अनु० संपा० पं० सुखलाल संघवी, भा० सं० हि०; पृ० ५८८, व० १९३९।

तत्त्वार्थ सूत्र—ले० उमास्वामी, टी० शान्तिराज शास्त्री, भा० सं०, पृ० १०४, व० १९४४।

तत्त्वार्थ सूत्र—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, अनु० संपा० पं० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मंदिर सरसावा, भा० सं० हि०, पृ० ५२, व० १९४४, आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ सूत्र का अर्थाशय—ले० मुंशी नाथूराम लमेचू, प्र० स्वयं कटनी, भा० हि०, पृ० ५१, व० १९०२, आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ सूत्र टीका—ले० पं० सदासुख जी, प्र० नाना रामचन्द्र नाग फलटण, भा० सं० हि०, पृ० ६६, व० १८९६, आ० प्रथम।

तरन तारन प्रार्थनाएँ—संपा० प्र० अमृतलाल चंचल, भा० हि०।

तारण तरण श्रावकाचार—ले० तारण तरण स्वामी, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मथुरा प्रसाद बजाज सागर, भा० हि०, पृ० ४३९, व० १९३२, आ० प्रथम।

तारण पंथ समर्थन—ले० प्र० चम्पालाल जैन, भा० हि०, पृ० १४४, व० १९४०।

तारण शब्द कोष (२ खंड)—ले० जयसेन क्षुल्लक, प्र० कुन्दनलाल हजारी लाल बासौंदा, भा० हि०, पृ० १५५, व० १९३९।

तारण त्रिवेणी—ले० तारण स्वामी, अनु० अमृत लालचंचल, भा० सं० हि०, पृ० ११८, व० १९४०।

तारण समाज के किये गये प्रश्नों के उत्तर—ले० जीवंधर कुमार व दरबारी लाल, प्र० तारण समाज, भा० हि०, पृ० ३४, व० १९४०।

तामिल वेद—ले० तिरुवल्लवर, अनु० संपा० व प्र० जीतमल लूणिया अजमेर, भा० हि०।

तिलक मञ्जरी—ले० धनपाल, संपा० भवदत्त शास्त्री तथा काशीनाथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पांडुरंग, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० सं०, पृ० ३५०, व० १९०३।

तिलोय पण्णत्ति (त्रिलोक प्रज्ञप्ति प्रथम खंड)—ले० यतिवृषभाचार्य, संपा० डा० ए० एन० उपाध्याय तथा—प्रो० हीरालाल जैन, अनु० पं० बालचन्द्र शास्त्री, प्र० जैन संस्कृत संरक्षक संघ शोलापुर, भा० हिं०, पृ० ५२६, व० १९४३, आ० प्रथम।

तीर्थङ्कर भक्ति—ले० पूज्यपादाचार्य, भा० सं०, (दशभक्तयादि संग्रह में प्र०।

तीर्थमाला अमोलकरत्न—ले० शीतल प्रसाद, भा० प्र० हिं०, पृ० ३८, व० १८९३।

तीर्थ यात्रा दर्शक—ले० ब्र० गेबीलाल; प्र० दिग० जैन समाज कलकत्ता, भा० हिं०, पृ० २७६, व० १९२८, आ० प्रथम।

तीर्थ यात्रा दर्शक—प्र० चन्द्रराज शेट्टि व वर्धमान हेग्गडे पुत्तरु (कन्नड)।

तीस चौबीसी पूजा—ले० कविवर वृन्दावन जी, संपा. मुन्नालाल काव्यतीर्थ, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिं०, पृ० ३७१, व० १९१७, आ० प्रथम।

तीस चौबीसी विधान और समाधिमरण—ले० पं० हजारीलाल वैद्य, भा० हिं०, पृ० १४, व० १९३५।

तीन पुष्प—ले० कैलाश चन्द्र शास्त्री, प्र० शारदा सहेली संघ देहली, भा० हिं०, पृ० ३२०; व० १९४४।

तेरह द्वीप पूजन विधान—ले० कवि श्रीलाल जी, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हिं०, पृ० ३२८, व० १९४३, आ० द्वितीय।

त्याग मीमाँसा—ले० पं० दीपचन्द वर्णी, प्र० कोठारी मणिलाल चुन्नीलाल; भा० हिं०, पृ० २८, व० १९२८, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, पृ० ३३ व० १९३१, आ० द्वितीय।

थ्येट्रीकल जैन भजन मंजरी—ले० पं० न्यामतसिंह, प्र० स्वयं हिसार, भा० हिं०, पृ० २२, व० १९१२, आ० तीसरी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दम्पति सुख साधन (प्रथम भाग)—ले० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन हितैषी पुस्तकालय बम्बई, भा० हि०, व० १६०१ ।

दम्पति सुख साधन (द्वितीय भाग)—ले० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन हितैषी पुस्तकालय बम्बई, भा० हि०, व० १६०१ ।

दयानन्द चरित्र दर्पण—ले० जीयालाल जैनी, प्र० चित्र विनोद पुस्तकालय फर्रुखनगर, भा० हि०, पृ० २६१; व० १८६४, आ० प्रथम ।

दयानन्द छल कपट दर्पण—ले० पं० जीयालाल ज्योतिषी, प्र० स्वयं, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २६१, वर्ष १८६०, आ० प्रथम ।

दयानन्द छल कपट दर्पण—लेखक पंडित जीयालाल ज्योतिषी, प्रकाशक कामताप्रसाद दीक्षित अमरौधा (कानपुर), भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३२४, व० १६३०, आ० द्वितीय ।

दया स्वीकार माँस तिरस्कार—ले० बुधमल पाटनी, प्र० भारत धर्म महामंडल लखनऊ, भा० हि०, पृष्ठ १०२, व० १६१४, आ० प्रथम ।

द्यानत पद संग्रह—ले० कवि द्यानतराय, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४८ ।

दश व्रत नाटक—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि० ।

दर्शन और आरती—प्र० मा० शिवरामसिंह जैन रोहतक, भा० हि०, पृ० २६; व० १६३५, आ० द्वितीय ।

दर्शन कथा—ले० कवि भारामल्ल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४६ ।

दर्शन कथा—ले० कवि भारामल्ल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६७, व० १६१६, आ० चतुर्थ ।

दर्शन कथा—ले० कवि भारामल्ल; प्र० बा० ज्ञानचन्द जैनी लाहौर, भा० हि०, पृ० ७४, व० १६१२ ।

दर्शन कथा (सचित्र)—ले० कवि भारामल्ल, प्र० जिनवाणी प्रचारक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ५७, व० १९३६, आ० प्रथम।

दर्शन कथा (बड़ी-पद्य)—ले० कवि भारामल्ल, प्र० पूरनमल जैन शमसाबाद, (आगरा); भा० हि०, पृ० ६४, व० १९४२, आ० द्वितीय।

दर्शन प्राभृत—ले० कुन्दकुन्द, टी० श्रुतसागर, भा० प्रा० सं०, (षटप्राभृतादि संग्रह में प्र०)।

दर्शन पाठ—ले० दौलतराम व बुधजन जी, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०; पृ० १६, व० १९३०।

दर्शन पाहुड—ले० कुन्दकुन्द, भा० प्र०, (अष्ट पाहुड व षट पाहुड संग्रह में प्र०)।

दर्शन सार—ले० देवसेनाचार्य; टी० संपा० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई।

दर्शन प्रतीक्षा—ले० प्रेमी सहारनपुरी, प्र० प्रेमभवन पुस्तकालय, सहारनपुर; भा० हि०, पृ०२४; आ० प्रथम।

दर्श महिमा—ले० प्रेमी सहारनपुरी, प्र० प्रेम भवन पुस्तकालय सहारनपुर; भा० हि०, पृ० २४ आ० प्रथम।

द्रव्य दर्पण—ले० पं० अजितकुमार शास्त्री, प्र० चैतन्य प्रिंटिंग प्रेस बिजनौर, भा० हि०; पृ० ३९; व० १९३०, आ० प्रथम।

द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचन्द सि० च०, टी० बा० सूरजभान वकील, प्र० टी० स्वयं देववंद, भा० प्रा० हि०; पृ० ८१, व० १९०९।

द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचन्द्राचार्य, अनु० पं० सतीशचन्द्र; प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० प्रा० हि०, पृ० ३६; व० १९३६ आ० प्रथम।

द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचन्द्राचार्य, टी० बा० सूरजभान वकील, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालल बम्बई; भा० प्रा० हि०, पृ० १२४; व० १९३६ आ० प्रथम।

द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचन्द्राचार्य, पद्यानुवाद-द्यानतराय; टी० संपा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं० पन्नालाल बाकलीवाल; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० प्रा० हि०; पृ० ५८, व० १९१४. आ० चतुर्थ।

द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचन्द्राचार्य, टी० संपा० पं० भुवनेन्द्र विश्व, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० प्रा० हि०; पृ० ६०, व० १९३८; आ० द्वितीय।

द्रव्य संग्रह (हिन्दी दोहा बद्ध)—ले० मा० मुख्तारसिंह; अनु० मैना सुन्दरी; प्र० दि० जैन पुस्तकालय मुजफ्फरनगर, भा० हि०, पृ० ६८; व० १९४३।

द्रव्यानुयोग तर्कणा—ले० भोजकवि, अनु० ठाकुरप्रसाद शर्मा, भा० सं० हि०; पृ० २६०, व० १९०५।

दश आरती भाषा—प्र० बा. सूरजभान वकील देवबंद; भाषा हिन्दी, व० १८९८।

दश भक्ति—संग्रह मुनि श्रुतसागर; प्र० जैन मित्र मण्डल देहली; भाषा हिन्दी; पृ० ४३; व० १९३२।

दश भक्त्यादि संग्रह—ले० आचार्य पूज्यपाद; टी० पण्डित लालाराम, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर; भा० ० हि०; पृ० २००; व० १९३३, आ० प्रथम।

दशलक्षण धर्म—ले० पण्डित सदासुख जी; भाषा हिन्दी।

दशलक्षण धर्म—ले० पण्डित दीपचन्द वर्णी, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०; पृ० १३५; व० १९४२; आ० चतुर्थ।

दश लक्षणधर्म पूजा—ले० पण्डित जिनेश्वरदास, प्र० मौजीलाल जैन देहली, भा० हि० पृ० ४२; व० १९३५।

दश लक्षण धर्म संग्रह—ले० पण्डित रइधु कवि; प्र० जैन धर्म प्रचारक पुस्तकालय वर्धा; भाषा प्रा०, पृष्ठ ६४, आ० प्रथम।

दश लक्षण धर्म संग्रह (धर्म कुसुमोद्यान)—ले० पण्डित पन्नालाल जैन सा० आ०, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलत्ता, भा० हि०, पृ० ४१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दस्सा पूजाधिकार विचार—ले० स्फुलिङ्ग; प्र० जमनाबाई जबलपुर, भा० हि०, पृ० ३६, व० १६३६, आ० द्वितीय।

दस्साओं का पूजाधिकार—ले० पण्डित परमेष्ठिदास, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हिन्दी; पृ० ३१; व० १६३५; आ० प्रथम।

दस्तूर अमल अग्रवाल सभा सहारनपुर—भाषा हिन्दी।

दस्तूर अमल जैन विरादरी मेरठ—प्र० जैन विरादरी मेरठ शहर, भाषा हिन्दी, व १६२७।

द्वादशानुप्रेक्षा—ले० सोमदेव सूरि; टी० पं० लालाराम, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० ५७ आ. प्रथम।

द्वादशानुप्रेक्षा—ले० शुभचन्द्राचार्य, टी० पं० जयचन्द छावड़ा, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०; पृ० ८०, व० १६०५; आ० प्रथम।

द्वादशानुप्रेक्षा—प्र० जयचन्द्र श्रावणे वर्धा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ४३, व० १८६८, आ० प्रथम।

द्वादशानुप्रेक्षा—प्र० जैन ग्रंथ भंडार सागर, भा० हि०, पृ० ७६, व० १६२८, आ० प्रथम।

द्वादशानुप्रेक्षा व बारह भावना—ले० दयाचन्द गोयलीय; प्र० सद्बोध रत्नाकर कार्यालय सागर, भा० हिन्दी, पृष्ठ ७४, व० १६१४, आ० प्रथम।

द्वात्रिंशतिका—ले० अमित गति सूरि, भाषा संस्कृत, पृष्ठ १०६, (तत्वानुशासनादि संग्रह में प्र०)।

द्विसंधानम्—ले० कवि धनंजय, सं० टी० बदरीनाथ, सम्पादक पंडित काशीनाथ शर्मा व पण्डित शिवदत, प्रकाशक निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० सं०, पृ० २२६, व० १८६५, आ० प्रथम।

दान कथा—ले० बख्तावर मल रतनलाल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई भा० हि०।

दान कथा—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दान का फल अथवा सती चन्दन बाला नाटक—ले० शेरसिंह नाज़, प्र० प्यारे लाल देवी सहाय देहली, भा० हि०, पृ० २०७, व० १९२७, आ० प्रथम।

दान विचार—ले० क्षुल्लक ज्ञान सागर, प्र० रतनलाल जैन मादिपुरिया देहली, भा० हि०, पृ० २०२, व० १९३२, आ० प्रथम।

दान विचार समीक्षा—ले० पण्डित परमेष्ठिदास, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृष्ठ ८०, व० १९३३, आ० प्रथम।

दानवीर सेठ माणिकचन्द्र—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्रकाशक दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हिन्दी, पृ० ९२०, व० १९१९; आ० प्रथम।

दानवीर सेठ हुकमचन्द का जीवन चरित्र—लेखक अज्ञात, भा० हि०।

दान शासन—लेखक महर्षि वासु पूज्य, टी० अनुवादक वर्द्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्रकाशक गोविन्द राव जी शोलापुर, भा० सं० हि०, पृ० ३४०, व० १९४१, आ० प्रथम।

दिगम्बर मुनि—लेखक कामता प्रशाद जैन, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०; पृ० ३२; व० १९३१ आ० प्रथम।

दिया तले अंधेरा—प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०।

दीपमालिका विधान—संपादक मदनलाल जैन, प्रकाशक दोशी जयचन्द हेमचन्द ईडर, भा० हि० पृ० ३९; व० १९१३, आ० प्रथम।

दीपमालिका विधान—संग्रह संपादक ब्र० शीतल प्रसाद, प्रकाशक मूलचंद किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० १८; व० १९१७; आ० द्वितीय।

दिगम्बर जैन मूर्ति पूजा पर शंकाएं—लेखक प्र० गुलाबचन्द जैन पुष्प, भा० हि०, पृ० १८, व० १९३९।

दिगम्बर मुद्रा की सर्वमान्यता—लेखक के० भुजबलि शास्त्री, प्रकाशक जैन सिद्धान्त भवन आरा, भा० हि०; पृष्ठ ३२।

दिगम्बर मुद्रा मंडन—लेखक पण्डित शिवचन्द्र, प्र० स्वयं देहली, भा० हि०; पृ० १५, व० १८९३; आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दाम्पत्य सुखोपाय (भाग १ व २)—लेखक पण्डित पन्नालाल जैन, प्र० देश हितैषी आफिस बम्बई।

दास पुष्पांजलि—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० ६४, व० १९२७, आ० द्वितीय।

दीपावली महोत्सव—लेखक पण्डित कमल कुमार शास्त्री, प्रकाशक राजकुमार प्रभाचन्द ललितपुर, भा; हि०, पृ०, ५८, व० १९३६ आ० प्रथम।

दीपावली महोत्सव—प्र० प्रज्ञा पुस्तकमाला बरायठा (सागर) भा० हि०, पृ० १०४।

दुखित पुकार—लेखक प्र० फूलचन्द जैन आगरा, भाषा हिन्दी।

दुर्गति दुःखदीपिका (पद्य)—लेखक यति नयनसुखदास, संपादक ब्र० प्रेमसागर, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५६ व० १९४० आ० प्रथय।

देवगढ़ काव्य—लेखक कल्याण कुमार शशि, प्रकाशक नाथूराम सिंघई ललितपुर, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३०, व० १९३९; आ० प्रथम।

देवगढ़ के जैन मंदिर—ले० विशंभरदास गार्गीय, भाषा हिन्दी; पृष्ठ २८ व० १९२१।

देवचन्द्र चौवीसी—लेखक देवचन्द्र, भाषा हिंदी, पृ० ६४, (पदसंग्रह)।

देव दर्शन—संपादक दरयावसिंह सोंधिया व शाह सन्तोषचंद माणिकचंद, प्रकाशक बुद्धूलाल श्रावक देवरी, भाषा संस्कृत हिन्दी, पृष्ठ १६, व० १९१६ आ० प्रथम।

देव परीक्षा—लेखक चांदनराम जैनी, भा० हि० पृ० ४३, व १९१४।

देव रचना—लखक लाला हरजसराय, प्रकाशक प्यारेलाल, भा. हि.।

देव शास्त्र गुरू पूजा—संपादक अनुवादक बाबू सूरजभान वकील, प्र० स्वयं देवबंद, भाषा प्रा० संस्कृत हिन्दी, पृष्ठ २५, व० १९०९, आ० प्रथम।

देवेन्द्र चरित्र—लेखक प्र० बाबू अजित प्रसाद लखनऊ, भाषा हिन्दी, पृ. १०२, व. १९३२।

देवेन्द्र मिलाप—लेखक छेदालाल, भा. हि., पृ. ३६; व १९२८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिगम्बर जैन ग्रंथकर्त्ता और उनके ग्रंथ—लेखक पण्डित नाथूराम प्रेमी, प्रकाशक जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई. भा० हि०; पृ० ५६; व० १९११, आ० प्रथम।

दिगम्बर जैन भाषा ग्रन्थ नामावली—संग्रह बाबू ज्ञानचंद जैनी, प्रकाशक दिगम्बर जैन धर्म पुस्तकालय लाहौर भाषा हिन्दी, पृष्ठ २८, व० १९०१।

दिगम्बर जैन मुनि पूजा व भजनावली—संपादक पण्डित जिनेश्वरदास प्रकाशक चिरंजीलाल जैन अलवर, भा० हि०; पृष्ठ १६; व० १९३२, आ० प्रथम।

दिगम्बर जैनों में जागृति के प्रश्न व शास्त्रार्थ की अपील—लेखक उजागर मल जैन, प्रकाशक जैन शिक्षा प्रचारक समिति जयपुर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १४।

दिगम्बरत्व और दिगम्बर मुनि—लेखक बाबू कामताप्रसाद जैन, प्र० चम्पावती जैन पुस्तकमाला अम्बाला छावनी, भा०हि०; पृ० ३२०; व० १९३२, आ० प्रथम।

दिगम्बर जैन सिद्धांत दर्पण (अंश १, २)—लेखक पण्डित मक्खनलाल शास्त्री, प्रकाशक जुहारूमल मूलचन्द, भा० हि०, पृ० १४९, व० १९४४, (प्रो० हीरालाल के मन्तव्यों के उत्तर में)।

दिगम्बर जैन सिद्धांत दर्पण (अंश ३)—संपादक प्र० पण्डित रामप्रसाद शास्त्री बम्बई, वर्ष १९४६।

दिगम्बर जैन सिद्धाँत दर्पण (अंश ४)— " " " शास्त्री बम्बई, व० १९४७।

दिगम्बर जैन मूर्ति पूजा पर ५१ प्रश्न—लेखक प्र० चम्पालाल जैन सोहागपुर, भा० हि०, पृ० १६; व० १९३९।

देहली दिग्दर्शन—ले० बा० अजितप्रसाद एडवोकेट; प्र० स्वयं अजिताश्रम लखनऊ भा० हि०, पृ० २०; व० १९२३।

देहली शास्त्रार्थ—प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ६८,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व० १६१७, आ० प्रथम।

देहली की जैन संस्थाएँ—ले० ला० पन्नालाल जैन अग्रवाल, भा० हि०, व० १९४६।

दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां—ले० डा० जगदीशचंद्र, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ बनारस, भा० हि०, व० १९४७।

द्रोण नैना और मुक्तागिरि सिद्ध क्षेत्र यात्रा विवरण—ले० द्वारका प्रसाद, प्र० महावीर दिग० जैन मन्दिर हाथरस, भा० हि०, पृ० ४, व० १९ ७, आ० प्रथम।

दौलत जैनपदसंग्रह—ले० कवि दौलतराम जी; प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालयक कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८०।

दौलत विलास (दौलत कवितावली) ले० कवि दौलतराम जी, संपा० पं० पन्नालाल वाकलीवाल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ८०, व० १९०४, आ० प्रथम।

धनञ्जय नाम माला—ले० कविवर धनञ्जय, संपा० मोहनलाल जैन का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन वैद्य लुहरी (झाँसी) भा० सं०, पृ० ६६, व० १९४०, आ० द्वितीय।

धन्य कुमार चरित्र (पद्य)—ले० पं० खुशालचन्द, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १०२; व० १९३८, आ० प्रथम।

धन्य कुमार चरित्र—ले० पं० खुशालचन्द, प्र० श्री वीर जैन साहित्य कार्यालय हिसार; भाषा हिन्दी; पृष्ठ ६३; व० १९१९, आ० प्रथम।

धन्य कुमार चरित्र—ले० अज्ञात, अनु० पं० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैनभारतीभवन काशी; भाषा हिन्दी पृष्ठ १०३; वर्ष १९१६ आ० प्रथम।

धम्मरसायणम्—लेखक पद्मनन्दि; भाषा अप० सं०, पृष्ठ ३५ (सिद्धान्त सारादि संग्रह में प्र०)।

धर्म और शील—लेखक मुन्शीलाल एम. ए. प्रकाशक स्वयं लाहौर भाषा हिन्दी; पृष्ठ ११२; वर्ष १९१२, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म का आदि प्रवर्तक—लेखक स्वामी कर्मानन्द; प्रकाशक जैन संघ अम्बाला; भाषा हिन्दी, पृष्ठ २६२; वर्ष १६४६ ।

धर्मचर्चा संग्रह—संग्र० शाह धर्मचन्द हरजीवन दास; प्र० मूलचन्द किसनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० ६६, व० १६१८, आ० प्रथम ।

धर्म चर्चा—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० कुलवन्तराय जैन, भा० हि० ।

धर्म परीक्षा—ले० अमित गति आचार्य, अनु० पन्नालाल बाकलीवाल; प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि० सं०, पृ० २३०, व० १६०८, आ० प्रथम; पृ० २५२, व० १६२२, आ० द्वितीय ।

धर्म परीक्षा—ले० अमितगति आचार्य, अनु० पन्नालालबाकलीवाल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा०, हि० सं० पृ० २२०, व० १६०८, आ० प्रथम ।

धर्म प्रचार—ले० बा० कुलवन्तराय, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० १४, व० १६२७ ।

धर्म प्रबोधिनी—प्र० ला० शंकरलाल जैनी रहाना (सहारनपुर), भा० हि०, पृ० १८, व० १८६८, आ० प्रथम०, पृ० २०, आ० द्वितीय, पृ० ५२, व० १८७२ ।

धर्म प्रभावना—ले० कुलवन्तराय जैन, प्र०-स्वयं होशंगाबाद, भा० हि०, पृ० १३, व० १६२७, आ० प्रथम ।

धर्म प्रश्नोत्तर—ले० सकलकीर्त्ति आचार्य, अनु० लालाराम, प्र० स्याद्वाद रत्नाकरकार्यालय काशी, भा० सं० हि०, पृ० २६५, व० १६१२, आ० प्रथम ।

धर्म प्रश्नोत्तर—ले० सकलकीर्त्ति आचार्य, अनु० लालाराम, प्र० खुमानलाल जैन केवलारी, भा० सं०, हि० पृ० ३००, व० १६३८, आ० दूसरी ।

धर्मपाल नाटक—ले० पं० अर्जुनलाल सेठी, भा० हि० ।

धर्मपाल नाटक के पद्य—ले० अर्जुनलाल सेठी, भा० हि०, पृ० १४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्ममीमांसा (प्रथम भाग)—ले० पं० दरबारीलाल सत्य भक्त, प्र० सत्य-समाज ग्रंथ माला कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ८७, व० १९३५।

धर्मरत्नोद्योत (पद्य)—ले० बा० जगमोहनदास, संपा० व० प्र० पं० पन्नालाल बाकलीवाल बम्बई, भा० हि०, पृ० १८२, व० १९१२, आ० प्रथम।

धर्मरहस्य—ले० चम्पतराय जैन बैरिस्टर, प्र० स्वयं बम्बई, भा० हि०, पृ० ११२, व० १९४०, आ० प्रथम।

धर्मविलास—ले० द्यानतराय जी, प्र० जैनग्रन्थ रत्नाकरकार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २६३, व० १९१४, आ० प्रथम।

धर्मवीर सुदर्शन (काव्य)—लेखक अमरचन्द मुनि, भा० हि०, पृ० ११०, व० १९३८।

धर्म शर्माभ्युदय—ले० महाकवि हरिश्चन्द्र, संपा० पं० काशीनाथशर्मा, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० सं०, पृ० १९१, व० १८९९।

धर्मशिक्षावली (प्रथम भाग)—ले० पं० उग्रसेन एम० ए०; प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन पब्लिशिंग हाउस देहली, भा० हि०, पृ० ३६, व० १९४३, आ० छठी।

धर्म शिक्षावली (दूसरा भाग)—ले० पं० उग्रसेन एम० ए०, प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन पब्लिशिंग हाउस देहली, भा० हि०, पृ० ७२, व० १९४३, आ० छठी।

धर्म शिक्षावली (तीसरा भाग)—ले० पं० उग्रसेन एम० ए०, प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन पब्लिशिंग हाउस देहली; भा० हि०, पृ० ६५, व० १९४४; आ० छठी।

धर्मशिक्षावली (चतुर्थ भाग)—ले० पं० उग्रसेन एम० ए०, प्र० वीरकार्यालय मल्हीपुर, भा० हि०, पृ० १७२, व० १९३४, आ० प्रथम।

धर्म संग्रह श्रावकाचार—ले० पं० मेधावी, अनु० पं० उदयलाल काशलीवाल, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० सं० हि०, पृ० ३३५, व० १९१०, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म सिद्धांत रत्न माला (प्रथम रत्न)—ले० वा० सूरजभान वकील, प्र० वा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा० हि०, पृ० ३३, व० १९२६, आ० प्रथम।

धर्म सिद्धांत रत्न माला (दूसरा रत्न)—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० वा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा०, हि०, पृ० २३, व० १९२६; आ० प्रथम।

धर्म सिद्धांत रत्न माला (तीसरा रत्न)—लेखक वा० सूरजभान वकील, प्र० वा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा०, पृ० २०; व० १९२६; आ० प्रथम।

धर्म सिद्धान्त रत्न माला (चौथा रत्न)—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० बा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा० हि०, व० १९२६; आ० प्रथम।

धर्म सिद्धान्त रत्न माला (पांचवा रत्न)–'धर्मचला' लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० वा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा०, हि०, पृ० ८, व० १९२७।

धर्मामृत रसायन—लेखक कुँवर दिग्विजयसिंह, प्र० जैनतत्वप्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९१२, आ० द्वितीय।

धर्मों में भिन्नता–लेखक पं० दरबारीलाल सा० र०; प्र० आत्म जागृति कार्यालय ब्यावर, भा० हि०, पृ० १८, व० १९३२।

धूर्ताख्यान–लेखक हरिभद्र सूरि, अनु० संपा० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० ४८, व० १९१२, आ० प्रथम।

नकली और असली धर्मात्मा—लेखक वा० सूरजभान वकील, प्र० चन्द्रसेन जैन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० १९९, व० १९१९; आ० प्रथम।

नक्शा गुण स्थान—संपा० पं० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन आरा, भा० हि०, पृ० १, व० १९१९, आ० प्रथम।

नन्दीश्वर भक्ति—लेखक पूज्यपादाचार्य, टी० लालाराम, भा० सं० हि०, (दशभक्त्यादि संग्रह में प्र०)।

नन्दीश्वर भक्ति—लेखक श्रुतधराचार्य, भा० स०, पृ० ४२, व० १९९४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नन्दीश्वर व्रत उद्यापन—प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० हिं०, पृ० ३३, व० १६३१, आ० प्रथम।

नयचक्रादि संग्रह (दो ग्रन्थ)—लेखक माइल्ल धवल व देवसेनाचार्य, संपा० पं० वंशीधर शास्त्री, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० १६४, व० १६२०; आ० प्रथम।

नयविवरणम्—लेखक विद्यानन्द स्वामी, भा० सं०, पृ० १०, व० १६०५।

न्याय कुमुदचन्द्र (प्रथम खंड)—लेखक प्रभाचन्द्राचार्य; संपा० पं० महेन्द्रकुमार न्या० आ०, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० ४०२, व० १६३८, आ० प्रथम।

न्याय कुमुदचन्द्र (द्वितीय खंड)—लेखक, प्रभाचन्द्राचार्य, संपा०, पं० महेन्द्रकुमार न्या० आ०, प्र० मणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रंथमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० १०४१, व० १६४१, आ० प्रथम।

न्याय विनिश्चय विवरणम् (प्रथम भाग)—श्री भट्टाकलंक देव विरचित, टीका वादिराजसूरि, सम्पादक प्रो० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ काशी, व० १६४६, मूल्य १५, पृ० ६११।

न्याय दीपिका—ले० धर्मभूषण भट्टारक, अनु० टी० पं० खूबचन्द्र, संपा० पं० वंशीधर, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हिं०, पृ० १३४, व० १६१३ आ० प्रथम।

न्याय दीपिका—ले० धर्मभूषण भट्टारक, प्र० कलप्पाभरमप्पानिटवे कोल्हापुर, भा० सं०; पृ० ८२, व० १८६६, आ० प्रथम।

न्याय दीपिका—ले० धर्मभूषण भट्टारक, अनु० संपादक पं० दरबारीलाल कोठिया, न्यायाचार्य प्र० वीर सेवा मंदिर सरसावा, भा० सं० हिं०, पृ० ३५०, व० १६४५, आ० प्रथम।

न्याय दीपिका—ले० धर्मभूषण भट्टारक, प्र० जैनेन्द्रमुद्रणालय बम्बई, भा० सं०, पृ० ७६, व० १८६६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्याय प्रदीप—ले० पं० दरबारी लाल स०भ०, प्र० साहित्यरत्न कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १३६; व० १९२६; आ० प्रथम।

न्याय बोधक—ले० पं० अजितकुमार शास्त्री, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०; पृ० १६; आ० प्रथम।

न्याय विनिश्चय—ले० अकलङ्क देव, भा० सं०; (अकलङ्क ग्रन्थत्रयम्-में प्र०)।

नरपशु शास्त्रार्थ—ले० पं० सिद्धसेन सा० र०, प्र० सेठ कोटडिया सोमचन्द उग्रचन्द लाकरोडा (गुजरात), भा० हि०; पृ० २६, व० १९३०, आ० प्रथम।

नरमेध यज्ञ मीमाँसा (समालोचना)—ले० पं० हंसराज शर्मा जैन, भा० हि०; पृ० २०, व० १९१२।

नरेश धर्म दर्पण—ले० आचार्य कुंथसागर, प्र० कुंथसागर ग्रन्थमाला शोलापुर, भा० हि० , पृ० २८, व० १९४० आ० द्वितीय।

नवगृह विधान—ले० मनसुख सागर, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३८, व० १९३८, आ० प्रथम।

नव रत्न—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० ६४, व० १९३०, आ० प्रथम।

नवीन जिनवाणी संग्रह—संपा० पं० मंगलसैन, प्र० श्री वीरपुस्तकालय मुजफ्फरनगर, भा० हि० सं०; पृ० ५१६; व० १९४२, आ० द्वितीय।

नवीन तीर्थ यात्रा—ले० सूरजभान जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ११२, वर्ष १९३६, आ० प्रथम।

नागकुमार चरित्र—ले० महाकवि पुष्पदन्त, संपा० प्रो० हीरालाल जैन, प्र० वलात्कारगण जैन पब्लिकेशन सोसाइटी कारंजा, भा० अप०, पृ० २०६, व० १९३३, आ० प्रथम।

नाग कुमार चरित्र—ले० मल्लिषेण सूरि, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० सं० हि०, पृ० १९१, व० १९१३, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाटक समयसार—ले० कविवर बनारसीदास, टी० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ५६४, व० १६२६; आ० प्रथम।

नाटक समयसार कलशा—ले० अमृतचन्द सूरि, भा० सं०, पृ० ३५; व० १६०५।

नाम माला—ले० धनञ्जय, अनु० पं० घनश्याम दास, प्र० वंशीधर ललितपुर, भा० सं० हि०, पृ० १००; व० १६१६, आ० प्रथम।

नाम माला—ले० धनञ्जय; अनु० पं० घनश्यामदास, प्र० पं० गोरीलाल जैन देहली, भा० सं०, पृ० ३२, व० १६१६ आ० प्रथम।

नारी धर्म प्रकाश—ले० पन्नालाल जैन, प्र० देश हितैषी आफिस बंबई, भा० हि०।

नारी शिक्षादर्श—ले० पं० उग्रसेन एम० ए०; प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १८०, व० १६३४, आ० प्रथम।

निजात्म शुद्धि भावना—ले० आचार्य कुन्थसागर, प्र० शिष्यमंडल बोरसद, भा० हि०, पृ० ३४, व० १६४०, आ० प्रथम।

निजात्म शुद्धि भावना और मोक्ष मार्ग प्रदीप—ले० आ० कुंथ सागर प्र० साध्वी नानी ह्वेन सितवाड़ा; भा० हि०, पृ० १२४, व० १६३८।

निजात्माष्टकम्—ले० योगीन्द्र देव, भा० सं०, (सिद्धान्त सारादि संग्रह में प्र०)।

नित्य नियम देव पूजा व शीतलारिष्ट निवारक पूजा—ले० पं० फूलचन्द, प्र० स्वयं फीरोजाबाद, भा० हि०, पृ० ३४, व० १६३५; आ० प्रथम।

नित्य नियम पूजा और भाषा पूजा संग्रह—प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०; पृ० ८६, व० १६३२, आ० नवम।

नित्य नियम पूजा प्राकृत—टी० अनु० सदासुखजी व बा० सूरजभान वकील, प्र० सूरजभान वकील देवबंद, भाषा प्रा० हिन्दी, पृष्ठ ३८, व० १६१६, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नित्य नियम पूजा सार्थ —संपा० ला० लक्खीराम जैन, प्र० स्वयं, टीकरी, भाषा सं० हिन्दी; पृ० ६४, व० १९४१; आ० प्रथम ।

नित्य नियम पूजा सार्थ —टी० अनु० पं० अजित कुमार शास्त्री, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता; भाषा सं० हि०, पृ० १२८, व० १९२३, आ० प्रथम ।

नित्य नियम व हस्तिनापुर क्षेत्र पूजा भाषा —संग्र० मंगलसैन जैन, प्र० दि० जन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० ६६, व० १९३६, आ० प्रथम ।

नित्य नियम संग्रह—प्र० केशरीमल मोतीलाल जावरा; भा० संस्कृत हि०, पृ०२६५ व० १९४०, आ० द्वितीय ।

नित्य नेम पूजा भाषा—प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू कटनी, भा० हि०, पृ० २३, व० १९०६ ।

नित्य प्रार्थना—ले० ज्योति प्रसाद जैन; प्र० स्वयं; भा० हि०, पृ० १६, व० १९३२ ।

नित्य पाठ पूजा गुटका—प्र० धर्मचन्द सराबगी कलकत्ता, भा० हि० सं० पृ० ४६४, व० १९४१, आ० द्वितीय ।

नित्य पाठावलि—ले० अमितगति, अनु० तिलक विजय, भा० सं० हि०, पृ० ३०, व० १९२५ ।

नित्य पूजा विधान संस्कृत—प्र० जैन सिद्धान्त प्रचारक मण्डली देवबंद, भा० सं०, पृ० ४९, व० १९०९, आ० प्रथम ।

नित्य पूजा संस्कृत तथा भाषा—संपा० बद्रीप्रसाद जैन, प्र० स्वयं काशी, भा० सं० हि०, पृ० ३४, व० १९०६, आ० प्रथम ।

निबन्ध दर्पण—ले० ब्र० चन्दाबाई, प्र० देवेन्द्र किशोर जैन आरा, भा० हि०, पृ० १८०, व १८४२, आ० प्रथम ।

निबन्ध माला (जैन धर्म परिचय)—ले० सुमेरचन्द जैन प्रभाकर, प्र० सरकार आदर्श दिल्ली, भा० हि०, पृ० १४४, व० १९४६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निबन्ध रत्नमाला—ले० बा० चन्दा बाई प्र० कुमार देवेन्द्रप्रशाद आरा, भा० हि०, पृ० १२०, व० १६२०, आ० प्रथम ।

निमित्त शास्त्रम्—ले० महर्षि ऋषिपुत्र, अनु० पं० लालाराम; संपा० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री प्र० संपा० स्वयं शोलापुर, भा० सं० हि०, पृ० ४१ व० १६४१ ।

नियम सार—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, सं० टी० पद्मप्रभ मलाधारीदेव; हि० अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० २२३, व० १६१६, आ० प्रथम ।

निर्ग्रन्थ मुनि शान्तिसागर जी का जीवन चरित्र—ले० ब्र. भगवान सागर, प्र० ब्र० आत्मानन्द गिरीडीह (हजारी बाग), भा० हि०, पृ० ६३, व० १६२७, आ० प्रथम ।

निर्वाण कांड—प्र० ज्ञान चन्द जैन लाहौर, भा० प्रा०, पृ० ८ ।

निर्वाण कांड (प्राकृत व भाषा)—प्र० बा० सूरजभान वकील, देवबंद, भा० प्रा० हि० व० १८६८ ।

निर्वाण भक्ति—ले० पूज्यपादाचार्य, टी० लालाराम, भा० सं० हि० (दश भक्तयादि संग्रह में प्र०) ।

निर्माल्य द्रव्य चर्चा—संपा० हीराचन्द नेमचन्द दोशी, प्र० स्वयं शोलापुर भा० हि०; पृ० ६८, व० १६२२ ।

निशि भोजन कथा—ले० पंडित भारामल्ल जैन और कवि भूधरदास, प्र० जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २८, व० १६११, आ० प्रथम ।

निशि भोजन कथा (पद्य)—ले० पं० भारामल्ल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हि०, पृ० २४, आ० प्रथम ।

निशि भोजन भुंजन कथा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द; भा० हि०, व० १८६८ ।

नीति वाक्य माला—अनु० पं० नन्दनलाल, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० २०५, व० १६२४, आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीति वाक्यामृत—ले० सोमदेवसूरि, प्र० गोपाल नारायण कम्पनी बम्बई, भा० सं०, पृ० १३०, व० १८६१, आ० प्रथम।

नीति वाक्यामृतम्—ले० सोमदेव सूरि, संपा० पं० पन्नालाल सोनी, प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रंथमाला बम्बई, भाषा सं०, पृ० ४६४, व० १६२२, आ० प्रथम।

नीति वाक्यामृतम् (परिशिष्ट)—ले० सोमदेव सूरि, प्र० माणिकचन्द्र जैन ग्रंथमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० ८०, व० १६२८, आ० प्रथम।

नीति सार—ले० इन्द्रनन्दि, भा० सं०, (तत्त्वानुशासनादि संग्रह में प्र०)।

नीतिसार समुच्चय—ले० इन्द्रनन्दि, संपा० पं० गौरीलाल, प्र० सेठ लालचन्द देहली, भा० सं०, पृ० ७६।

नूतन चरित्र—ले० बा० रतनचन्द जैन, प्र० हिन्दी ग्रंथरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

नूतन बोधमाला—ले० संपा० पं० केन्द्रकुमार जैन, प्र० बापूदास नारायण साधारण गाँव, भाषा हिन्दी, पृ० ५०, व० १६३२।

नेमनाथ का बारह मासा—ले० कवि विनोदी लाल, प्र० बा० सूरजभान वकील, भाषा हिन्दी, वर्ष १८६८।

नेमनाथ पदरौत गिरनार—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भाषा हिन्दी।

नेमि चरित्र—ले० विक्रम कवि; अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैन ग्रंथरत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० सं० हि०, पृ० ५६, व० १६१४, आ० प्रथम।

नेमि दूत काव्य—ले० विक्रम कवि; भा० सं०।

नेमिनाथ स्तोत्र—भा० सं०, (सिद्धान्त सारादि संग्रह में प्र०)।

नेमि निर्वाण (काव्य)—ले० महाकवि वाग्भट्ट; संपा० पं० शिवदत्त व काशीनाथ पांडुरंग, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० सं०, पृ० ८५, व० १८६६।

नेमि पुराण—ले० ब्र० नेमिदत्त; अनु० उदयलाल काशलीवाल; प्र० जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० सं० हि०, पृ० ३७६, आ० प्रथम।

नेमिश्वर विवाह (दो)—प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, भाषा हिन्दी, पृ० २३, व० १९०१, आ० प्रथम।

नौकारमन्त्र (बेलबूटेदार)—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, भा० प्रा०, व० १८९८।

पउमचरिअम—ले० विमल सूरि; संपा० वी. एम. शाह अहमदाबाद, भा० प्रा० पृ० १४८, (प्रथम ४ अध्याय)।

पखवाड़ा—ले पं० द्यानतराय, टी० पं० मंगलसेन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर; भाषा हिन्दी, पृ० २०, व० १९३४ आ० प्रथम।

पतन से उत्थान—ले० पं० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० सेठ मोहरीलाल चांदमल अहमदाबाद, भाषा हिन्दी, पृ० १२९, व० १९३६, आ० प्रथम।

पतित पावन महावीर—ले० प्र० कौशल प्रसाद, भा० हि०, व० १९४१।

पतितोद्धारक जैन धर्म—ले० बा० कामता प्रशाद; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय, सूरत भाषा हि० पृ० २०४, व० १९३६, आ० प्रथम।

पत्र परीक्षा—ले० विद्यानन्द स्वामी; संपा० पं० गजाधर लाल; भा० सं०, पृ० १३, व० १९१३।

पद्म चरित् (प्रथम खंड)—ले० रविषेणाचार्य, संपा० पं० दरबारीलाल, प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रन्थ माला बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ५११, व० १९२८, आ० प्रथम।

पद्म चरित् (द्वितीय खंड)—ले० रविषेणाचार्य, संपा० पं० दरबारीलाल, प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई; भा० सं० हि०; पृ० ४३९; व० १९२८ आ० प्रथम।

पद्म चरित् (तृतीय खंड)—ले० रविषेणाचार्य, संपा० पं० दरबारी लाल, प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई; भा० सं० हि०; पृ० ४४९; व० १९२८, आ० प्रथम।

पद्म चन्द्र कोष—ले० पं० गणेशदत्त, प्र० मेहरचन्द लक्ष्मणदास लाहौर, भा० सं०, पृ० ४५२, व० १८९८, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्मनन्दि पंच विंशतिका—ले० आचार्य पद्मनन्दि, अनु० पं० गजाधरलाल, प्र० जैन भारती भवन बनारस, भा० सं० हि०, पृ० ५१३; व० १९१४, आ० प्रथम।

पद्म नन्दि श्रावकाचार—ले० पद्मनन्दि आचार्य, भा० सं० हि०; पृ० ३०; व० १९३२।

पद्म पुराण—ले० रविषेणाचार्य, टी० अनु० पं० दौलतराम, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०; पृ० ८६०, व० १९२९; आ० प्रथम।

पद्म पुराण—ले० रविषेणाचार्य, टी० अनु० पंडित दौलतराम, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६९९, व० १९२८, आ० तीसरी, पृष्ठ ८६५, व० १९२५, आ० द्वितीय।

पद्म पुराण—ले० रविषेणाचार्य, टी० अनु० पंडित दौलतराम, प्र० दिग० जैन ग्रन्थ प्रचारक कार्यालय देवबंद, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १०७६।

पद्म पुराण—ले० रविषेणाचार्य, टी० अनु० पंडित दौलतराम, प्र० बाबू ज्ञानचन्द जैनी लाहौर, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ११८७।

पद्म पुराण समीक्षा—ले० बाबू सूरजभान वकील, प्र० चन्द्रसेन जैनी वैद्य इटावा, भाषा हि०, पृष्ठ १३२, व० १९१९; आ० प्रथम।

पद्म पुष्पांजलि—प्र० पद्मपुरी तीर्थ कमिटी, भा० हि०; व० १९४७।

पद्मावती पूजन—प्र० नन्नूमल जैन देहली; भा० हि०, पृ० १६।

पद्मावती क्षेत्रपाल पूजा—प्र० वर्धमान जैन पुस्तकालय देहली, भा० हि०, पृ० १८।

पद्य संग्रह—लेखक यति नैनसुखदास, भा० हि; पृ० ६८।

पंच कल्याणक पाठ—लेखक पं० बख्तावर लाल, संपा० पं० बद्रीप्रसाद; प्र० जैन पुस्तकालय बनारस; भा० हि०, पृ० ४५, व० १९०९।

पंच कल्याणक पाठ—लेखक पं० कमलनयन, प्र० जैन भारती भवन फतेहगढ़, भा० हि०, पृ० ४५, व० १९२६, आ० दूसरी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंच कल्याणक समुच्चय—संग्र० क्षुल्लक धर्म सागर, प्र० केशरियाप्रसाद जैन शहाबाद, भा० हि०; पृ० १६; व० १६३२।

पंच कल्याण मंगल भाषा—लेखक पांडे रूपचन्द्र, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द भा० हि०, व० १८६८।

पंच गुरु भक्ति—लेखक पूज्यपाद; भा० सं०, (दशभक्त्यादि संग्रह में प्र०)

पंच जैन स्तोत्र संग्रह—भा० सं०; पृ० ४०।

पंच तन्त्र (भाषा टीका)—प्र० पन्नालाल जैन देश हितैषी आफिस बम्बई भा० सं० हि०।

पंच परमेष्टि के गुण—प्र० मगन बाई बम्बई, भा० हि०, पृ० २१, व० १६०६, आ० प्रथम।

पंच परमेष्टि पूजा—लेखक यशोनन्दि आचार्य, प्र० देवप्पा दुघनी आडमुट्टे कोल्हापुर, भा० सं०, पृ० ६५, व० १६१४।

पंच परमेष्टि पूजन विधान भाषा—लेखक पं० टेकचन्द, संपा० चन्द्रशेखर शास्त्री, प्र० जैन भारती भवन काशी, भा० हि०; पृ० ३४, व० १६२... आ० प्रथम।

पंच परमेष्टि बन्दना—लेखक पं० मंगतराय, प्र० जैनधर्म प्रचारक पुस्तकालय देववन्द, भा० हि०; पृ० ७, व० १६०६, आ० प्रथम।

पंचबाल ब्रह्मचारी तीर्थङ्करों की पूजा—लेखक भोलानाथ दरख्शां भा० हि०, पृ० १४, व० १६२६, प्रकाशक हीरालाल पन्नालाल जैन देहली।

पंच मेरु और नन्दीश्वर पूजन विधान—लेखक पं० टेकचन्द, संपा० चन्द्रशेखर शास्त्री, प्र० जैन भारती भवन बनारस, भा० हि०, पृ० ६२, व० १६२४, आ० प्रथम।

पंचरत्न—लेखक बा० कामताप्रसाद, प्र० मूलचंद किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० ६१, व० १६३३, आ० प्रथम।

पंचव्रत—लेखक भोलानाथ दरखशाँ, प्र० जैन मित्र मंडल देहली; भा० हि०; पृ० २२, व० १६३०, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचस्तोत्रम्—प्र० जैन सिद्धांत प्रचार मंडली देवबन्द, भा० सं०, पृ० –, व० १९०६, आ० प्रथम ।

पंचस्तोत्र संग्रह—अनु० पं० पन्नालाल सा० आ०, प्र० मूलचंद किशनदास कापड़िया सूरत, भा० सं० हि०, पृ० १४२, व० १९४०, आ० प्रथम ।

पंचसंग्रह—लेखक अमितगति आचार्य, संपा० पं० दरबारीलाल न्या० –, प्र० माणिकचंद दिग० जैन० ग्रंथमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० २४८, व० १९२७, आ० प्रथम ।

पंचसंग्रह—लेखक अमितगति आचार्य; टी० सं० पं० वंशीधर शास्त्री, प्र० बालचंद कस्तूरचंद गांधी धाराशिव, भा० सं० हि०, पृ० ६५६, व० १९३१, आ० प्रथम ।

पंचसुत्त—संपा० डा० ए० एन० उपाध्ये, भा० प्रा० ।

पंचाध्यायी—लेखक पंडित राजमल्ल, प्रा० गांधी नाथारंग आकलूज, भा० सं०, पृ० २००, व० १९०६ ।

पंचाध्यायी (सटीक)—लेखक पांडेरायमल्ल, टी. पं. देवकीनन्दन, प्र० महावीर ब्रह्मचर्याश्रम कारंजा, भा० सं० हिन्दी, पृ० ४७६, व० १९३२, आ० प्रथम ।

पंचाध्यायी—लेखक पांडेराय मल्ल, टी० पं० मक्खनलाल, प्र० जैनग्रंथ-प्रकाश कार्यालय इंदौर, भा० सं० हि०, पृ० ३२६, व० १९१८, आ० प्रथम ।

पंचायती अत्याचार का नमूना—लेखक प्र० अज्ञात, भा० हिन्दी, पृ० १८ ।

पंचास्तिकाय—लेखक कुंदकुन्दाचार्य, सं. टी. अमृतचन्द्र, और जयसेन, हिन्दी टी० पांडे हेमराज, हि० अनु० पन्नालाल, संपा० पं० मनोहरलाल बाकलीवाल प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० प्रा० सं० हिन्दी, पृ० २५५, व० १९१४, आ० द्वितीय ।

पंचास्तिकाय समयसार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, सं० टी० अमृतचन्द्र, हिन्दी, अनु० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० प्रा० सं० हिन्दी, पृ० १७०, व० १९०४; आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचास्तिकाय टीका (प्रथम भाग)—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० प्रा० हिन्दी, पृ० ४२४, व० १९२७, आ० प्रथम ।

पंचास्तिकाय टीका (दूसरा भाग)—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० प्रा० हिन्दी, पृ० २४१, व० १९२८, आ० प्रथम ।

पंचास्तिकाय (हिन्दी पद्य)—लेखक पांडे हीरानन्द, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० २००, व० १९१५, आ० प्रथम।

पंचेन्द्री संवाद—लेखक कविवर भगवतीदास, प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृ० १६, व० १९१२, आ० प्रथम ।

पट्टावली समुच्चय—संपा० दर्शन विजय जी, भा० हिन्दी, पृ० २१६, व० १९३२ ।

परमात्म प्रकाश—लेखक योगीन्द्र देव, सं० टी० ब्रह्मदेव, हि० टी० पं० दौलतराम, संपादक पं० मनोहरलाल, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० अप० सं० हि०, पृ० ३५५, व० १९१५; आ० द्वितीय ।

परमात्म प्रकाश—लेखक योगीन्द्रदेव, हि० अनु० बा० सूरजभान वकील, प्र० अनु० स्वयं देववन्द, भा० अप० हि०, पृ० ५८, व० १९०९, आ० प्रथम।

परमात्म प्रकाश योगसारश्च—लेखक योगीन्द्रदेव, सं० टी० ब्रह्मदेव, हि० टी० पं० दौलतराम, संपा० डा० ए. एन. उपाध्ये, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० अप० सं० हिन्दी, पृ० ३९४, व० १९३७, आ० द्वितीय।

परमाध्यात्म तरंगिणी—लेखक अमृतचन्द्राचार्य, सं० टी० भट्टारक शुभचंद्र, हि० टी० पं० जयचन्द्र, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हिन्दी, पृ० २३६, आ० प्रथम ।

परमार्थ जकड़ी—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हिन्दी, १८९८ ।

परमार्थ जकड़ी संग्रह—प्र० जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालय बम्बई, भा० हि० पृ० २६, व० १९११, आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमार्थिक पदार्थ विज्ञान—लेखक पं० दरयावसिंह सोधिया, प्र० परवार बन्धु कार्यालय जबलपुर, भा० हि०, पृ० ३३, आ० प्रथम।

परमेश्वर की सत्ता—लेखक अज्ञात, भा० हि०।

परमेष्ठी पद्यावली—लेखक पं० परमेष्ठीदास, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० ५२, व० १९३४, आ० प्रथम।

पर्यूषण पर्व—लेखक ज्योतिप्रसाद जैन, प्र० जैन सभा मेरठ, भा० हि०, पृ० १६, व० १९४०, आ० प्रथम।

पर्यूषणपर्व—लेखक सूरजमल जन, प्र० स्वयं संपा० जैनप्रभात इन्दौर, भा० हि०, पृ० ४८।

परिशिष्ट पर्व (प्रथम भाग)—लेखक हेमचन्द्राचार्य, संपा० मुनि तिलक विजय, भा० हि०, पृ० १८६, व० १९१५।

परिशिष्ट पर्व (द्वितीय भाग)—लेखक हेमचन्द्राचार्य, सं० मुनितिलक विजय, भा० हि०, पृ० १६६, व १९१६।

परीक्षा मुखम्—लेखक माणिक्यनन्दि, प्र० गांधी नाथारंग जी आकलूज, भा० सं०, पृ० १२८ व० १९०४।

परीक्षामुख—लेखक माणिक्यनन्दि, अनु० पं० गजाधरलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० ८०; व० १९१६, आ० प्रथम।

परीक्षामुख—लेखक माणिक्यनन्दि, अनु० पं० घनश्यामदास, प्र० स्वयं, भा० सं० हि०, पृ० ९४, व० १९०५, आ० प्रथम।

परीक्षा मुखमें प्रेमय रत्नमाला सहित—लेखक माणिक्यचन्द्राचार्य, अनन्तवीर्याचार्य, संपा० पं० फूलचन्द्र शास्त्री, प्र० बालचन्द्र शास्त्री, भा० सं०, पृ० २१०; व०; १९२८।

परीक्षामुख लघुवृत्ति—लेखक अनन्तवीर्य, भा० सं०, पृ० ८७, व० १९०९।

प्रतिक्रमण—भा० सं० हि०, (दशभक्त्यादि संग्रह में प्र०)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिमाचालीसी—प्र० बा० सूरजभान वकील देववन्द, भा० हि;० व० १८६८।

प्रतिमालेख संग्रह—संग० कामता प्रसाद जैन, प्र० जैन सिद्धांत भवन आरा, भा० सं० हि०, पृ० ३६, व० १६३६, आ० प्रथम।

प्रतिष्ठातिलक—लेखक नेमचन्द्राचार्य, भा० सं०, पृ० ८११; व० १६१४।

प्रतिष्ठा पाठ—लेखक जयसेनाचार्य; प्र० सेठ नेमचन्द हीराचन्ददोशी शोलापुर; भा० सं०; पृ० ३०८; व० १६२५, आ० प्रथम।

प्रतिष्ठासार संग्रह-सं० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० सं० हि०, पृ० २२३, व० १६२८; आ० प्रथम।

प्रतिष्ठासारोद्धार—लेखक पं० आशाधर, अनु० पं० मनोहरलाल शास्त्री; प्र० जैनग्रन्थउद्धारककार्यालय बम्बई; भा० सं० हि०; पृ० १४४, व० १६१८, आ० प्रथम।

प्रद्युम्न चरित्र—लेखक दयाचन्द्र गोयलीय, प्र० सद्बोध रत्नाकर कार्यालय सागर, भा० हिन्दी, पृ० ६०; व० १६१४; आ० प्रथम।

प्रद्युम्न चरित्र—लेखक सोमकीर्त्ति आचार्य; टी. अनु० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० | हि०, पृ० १६७, व० १६२२, आ० द्वितीय, पृ० ३४४, व० १६३६, आ० तृतीय।

प्रद्युम्न चरित्र—लेखक सोमकीर्त्ति आचार्य, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० सं० हिन्दी, पृ० २६४।

प्रद्युम्न चरित्र—लेखक सोमकीर्त्ति आचार्य, अनु० बुधमल पाटणी व नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हिन्दी, पृ० १६७, व० १६०८, आ० प्रथम।

प्रद्युम्न चरितम् काव्य—लेखक महासेनाचार्य, संपादक पं० मनोहरलाल शास्त्री, पं० रामप्रसाद शास्त्री, प्र० माणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रंथ माला बंबई, भा० सं०, पृ० २३६, व० १६१७, आ० प्रथम।

प्रबन्धावली—लेखक पूरणचन्द्र नाहर, भा० हि०, पृ० २०३, व० १६३७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रबोध पच्चीसी—लेखक प्रबोधकुमार जैन, प्र० बा० देवेन्द्र किशोर आरा, भा० हि०, पृ० ३६, व० १९३७, आ० प्रथम।

प्रबोधसार—लेखक भट्टारक यशः कीर्ति, अनु० पं० लालाराम, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० सं० हि०; पृ० २२८; व० १९२८, आ० प्रथम।

प्रभंजन चरित्र—ले० अज्ञात, अनु० पं० घनश्याम दास, प्र० जैन ग्रन्थ कार्यालय ललितपुर, भा० हि०; पृ० ४२; व० १९१६, आ० प्रथम।

प्रभावशाली जीवन—अनु० माई दयाल जैन, भा० हि०; पृ० १२०; व० १९३१।

प्रभु पूजा या बच्चों का खेल—ले० ताराचन्द शास्त्री, भा० हि०, पृ० १७।

प्रभु विलास—ले० अज्ञात, प्र० जैनग्रंथ प्रचारकपुस्तकालय देवबन्द, भा० हि०, पृ० ३०, व० १९११; आ० द्वितीय।

प्रमाण नयतत्त्वालोकालंकार—ले० वादिदेव सूरि; टी० रत्नप्रभाचार्य, भा० सं०, पृ० २०२, व० १९१०।

प्रमाण निर्णय—ले० वादिराज सूरि; संपा० पं० इन्द्रलालशास्त्री व पं० खूबचन्द शास्त्री; प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रंथमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० ८०, व० १९१७, आ० प्रथम।

प्रमाण परीक्षा—ले० विद्यानन्द स्वामी, भा० सं०, पृ० ३०, व० १९१४।

प्रमाण संग्रह—ले० अकलंकदेव, भा० सं, (अकलंक ग्रन्थत्रयम् में प्र०)।

प्रमेय कमल मार्त्तण्ड—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, संपा० पं० वंशीधर शास्त्री, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई; भा० सं०; पृ० २११, व० १९१८; आ० प्रथम।

प्रमेय कमल मार्त्तण्ड (प्रथम भाग)—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, प्र० अज्ञात, भा० सं०।

प्रमेय कमल मार्त्तण्ड (द्वितीय भाग)—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, प्र० अज्ञात, भा० सं०।

प्रमेय रत्नमाला—ले० अनन्त वीर्याचार्य, प्र० जैन साहित्य प्रसारक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार्यालय बम्बई, भा० सं०, पृ० ८८, व० १९२७, आ० प्रथम ।

प्रमेय रत्नमाला—ले० अनन्तवीर्याचार्य, प्र० जैनसाहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० सं०; पृ० १२८ ।

प्रमेय रत्नमाला—ले० अनन्त वीर्याचार्य, टी० पं० जयचन्द्र छावड़ा, प्र० मुनि अनन्त कीर्ति ग्रन्थमाला बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० २२३, आ० प्रथम।

प्रवचन सार—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, सं० टी० अमृतचन्द्राचार्य, जयसेनाचार्य, हि० टी० पांडे हेमराज, संपा० डा० ए. एन. उपाध्ये, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० ५८५, व० १९३५, आ० द्वितीय।

प्रवचनसार परमागम—ले० कविवर वृन्दावन जी; संपा० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन हितैषी कार्यालय; भा० हि०, पृ० २३२, व० १९०८, आ० प्रथम।

प्रवचनसार टीका—(प्रथम खण्ड)—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, टी० अनु० ब्र० शीतल प्रसाद; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० प्रा० हि०, पृ० ३७३; व० १९२४, आ० प्रथम।

प्रवचनसार टीका (द्वितीय खण्ड)—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, टी० अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० प्रा० हि०, पृष्ठ ३९६ व० १९२५, आ० प्रथम।

प्रवचनसार टीका (तृतीय खण्ड)—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, टी० अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा प्रा० हिन्दी, पृष्ठ ३९३, व० १९२६; आ० प्रथम।

प्रश्न मालिका—ले० पं० शिवचन्द्र, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० १२; व० १८८६।

प्रश्नोत्तर दीपिका—ले० पं० शिवचन्द्र, प्र० स्वयं, भा० हि०; पृ० ३५ व० १८९१।

प्रश्नोत्तर माणिक्य माला—ले० पूज्यपाद; भा० सं०, पृ० १०७, व० १९०८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्नोत्तर रत्नमालिका—ले० अमोघ वर्ष, अनु० जिनवरदास, प्र० जैन-ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बंबई; भा० सं० हि०, पृ० २४, व० १६०८, आ० प्रथम।

प्रश्नोत्तर श्रावकाचार—ले० सकल कीर्ति भट्टारक, टी० अनु० पं० लाला-राम, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० सं० हि०, पृ० ३०६, व० १६२७ आ० प्रथम।

प्रश्नोत्तर सर्वार्थ सिद्धि—संपा० बा० नेमीदास एडवोकेट, प्र० ला० मंगीलाल सहारनपुर, भा० हि०; पृ० ३१४, आ० प्रथम।

प्रशस्ति संग्रह—संपा० के० भुजवलि शास्त्री; प्र० जैन सिद्धान्त भवन आरा, भा० सं० हि०; पृ० २२०; व० १६४१, आ० प्रथम।

प्रस्तुत प्रश्न—ले० जैनेन्द्र कुमार; भा० हि०; पृ० २५८, व० १६३६।

प्राकृत दशलाक्षणिक धर्म—ले० पं० रइधु; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० प्रा० हि०, पृ० २७; व० १६०७, आ० प्रथम।

प्राकृत भाव संग्रह—ले० देवसेनाचार्य, भा० प्रा०, (भाव संग्रहादि में प्र.)

प्राकृत व्याकरण—लेखक त्रिविक्रम, भा०, प्रा०, पृ० १३६; व० १८९६।

प्राकृत षोडश कारण जयमाला—प्र० जैन साहित्य मंदिर सागर; भा० प्रा० हि०, पृष्ठ ११६, व० १६२६, आ० प्रथम।

प्राकृत सुभाषित संग्रह—अनु० संपा० प्रो० शाह सूरत, भाषा प्रा०।

प्राचीन कलिंग या खारवेल—ले० गंगाधर सामन्त, भा० हि०; पृ० १९८; व० १६२६।

प्राचीन जिनवाणी संग्रह—प्र० वर्धमान पुस्तकालय देहली; भाषा सं० हि०।

प्राचीन जैन इतिहास (प्रथम भाग)—ले० सूरजमल जैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०; पृ० १५०; व० १६१६; आ० प्रथम।

प्राचीन जैन इतिहास (द्वितीय भाग)—ले० सूरजमल जैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० हि०, पृ० १७२, व० १६२१, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राचीन जैन इतिहास (तृतीय भाग)—ले० सूरजमल जैन; प्रं० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १२६, व० १६३६, आ० प्रथम।

प्राचीन जैन पद शतक—ले० विभिन्न; प्र० दुलीचन्द्र परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४८।

प्राचीन जैन लेख संग्रह—ले० बा० कामता प्रसाद, भा० हि०, पृ० १०२, व० १६२६।

प्राचीन दिगम्बर अर्वाचीन श्वेताम्बर—ले० तात्या नेमिनाथ पांगल, पृ० ३६, व० १६११।

प्रायश्चित चूलिका—लेखक गुरुदास, टी. नन्दिगुरु, भा० स०, (प्रायश्चित संग्रह में प्र०)।

प्राणप्रिय काव्य—लेखक मुनि रत्नसिंह, अनु० संपा० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैनग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हिन्दी, पृ० २१, व० १६११, आ० प्रथम।

प्रातः स्मरण मंगल पाठ (पद्य)—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०, व० १८६८।

प्रायश्चित ग्रंथ–लेखक अकलंकदेव, भा० सं०, (प्रायश्चित संग्रह में प्र०)।

प्रायश्चित संग्रह (४ ग्रंथ)—लेखक विभिन्न आचार्य, संपा० पं० पन्नालाल सोनी, प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैनग्रन्थमाला बम्बई, भा० सं० प्रा०, पृ० २००, व० १६२१, आ० प्रथम।

प्रायश्चित समुच्चय (चूलिका सहित)—लेखक पं० गुरुदास, अनु० पं० पन्नालाल सोनी, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं०, पृ० २१६, व० १६२६, आ० प्रथम।

प्रार्थनास्तोत्र—लेखक कवि भूधरदास व पं० अर्जुनलाल सेठी, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १६३२।

प्रेमकली—संपा० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन, भा० हि०; पृ० १६०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रेमोपहार (कविता)—लेखक कन्हैयालाल जैन; भा० हि०, पृ० ३२ व० १९१८।

प्रेमोपहार के खिले खिलाये फूल—संपा० कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन; भा० हि०।

परीक्षापत्र—लेखक धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वयं आरा, भा० हि०, पृ० १४, व० १८८६।

पवन दूत काव्य—लेखक वादिचन्द्र सूरि, अनु० पं० उदयलाल, काशलीवाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ५२. व० १९१४, आ० प्रथम।

पशुबलि निषेध—लेखक धीरेन्द्र कुमार शास्त्री. भा० हि,० पृ० १८, व० १९३६।

पाइअलच्छी नाम माला—लेखक धनपाल; भा० प्रा०, पृ० १६४ व० १९१६।

प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ—सं० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल आदि; प्र० प्रेमी अभिनन्दन समिति, भा० हि०, पृ० ७५१, व० १९४६।

पाइय सद्दमहाण्णवो—संपा० पं० हरगोविंददास टी. शाह. कलकत्ता भा० प्रा०, व० १९२८, (४ भाग)।

पाठ्य पूजा संग्रह (प्रथम भाग)—प्र० विशम्भरदास जैन रोहतक; भा० हि० सं०, पृ० ४८; व० १९४०, आ० प्रथम।

पाठ्यय पूजा संग्रह (दूसरा भाग)—प्र० विशम्भरदास जैन रोहतक, भा० हि० सं०, पृ० ७८; व० १९४०; आ० प्रथम।

पांडव पुराण—लेखक शुभचन्द्र भट्टारक; अनु० पं० घनश्यामदास; प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० सं० हिन्दी; पृ० ४००, व १९१६, आ० प्रथम।

पांडव पुराण (सचित्र)—लेखक शुभचन्द्र भट्टारक, संपा० नन्दनलाल जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० ३५८; व० १९३९, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पांडव पुराण अथवा जैन महाभारत—लेखक शुभचन्द्र भट्टारक, संपा० पं० श्रीनिवास जैन, प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० सं० हि० पृ० ४२२, व० १९३६, आ० प्रथम।

पांडव पुराण भाषा (छन्द बद्ध)—लेखक पं० बुलाकीदास; भा० हि० पृ० ४०४; व० १९०८।

पात्र केशरी स्तोत्र—लेखक आचार्य पात्र केशरी; अनु० पं० लालाराम प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० ११, आ० प्रथम।

पात्र केसरि स्तोत्र सटीक—लेखक विद्यानंद स्वामी, भा० सं०, (तत्वानुशासनादि संग्रह में प्र०)।

पार्श्वनाथ चरितम् (काव्य)—ले० वादिराज सूरि, भा० सं०, पृ० ११६ व० १९१५।

पार्श्वनाथ चरित्र—लेखक वादिराज सूरी, सं० पं० मनोहरलाल, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रंथ माला बम्बई, भा० सं०, पृ० २१६, व० १९१६ आ० प्रथम।

पार्श्वनाथ चरित्र—लेखक वादिराज सूरी, अनु० पं० श्रीलाल का. ती, प्र० जयचन्द्र जैन कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० ४२५, व० १९२२, आ० प्रथम।

पार्श्व पुराण (पद्य)—लेखक कविवर भूधरदास जी, प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ८५, व० १९०७, आ० प्रथम,—पृ० १७६, व० १९१८, आ० द्वितीय।

पार्श्व पुराण—लेखक कविवर भूधरदास जी; प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ९१।

पार्श्व पुराण—लेखक कविवर भूधरदास जी; प्र० ला० जैनी लाल देवबंद भा० हि०; पृ० १२०।

पार्श्व पुराण—लेखक कविवर भूधरदास जी, संपा० मुन्शी अमनसिंह ० स्वयं संपा० देहली, भा० हि०, पृ० २६४, व० १८९८, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पार्श्वनाथ स्तुति (भाषा कल्याण मन्दिर)—लेखक आचार्य कुमुदचन्द्र, मू०, पद्य० अनु० पं० बनारसीदास जी, प्र० मुन्शी अमनसिंह देहली, भा० हि०, पृ० १५, व० १८९६, आ० प्रथम।

पार्श्वनाथ स्तोत्र (लक्ष्मी स्तोत्र)—ले० पद्मनन्दि मुनि, भा० सं०, पृ० ६, (सिद्धान्त सारादि संग्रह में प्र०)।

पार्श्वयज्ञ—लेखक पं० अर्जुनलाल सेठी, संपा० प्रकाशचन्द्र सेठी; प्र० ग्रन्थ भंडार बम्बई, भा० हि०, पृ० ५५; व० १९२३, आ० प्रथम।

पार्श्वाभ्युदयम (काव्य)—लेखक जिनसेनाचार्य; सं. टी. योगिराट्; प्र० सेठ नाथारंग जी गाँधी आकलूज, भा० सं०, पृ० २७१; व० १९०६, आ० प्रथम।

पावन प्रवाह—लेखक पं० चैनसुखदास; अनु० पं० मिलापचन्द्र; प्र० पं० श्रीप्रकाश जयपुर; भा० सं० हि०, पृ० ६६; व० १९४२; आ० प्रथम।

पाहुड दोहा—लेखक मुनि रामसिंह; संपा० प्रो० हीरालाल जैन; प्र० गोपाल अम्बादास चवेर कारंजा; भा० अप० हि०; पृ० १३६; व० १९३३; आ० प्रथम।

पिता के उपदेश—ले० दयाचन्द्र गोयलीय; भा० हि०; पृ० २२; व० १९३१।

पिंडशुद्धि अधिकार व मुनि आहार विधि—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०; पृ० १७; व० १९२९; आ० दूसरी।

पी. एल. जागरफ़ी (प्रथम भाग)— संग्रह० संपा० पं० प्यारेलाल जैन, प्र० स्वयं अलीगढ़, भा० हि०, पृ० ९६, व० १९२०, आ० प्रथम।

पी. एल. जागरफी (द्वितीय भाग)—सं० संग्र० पं० प्यारेलाल जैन, भा० हि०, पृ० ५६, व० १९२१; आ० प्रथम।

पी. एल. जागरफी (तृतीय भाग)—संपा० पं० प्यारेलाल जैन, प्र० स्वयं अलीगढ़, भा० हि०, पृ० २३६, आ० प्रथम।

पुण्यप्र भाव—लेखक अज्ञात, भा० हि०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुण्याश्रव कथा कोष—लेखक रामचन्द्र मुमुक्षु, अनु० संपा० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ३२६; व० १६१६, आ० द्वितीय।

पुण्याश्रव कथा कोष—ले० रामचन्द्र मुमुक्ष, अनु० संपा० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० श्रीमती प्रसन्न बाई बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० २३६, व० १६०७।

पुण्याश्रव कथा कोष (सचित्र)—ले० परमानंद विशारद, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३६६, वर्ष १६३७, आ० प्रथम।

पुनर्विवाह जैन शास्त्रोक्त नहीं है—ले० त्रिलोकचन्द दौलतराम, भा० हि०, पृ० ६।

पुरातन जैन वाक्य सूची—संक० संपा० पं० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मंदिर सरसावा, भा० प्रा० हि०।

पुराण और जैन धर्म—ले० हंसराज शर्मा, भा० हि०, पृ० १०६, वर्ष १६२६।

पुराण परीक्षा—ले० लालता प्रसाद जैन, प्र० स्वयं कायम गंज, भा० हि०, पृ० ५२, व० १६०७, आ० प्रथम।

पुरुदेव चम्पु—ले० महाकवि अर्हद्दास, सं० टी० व संपा० जिनदास शास्त्री, प्र० माणिक चन्द्र दिग० जैनग्रन्थ माला बम्बई, भाषा सं०, पृष्ठ२१२, व० १६२८, आ० प्रथम।

पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० परम श्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० सं० हि०, पृष्ठ ११५, व० १६०४, आ० प्रथम।

पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० बा० सूरजभान वकील, प्र० स्वय देवबंद, भा० सं० हि०, पृष्ठ ४२, व० १६०६, आ० प्रथम।

पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० पं० मक्खनलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० ४७६, व० १६२६, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० पं० उग्रसेन एम. ए.; प्र० जैन एसोसियेशन रोहतक, भा० सं० हि०, पृ० १६६; व० १९३३, आ० प्रथम ।

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, भा० सं०, पृ० १६, (मूल) ।

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० पं० टोडरमल्ल जी व पं० सत्यंधर जी, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० १२४, व० १९३०, आ० प्रथम ।

पुष्पमाला—ले० श्री मद्राजचन्द्र, अनु० जगदीशचन्द्र, भा० हि०, पृ० १०, व० १९३७ ।

पुष्पोपवन—अनु० पंडित मेहरचन्द जैन, भा० हि०, पृ० ३३१, व० १८८८, आ० प्रथम ।

पूजाचर्या—ले० पण्डित मक्खन लाल प्रचारक, प्र० स्वयं देहली, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३२, व० १९३१, आ० प्रथम ।

पूज्यपाद श्रावकाचार—ले० पूज्यपादाचार्य, सम्पादक पं० पन्नालाल बाकलीवाल; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय कलकत्ता, भा० सं०,पृ० ३६, व० १९३१; आ० प्रथम ।

पूर्ण दर्शन—ले० प्रेमी सहारनपुरी; प्र०प्रेम भवन सहारनपुर, भा० हि०; पृ० ३२ आ० प्रथम ।

पोथों की कहानियाँ—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि० ।

फीरोजाबाद शास्त्रार्थ—भा० हि०, पृ० ३४, व० १८८८ आ० प्रथम ।

बड़ी बहू बड़े भाग—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी ।

बज्रदन्त का बारह मासा—ले० पं० भूधरदास, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, भाषा हिन्दी, व० १८९८ ।

बड़े बाबा या भगवान महावीर—प्र० जैन सेवा दल दमोह, भाषा हिन्दी, पृ० ६, व १९४४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनारसी नाम माला— ले० पण्डित बनारसीदास जी, संपा० पं० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा, भा० हिन्दी; पृ० १०८; व० १९४१; आ० प्रथम।

बनारसी विलास—ले० कविवर बनारसीदास, संपा० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३६८, व० १९०६, आ० प्रथम।

बम्बई प्रान्त के प्राचीन जैन स्मारक—संग्र० संपा० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० सेठ माणिकचन्द पानाचन्द जौहरी बम्बई, भा० हि०, पृ० २३२, व० १९२५; आ० प्रथम।

बम्बई में शुद्ध दिगम्बराम्नाय मन्दिर निर्माण पत्रिका—प्र० जैन पंचान बम्बई; भा० हि०, पृ० १६, व० १८८८।

बयाना काण्ड—प्र० बा० छोटेलाल जैन कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २६, व० १९२६, आ० प्रथम।

ब्याहली नेमनाथ का (पद्य)—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०, व० १८९८।

ब्याहला बहु—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० साहु जुगमन्दरदास नजीबाबाद, भा० हि०, पृ० ४५, व० १९१५।

बलदेव भजनमाला—संपा० मूलचन्द गुप्त, भा० हि०, पृ० ११२।

बलिदान या अनोखा बदला—ले० फकीरचन्द वियोगी, प्र० हरिवंश एण्ड को० देहली, भा० हि०, पृ० ६४, व० १९४०।

ब्रह्म विलास—ले० भैया भगवतीदास, संपा० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३०५, व० १९२६, आ० द्वितीय;—प्रथम आ० १९०४।

बहिरंग शुद्धि अथवा मोक्ष पात्रता—ले० पं० मक्खनलाल; प्र० श्रीनिवास शास्त्री कलकत्ता, भा० हि०; पृ० ३५, व० १९३८।

बंगाल बिहार उड़ीसा के प्राचीन जैन स्मारक—संपा० ब्र० शीतलप्रसाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्र० वैजनाथ सरावागी कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४७, व० १९२३, आ० प्रथम।

ब्रह्म गुलाल चरित्र—भाषा हिन्दी।

ब्राह्मणों की उत्पत्ति—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृष्ठ ३४, व० १९१८।

बाइस परिषह—ले० पं० भूधरदास, प्र० ज्ञानचन्द जैनी लाहौर, भा० हि० पृ० १६, व० १९१२।

बाइस परिषह—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०, पृ० १६, व० १८९८, आ० प्रथम।

बाइस परिषह—प्र० बा० ज्ञानचंद जैनी लाहौर, भा० हि०, पृ० ६४; व० १९०५, आ० प्रथम।

बारस अणुवेक्खा—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, टी० अनु० पं० मनोहर लाल व पण्डित नाथूराम प्रेमी, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० प्रा० हि०; पृ० ४०, व० १९१०, आ० प्रथम।

बारह भावना—ले० बा० रामप्रसाद 'मधुर', प्र० जैन युवक मंडल एटा; भाषा हिन्दी; पृ० २७; व० १९३६।

बारह भावना भाषा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद; भाषा हिन्दी, व० १८९८।

बारह खड़ी सूरत—प्र० जैन ग्रंथ प्रचारक पुस्तकालय देवबंद, भा० हि०, पृ० २०; व० १९१२, आ० द्वितीय।

बारह मासा—ले० गुलशनराय; प्र० स्वयं देहली, भा० हि०; पृ० ७; व० १९३१; आ० प्रथम।

बारह मासा नेमिराजुल—ले० कवि नयनसुखदास, संपा० पुष्प जैनभिक्खु, प्र० नानकचन्द बनारसी दास देहली; भा० हि०; पृ० ५६, व० १९३७, आ० प्रथम।

बारह मासा मुनिराज—ले० जीयालाल, प्र० जैन पुस्तकालय इटावा, भा० हि०; पृ० ७, व० १९०८; आ० द्वितीय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बारह मासा राजल—ले० नयनसुखदास; प्र० जैन ग्रंथ प्रचारक पुस्तकालय देववन्द, भा० हि०; पृ० ६; व० १९२४, आ० पंचम।

बारह मासा संग्रह–प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०; पृ० १७।

बारह मासा संग्रह—प्र० बा० सूरजभान वकील देववन्द, भाषा हि०; व० १८९८।

बारह मासा संग्रह—ले० पण्डित नयनानन्द, प्र० नरायणदास जंगलीमल देहली, भा० हि०, पृष्ठ ४०, व० १९००।

बालक भजन संग्रह (प्रथम भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२५, आ० प्रथम।

बालक भजन संग्रह (द्वितीय भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०; पृ० २०, व० १९२५, आ० प्रथम।

बालक भजन संग्रह (तृतीय भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२५, आ० प्रथम।

बालक भजन संग्रह (चतुर्थ भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली; भा० हि०, पृ० १६; व० १९२५, आ० प्रथम।

बालक भजन संग्रह (पंचम भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० ब्र० पार्श्व सागर, कुन्थलगिरि; भा० हि०, पृ० २४, व० १९२४ आ० प्रथम।

बाल गणित—ले० दयाचन्द जैन; प्र० भारतवर्षीय अनाथ रक्षक जैन सोसाइटी हिसार, भा० हि०, पृ० ६४, व० १९११; आ० प्रथम।

बाल चरितावली—ले० अज्ञात; भा० हि०।

बाल पुष्पांजलि—संपा० मा० शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक; भा० हि० पृ० १८, व० १९३४, आ० प्रथम।

बालबोध जैन धर्म (प्रथम भाग)—ले० दयाचन्द गोयलीय; प्र० रूपचन्द गोयलीय गढ़ीअबुल्लाखाँ०, भा० हिंदी, पृष्ठ ८, व० १९१९, आ० नवम।

बाल बोध जैन धर्म (दूसरा भाग)—ले० दयाचन्द गोयलीय, प्र० बालकृष्ण रामचन्द्र धाणेकर, भा० हि०, पृ० १६, व० १९१२, आ० तृतीय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बालबोध जैन धर्म (तीसरा भाग)—लेखक दयाचन्द्र गोयलीय व लाला [...]न शास्त्री, प्र० भारतवर्षीय शिक्षा प्रचारक समिति जयपुर, भा० हि०, पृ० [...], व० १६१२, आ० प्रथम।

बालबोध जैन धर्म (चतुर्थ भाग)—ले० दयाचन्द्र गोयलीय, प्र० जैन [...] रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ७२, व० १६१५, आ० दूसरी।

बालमित्र (भाग १ व २)—लेखक पन्नालाल जैन, प्र० देश हितैषी आफिस [ब]म्बई; भा० हि०।

बालविवाह—ले० ला० हजारीलाल, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा, इटावा; भा० हि०, पृ० २६, व० १६१४, आ० प्रथम।

बालशिक्षा—ले० बुधमल पाटनी, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० ३२, व० १६१५, आ० प्रथम।

बालिका विनय—संपा० पं० चन्दाबाई, भा० हि०; पृ० ६४, व० १६२१।

बाहुबलि स्वामी व पंच बालयति तीर्थंकर पूजा—लेखक पं० दीपचन्द, प्र० रघुनाथदास प्रेमचन्द जैन तिखावर; भा० हि०, पृ० ८, व १६३६; आ० प्रथम।

बिगड़े का सुधार नाटक—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०।

बीस प्रश्नों का उत्तर—लेखक कुंवर दिग्विजयसिंह, प्र० जैनतत्त्व-प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० २२; व० १६१२।

बीस विहरमान जिन पूजा—लेखक पं० जौहरीलाल, भा० हि०, पृ० १६, व० १६२७।

बुड्ढे का ब्याह—लेखक बा० ज्योतिप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फरनगर; भा० हि०, पृ० २५, व० १६३८; आ० प्रथम।

बुधजनसतसई—लेखक कविवर बुधजन जी, प्र० जैनग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६५, व० १६१०, आ० प्रथम।

बृहद् विमलनाथ पुराण—लेखक ब्र० श्रीकृष्णदास, अनु० पं० गजाधर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३६६, व० १९१४; आ० प्रथम।

बोधामृतसार—लेखक मुनि कुंथसागर जी; प्र० सेठ शंकरलाल गांधी बम्बई, भा० हि०, पृ० २४०, व० १९३७, आ० प्रथम।

बून्दीराज में कन्याओं की रक्षा का कानून—लेखक बा० सूरजभान वकील; प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० २४; व० १९२६।

बोधप्राभृन्त—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, टी. श्रुतसागर, भा० प्रा० सं०, (षटप्राभृतादि संग्रह में प्र०)।

बोध पाहुड़—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, संपा० बा० सूरजभान वकील, (पट पाहुड़ में प्र०)।

भक्तामर और भोजभूप—लेखक पीताम्बर दास गुप्त, भा० हि०; पृ० १८८।

भक्तामर कथा—लेखक ब्र० रायमल्ल, हि० अनु० उदयलाल; काशलीवाल प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० सं० हि०, पृ० १४७।

भक्तामर कथा—लेखक ब्र० रायमल्ल, हि० अनु० उदयलाल काशीवाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १३६; व० १९३०; आ० चतुर्थ।

भक्तामर कथा (यंच मंत्र सहित)—ले० पं० विनोदीलाल, संपा० बुद्धि लाल श्रावक, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता; भा० हि० सं०, पृ० १७१, व० १९३५, आ० प्रथम।

भक्तामर काव्य—ले० मानतुंगाचार्य, अनु० नाथूराम डोंगरीय; प्र० अनु० स्वयं बिजनौर; भा० सं० हि०, पृ० ४८; व० १९३९; आ० प्रथम।

भक्तामर यंत्रमंत्र पूजन—प्र० चन्दाबाई दिग० जैनग्रंथमाला देहली, भा० हि०, पृ० २१, व० १९३८।

भक्तामर स्तोत्र—ले० मानतुंगाचार्य, अनु० टी० ज्ञानचन्द्र जैन, प्र० ज्ञानचन्द्र जैनी लाहौर, भा० सं० हि०, पृ० ५०, व०, १९१२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्तामरस्तोत्र—लेखक मानतुंगाचार्य, हि० पद्यानुवाद-कवि हेमराज, टी. सुमेरचन्द चन्द जैन उन्नीषु; प्र० मित्र सेन मामचन्द जैन देववन्द, भा० सं० हि०, पृ० ४१ ।

भक्तामर स्तोत्र (सटीक)—ले० मानतुंगाचार्य; प्र० मुंशीनाथूराम लमेचू मुंडावरा; भ० सं० हि०, पृ० ३२; व० १६०६; आ० प्रथम ।

भक्तावर स्तोत्र (सार्थ)—ले० पांडे हेमराज, टी. पं० महेरचन्द; भा० हि०; पृ० २५ ।

भक्तामर स्तोत्रम्—ले० मानतुङ्ग; सं. टी. सिद्धिचन्द्र; हि० हेमचन्द्र; भा. सं. हि.; पृ० १६६; व० १८६४ ।

भक्तिप्रवाह या अपूर्वदर्शन—लेखक मुन्नालाल समगोरिया; प्र० जैन० उपयोगी वस्तु भंडार देहली; भा० हि०, पृ० ४८; व० १६४४ ।

भगवती आराधना—लेखक शिवार्य; टी. अपराजित सूरि; आशाधर; अमितगति, हिन्दी अनुवादक जिनदास पार्श्वनाथ; भाषा प्रा. संस्कृत हिन्दी, पृष्ठ १८७८, वर्ष १६३५ ।

भगवती आराधना—लेखक शिवार्य, टी. पंडित सदासुख जी, प्र० मुनि अनन्तकीर्ति दिगम्बर जैन ग्रंथ माला वम्बई; भाषा प्रा० हिन्दी, वर्ष १६३२ ।

भगवती आराधना सार—लेखक शिवार्य टी० पं० सदासुख जी; प्र० शाह माणिकचन्द मोतीचन्द; भाषा प्रा० हिन्दी, पृष्ठ ६३८, वर्ष १६०६, आ० प्रथम ।

भगवान कुन्दकुन्दाचार्य—लेखक बाबू भोलानाथ मुख्तार, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा हिन्दी, पृ० ८२, वर्ष १६४२; आ० प्रथम ।

भगवान धर्मादर्श—लेखक भगवानदास जैन, भाषा हिन्दी सं०, पृ० २८; वर्ष १८६० ।

भगवान्नाम सागर—लेखक भगवानदास जैन; भाषा हिन्दी, पृष्ठ १७५; वर्ष १६०६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान नेमनाथ—लेखक राजमल लौढा; प्र० जैन साहित्य कार्यालय मन्दसौर, भाषा हिन्दी; पृ० १६, वर्ष १९३५, आ० प्रथम।

भगवान महावीर—लेखक मूलचन्द वत्सल, प्र० चैतन्य प्रिंटिंग प्रेस बिजनौर, भाषा हिन्दी; पृ० १६; वर्ष १९३१, आ० प्रथम।

भगवान महावीर—लेखक बाबू कामताप्रशाद जैन, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़या सूरत; भा० हिन्दी, पृ० २८०; वर्ष १९२४; आ० प्रथम।

भगवान महावीर और उनका उपदेश—ले० कामता प्रसाद जैन, प्र० वीर कार्यालय बिजनौर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ४९, वर्ष १९२५, आ० प्रथम।

भगवान महावीर और उनका दिव्य उपदेश—संपा० संग्र० ताराचन्द रपरिया, प्र० जैन भ्रातृ संघ आगरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २४।

भगवान महावीर और उनका समय—ले० पं० जुगलकिशोर मुख्तार प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६२, व० १९३४, आ० प्रथम।

भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध—ले० बा० कामताप्रसाद; प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत; भाषा हिन्दी; पृष्ठ २७१, व १९२७, आ० प्रथम।

भगवान महावीर और स्याद्वाद—ले० बाबू जयभगवान वकील, प्र० दिगम्बर जैन शास्त्र भंडार पानीपत; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ८, वर्ष १९३८, आ० प्रथम।

भगवान महावीर का अचेलक धर्म—ले० पंडित कैलाशचन्द्र, प्र० दिग० जैन संघ मथुरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३५, वर्ष १९४५; आ० प्रथम।

भगवान महावीर का जहूर—ले० पंडित न्यामतसिंह, प्र० स्वयं हिसार भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३१, व० १९२८, आ० प्रथम।

भगवान महावीर का समय—लेखक कामताप्रसाद जैन, भाषा हिंदी, पृष्ठ ३१; व १९३२; आ० प्रथम।

भगवान महावीर की अहिंसा और भारत के देशी राज्यों पर उसका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभाव—लेखक कामताप्रसाद जैन, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५६; वर्ष १९३३, आ० प्रथम।

भगवान महावीर की शिक्षाएं—लेखक ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन भ्रातृ संघ आगरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११, वर्ष १९२५, आ० प्रथम।

भगवान महावीर का आदर्श जीवन—लेखक चौथमल जी, भाषा हिंदी, पृष्ठ ६५७, वर्ष १९३१।

भगवान पार्श्वनाथ—लेखक बा० कामताप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ४१४, व० १९२८, आ० प्रथम।

भगवान पार्श्वनाथ (सचित्र)—लेखक हरिसत्य भट्टाचार्य; अनु० मास्टर छोटेलाल, प्र० जैन साहित्य मन्दिर सागर, भा० हि०; पृ० ४३; व० १९२६, आ० प्रथम।

भजन मंडली—लेखक चन्द्रसेन जैन वैद्य, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० २८, व० १९१२; आ० प्रथम।

भजन व आरती संग्रह—प्र० सुमतिलाल; भा० हि०, पृ० १६।

भजन संग्रह—संग्रह० नाथूराम लेमचू, प्र० स्वयं कटनी, भा० हि०, पृ० १६, आ० प्रथम।

भट्टारक चर्चा—लेखक हीराचन्द नेमचंददोशी, भा० हि०, पृ० ३६; व० १९१७।

भट्टारक मीमांसा—लेखक पं० दीपचन्द वर्णी; प्र० वीर कालूराम राजेन्द्रकुमार रतलाम, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२८।

भद्रबाहु चरित्र—लेखक रत्ननन्दि, अनु० उदयलाल काशलीवाल; प्र० जैन भारती भवन बनारस, भा० हि०; पृ० ६६, व० १९११, आ० प्रथम।

भदैया पूजा संग्रह—प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता; भा० हि०, सं० पृ० २९९, व० १९३५, आ० तृतीय।

भरत बाहुबलि संवाद—संपा० प्र० त्रिलोकचन्द्र पाटनी केकड़ी, भा० हि०; पृ० ८०, व० १९२०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भरतेशवैभव (प्रथम भाग)—लेखक महाकवि रन्न; अनु० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० रावजी सखारामदोशी शोलापुर; भा० हि०, पृ० २०८, व० १९३६, आ० प्रथम।

भरतेशवैभव (द्वितीय भाग)—लेखक महाकवि रन्न; अनु० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० गोविन्दजी रावजी दोशी शोलापुर, भा० हि०, पृ० ३५८; व० १९४१, आ० प्रथम।

भरतेशवैभव (तृतीय भाग)—ले० महाकवि रन्न, अनु० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० स्वयं अनु० शोलापुर, भा० हि०, पृ० १२२, व० १९४३, आ० प्रथम।

भ्रमनिवारण—लेखक न्यामतसिंह जैन, प्र० स्वयं टीकरी (मेरठ), भा० हि०, पृ० ५६, व० १९३६, आ० प्रथम।

भविसदत्त चरित्र—लेखक पं० वनवारीलाल, प्र० वीर जैन साहित्य कार्यालय हिसार, भा० हि० (पद्य), पृ० १९३, व० १९१९, आ० प्रथम।

भविसयत्त कहा—लेखक धनपाल; संपा० सी. डी. दलाल, भा० अप० प०; पृ० ३८१, व० १९२३।

भाग्य और पुरुषार्थ—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० कुलवन्तराय जैन, भा० हि०, पृ० ३८।

भाद्रपद पूजा संग्रह—संग्रह० पं० कस्तूरचन्द, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४०।

भारत का आदि सम्राट—लेखक स्वामी कर्मानन्द; प्र० दिगम्बर जैन संघ मथुरा; भा० हि०; पृ० ३०, व० १९३८।

भारत के सपूत—लेखक मुन्नालाल समगौरिया, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४३, व० १९४१, आ० प्रथम।

भारत गौरव (सम्राट चन्द्रगुप्त)—लेखक जिनेश्वर प्रसाद मायल, भा० हि०।

भारत वर्षीय दिगम्बर जैन डायरेक्टरी—प्र० सेठ ठाकुरदास भगवानदास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जौहरी बम्बई, भा० हि०; पृ० १४२३; व० १९१४, आ० प्रथम।

भावना—लेखक शोभाचन्द्र भारिल्ल, भा० हि०, पृ० ३६; व० १९३६।

भावना बोध—लेखक श्री मद्राजचन्द्र, अनु० जगदीशचन्द्र, भा० हि०, पृ० १२०, व० १९३७।

भावना लहरी—लेखक विविध, भा० हि०, पृ० ४८, प्र० दिगम्बर जैन शास्त्र भंडार पानीपत; व०, १९३६।

भावना विवेक—लेखक पं० चैनसुखदास, अनु० पं० भँवरलाल, प्र० सद्बोध ग्रंथ माला जयपुर, भा० सं० हि०; पृ० २८०; व० १९४१, आ० प्रथम।

भावना संग्रह—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २८, आ० प्रथम।

भावत्रिभङ्गी—लेखक श्रुत मुनि; भा० सं०, (भाव संग्रहादि में प्र०)।

भाव पाहुड—लेखक कुन्दकुन्द; भा० प्रा०; (अष्ट पाहुड व षट् पाहुड में प्र०) अपरनाम भाव प्राभृत।

भाव संग्रहादि (४ ग्रंथ)—लेखक विभिन्न, संपा० पं० पन्नालाल सोनी, प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रंथ माला बम्बई, भा० सं० प्रा०, पृ० ३२८, व० १९२१, आ० प्रथम।

भाषा एकीभाव—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, व० १८९८, भा० हि०।

भाषा कल्याण मन्दिर—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, व० १८९८, भा० हि०।

भाषा जैन नित्य पाठ संग्रह—प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४४।

भाषा नित्य पूजा (सार्थ)—अनु० भुवनेन्द्र विश्व, प्र० सरल जैन ग्रंथ माला जवलपुर; भा० हि०; पृ० ५६, व० १९३९, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाषा पंच स्तोत्र—प्र० बा० सूरजभान वकील देववंद, भा० हि०, व० १८९८।

भाषा पूजन संग्रह—संग्र० प्र० मुन्शी नाथूराम लेमचू, भा० हि०, पृ० १०१, व० १९०३, आ० द्वितीय।

भाषा पूजा संग्रह—प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०, पृ० ६६; व० १९८८, आ० छठी।

भाषा भक्तामर—लेखक पांडे हेमराज, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, भा० हि०, व० १८९८।

भाषा भक्तामर व महावीराष्टक—लेखक पांडे हेमराज व पं० गजाधरलाल, प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०; पृ० १६; व० १९३९।

भाषा भूपाल चौबीसी—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, भा० हि०, व० १८९८।

भाषा वाक्यावली—लेखक धर्मदास क्षुल्लक, प्र० श्रीमती कुन्दनकुमारी आरा, भा० हि०, पृ० १०, व० १८८९।

भाषा सूक्ति मुक्तावली—(सिंदूर प्रकरण सहित)—ले० पं० बनारसीदास, टी० पा० मुंशी अमनसिंह, प्र० स्वयं संपा० देहली, भा० हि०, पृ० ४०, व० १८९३।

भूगोल मीमांसा—ले० पं० गोपालदास बरैया, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० १७, व० १९१२, आ० प्रथम।

भूधर जैन शतक—लेखक कविवर भूधरदास जी, प्र० मुंशी अमनसिंह सोनीपत, भा० हि०, पृ० ११२, व० १८९०, आ० प्रथम।

भूधर जैन शतक—लेखक कविवर भूधरदास जी, टी० संपा० बा० ज्ञानचंद्र, प्र० स्वयं दिगम्बर जैन धर्म पुस्तकालय लाहौर, भा० हि०, पृ० ५५, व० १९०९, आ० प्रथम।

भूधर जैन शतक—लेखक कविवर भूधरदास जी, टी० मुंशी अमनसिंह, प्र० श्रीमती सोनादेवी देहली, भा० हि०, पृ० ८०; व० १९४१, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूभ्रमण भ्रान्ति—संपा० प्र० पं० प्यारेलाल, भा० हि०, पृ० ६६; व० १६२० ।

भूभ्रमण सिद्धान्त और जैन धर्म—लेखक डा० निहालकरण सेठी, भा० हि०, पृ० १५ ।

भैरव पद्मावती कल्प—लेखक मल्लिषेणसूरि, भा० सं०, पृ० १६६, व० १६३७ ।

मदनपराजयः—मूलग्रंथ संस्कृत, कवि नागदेव, हिन्दी अनुवादक प्रो० राजकुमार जैन, प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, मूल्य ८), पृ० २४२, प्रकाशन १६४८ ।

मक्खनलाल भजन माला—लेखक पं० मक्खनलाल प्रचारक, प्र० स्वयं देहली, भा० हि०, पृ० ३२, व० १६३०, आ० प्रथम ।

मकरध्वज पराजय नाटक—लेखक कवि जिनदास, अनु० पं० गजाधरलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० १०५; आ० प्रथम ।

मक्शी पार्श्वनाथ—लेखक अज्ञात, भा० हि० ।

मंगलादेवी—लेखक बा० सूरजभान वकील; प्र० जौहरीमल सर्राफ देहला, भा० हि०, पृ० ५२, व० १६२५; आ० प्रथम ।

मणिभद्र—ले० सुशील; अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १३२, व० १६१६ ।

मद्रास मैसूर प्रान्त के प्राचीन जैन स्मारक—संग्र० संपा० ब्र० शीतलप्रसाद; प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़या सूरत, भा० हि०, पृ० ३३४, व० १६२८, आ० प्रथम ।

मध्यप्रान्त मध्यभारत व राजपूताने के प्राचीन जैन स्मारक—संग्र० संपा० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़या, सूरत, भा० हि०, पृ० २०४, व० १६२६, आ० प्रथम ।

मनमोहन पंचशती—लेखक कविवर छत्रपति, संपा० सोनपाल जैन, प्र० स्वयं संपा० बड़वानी, भा० सं० हि०, पृ० २३६, व० १६१७, आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनमोहनी नाटक—ले० प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०।

मनोरमा—अनु० मूलचन्द्र, भा० हि०, पृ० १०४; व० १९११।

मनोरमा उपन्यास—ले० जैनेन्द्र किशोर, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

मनोरमा चरित्र—लेखक पन्नालाल जैन, प्र० रायल स्टेशनरी मार्ट देहली, भा० हि०, पृ० १२६, व० १९२९, आ० प्रथम।

मनोरमा सुन्दरी—लेखक श्रीयुत प्रेमी, प्र० प्रेमभवन पुस्तकालय सहारनपुर, भा० हि०, पृ० २४, आ० प्रथम।

ममल पाहुड (प्रथम भाग)—लेखक तारण तरण स्वामी, अनु० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मथुराप्रसाद बजाज सागर, भा० हि०, पृ० ४२०, व० १९३७, आ० प्रथम।

ममल पाहुड (द्वितीय भाग)—लेखक तारणतरण स्वामी, अनु० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मथुराप्रसाद बजाज सागर, भा० हि०, पृ० ४५०; व० १९३८, आ० प्रथम।

ममल पाहुड (तृतीय भाग)—लेखक तारणतरण स्वामी, अनु० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मथुराप्रसाद बजाज सागर, भा० हि०, पृ० ३१८, व० १९३९, आ० प्रथम।

मरणभोज—लेखक पं० परमेष्ठीदास, प्र० सिंघई मूलचन्द मुनीम व शाह साकेरचन्द मगनलाल सरैया सूरत, भा० हि०, पृ० १०४, व० १९३७, आ० प्रथम।

मल्लिनाथ पुराण—लेखक सकल कीर्ति आचार्य, अनु० पं० गजाधरलाल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० सं० हिन्दी, पृ० १८४, व० १९२३, आ० प्रथम।

मल्लिनाथ पुराण—लेखक सकलकीर्ति आचार्य, अनु० टी० पं० गजाधर लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृ० १४५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महर्षि स्तोत्र—भा० सं०, (सिद्धान्त सारादि संग्रह में प्र०)।

महात्मा रामचन्द्र—लेखक पं० मूलचन्द्र वत्सल, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया, सूरत, भा० हि०, पृ० २६, व० १९२७, आ० प्रथम।

महापुराण (प्रथम खंड)—लेखक महाकवि पुष्पदन्त, संपा० डा० पी० एल. वैद्य, प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थ माला बम्बई, भा० अप०, पृ० ६७२, व० १९३७, आ० प्रथम।

महापुराण (द्वितीय खंड)—लेखक महाकवि पुष्पदन्त, संपा० डा. पी. एल. वैद्य, प्र० मणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रंथमाला बम्बई, भा० अप०, पृ० ६९७, व० १९४०, आ० प्रथम।

महापुराण (तृतीय खंड)—लेखक महाकवि पुष्पदन्त, संपा० डा० पी० एल० वैद्य, प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रंथ माला बम्बई, भा० अप०, पृ० ३१३, व० १९४१, आ० प्रथम।

महाबन्ध (महाधवल)—ले० भूतबलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी, संपा० अनु० पं० सुमेरचन्द्र दिवाकर, प्र० भारतीयज्ञान पीठ बनारस, भा० प्रा० सं० हि०, व० १९४७।

महाराज श्रेणिक—लेखक शुभचन्द्र भट्टारक, संपा० एम० एल० जैन, प्र० भारता जैन साहित्य मन्दिर कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३४९, व० १९३८, आ० प्रथम।

महारानी चेलनी—लेखक बा० कामताप्रशाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १७०, व० १९३३, आ० द्वितीय।

महावीर—ले० बा० कामताप्रशाद, भा० हि०, पृ० ६३।

महावीर चरित्र—लेखक अशग कवि, अनु० पं० खूबचन्द शास्त्री, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़या सूरत, भा० सं० हिन्दी, पृ० २७७; व० १९१८, आ० प्रथम।

महावीर चाँदन गाँव नाटक—लेखक राजकँवार जन, प्र० स्वयं हिसार, भा० हि०, पृ० २८, व० १९३७, आ०प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महावीर जिन पूजा संग्रह—प्र० महावीरप्रशाद जैन अनाथाश्रम देहली, भा० हिन्दी सं०, पृ० ९०, व० १९२९, आ० प्रथम।

महावीर जीवन विस्तार—अनु० ताराचन्द दोशी; प्र० श्री ज्ञानप्रसारक मंडल सिरोही, भा० हिन्दी; पृ० ९०, व० १९१८; आ० प्रथम।

महावीर पुराण (सचित्र)—संपा० नन्दनलाल जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृ० १९५, व० १९३९, आ० प्रथम।

महावीर पुराण—लेखक सकलकीर्तिदेव; अनु० पं० मनोहरलाल, प्र० जैन ग्रंथ उद्धारक कार्यालय बम्बई; भा० सं० हिन्दी, पृ० १५५, व० १९१६, आ० प्रथम।

महावीर पुष्पाञ्जली—संग्रह उमरावसिंह जैन, प्र० रतनलाल जैन मादीपुरिया देहली, भा० हि०; पृ० ४८; व० १९४१, आ० प्रथम।

महावीर स्वामी का जीवन—लेखक पं० न्यामतसिंह जैन, भा० हिन्दी, पृ० ४३।

महावीर स्वामी चरित्र—लेखक पं० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० सेठ सवाभाई सरबमलदास आरोन, भा० हिन्दी, पृ० ६८, व० १९३७, आ० प्रथम।

महावीराष्टक—लेखक भागचन्द्र, भा० सं०।

महिपाल चरित्र—लेखक कुन्दनलाल जैन, प्र० स्वयं हांसी हिसार, भा० हि०, पृ० ७०, व० १९३३, आ० प्रथम।

महिलाओं का चक्रवर्तित्व—संपा० संक० कुमार देवेन्द्रप्रशाद, प्र० स्वयं प्रेम मन्दिर आरा, भा० हिन्दी, व० १९२०, आ० प्रथम।

महिला रत्नमगन वाई—लेखक ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हिन्दी, पृ० २००, व० १९३३, आ० प्रथम।

महीचन्द जैन भजनावली—संग्रह सेठ छोटेलाल, प्र० स्वयं सीकर; भा० हिन्दी, पृ० ४०, व० १९२९, आ० प्रथम।

महेन्द्रकुमार नाटक—ले० अर्जुनलाल सेठी; भा० हिंदी, पृ० ७७।

मंगतराय भजन माला—लेखक कवि मंगतराय, भा० हि०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगलमय महावीर—लेखक साधु टी० एल० वास्वानी, अनु० हेमचन्द्र मौदी, भा० हिन्दी, पृ० १०, व० १९४० ।

मानव धर्म—लेखक ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० हिन्दी, ग्रंथरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृ० १६, व० १९३०, आ० प्रथम ।

मानव धर्म और मांसाहार—लेखक धन्यकुमार, प्र० सन्मति पुस्तकालय कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृ० १६; व० १९३८ ।

मानिक विलास—लेखक कवि माणिकचन्द, भा० हि०, १२५ पद ।

मांसभक्षण पर विचार—लेखक अम्बालाल दाधीच, प्र० भारत जैन महामंडल लखनऊ, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९१५, आ० द्वितीय ।

मार्गानुसारी के ३५ गुण—लेखक मा० रखबचन्द्र, प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय व्यावर, भा० हिन्दी, पृ० १५, व० १९३० ।

मिथ्यात्व निषेध—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैनमित्रमंडल देहली; भा० हि०, पृ० २४, व० १९३३, आ० प्रथम ।

मिथ्यात्व नाशक नाटक—ले० पं० पन्नालाल जन, प्र० जैन हितैषी पुस्तकालय वम्बई, भा० हि० ।

मीन संवाद—ले० पं० जुगलकिशोर मुख्तार; भा० हि०, पृ० १६, व० १९२९ ।

मुक्ति—ले० पं० प्रभाचन्द्र, प्र० जैन मित्रमंडल देहली, भाषा हिन्दी, पृ० १२, वर्ष १९३६, आ० द्वितीय ।

मुक्ति दूत—ले० वीरेन्द्र कुमार जैन एम० ए०, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ बनारस, भाषा हिन्दी, व० १९४७ ।

मुक्ति और उसका साधन—ले० ब्र० शीतल प्रसाद; प्र० जैनमित्रमंडल देहली, भाषा हि०, पृ० २८, व० १९२९, आ० प्रथम ।

मुकद्दमा जैन मत समीक्षा—ले० प्र० अज्ञात, भा० हि० ।

मुनि धर्म प्रदीप—ले० आचार्य कुंथ सागर, प्र० आचार्य कुंथसागर ग्रन्थमाला शोलापुर, भा० हि०, पृ० १६८, व० १९४१ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनि यमन सेन चरित्र—ले० बा० ज्ञानचन्द जैनी, प्र० दिग० जैन धर्म पुस्तकालय लाहौर, भा० हि०, पृ० १३०, व० १६०२।

मुनिराज का बारहमासा—प्र० बा० सूरजभान वकील, देवबंद, भा० हि० व० १८६८।

मुनिसुव्रत काव्य—ले० कवि अर्हद्दास, अनु० टी० पं० के० भुजबलि शास्त्री व पं० हरनाथ द्विवेदी, प्र० जैन सिद्धान्त भवन आरा; भा० सं० हि०, पृ० २२१, व० १९२९, आ० प्रथम।

मुनिवंश दीपिका—ले० नयन सुखदास, प्र० जैन ग्रंथरत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०।

मुनि संघ भजनावली—ले० प्र० शिवराम जैन रोहतक; भा० हि०, पृ० ८, व० १९३०।

मुहूर्त दर्पण—संग्र० अनु० पं० नेमिचन्द्र; संपा० के० भुजबलि शास्त्री प्र० स्वयं आरा; भा० सं० हि०, पृ० ८०, व० १९४८; आ० प्रथम।

मूर्ति खंडन निर्णय—प्र० ला० कन्हैयालाल देहली; भा० हि०; व० १८९७।

मूर्ति पूजा मंडन—ले० पं० मिहरचन्द दास जैन, प्र० जैन प्रचारिणी सभा सुनपत, भा० हि०, पृ० १३, व० १८८८, आ० प्रथम।

मूर्त्ति पूजा मंडन नूतन मत खंडन—लेखक पं० शिवचन्द्र, भा० हि०, पृ० २१, व० १८८७।

मूर्त्ति मंडन—लेखक मुसद्दीलाल जैनी, प्र० दिग० जैन सभा निरपुडा; भा० हि०, पृ० १४; व० १९१३, आ० प्रथम।

मूर्त्ति मंडन प्रकाश—ले० पं० न्यामत सिंह, प्र० स्वयं हिसार, भा० हि०, पृ० ३९, व० १९२३, आ० प्रथम।

मुहणौत नैणसी की ख्यात—ले० मुहणौत नैणसी; भाषा हिन्दी राजस्थानी; प्र० अज्ञात।

मूल प्रति क्रमण—लेखक अज्ञात; भा० प्रा०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूलाचार—लेखक वट्टकेर स्वामी; संपा० पं० मनोहरलाल; प्र० मुनि ...कीर्ति ग्रन्थमाला बम्बई, भा० प्रा० सं०, पृ० ४३२, व० १६१६; आ० ...।

मूलाचार (पूर्वार्ध)—ले० वट्टकेर स्वामी; सं० टी० वसुनन्द्याचार्य; संपा० ...लाल सोनी, गजाधरलाल व श्री लाल; प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रन्थ-...ला बम्बई, भा० प्रा० सं०, पृ० ५२०, व० १६२०, आ० प्रथम।

मूलाचार (उत्तरार्ध)—ले० वट्टकेर स्वामी, सं० टी० वसुनन्द्याचार्य, संपा० ...लाल सोनी, गजाधरलाल व श्रीलाल, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रंथ-...ला बम्बई, भा० प्रा० सं०, पृ० ३४०, व० १६२३, आ० प्रथम।

मूलाचार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य; अनु० जिनदास पार्श्वनाथ फडकुले शास्त्री, ...० सेठ सखाराम देवचन्द शाह शोलापुर, भा० प्रा० हि०, पृ० ७००; व० १६४७।

मूलाराधना—ले० शिवार्य, टी० अपराजित सूरि (विजयोदया टीका); पं० ...शाधर (मूलाराधना), आचार्य अमितगति (सं० श्लोक); हि० टी० अनु० ...जिनदास पार्श्वनाथ फडकुले; प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० प्रा० ...सं० हि०, पृ० १६७८; व० १६३५; आ० प्रथम।

मेरी द्रव्य पूजा—ले० पं० जुगलकिशोर मुख्तार, भा०, हि०, पृ० ८, व० १६२८।

मेरी भावना—लेखक पं० जुगलकिशोर मुख्तार; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली; भा० हि०, व० १६३१, —(इस पुस्तक के बीसियों विभिन्न संस्करण, विविध संस्थाओं और व्यक्तियों की ओर से प्रकाशित हो चुके हैं)।

मेरा विकास कथा—ले० स्वामी सत्यभक्त, प्र० सत्यसंदेश ग्रंथमाला सत्याश्रम वर्धा, भा० हि०, पृ० १२०, व० १६४३, आ० प्रथम।

मैं कौन हूँ—ले० ज्योतिप्रसाद जैन, प्र० जैनमित्रमण्डल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १६३६, आ० प्रथम।

मैथिली कल्याण नाटकम्—ले० कवि हस्तिमल्ल, संपा पं० मनोहरलाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शास्त्री, प्र० माणिक चन्द्र दिग० जैन ग्रन्थ माला बम्बई, भा० सं०, पृ० १० व० १६१६, आ० प्रथम।

मोक्ष पाहुड (मोक्ष प्राभृत)—ले० कुन्दकुन्द, भा० प्रा सं० हि०, (पाहुड व षट पाहुड में प्र०)।

मोटर यात्रा दर्पण—ले० पं० शिवजी राम जैन, प्र० सेठ रतनलाल मल पाँड्या रांची, भा० हि०, पृ० १६४, व० १६३८, आ० प्रथम।

मोहिनी—ले० भैयालाल जैन, प्र० महावीर ग्रन्थ कार्यालय आगरा, हि०, पृ० ८३, व० १६२४।

मोक्ष की कुञ्जी—प्र० आत्म जागृति कार्यालय बगड़ी (मारवाड़), हि०, पृ० ६४, व० १६२८, आ० प्रथम।

मोक्ष पंचाशिका—भा० सं०, (तत्त्वानुशासनादि संग्रह में प्र०)।

मोक्ष मार्ग की सच्ची कहानियां—प्र० बुद्धिलाल श्रावक, भा० हि०, पृ० ८२, व० १६१२, आ० प्रथम, पृ० ८१, व० १६१७, आ० द्वितीय।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—ले० पं० टोडरमल जी; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० हि०, पृ० ४६६, व० १६११; आ० प्रथम।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—ले० पं० टोडरमल जी, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० ४६८, व० १६३६, आ० प्रथम।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—ले० पं० टोडरमल जी, प्र० ज्ञानचन्द जैन लाहौर, भा० हि०, पृ० ५१२, व० १८६७, आ० प्रथम।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—ले० पं० टोडरमल जी, प्र० पन्नालाल चौधरी काशी, भा० हि०, पृ० ५२८, व० १६२५, आ० प्रथम।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—लेखक पं० टोडरमलजी, प्र० मुनि अनन्तकीर्ति ग्रंथ माला वम्बई, भा० हि०, पृ० ५११, व० १६३७।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक (द्वितीय भाग)—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३४४; व० १६३३, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोक्ष मार्ग प्रदीप—ले० कुन्थ सागर (आचार्य); भाषा सं० हिन्दी, पृष्ठ वर्ष १९३७।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी; अनु० संपा० वनबारीलाल स्याद्वादी, प्र० साहित्य भंडार देहली; भा० सं० हि०, पृ० १११, व० १८४०, आ० म।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी; हि० टी० पं० लालाराम, प्र० सेठ गणेशी उदयपुर, भा० सं० हि०; पृ० २२८; व० १९४१, आ० प्रथम।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी; अनु० पन्नालाल सा० आ० प्र० मूलचन्द दास कापड़िया सूरत, भा० सं० हि०; पृ० २७२; व० १९४५, आ० तृतीय त्र)।

मोक्ष शात्र—ले० उमास्वामी, हि० पद्य अनु० पं० छोटेलाल, प्र० जैन तीय भवन वनारस; भा० सं० हि०, पृ० ६५, व० १९१२, आ० प्रथम।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी, प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० सं०, २०, व० १९३३, आ० प्रथम।

मोक्ष शास्त्र (वाल वोधिनी टीका)—ले० उमास्वामी, टी० पन्नालाल नीवाल; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० सं० हि०, पृष्ठ २।

मौन व्रत कथा—ले० गुणचन्द्र भट्टारक; अनु० पं० नन्दनलाल, प्र० जिन प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भाषा हि०, पृ० २४, आ० प्रथम।

मौन व्रत कथा—ले० गुणचन्द्र भट्टारक, अनु० पं० नन्दनलाल, प्र० छोटे परमानन्द देवरी; भा० सं० हि०, पृष्ठ ५०, आ० प्रथम।

मौर्य साम्राज्य के जैन वीर—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैनमित्र देहली, भाषा हिन्दी, पृ० १७३, व० १९३२, आ० प्रथम।

मृत्यु महोत्सव—हि० टी० पं० सदासुखजी, प्र० जैन ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा सं० हिन्दी, पृ० २३, व० १९०८ आ० प्रथम।

यज्ञोपवीत संस्कार—संपा० क्षुल्लक ज्ञान सागर, प्र० गांधी मगनलाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शंकरलाल रतलाम; भा० हिन्दी, पृ० १४४, आ० द्वितीय।

यज्ञोपवीत संस्कार—संपा० ज्ञानचन्द्र वर्णी, प्र० गांधी मगनलाल शंकरलाल रतलाम; भा० हि० सं०, पृष्ठ ३५; व० १६३०, आ० प्रथम।

यमन सेन चरित्र—ले० ज्ञानचन्द्र जैनी, प्र० स्वयं लाहौर, भा० हि०, पृ० १३०, व० १६०२, आ० प्रथम।

यशस्तिलक चम्पु—ले० सोमदेव, संपा० जे० एन० क्षीरसागर; भाषा सं०, व० १६४६, बम्बई (प्रथम उच्छ्वास)।

यशस्तिलकम् (२ खंड)—ले० सोमदेव सूरि; सं० टी० श्रुतसागर, संपा० काशीनाथ शर्मा; प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई; भा० सं०, पृष्ठ ४१६, व० १६०३, आ० प्रथम।

यशोधर—संपा० विद्याकुमार व राजमल लोढा; प्र० जैन धर्म प्रचारक मण्डल अजमेर; भा० हि०, पृ० १७, व० १६३३, आ० प्रथम।

यशोधर चरित्र—ले० वादिराज सूरि, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ५२, व० १६१५, आ० प्रथम।

यशोधर चरित्र (जसहर चरिउ)—ले० महाकवि पुष्पदन्त; संपा० डा० पी० एल० वैद्य; प्र० कारंजा जैन पब्लिकेशन सोसाइटी कारंजा, भा० अप० हि०, पृ० १८८, व० १६३१, आ० प्रथम।

यशोधर चरित्र—ले० महाकवि पुष्पदन्त, प्र० गिरनारीलाल जैन सहारनपुर, भा० अप० सं० हि०, पृ० ३०४।

यशोधर चरित्र—ले० वादिराज सूरि, संपा० टीत ए०, गोपीनाथ राव एम० ए०, प्र० संपा० स्वयं तंजोर, भा० सं०; पृ० ५६, व० १६१२।

युक्त्यानुशासनम्—लेखक समन्तभद्राचार्य, सं० टी० विद्यानन्द स्वामी, संपा० पंडित इन्द्रलाल व श्री लाल, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० सं०; पृ० १६६, व० १६२०, आ० प्रथम।

यूरोप में सात मास—ले० प्र० धर्मचन्द सरावगी कलकत्ता; भा० हि०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योग प्रदीप—ले० हर्ष कीर्त्ति मुनि, भा० सं०, पृ० ३४, व० १८९७ ।

योग सार—लेखक अमितगति आचार्य, अनु० पं० गजाधर लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भाषा सं० हि०, पृ० २००, व० १९१८, आ० प्रथम ।

योग सार—लेखक योगीन्द्र देव, टी० प्रो० जगदीश चन्द्र, संपा० डा० ए० एन० उपाध्ये, प्र० रामचन्द्र जैन शास्त्र माला बम्बई, भाषा अप० हिन्दी; पृ० ..., व० १९३७; आ० प्रथम ।

योग सार—लेखक योगीन्द्र देव, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किसनदास कापड़िया सूरत, भा० अप० हि०, पृ० ३६४, व० १९४१, आ० प्रथम ।

योग सार—लेखक योगीन्द्र देव, टी० पं० नन्दराम गोयल, प्र० दिग० जैन भ्रातृ संघ आगरा, भा० हि०, पृ० १४८, व० १९३८, आ० प्रथम ।

योगि भक्ति—लेखक पूज्यपाद, टी० लालाराम, भा० संस्कृत हि०, (दश-भक्त्यादि संग्रह में प्र०) ।

रक्षाबंधन कथा (पद्य)—लेखक मुंशी नाथूराम लेमचू, प्र० स्वयं मुंडावरा, भा० हि०, पृ० १६, व० १९०२, आ० प्रथम ।

रक्षाबन्धन कथा (पद्य)—लेखक मुंशी नाथूराम लेमचू, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १६ ।

रक्षाबन्धन कथा (पद्य)—लेखक मुंशी नाथूराम लेमचू, अनु दामोदर दास, प्र० मूलचन्द किसनदास कापड़्या सूरत, भा० हि०, पृ० ४६, व० १९४२, आ० चतुर्थ ।

रक्षाबन्धन कथा—लेखक ब्र० प्रेमसागर पंच रत्न, प्र० जैन सुधारक सभा देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९४० ।

रत्नकरंड श्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, सं० टी० प्रभाचन्द्राचार्य, प्र० माणिकचन्द्र ग्रंथ माला बम्बई, भा० सं०, पृ० ३६८, व० १९२५, आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्नकरंड श्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य; टी० प्रभाचन्द्राचार्य, संपा० व प्रस्तावना लेखक पंडित जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रंथमाला बम्बई, भा० सं० हिन्दी, पृ० ४५०, व० १९२५, आ० प्रथम।

रत्नकरंड श्रावकाचार—लेखक सन्तभद्राचार्य; हि० टी० पंडित सदासुख जी, प्र० बाबू सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हिन्दी; पृ० ३७६; व० १८९७; आ० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, संपा० ब्र० भगवानदास, प्र० जैन दिगम्बर ग्रंथ माला अहमदाबाद, भा० सं०, पृ० १५६, व १९३२, आ० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, संपा० पंडित गौरीलाल, प्र० स्वयं कलकत्ता, भा० सं०, पृ० २७४, व० १९३८, आ० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० पंडित पन्नालाल सा० आ०; प्र० सरल जैन ग्रंथमाला जबलपुर, भा० सं० हिन्दी, पृ० १२०, व० १९३९, आ० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, हिन्दी पद्य० अनु० मुख्तार सिंह जैन, टी० मैनासुन्दरी जैन, प्र० दि० जैनपुस्तकालय मुजफ्फरनगर, भा० हिन्दी, पृ० ७५, व० १९४१, आ० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० टी० उग्रसेन एम० ए०, प्र० जैन मित्रमंडल देहली, भा० सं० हिन्दी, पृ० २७२, व० १९४०, आ० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० मोहनलाल का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन लहरी, भा० सं० हिन्दी, पृ० ११२, व० १९४३, आ० द्वितीय।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, हिन्दी पद्य अनु० गिरधर शर्मा, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हिन्दी, पृ० ६२, व० १९२५।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, टी० पं० सदासुख जी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काशलीवाल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० सं० हिन्दी, पृ० ४६२, आ० सातवीं ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, टी० पंडित सदासुख जी काशलीवाल, प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हिन्दी, पृ० २८१, व० १६०८, आ० प्रथम ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, टी० पंडित सदासुख जी काशलीवाल, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृ० २७६, व० १६१७, आ० तृतीय ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, टी० पं० सदासुखजी, काशलीवाल, प्र० ब्र० नन्दलाल भिण्ड, भा० सं० हि०, व० १६३६, आ० प्रथम ।

रत्न करंड श्रावकाचार—लेखक समंतभद्राचार्य, टी० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हिन्दी, पृ० ६६, व० १६३६ ।

रत्न करंड श्रावकाचार की प्रस्तावना—लेखक पं० जुगलकिशोर मुख्तार, भा० हिन्दी, पृ० ८४, व० १६२४ ।

रत्न परीक्षक—लेखक घासीराम जैन, भा० हि०, पृ० ४४ ।

रत्न माला—लेखक शिवकोटि भट्टारक, टी० अनु० पं० गौरीलाल, प्र० अनु० स्वयं, भा० सं० हि०, पृ० ८४, व० १६३३, आ० प्रथम ।

रत्न माला—लेखक शिवकोटि भट्टारक, अनु० जिनदास पार्श्वनाथ शास्त्री, भा० सं० हि० ।

रत्नत्रय कुञ्ज—लेखक बैरिस्टर चम्पतराय, अनु० कामता प्रसाद जैन, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ५६, व० १६३०, आ० प्रथम ।

रत्नत्रय धर्म—लेखक पन्नालाल सा०, आ० प्र० जैन भ्रातृ संघ सागर, भा० हिन्दी, पृ० ३८; व० १६४४ ।

रत्न कवि प्रशस्ति—भा० कन्नड ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रमणी रत्नमाला—लेखक अज्ञात, भा० हि० ।

रयणसार (सटीक)—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० क्षुल्लक ज्ञान सागर; भा० प्रा८ हि०; पृ० १३० ।

रयणसार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, संपा० पं० पन्नालाल सोनी, भा० प्रा० सं० पृ० ३२, वर्ष १६२० ।

रविव्रत उद्यापन—ले० भानुकीर्ति व भाऊ कवि, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़या सूरत, भा० सं०, पृ० १६, व० १६४३; आ० द्वितीय ।

रविव्रत कथा—लेखक कवि भाऊ, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १६ ।

रविव्रत कथा—ले० कवि भाऊ, प्र० जैन ग्रन्थकार्यालय देवरी, भा० हि० पृष्ठ १८ ।

रविव्रत कथा (वड़ी)—लेखक ज्ञानचन्द जैनी, प्र० वर्धमान जैन पुस्तकालय देहली; भा० हि०, पृ० ४५; व० १६४१, आ० प्रथम; —(इसे ही देहली की कुछ माताओं ने प्रकाशित कराया) ।

रस भरी—लेखक प्र० भगवत स्वरूप जैन, भा० हि०, पृ० ६६, व० १६४० ।

रहस्यपूर्ण चिट्ठी—ले० पं० टोडरमल्ल जी, संग० मास्टर छोटेलाल, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०; पृ० १६, व० १६३६ आ० द्वितीय ।

राजपुताने के जैन वीर—लेखक अयोध्याप्रसाद गोयलीय, प्र० हि० विद्या-मंदिर देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३५२, वर्ष १६३३, आ० प्रथम ।

राजुल पच्चीसी—लेखक कवि विनोदी लाल; प्र० वद्रीप्रसाद जैन काशी; भाषा हिन्दी, पृष्ठ १३; वर्ष १६०६, आ० प्रथम ।

राजुल भजन एकादशी—लेखक पंडित न्यामतसिंह, प्र० स्वयं हिसार, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ८, आ० तीसरी ।

रात्रि भोजन कथा (सचित्र)—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५६, व १६३६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रामदुलारी—लेखक प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद; भा० हि० ।

रामवनवास (काव्य)—लेखक पं० गुणभद्र जी, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ६५, व० १९३६, आ० प्रथम ।

रिष्ठ समुच्चय—लेखक दुर्गदेव, संपा० ए. एस. गोपानी, प्र० सिंघी जैन ग्रंथ माला बंबई, भा० प्रा० सं० अ०, पृ० १८६, व० १९४५, आ० प्रथम ।

रेशम के वस्त्र—लेखक ज्योतिप्रशाद जैन, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ८ ।

लखनऊ परिचय—लेखक ज्योतिप्रशाद जैन, प्र० अवध प्रान्तीय दिग० जैन परिषद लखनऊ, भा० हि०, पृ० १६, व० १९४४ ।

लघुनयचक्र—लेखक देवसेन, (नय चक्रादि संग्रह में प्र०) ।

लघुबोधामृतसार—लेखक कुंथसागर आचार्य, अनु० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० सेठ मगनलाल खमीचंद जावरा, भा० सं० हि०, पृ० १३, व० १९३८ ।

लघुशान्ति सुधा सिंधु—लेखक कुंथसागर आचार्य, प्र० विजयलाल जैन डूंगरपुर, भा० सं० हि०, पृ० ४४, व० १९४८ ।

लघुसर्वज्ञसिद्धिः—लेखक अनन्तकीर्ति, भा० सं०, पृ० २३, व० १९१५ ।

लघुसामायिक या पाप प्रायश्चित—ले० चम्पालाल जैन, प्र० सेठ गुलाब चंद, भा० हि०, पृ० २० ।

लड़कों के विक्रय का ड्रामा—लेखक कवि ज्योतिप्रशाद, प्र० रा. सा. नेमदास देहली भा० हि०, पृ० १७, व० १९३६, आ० प्रथम ।

लघयिस्त्रयम्—(अकलंक ग्रंथ त्रयम् तथा लघयिस्त्रादि संग्रह में प्र०) ।

लघयिस्त्र्यादि संग्रह—लेखक भट्टाकलंक व अनन्त कीर्ति, संपा० पं० कलप्पा भरमप्पा निटवे, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैनग्रंथमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० २२४, व० १९१६, आ० प्रथम ।

लब्धिसार (क्षपणासार सहित)—लेखक नेमिचन्द्र सि० च०, सं० टी० केशववर्णी (जीव तत्त्व प्रदीपिका), हि०, टी० पं० टोडरमल्ल (सम्यग्ज्ञान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्द्रिका तथा अर्थ संदृष्टि अधिकार), संपा० मनोहरलाल व श्रीलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० ९७४, व० १९१६, आ० प्रथम।

लब्धिसार (क्षपणासार सहित)—लेखक टोडरमल्ल, हि० टी० पं० मनोहरलाल, प्र० रायचन्द्रजैनशास्त्र मालाबम्बई, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० १७५, व १८१६, आ० प्रथम।

लाटी संहिता—लेखक पांडे राजमल्ल, हि० अनु० पं० लालाराम, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० ३७६, व० १९३८, आ० प्रथम।

लाटी संहिता—लेखक पांडे राजमल्ल, संपा० पं० दरबारीलाल न्या० ती०, प्र० माणिकचंद दिग० जैन ग्रंथमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० १५६, व० १९३७, आ० प्रथम।

लाला जम्बू प्रसाद—लेखक ऋषभदास जैन, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० ११५।

लावनी कर्त्ता खंडन का फोटू—लेखक ज्योतिप्रशाद, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० ८० व० १९०५।

लिंग पाहुड़ (लिङ्ग प्राभृत)—लेखक कुन्दकुन्द, (अष्टपाहुड़ व षटप्राभृतादि संग्रह में प्र०)।

लिंगबोध व्याकरण—लेखक पं० पन्नालाल बाकली वाल, भा० हि०, पृ० २१।

वाणिकप्रिया (कविता संग्रह)—लेखक अज्ञात, भा० हि०,।

वनवासिनी—लेखक उदयलाल काशलीवाल, प्र० हि० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४३, व० १९१४, आ० प्रथम।

वर्ण और जाति भेद लेखक बा० सूरजभान वकील प्र० चंद्रसेन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० २७, व० १९९९, आ० प्रथम।

वर्तमान चतुर्विंशति जिन पंच कल्याणक पाठ—लेखक कवि वृन्दावन,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सं० प्र० बी० एल० जैन बुलन्दशहरी, भा० हि०, पृ० ८०, आ० प्रथम।

वर्तमान चौबीस जिन पंच कल्याणक पाठ—लेखक कवि वृन्दावन, प्र० जैन धर्म प्रचारणी सभा देवबन्द, भा० हि०, पृ० ६२, व० १८९६; आ० प्रथम।

वर्तमान चौबीस तीर्थंकर पंच कल्याणक पूजा—ले० कवि वृन्दावन, प्र० विद्यादानोपदेश प्रकाशनी जैन सभा वर्धा, भा० हि०, पृ० ६२।

वर्तमान जिन चतुर्विंशति पूजा विधान—ले० बालाप्रशाद कानूनगो, प्र० स्वयं रामपुर स्टेट, भा० हि०, पृ० १३६, व० १९३१, आ० प्रथम।

वर्द्धमान पुराण (पद्य)—लेखक कवि नवलशाह, संपा० पन्नालाल सा० प्र०, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० हि०, पृ० ४२६, व० १९४२; आ० प्रथम।

वरांगचरित्र—ले० जटासिंहनन्दि, संपा० डा. ए० एन. उपाध्ये, प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रंथ माला बम्बई, भा० अप०, पृ० ३९५, व० १९३८; आ० प्रथम।

वरांगचरित्र (भाषा पद्य)—ले० कवि० कमलनयन, संपा० बा० कामता प्रसाद, प्र० जैन साहित्य समिति जसवंन्त नगर, भा० हि० पृ० १३६, व० १९३९, आ० प्रथम।

वसुनन्दि श्रावकाचार—ले० वसुनन्दि आचार्य, टी० अनु० बा० सूरजभान वकील, प्र० अनु० स्वयं देवबंद, भा० सं० हि०, पृ० ९५, व० १९१६ आ० प्रथम।

वाग्भट्टालङ्कार (सटीक)—ले० वाग्भट्ट; प्र० पन्नालाल जैन देशहितैषी आफिस बम्बई, भा० सं०।

वास्तुसार प्रकरण—ले० ठक्कर फेरु; टी० पं० भगवानदास भा० सं० हि०; पृ० २१६।

विक्रान्त कौरव नाटकम्—ले० हस्तिमल्ल; सं० पं० मनोहरलाल, प्रकाशक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माणिक चन्द दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० १७६, व० १९१६, आ० प्रथम।

विचार पुष्पोद्यान—संग्र० दौलतराम मित्र, प्र० साहित्य रत्नालय बिजनौर, भा० हि०; पृ० २४८, व० १९२६; आ० प्रथम।

विजातीय विवाह आगम और युक्ति दोनों से विरुद्ध है—ले० श्रीलाल पाटनी, प्र० संयुक्त प्रान्तीय खंडेलवाल सभा, भा० हि० पृ० ११२ आ० प्रथम।

विजातीय विवाह मीमांसा—ले० पं० परमेष्ठी दास, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १७२, व० १९३५, आ० प्रथम।

विजातीय विवाह मीमाँसा—ले० दरबारी लाल न्यायतीर्थ, प्र० जौहरीमल सर्राफ देहली भा० हि०, पृ० १७, व० १९२५।

विज्ञाप्ति त्रिवेणी—संपा० मुनि जिन विजय; भा० सं० हि०, पृ० १६६ व० १९१५।

विद्यमान विंशति तीर्थङ्कर पूजा—ले० कवि थानसिंह; संपा० इन्द्र लाल शास्त्री, प्र० नेमिचंद बाकलीवाल कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १८८, व० १९३३ आ० प्रथम।

विद्यार्थी जैन धर्म शिक्षा—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० २९६, व० १९३५, आ० प्रथम।

विद्युतचोर—ले० पीतराम जैन, प्र० फूल चंद सोगानी कोटा, भा० हि० पृ० ५५, व० १९३६, आ० प्रथम।

विद्वद्जन बोधक (प्रथम भाग)—ले० पं० पन्नालाल सिंघी दूनी वाले, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ५३६, व० १९२५ आ० प्रथम।

विद्वद्रत्न माला (प्रथम भाग)—ले० पं नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १७४, व० १९१२, आ० प्रथम।

विदेशों में जैन धर्म—ले० बा० देवी सहाय, भा० हि०, पृ० २६ व० १९०७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विदेह क्षेत्रीय विंशति तीर्थङ्कर संस्कृत पूजा—ले० पं० रामप्रसाद भा० सं०, पृ० १२, व० १६२५।

विधवाओं और उनके संरक्षकों से अपील—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन वाल विधवा सहायक सभा देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १६२८, आ० प्रथम।

विधवाओं की दुर्दशा का दिग्दर्शन—ले० मोती लाल पहाडया भा० हिन्दी।

विधवा विवाह—ले० मोतीलाल पहाड्या, भा० हि०, पृ० १६; व० १६२६।

विधवा विवाह की असिद्धता—ले० पं० श्री लाल; भा० हि०, पृ० ४५ व० १६०७।

विधवा विवाह खंडन—ले० पं० झम्मनलाल तर्क तीर्थ; भा० हि०. पृ० ६२।

विधवा कर्तव्य—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १५२, व० १६१८, आ० प्रथम।

विधवा चरित्र—ले० बा० भोलानाथ जैन, भा० हि०; पृ० ४८।

विधवा विवाह प्रकाश—ले० रघुवीर शरण जैन, प्र० जैन वाल विधवा सहायक सभा देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १६३२, आ० प्रथम।

विधवा विवाह समाधान—ले० सव्यसाची, प्र० जैन बाल विधवा सहायक सभा देहली, भा० हि०, पृ० १८, व० १६२६ आ० प्रथम।

विधवा संबोधन—ले० पं० जुगल किशोर मुख्तार, भा० हि०, पृ० १६, व० १६२२, (कविता)।

विनती संग्रह—प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी पृ० ५६; व० १६२६, आ० प्रथम।

विमल नाथ पुराण—ले० सकल कीर्त्ति भट्टारक, अनु० पं० गजाधर लाल प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० १०४ व० १६२३; आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विमल नाथ पुराण—ले० ब्र० कृष्णदास, अनु० गजाधर लाल, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० सं० हि०; पृ० २०८; व० १९३६, आ० द्वितीय।

विमल पुराण—ले० ब्र० कृष्णदास, अनु० श्रीलाल काव्य तीर्थ, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता; भा० सं० हि०, पृ० १४३, आ० प्रथम।

विमल पुराण (भाषा)—ले० ब्र० कृष्णदास, अनु० श्री लाल का० ती०; प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०; पृ० १२६, आ० द्वितीय.

विमल पुष्पांजली (कविता)—ले० मैनाबाई, प्र० शम्भूलाल दयाचन्द्र भा० हि०, पृ० १६ ।

विमल श्रद्धांजली—ले० मैनाबाई, प्र० दयाचन्द दुखिया अलाहाबाद, भा० हि,० पृ० १६, व० १९४७,

विरोध परिहार—ले० पं० राजेन्द्र कुमार, प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन संघ अम्बाला; भा० हि०, पृ० ४४८, व० १९३८, आ० प्रथम।

विवाह और हमारी समाज—ले० पंडिता ललिता कुमारी, प्र० सुशीला देवी पाटणी जयपुर, भा० हि०, पृ० ४१, व० १९४०, आ० प्रथम।

विवाह का उद्देश्य—ले० पं० जुगल किशोर मुख्तार; भा० हि०, पृ० ३६, व० १९१६।

विवाह के समय पुत्री को शिक्षा और आशीर्वाद—ले० ज्योति प्रसाद जैन, भा० हि०, पृ० १५, व० १९३०।

विवाह क्षेत्र प्रकाश—ले० पं० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जौहरी मल जैन सर्राफ़ देहली, भा० हि०, पृ० १७५; व० १९२५, आ० प्रथम।

विवाह समुद्देय—ले० पं० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० साहू मुकन्दी लाल नजीबाबाद; भा० हि०, पृ० ४० व० १९२२, आ० प्रथम।

विवाह समुद्देश—ले० पं० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मंदिर सरसावा, भा० हि० ।

विश्वप्रेम और सेवाधर्म—ले० अोध्यया प्रसाद गोयलीय, प्र० मामनचंद प्रेमी देहली, भा० हि०, पृ० ३२; व० १९२८, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विश्व लोचन कोष—ले० श्रीधर सेनाचार्य, अनु० नन्दन लाल शर्मा, प्र० सेठ नाथारंगजी बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ४२१, व० १९१२, आ० प्रथम।

विशाल जैन संघ—ले० बा० कामता प्रसाद, प्र० परिषद पब्लिशिंग हाउस बिजनौर, भा० हि;० पृ ७५, व ० १९२९, आ० प्रथम।

विष्णुकुमार—ले० पं० जुगमन्दिरदास, प्र० स्वयं हिम्मतनगर (आगरा), भा० हि०, पृ० ४७, व० १९२८, आ० प्रथम।

विषापहार भाषा—ले० अचलकीर्ति, प्र० जैनधर्मप्रचारकपुस्तकालय देवबंद; भा० हि०; पृ० ४, व० १९०६, आ० प्रथम ।

विषापहार स्तोत्र—ले० धनञ्जय कवि; भा० सं०, (पंच स्तोत्र तथा ग्रन्थमाला सप्तम् गुच्छक में प्र०)

वीतराग स्तोत्र—ले० हेमचन्द्र, भा० सं०, पृ० ७७, व० १९१४।

वीर अकलंक नाटक—ले० पं० सिद्धसैन व गुणभद्र, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० ७५, व० १९३७, आ० द्वितीय।

वीर आह्वान—ले० धन्यकुमार जैन, प्र० दिग० जैन छात्र हितकारिणी सभा सागर, भा० हि०, व० १९४०।

वीर गुटका—संग्र० संपा० आनन्ददास जैन, प्र० धर्मपत्नी नन्हेमल देहली, भा० हि०, पृ० ३५०, व० १९४१, आ० प्रथम ।

वीरचन्द्राघव जी गाँधी का जीवन चरित्र—भा० हि०, पृ० ३९ व० १९१८।

वीर चरित्र—(पद्य) ले० राजधरलाल जैन; संपा० प्र० सिंघई मिट्ठनलाल केवलारी, भा० हि०, व० १९२६, आ० प्रथम।

वीर जीवन—ले० लज्जावती विशारद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० ११७, व० १९४१, आ० प्रथम।

वीर निर्वाण पूजा—ले० दुलीचंद जैन; प्र० जैन पाठशाला सतना, भा० हि०, पृ० १०, व० १९२७, आ० प्रथम।

वीर पाठावली—ले० बा० कामताप्रशाद, प्र० मूलचंद किसनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० ११४, व० १९४२, आ० द्वितीय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीर प्रभु के नाम खुली चिट्ठी—ले० लोकमणि जैन, प्र० तारण समाज, भा० हि०, पृ० २८, व० १९४० ।

वीर पुष्पाँजली—ले पं० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० प्रेममंदिरआरा, भा० हि० (पद्य), पृ० ५६, व० १९२१, आ० प्रथम ।

वीरमाला—संग्र० पं० आनंददास जैन, प्र० मुल्तानसिंह देहली, भा० हि०, पृ० ४८, व० १९४० ।

वीर वन्दना—संग्र० संपा० लक्ष्मीचन्द जैन एम० ए०, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ४४, व० १९३३, आ० प्रथम ।

वीर स्तुति—ले० अज्ञात, भा० हि० ।

वीर सन्देश—ले० दयाराम जैन, प्र० वर्द्धमान साहित्य मन्दिर लखनऊ, भा० हि०, पृ० १६ ।

वृद्धविवाह—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० २६, व० १९१४ ।

वृन्दावन विलास—ले० कविवर वृन्दावन, संपा० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैनहितैषीकार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १५०, व० १९०८, आ० प्रथम ।

वृहत् कथा कोष—ले० हरिषेणाचार्य, संपा० डा. ए. एन. उपाध्ये, प्र० भारतीयविद्याभवन बंबई, भा० सं०, पृ० ४०२, व० १९४३, आ० प्रथम ।

वृहज्जिनवाणी संग्रह—संपा० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन ग्रंथकार्यालयकलकत्ता, भा० हि० सं०, पृ० ७६४, व० १९४१, आ० आठवीं ।

वृहज्जैन नित्य पाठ संग्रह—संपा० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था कलकत्ता, भा० हि० सं०, व० १९२९ ।

वृहज्जैन शब्दार्णव (प्रथम खंड)—ले० संपा० मास्टर बिहारीलाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्व, प्र० मैंनेजर स्वल्पार्घ ज्ञान रत्नमाला बाराबंकी, भा० हि०, पृ० २८६, व० १६२५, आ० प्रथम ।

वृहज्जैन शब्दार्णव (द्वितीय खंड)—संग्र० मा० विहारीलाल, संपा० शीतलप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि० पृ० ३६१, व० १६३४, आ० प्रथम ।

वृहज्जैनेन्द्र यज्ञ—ले० मुनीन्द्रसागर, प्र० जिनमति बाई परनवाड़ा, भा० सं० हि०, पृ० ६८, आ० प्रथम ।

वृहत् द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचंद्राचार्य, सं० टी० ब्रह्मदेव, हि० अनु० जवाहरलाल, संपा० मनोहरलाल, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० २१८, व० १६१६, आ० द्वितीय ।

वृहन्नय चक्रम—ले० माइल्लधवल, भा० प्रा० सं०, पृ० ११२ (नय चक्रादि संग्रह में प्र०)

वृहत् निर्वाण विधान और त्रैलोक्य जिनालय विधान—ले० कवि बखतराय, संपा० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० मूलचंद किसनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० ६२, व० १६२२, आ० प्रथम ।

वृहत्विमलनाथ पुराण—ले० ब्र० कृष्णदास, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि० पृ० ३६६, व० १६३४, आ० प्रथम ।

वृहत्सम्मेदशिषर महात्म्य—ले० ब्र० मनसुखसागर, संपा० पं० मूलचंद, प्र० रघुनाथप्रशाद ऐत्मादपुर, (आगरा), भा० हि०, पृ० १८२, व० १६०६, आ० प्रथम ।

वृहत्सर्वज्ञ सिद्धि—ले० अनन्तकीर्ति आचार्य, भा० सं०, पृ० ७५, व० १६१५ ।

वृहत्स्वंयभू स्तोत्र (मूल) ले० समन्तभद्राचार्य, भा० स०, पृ० १४, व० १६०५ ।

वृहत्स्वयंभूस्तोत्र—ले० समन्तभद्राचार्य; अनु० पं० मुन्नालाल; प्र० प्यारे लाल पंचरत्नखुरई; भा० सं० हिन्दी, पृ० ७६, व० १६१६, आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बृहत्स्वयंभूस्तोत्र—ले० समन्तभद्राचार्य, टी० ब्र० शीतल प्रसाद; प्र० दि० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० सं० हि० पृष्ठ ३१६, व० १९३२, आ० प्रथम।

बृहत्स्वयंभूस्तोत्र—ले० समन्तभद्राचार्य, अनु० दीपचंद पाडंया, प्र० अर्हत्प्रवचन साहित्य मंदिर केकड़ी (अजमेर); भा० सं० हि०, पृ० ४०; व० १९४० आ० प्रथम।

बृहत्सामायिकपाठ—संपा० अनु० प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० सं० प्रा० हि०, पृ० १९६, व० १९३९।

वेद क्या भगवद्वाणी हैं—ले० सोऽहं शर्मा, प्र० जैन शास्त्रार्थ संघ अम्बाला; भा० हि० पृ० १८, व० १९३३, आ० दूसरी।

वेद पुराणादि ग्रंथों में जैन धर्म का अस्तित्व—ले० पं० मक्खनलाल प्रचारक; प्र० स्वयं देहली, भा० हि०, पृ० ६०; व० १९३० आ० प्रथम।

वेद मीमांसा—ले० पं० पुत्तुलाल, प्र० ब्र० शीतल प्रसाद सूरत, भा० हि० पृ० ६६; व० १९१७, आ० प्रथम।

वेद समालोचना—ले० पं० राजेन्द्र कुमार, प्र० चम्पावती जैन पुस्तक माला अम्वाला, भा० हि०, पृ० ११६, व० १९२०; आ० प्रथम।

वेदों में विकार—ले० स्वा० कर्मानंद, प्र० शास्त्रार्थ संघ अम्बाला, भा० हि० पृ० २३, व० १९३६, आ० प्रथम।

वैदिक ऋषिवाद—ले० स्वा० कर्मानंद, प्र० शास्त्रार्थ संघ अम्बाला, भा० हि०, पृ० ९६, व० १९३६, आ० प्रथम।

वैद्यसार—ले० पूज्यपाद स्वामी, अनु० संपा० सत्यंधर का० ती०; प्र० जैन सिद्धान्तभवन आरा, भा० सं० हि०, पृ० ११० व० १९४२ आ० प्रथम।

वैराग्य भावना—ले० भूधरदास जी, भा० हि०, पृ० ८, व० १९०३।

वैराग्य शतक—ले० गुणविजय आचार्य, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हि०, पृ० १५, व० १९३८, आ० प्रथम।

वेश्यानृत्यस्तोत्र—ले० पं० जुगल किशोर मुख्तार, भा० हि० सं०, पृ० १६, व० १९८८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैराग्य मणिमाला—ले० श्री चन्द्राचार्य, भा० सं०; (ग्रन्थत्रयी तथा तत्वानुशासनादि संग्रह में प्र०)

शकुन सिद्धान्त दर्पण—संपा० सुमेरचंद उन्नीषु, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भाषा हिन्दी; पृ० ५६, व० १९३८, आ० प्रथम।

शब्दानुशासनम्—ले० शाकटायनाचार्य, सं० टी० अभय चन्द्र सूरि (प्रक्रिया संग्रह), संपा० पं० ज्येष्ट राम मुकुन्द जी शर्मा, प्र० पन्नालाल जैन बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ४८८, व० १९०७।

शब्दानुशासनम्—ले० शाकटायनाचार्य; सं० टी० यक्षवर्म (चिंतामणि वृत्ति), संपा० पंडित मुन्नालाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था काशी, भा० सं० हि०, पृ० ८०, व० १९२८।

शब्दार्णव चन्द्रिका—ले० सोमदेव सूरि, संपा० श्रीलाल जैन; प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था काशी भा० संस्कृत, पृ० २६९, व० १९१५, आ० प्रथम।

श्वेताम्बर मत समीक्षा—ले० पं० अजित कुमार शास्त्री, प्र० पं० वंशीधर शोलापुर, भा० हि०, पृ० २७६, व० १९३०, आ० प्रथम।

श्रद्धा ज्ञान और चारित्र—ले० चम्पतराय बैरिस्टर, अनु० कामता प्रसाद, प्र० साहित्य मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ११५, व० १९३२, आ० प्रथम।

श्रृंगार वैराग्य तरंगिणी—ले० सोमप्रभाचार्य, प्र० जगजीवन सुन्दर श्रावक भा० सं० पृ० १९, व० १८८५; आ० प्रथम।

श्रमण नारद—ले० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३० व० १९१८।

श्रमण भगवान महावीर—लेखक मुनि कल्याण विजय, भा० हि०, पृ० ...२, व० १९४१।

श्रावक धर्म प्रकाश—लेखक सूर्य सागर आचार्य प्र० श्रीमंत सेठ ऋषभ कुमार खुरई, भा० हि०, पृ० ११०, व० १९३१, आ० द्वितीय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रावक धर्म दर्पण—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर, भा० हि०, पृ० ४५० वर्ष १९२४।

श्रावक धर्म संग्रह—लेखक पंडित दरयावसिंह, प्र० स्वयं इन्दौर, भा० हि०, पृ० ३०४, व० १९१५, आ० प्रथम।

श्रावक नियमावली—लेखक नेमिसागर ऐलक, प्र० श्राविका संघ देहली, भा० हि०, पृ० १६, आ० प्रथम।

श्रावक प्रतिक्रमण—अनु० नन्दनलाल वैद्य, प्र० मूल चन्द किशन दास कापड़िया सूरत, भाषा हि०, पृ० ६४ व० १९२४, आ० प्रथम।

श्रावक प्रति क्रमणसार—ले० कुन्थसागर आचार्य, प्र० आचार्य कुंथसागर ग्रंथमाला शोलापुर, भा० सं० हि० पृ० १०६; व० १९४२, आ० प्रथम।

श्रावक वनिता बोधिनी—लेखक जयदयालमल्ल, प्र० स्वयं सन्तोर (देहली), भा० हि० पृ० १४८, व० १९०८; आ० दूसरी।

श्रावकवनिता बोधिनी—लेखक जय दयाल मल्ल, प्र० जीवाकोर दाई महिला ग्रन्थ भंडार बम्बई, भा० हि०, पृ० १०६, व० १९३१, आ० छटी,

श्रावक वनिता बोधिनी—लेखक प्र० भारतीय दिग० जैन महिला परिषद बम्बई, भा० हि०, पृ० १२०; व० १९२०, आ० चतुर्थ:।

श्रावकाचार—लेखक अमित गति आचार्य, हि० टी० पंडित भागचन्द, प्र० मुनि अनन्त कीर्त्ति दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भाषा सं० हिन्दी, पृ० ४.. वर्ष १९२२, आ० प्रथम।

श्रावकाचार (प्रथम भाग)—लेखक गुणभूषण भट्टारक; अनु० ... नन्दनलाल वैद्य; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा सं० हिन्दी; पृष्ठ ... वर्ष १९२५, आ० प्रथम।

श्रावका चार (द्वितीय भाग)—लेखक गुणभूषण भट्टारक; अनु० ... नन्दन लाल वैद्य; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ... व० १९२५, आ० प्रथम।

श्रावका चार को सच्चो कहानियां—अनु० संपा० भुवनेन्द्र विश्व, प्रकाशक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृ० ६६; व० १९३६, आ० प्रथम ।

श्राविका धर्म दर्पण—लेखक बाबू सूरज भान वकील, प्र० कुलवंतराय जैन भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५७, व० १९३९; आ० प्रथम ।

श्राविका धर्म दर्पण—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६४, व० १९२४ ।

श्री देवाधि देव रचना—लेखक कवि हरजसराय, अनु० संपा० श्रीलाल जैन, प्र० गुरुदत्तमल पन्नालाल कसूर, भा० सं० हिन्दी पृ० ८०; व० १९१५, आ० प्रथम ।

श्रीपाल—लेखक कन्हैलालाल जैन, भा० हि०, पृ० १३८, व० १९३० ।

श्रीपाल चरित्र (पद्य)—लेखक कवि परमल्ल, अनु० मास्टर दीपचंद, प्र० मूलचंद किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०; पृष्ठ १७४; व० १९१७, आ० द्वितीय ।

श्रीपाल चरित्र समालोचना—लेखक वाडीलाल मोतीलाल शाह, प्रकाशक चन्द्रसेन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० २२, व० १९१८, आ० प्रथम ।

श्रीपाल नाटक—प्र० दिग० जैन उपदेशक सोसाइटी देहली, भा० हि०, पृ० १५२, व० १९२३, आ० प्रथम ।

श्री धवल—देखो 'षटखंडागम्' ।

श्री पाल पुराण (सचित्र)—ले० कवि परिमल्ल, संपा० परमानंद सिघई, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १७४, व० १९३५ आ० प्रथम ।

श्रीपुर पार्श्वनाथस्तोत्र—लेखक विद्यानन्द स्वामी, भा० सं०, पृ० ३१, व० १९२० ।

श्रीमद्दयानन्द परिचय—लेखक स्वा० कर्मानंद, प्र० दिग० जैन शास्त्रार्थ संघ ग्रन्थमाला, भा० हि०, पृ० ६८, व० १९३६ आ० प्रथम ।

श्रुत भक्ति—लेखक पूज्यपाद; भा० सं० हि०, (दशभक्त्यादि संग्रह में प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रुत पंचमी क्रिया (श्रुतावतारादि)—भा० सं०, पृ० २८ व० १६०५।

श्रुत स्कंध—ले० ब्रह्म हेम चन्द्र, भा० प्रा०, (तत्त्वानु शासनादि संग्रह में प्र०)

श्रुतस्कंध विधान—ले० पं० पन्नालाल दूनी वाले, प्र० मूलचंद किसनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० ३२ व० १६२७ श्रा० प्रथम।

श्रुतावतार कथा और श्रुतस्कंध विधानादि—संग्रह लालाराम जैन, प्र० जैन हितैषी कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४८, व० १६०८, श्रा० प्रथम।

श्रेणिक चरित्र—लेखक शुभचंद्र भट्टारक, अनु० पंडित गजाधर लाल, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३१६, व० १६२८ श्रा० प्रथम।

श्रेणिक चरित्रसार—लेखक ब्रह्मनेमिदत्त, अनु० उदय लाल काशलीवाल, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४२, श्रा० प्रथम।

श्रुतावतार—लेखक इन्द्रनन्दि, भा० सं०, (तत्त्वानु शासनादि संग्रह में प्र०)

श्रुतावतार—लेखक विबुध श्रीधर, भाषा सं०, (सिद्धान्त सारादि संग्रह में प्र०)।

शास्त्रोच्चार भाषा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, भा० हि० व० १८६८।

शान्ति कथा—ले० द्वारकाप्रसाद जैन, प्र० सागरमल चम्पालाल बंगलौर, भा० हि०, पृ० १४, व० १६४१, श्रा० द्वितीय।

शान्तिनाथ चरितम्—ले० भावचन्द्र, भा० सं०; पृ० १६६, व० १६१७ अहमदाबाद।

शान्तिनाथ पुराण—ले० सकलकीर्ति भट्टारक, अनु० पं० लालाराम, प्र० सिंघई दुलीचन्द पन्नालाल देवरी, भा० हि०; पृ० ४०७, व० १६३६ श्रा० प्रथम।

शान्तिनाथ पुराण—ले० सकलकीर्ति भट्टारक; अनु० पं० लालाराम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० ३१२; व० १९३६, आ० तृतीय।

शान्ति भक्ति—ले० पूज्यपाद, भा० सं० हि०, (दशभ क्त्यादि संग्रह पृ.प्र०)

शान्ति महिमा – ले० मोतीलाल, भा० हि०, पृ० ९२, व० १९१८।

शान्ति सागर चरित्र—ले० पं० वंशीधर, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० हि०, पृ० १६०, व० १९३२।

शान्ति सागराचार्य महाराज का जीवन चरित्र—संग्रा० प्र० गुलशनराय देहली, भा० हि०, पृ० ४८, व० १९३२, आ० प्रथम।

शान्त साधना (पद्य संग्रह)—प्र० चन्द्रकुमार शास्त्री मुजफ्फरनगर, भा० हि०, पृ० २४, व० १९३५, आ० प्रथम।

शान्तिसुख वाटिका (भाग १)—ले० पं० भूधरदास, प्र० नत्थनलाल जैन देहली, भा० हि०, पृ० १६, आ० प्रथम।

शान्तिसुख वाटिका (भाग २) – ले० पं० भूधरदास, प्र० नत्थनलाल जैन देहली; भा० हि०, पृ० १६।

शान्तिसुधा सिन्धु – ले० कुंथसागर आचार्य, टी० पं० लालाराम, प्र० चैनसुखदास गंभीरमल पाड्यां कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० ४२२, व० १९४१।

शान्ति सोपान (परमानन्द स्तोत्र आदि पांचपाठ संग्रह)—अनु० ब्र० ज्ञानानन्द, प्र० अहिंसा प्रचारिणी सभा काशी, भा० हि०, पृ० ११०, व० १९२२; आ० प्रथम।

शान्तिमार्ग—ले० दयाचन्द्र जैन, भा० हि०, पृ० ४०, व० १९१८।

शान्ति वैभव—ले० दयाचन्द्र जैन, भा० हि०, पृ० ६०, व० १९१६।

शारदाष्टक—ले० पं० बनारसीदास, भा० हि०, व० १९०७।

शास्त्रसार समुच्चय—ले० माघनन्दि योगीन्द्र, टी० शीतल प्रसाद वैद्य, प्र० टीकाकार स्वयं देहली, भा० सं० हि०, पृ० ६०, व० १९२४, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शास्त्रसार समुच्चय (मूल)—ले० माघनन्दि योगीन्द्र, (सिद्धान्त सारादि संग्रह में प्र०)

शास्त्रार्थ अजमेर—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ८०, व० १९१३, आ० प्रथम।

शास्त्रार्थ अजमेर का पूर्वरंग—प्र० चन्द्रसेन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० १२१, व० १९१२; आ० प्रथम।

शास्त्रार्थ नजीबाबाद—प्र० जैन ज्ञानसमाज सर्वतनगर, भा० हि०, पृ० ४९, व० १९१७, आ० प्रथम।

शास्त्रार्थ पानीपत (प्रथम भाग)—प्र० दिग० जैन संघ अम्बाला; भा० हि०, पृ० १५२, व० १९३४, आ० प्रथम।

शास्त्रार्थपानीपत (द्वितीय भाग)—प्र० दिग० जैन संघ अम्बाला, भा० हि०, पृ० १७९, व० १९३४; आ० प्रथम।

शास्त्रार्थ फीरोजाबाद—भा० हि०, पृ० ५१, व० १९१४, आ० चतुर्थ।

शिक्षा चन्द्रिका—ले० पं० शिवचन्द्र, प्र० स्वयं देहली, भा० हि०, पृ० ५६, व० १८७४, आ० प्रथम।

शिक्षा जकड़ी—ले० कवि भूधरदास, प्र० मुंशी अमनसिंह देहली, भा० हि०; पृ० ६, आ० प्रथम।

शिक्षा पत्री (पद्य)—ले० पं० मेहरचन्द, प्र० स्वयं देहली, भा० हि०, पृ० १२, व० १८९४,—(शेख सादी के पन्पदनामे का हि० अनु०)

शिक्षाप्रद शास्त्रीय उदाहरण—ले० पं जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० २२, आ० प्रथम।

शिक्षाप्रद शास्त्रीय उदाहरण की समालोचना—ले० मक्खनलाल प्रचारक, प्र० जैन पंचायत देहली, भा० हि०, पृ० ४६, व० १९२० आ० प्रथम।

शिखर महात्म्य—ले० मुन्नालाल, प्र० जैन धर्म प्रचारक पुस्तकालय देवबंद; भा० हि०, पृ० ११; व० १९११, आ० द्वितीय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिखर महात्म्य—भा० हि०, पृ० १४ ।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक १)—ले० मास्टर शिवरामसिंह प्र० स्वयं ...क, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९३८, आ० तृतीय ।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक २)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं ...क, भा० हि० पृ० ३२, व० १९३८, आ० तृतीय ।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक ३)—ले० मास्टर शिवरामसिंह; प्र० स्वयं ...क, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९३४; आ० द्वितीय ।

शिवराम पुष्पांजली (अंक ४)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं ...क, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९३३, आ० प्रथम ।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक ५)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं ...क, भा० पृ० ३२ हि०, आ० प्रथम ।

शिवराम पुष्पांजली (अंक ६)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं ...क, भा० हि०, पृष्ठ ३२, व० १९३६, आ० प्रथम ।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक ७)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं ...क, भा० हिंदी, पृष्ठ ३२, व० १९३७, आ० प्रथम ।

शिवराम पुष्पांजली (अंक ८)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं ...क, भा० हिंदी, पृष्ठ २०, व० १९४४, आ० प्रथम ।

शिशुबोध जैन धर्म (प्रथम भाग)—प्र० दुलीचंद पन्नालाल परवार ...कत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ८ ।

शिपरमहात्म—प्र० बा० सूरजभान वकील; भा० हिन्दी, व० ...८ ।

शीतलनाथ स्तोत्र (पद्य)—ले० जीयालाल ज्योतिषरत्न, प्र० मूलचंद ...किसनदास कापड़िया सूरत, भा० हिन्दी, पृष्ठ २०; व० १९२७, आ० प्रथम ।

शीतल सुमन—ले० अज्ञात, भा० हिन्दी ।

शील और भावना—ले० मुंशीलाल एम. ए., प्र० स्वयं, भा० हिन्दी; ...२४, व० १९०९, आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शील कथा—ले० कवि भारामल्ल; प्र० जैन ग्रंथरत्नाकर कार्यालय बम्बइ, भा० हिन्द्री, पृष्ठ ७२, व० १६१५ ।

शील कथा—ले० कवि भारामल्ल, प्र० दुलीचंद परवार कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ६३, आ० प्रथम ।

शील कथा (सचित्र)—ले० कवि भारामल्ल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ६४, आ० प्रथम ।

शील कथा—ले० कवि भारामल्ल, भा० हिन्दी, पृष्ठ २४ ।

शील कथा—ले० कवि भारामल्ल, प्र० नाथूराम लमेचू मुंडावरा, भा० हिन्दी, पृ० ६१, व० १८६६, आ० प्रथम ।

शील कथा- ले० कवि भारामल्ल, प्र० ज्ञानचंद जैनी लाहोर, भा० हिन्दी, पृष्ठ ६४, व० १६०८ ।

शील पाहुड़ (शील प्राभृत)—ले० कुन्दकुन्द, (अष्ट पाहुड़ व षट प्राभृतादि संग्रह में प्र०)

शील महात्म्यादि संग्रह (पद्य)—ले० कवि वृन्दावन, प्र० जानकी बाई आरा, भा० हिन्दी, पृष्ठ ६, व० १६००, आ० प्रथम ।

शील महिमा—ले० प्रेमी सहारनपुरी, प्र० प्रेम भवन पुस्तकालय सहारनपुर, भा० हिन्दी पृष्ठ २४, आ० प्रथम ।

शुद्ध द्रव्यों की आकृतियाँ—ले० पं० माणिकचंद्र कौन्देय, प्र० चतरसेन सहारनपुर, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३०, व० १६४० ।

शुद्धि—ले० बाबू सूरजभान वकील, प्र० जैन संगठन सभा देहली, भा० हिन्दी पृष्ठ १६, व० १६२५ ।

शुद्धि आन्दोलन परशास्त्रीय विचार—ले० पं० मक्खनलाल, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० हिन्दी, पृ० ३२, व० १६२६ ।

शूद्रमुक्ति—ले० अज्ञात, भा० हि० पृष्ठ ३१, व० १६२० ।

षटखंडागमः (प्रथमखंड, भाग १)—ले० पुष्पदंत भूतबलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी (धीवल); हि० अनु० संपा० प्रो० हीरालाल जी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

…चंद पं० हीरालाल; प्र० श्रीमंत सेठ लक्ष्मीचंद शितावराय जैन साहित्यो-द्धारक फंड कार्यालय अमरावती, भाषा प्रा० सं० हिन्दी, पृ० ४३८, वर्ष …३९; आ० प्रथम।

षटखंडागमः (खंड १, भाग २)—ले० पुष्पदंत भूतबलि आचार्य, टी० …सेन स्वामी, हिन्दी अनु० संपा० प्रो० हीरालाल पं० फूलचन्द पं० हीरालाल; …श्रीमंत सेठ लक्ष्मीचन्द शिताबराय जैन साहित्योद्धारक फंड अमरावती, …प्रा० सं० हिन्दी, पृ० ४४५, व० १९४०, आ० प्रथम।

षटखंडागमः (खंड १; भाग ३)—ले० पुष्पदंत भूतबलि आचार्य, टी० …सेन स्वामी (श्रीधवल), हि० अनु० संपा० प्रो० हीरालाल पं० फूलचंद …हीरालाल प्र० श्रीमंत सेठ लक्ष्मीचंद शिताबराय जैन साहित्योद्धारक फंड …र्यालय अमरावती, भा० प्रा० सं० हिन्दी, पृ० ४८८; व० १९४१, आ० …थम।

षटखंडागमः (खंड १, भाग ४)—ले० पुष्पदंत भूतबलि आचार्य, टी० …सेन स्वामी (श्रीधावल), हि० अनु० संपा० प्रो० हीरालाल व पं० हीरालाल …स्त्री, प्र० श्रीमंत सेठ लक्ष्मीचंद शिताबराय जैन साहित्योद्धारक कार्यालय …रावती; भा० प्रा० सं० हिन्दी; पृ० ४८८, व० १९४२, आ० प्रथम।

षटखंडागमः (खंड १, भाग ५)—ले० पुष्पदंत भूतबलि आचार्य, टी० …रसेन स्वामी (श्रीधवल), हि० अनु० संपा० प्रो० हीरालाल पं० फूलचन्द …० हीरालाल, प्र० श्रीमंत सेठ लक्ष्मीचन्द शिताबराय जैन साहित्योद्धारक फंड …र्यालय अमरावती; भा० प्रा० सं० हिन्दी, पृ० ३५०, व० १९४२, आ० …थम।

षटखंडागमः (खंड १, भाग ६)—ले० पुष्पदंत भूतबलि आचार्य, टी० …रसेन स्वामी (श्रीधवल), हि० अनु० संपा० प्रो० हीरालाल पं० बालचन्द्र, …० श्रीमंत सेठ लक्ष्मीचन्द शिताबराय जैन साहित्योद्धारक फंड कार्यालय …मरावती, भा० प्रा० सं० हिन्दी, पृ० ५९६, व० १९४३, आ० प्रथम।

षटखंडागमः (खंड २)—ले० पुष्पदंत भूतबलि आचार्य टी० वीरसेन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वामी (श्री वावब), संपा० प्रो० हीरालाल पं० फूलचन्द पं० हीरालाल; प्र० श्रीमंत सेठ लक्ष्मीचन्द शितावराल जैन साहित्योद्धारक फंड कार्यालय अमरावती, भा० प्रा० सं० हिन्दी; पृ० ५६४, व० १९४५, आ० प्रथम।

षटद्रव्य दिग्दर्शन—ले० दयाचन्द्र गोयलीय, प्र० जैन धर्म प्रचारिणी सभा काशी, भा० हि०, पृ० १६, व० १९१३।

षटपाहुड (सं० छाया व हि० अनु० सहित)—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, प्र० बा० सूरजभान वकील देववंद, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० १४०, व० १९१०, आ० प्रथम।

षटप्राभृतादि संग्रह—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, सं० टी० श्रुतसागर सूरि, संपा० पं० पन्नालाल सोनी, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रंथमाला बम्बई भा० प्रा० सं०, पृ० ४९२, व० १९२०, आ० प्रथम।

षोडश संस्कार—संपा० पं० लालाराम, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, भाषा हि०, पृ० १४७, व० १९२४, आ० प्रथम।

षोडस संस्कार—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हि०, पृ० ७२।

सच्चा जिनवाणी संग्रह—संपा० पंडित कस्तूर चंद, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी संस्कृत, पृ० ७६१; आ० पन्द्रहवीं।

सच्चा सुख—लेखक चम्पराय बैरिस्टर, प्र० दिग० जैन परिषद कार्यालय बिजनौर, भा० हि०, पृ० २३, व० १९२५।

सच्ची प्रभावना—लेखक कुँवर दिग्विजय सिंह, भा० हि०, पृ० ४४, व० १९१०।

सच्चे सुख का उपाय—लेखक ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन मालवा प्रान्तिक सभा बड़नगर, भा० हि०, पृष्ठ २९, व० १९१६, आ० प्रथम।

सज्जन चित्त वल्लभ—लेखक मल्लिषेणाचार्य, अनु० पंडित मेहरचंद, प्र० मुन्शी अमनसिंह सोनीपत, भा० सं० हिन्दी, पृष्ठ ६८, वर्ष १८९२, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सज्जन चित्तवल्लभ—लेखक मल्लिषेणाचार्य; प्रकाशन जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २९, व० १९१२, आ० प्रथम।

सज्जन चित्त वल्लभ—लेखक मल्लिषेणाचार्य, प्रकाशक नाथूराम लमेचू डुंगरवरा, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३०, व० १८९९ आ० प्रथम।

सती अंजना सुन्दरी नाटक—लेखक ज्योति प्रशाद, संपा० मंगल सैन, प्रकाशक ब्रतरसैन जैन मुजफ्फर नगर, भा० हिन्दी, पृष्ठ १७८, व० १९३९, आ० द्वितीय।

सती चन्दन बाला नाटक—लेखक शेरसिंह नाज, प्रकाशक प्यारे लाल देवी सहाय देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २०७, व० १९२७, आ० प्रथम।

सती पुष्पलता (सचित्र)—लेखक मुन्नालाल समगोरिया, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता; भाषा हिन्दी, पृष्ठ १०२, व० १९४१, आ० द्वितीय।

सती मनोरमा—लेखक डा० मित्र सैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० ७१, व० १९३७, आ० प्रथम।

सती सीता—लेखक पूनम चन्द्र सेठी; संपा० विद्या कुमार व राजमल लोढा प्रकाशन जैन धर्म प्रचारक मंडल अजमेर, भाषा हिन्दी, पृ० १४, व० १९३४, आ० प्रथम।

सत्तास्वरूप—लेखक पंडित भागचंद्र, प्रकाशक लल्लूमल सेठा गया, भा० हिन्दी, पृ० ८२, व० १९३६, आ० प्रथम।

सत्य घोष नाटक—लेखक बाबू ज्योतिप्रसाद, प्रकाशक दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हिन्दी, पृ० ८६, व० १९३८, आ० प्रथम।

सत्यमार्ग—लेखक बाबू कामता प्रशाद, प्रकाशक वीर कार्यालय बिजनौर, भा० हि०, पृ० ४४०, व० १९२६, आ० प्रथम।

सत्य सं.ति—लेखक पंडित दरबारी लाल सत्य भक्त, भा० हिन्दी, पृष्ठ १९८, व० १९३८।

सत्यामृत (दृष्टि कांड)—लेखक दरबारी लाल सत्य भक्त, प्रकाशक सत्याश्रम वर्धा, भा० हि०, पृ० २१०, व० १९४०, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्यामृत (आचार कांड)– लेखक दरबारी सत्यभक्त, प्रकाशक सत्याश्रम वर्धा, भा० हिन्दी, पृष्ठ २३०, आ० प्रथम।

सत्यामृत (व्यवहार कांड)— लेखक दरबारीलाल सत्यभक्त, प्रकाशक सत्याश्रम वर्धा, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३५१, व० १९४५, आ० प्रथम।

सत्यार्थ दर्पण–लेखक पंडित अजित कुमार; प्रकाशक अकलंक प्रेस मुल्तान, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३५०, व० १९३७, आ० द्वितीय।

सत्यार्थ दर्पण—लेखक पंडित अजित कुमार, प्रकाशक चम्पावती पुस्तक माला अम्बाला, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३३५, व० १९३१, आ० द्वितीय।

सत्यार्थ दर्पण—लेखक पंडित अजित कुमार, प्रकाशक लाल देवीसहाय फ़ीरोजपुर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १५३, आ० प्रथम।

सत्यार्थ निर्णय—लेखक पंडित अजित कुमार, प्रकाशक दिग० जैन संघ मथुरा, भा० हि०, पृ० ३५६, व० १९४३, आ० प्रथम।

सत्यार्थ प्रकाश और जैन धर्म—लेखक स्वामी कर्मानन्द, भा० हिन्दी।

सत्यार्थ यज्ञ—लेखक कविमनरंगलाल, प्रकाशक अजिताश्रम लखनऊ भा० हि०, पृ० १४४, व० १९१३, आ० प्रथम पृ० १५५; व० १९२५, आ० द्वितीय।

सत्साधु स्मरण मंगल पाठ–संक० संपा० पंडित जुगल किशोर मुख्तार प्रकाशक वीर सेवा मंदिर सरसावा, भाषा सं० प्रा० हिन्दी, पृष्ठ ७७, व० १९४४, आ० प्रथम।

स्तुति प्रार्थना–लेखक संपा० नाथूराम प्रेमी, भाषा हिन्दी, पृ० १५, व० १९२९।

स्तुति प्रार्थना संग्रह–लेखक पंडित जुगल किशोर मुख्तार; बा० जोती प्रसाद; मुंशी राम प्रसाद, प्रकाशक जौहरी मल सर्राफ़ देहली, भाषा हिन्दी, पृ० १६।

स्तोत्र शतक–संपा० प्र० चन्द्रसेन जैन वैद्य इटावा, भा० सं० हि०, पृ० ५८, व० १९०४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain: Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रीगान जैन भजन पच्चीसी—लेखक पंडित न्यामतसिंह, प्र० स्वयं हिसार, भा० हि०, पृ० १६; व० १९१३, आ० तीसरी।

स्त्री मुक्ति—भा० हि०, पृ० ३२; व० १९१९।

स्त्री शिक्षा—लेखक पन्नालाल वाकलीवाल, प्र० गंगा विष्णु श्री कृष्णदास बम्बई, भा० हि०; पृ० ४५, व० १९०१।

सत्यासत्य निर्णय—लेखक प्रकाशक लाला मुसद्दी लाल निरपुड़ा (मेरठ), भा० हि०।

सत्य का बोल बाला—प्र० दुली चन्द परवार, भा० हिन्दी, पृ० ६४, व० १९३५।

सदाचार शिष्टाचार और स्वास्थ्य—लेखक बा० माई दयाल जैन, भा० हि०; पृ० ७२, व० १९३५।

सदाचार रत्न कोष (रत्न करंड श्रावकाचार)—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० मूलचन्द वत्सल, प्र० साहित्य रत्नालय बिजनौर, भा० हि०; पृ० ३२, व० १९२९, आ० प्रथम।

सदाचारी बालक—प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

सद्गुण पुष्पोद्यान श्रावकाचार—लेखक पं० फुलजारी लाल, प्र० स्वयं पानीपत, भा० हि०, पृ० १८४, व० १९२४; आ० प्रथम।

सद्विचार मुक्तावली (कविता संग्रह)—संपा० चेतनदास जैन; भा० हिन्दी, पृ० ६४।

सद्विचार रत्नावली—लेखक पं० मुन्नालाल समगोरिया; प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३०, व० १९४२, आ० प्रथम।

सन्मार्ग प्रदर्शक—लेखक पं० उमराव सिंह, भा० हिन्दी, पृ० २२

सन्यासी—लेखक भगवत् जैन; प्रकाशक स्वयं, भा० हिन्दी, पृष्ट ९६, व० १९४२, नाटक।

सनातन जैन ग्रंथमाला—प्रथम गुच्छक (१४ ग्रंथों का संग्रह)—संपा० पं० पन्नालाल व वंशीधर, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० प्रा० सं०, पृ० ३०९,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व० १६०५ ।

सनातन जैनधर्म—लेखक चम्पतराय बैरिस्टर, प्र० स्वयं हरदोई; भा० हि०, पृ० ६२; व० १६२४; आ० प्रथम ।

सनातन जैनधर्म—लेखक पं० श्रीलाल, प्र० जैनधर्म प्रचारिणी सभा काशी, भा० हि०; पृ० १५, व० १६१३ ।

सनातन जैनमत—ले० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० प्रेमचन्द जैन देहली, भा० हि०, पृ० ७४, व० १६२७, आ० प्रथम ।

सनातन जैन भजनावली—ले० मंगतराय जैन 'साधु' भा० हि० ।

सप्तऋषि पूजा—ले० पं० स्वरूप चन्द, प्र० केसरी चन्द्र राम करण हैदराबाद, भा० हि०, पृ० ५६, व० १६१५, आ० प्रथम ।

सप्त भंगी तरंगिणी—लेखक पं० विमलदास; संपा० पी. वी. अनंताचार्यर; प्र० संपा० स्वयं कांची; भा० सं०; पृ० ५२; व० १६०१, आ० प्रथम ।

सप्त भंगी तरंगिणी—ले० पं० विमलदास; अनु० ठाकुरप्रसाद शर्मा, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई; भा० सं० हि०; पृ० ६६; व० १६०५ आ० प्रथम ।

सप्त भंगी तरंगिणी—ले० पं० विमलदास; संपा० पं० मनोहरलाल; प्र० परमश्रुत प्रभावकमंडल बंबई भा० सं० हि०; पृ० ६३; व० १६१६; आ० द्वितीय; ।

सप्तमुनि पूजन—लेखक प्यारेलाल पूरनमल, संपा० छेदालाल, प्र० पूरनमल धमशाबाद; भा० हि०, पृ० १६, व० १६३०; आ० प्रथम ।

सप्तव्यसन चरित्र—लेखक सोमकीर्त्ति भट्टारक, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैन ग्रंथरत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि० सं०, पृ० २२५, व० १६१२, आ० प्रथम ।

सप्तव्यसन चरित्र (सचित्र)—लेखक सोमकीर्त्ति भट्टारक; अनु० संपा० परमानंद, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, व० १६३५ आ० प्रथम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सप्तव्यसन (पद्य)—लेखक पं० मूलचन्द्र, भा० हि०, पृ० ८।

सफलता के तीन साधन—प्र० कुंवर मोतीलाल, भा० हि,० पृ० १६०।

सभाष्य तत्त्वार्थाधिगम सूत्र०—लेखक उमास्वामी, हि० अनु० टी. पं० खूबचन्द्र शास्त्री, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० १००; व, १९३२, आ० प्रथम।

समगौरया भजनावली—लेखक मुन्नालाल समगौरया, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३०; व० १९४१ आ० प्रथम।

समदृष्टि के चिन्ह (प्रथम भाग)—लेखक दरबारीलाल सत्यभक्त, प्र० आत्म जागृति कार्यालय ब्यावर भा० हि०, पृ० १२, व० १९३२।

समदृष्टि के चिन्ह (द्वितीय भाग)—लेखक दरबारीलाल सत्यभक्त प्र० आत्मजागृति कार्यालय ब्यावर, भा० हि०, पृ० १०, व० १९३२।

समन्तभद्र का समय और डा० के० बी० पाठक—लेखक पं० जुगल किशोर मुख्तार, भा० हि०।

समय प्राभृत—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, हि० टी० पं० जयचन्द्र (आत्म ख्याति), प्र० जिनवर गंगा साचवरे कारंजा; भा० प्रा० हि०; पृ० ४१६, व० १९०८।

समय प्राभृत—लेखक कुन्दकुन्दा चार्य, टी० पं० जयचन्द्र (आत्म ख्याति), प्र० कलापाभरमप्पा निटवे कोल्हापुर, भा० प्रा० हि०, पृ० ४१६, व० १९०८, आ० प्रथम।

समय प्राभृत—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य; टी० पं० जयचन्द्र (आत्म ख्याति), प्र० सेठ मदनचन्द नेमिचन्द पांड्या किशनगढ़, भा० प्रा० हि०, पृ० ६३८।

समय प्राभृतं—लेखक कुंदकुन्दा चार्य, संपा० पं० गजाधरलाल, प्र० पं० पन्नालाल जैन काशी; भा० प्रा०, पृ० २१६, व० १९१४, आ० प्रथम।

समयसार—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, सं० टी० अमृतचन्द्राचार्य, जयसेनाचार्य, हि० टी० पं० मनोहरलाल, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई; भा० प्रा० सं० हि०, पृ० ५७६, व० १९१९, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समयसार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, हि० अनु० पं० गोपाल सहाय सेठ०, संपा० पं० मनोहरलाल, प्र० जैन ग्रंथ उद्धारक कार्यालय बम्बई, भा० प्रा० हि०, पृ० ६१, व० १९१६, आ० प्रथम।

समयसार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, टी० पं० जयचन्द्र, अनु० पं० मनोहरलाल, संपा० प्र० बा० नानकचन्द एडवोकेट रोहतक, भा० प्रा० हि०, पृ० २५४; व० १९४२, आ० प्रथम।

समयसार कलश—लेखक अमृतचन्द्राचार्य, हि० टी० पांडेरायमल्ल, अनु० संपा० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० सं० हि०, पृ० ३३६, व० १९३१, आ० प्रथम।

समयसार नाटक—लेखक पं० बनारसीदास, प्र० रामचन्द्र नाग, भा० हि०, पृ० १५२, व० १९१४, आ० प्रथम।

समयसार नाटक—लेखक पं० बनारसीदास, प्र० जैन औद्योगिक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १३१, व० १९१५, आ० प्रथम।

समयसार नाटक—लेखक पं० बनारसीदास; प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द; भा० हि०; पृ० १२०; व० १८९८, आ० प्रथम।

समयसार नाटक—लेखक पं० बनारसीदास, अनु० पं० बुद्धिलाल श्रावक, संपा० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ५६४, व० १९३० आ० प्रथम। (अमृतचन्द्राचार्य कृत संस्कृत कलशा युक्त।

समवशरण दर्पण—लेखक अज्ञात, भा० हि०।

समवशरण पाठ (पद्य-सचित्र)—लेखक लाला भगवानदास, प्र० राजमल जैन महमूदाबाद, भा० हि०, पृ० १६२, व० १९३०, आ० प्रथम।

समवशरण पूजन पाठ—लेखक लालजीमल, प्रा० मुन्नालाय जैन अजमेर, भा० हि०, पृ० ८८।

समवशरण स्तोत्र—लेखक विष्णुसेन, भा० सं०, (सिद्धान्त सारादि संग्रह में प्र०)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाज के अधःपतन के कारण और उन्नति के उपाय—लेखक प्र० फूलचन्द जैन आगरा, भा० हि०, पृ० ४४, व १६२० ।

समाज संगठन—लेखक पं० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १६३७, आ० प्रथम ।

समाधि तन्त्र—लेखक आचार्य देवनन्दि पूज्यपाद, सं० टी० प्रभाचन्द्र, अनु० पं० परमानन्द शास्त्री, संपा० पं० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा, भा० सं० हि०, पृ० १०८, व० १६३६, आ० प्रथम ।

समाधि भक्ति—भा० सं० हि०, (दश भक्त्यादि संग्रह में प्र०) ।

समाधिमरण और मृत्यु महोत्सव—लेखक पं० सूरचन्द, हि० टी० पं० सदासुखदास; प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० सं० हि०, पृ० ३२ ।

समाधि मरण पाठ—ले० पं० सूरचन्द्र; संपा० श्रीमती अध्यापिका, प्र० जैन कन्या शिक्षालय देहली, भाषा हिन्दी, पृ० १३, व० १६०६, आ० प्रथम ।

समाधिमरण भाषा—लेखक पं० सूरचन्द्र, संपा० मुन्शी अमनसिंह, प्र० स्वयं संपा० देहली, भाषा हिंदी, पृ० २०, व० १६००, आ० प्रथम ।

समाधि शतक—लेखक पूज्यपादाचार्य, अनु० संपादक मणिलाल एन. द्विवेदी, प्र० गिरधरलाल हीराभाई अहमदाबाद, भाषा सं० अं०, पृष्ठ १३२, व० १८६५ ।

समाधिशतक—लेखक पूज्यपादाचार्य, अनु० मूलचन्द वत्सल, प्र० साहित्य रत्नालय बिजनौर, भा० हि०, पृष्ठ २८; व० १६२६, आ० प्रथम ।

समाधि शतक—लेखक पूज्यपादाचार्य, प्र० नाथूराम बुकसेलर मुंडावरा, भा० हि०; पृ० २८; व० १६०५, आ० प्रथम ।

समाधि शतकम—लेखक पूज्यपादाचार्य, टी० प्रभाचन्द्राचार्य अनु० माणिक मुनि, प्र० बा० कीर्त्तिप्रशाद वकील, भा० हि०; पृ० ४८, व०, १६१५, आ० प्रथम ।

सम्मेद शिखर तीर्थ चित्रावली—संपा० प्र० नथमल चंडालिया, पृ० ११; व० १६२७ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाधिशतक टीका—पूज्यपादाचार्य, टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० पं० फतहचंद देहली, भाषा सं० हि०, पृ० १७५, व० १९२२, आ० प्रथम।

समालोचना–मूर्त्तियाप्रतिमा पूजा—भाषा हि०, पृ० १२, वर्ष १८८८।

सम्मेद शिषर का नकशा—प्र० बाबू सूरजभान वकील देवबंद; वर्ष १८९८।

सम्मेद शिषर पूजा—ले० लक्ष्मीप्रसाद, प्र० प्रभुलाल रामपुर; भाषा हि०; पृ० १५, वर्ष १९२८, आ० प्रथम।

सम्मेद शिषर महात्म—ले० धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वयं, भाषा हिन्दी, पृ० ६, व० १८८४।

सम्मेद शिषर महात्म्य (पूजन विधान सहित)—ले० पं० जवाहरलाल, प्र० बद्रीप्रसाद जैन बनारस, भाषा हि०, पृ० ३३, वर्ष १९०८, आ० प्रथम।

सम्मेद शिषर संबंधी चिट्ठी—प्र० रत्नचन्द्र मंत्री धर्म संरक्षिणी दिग० जैन महासभा मथुरा, भाषा हि०, पृ० ७, वर्ष १८९६।

सम्मेद शिषरादि यात्रा विवरण (सचित्र)—ले० द्वारका प्रशाद, प्र० दिग० जैन प्रभावनी सभा सांभरलेक, भाषा हि०; पृ० १११, वर्ष १९१८, आ० प्रथम।

सम्मेदाचल गायन—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भाषा हि०।

सम्यक् दीपिका—ले० धर्मदास क्षुल्लक; प्र० स्वयं, भाषा हि०; पृ० ६५, व० १८९१, आ० प्रथम।

सम्यक्ज्ञान दीपिका—ले० धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वयं; भाषा हि०, पृ० ११६, वर्ष १८८९।

सम्यक्ज्ञान दीपिका—ले० धर्मदास क्षुल्लक; प्र० हीरालाल बापुजी खंडतोडे अमरावती; भाषा हि० पृ० ६६, व० १९३४, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक्त्व के आठ अंग—लेखक दरबारीलाल सत्यभक्त; प्र० आत्म
जागृति कार्यालय ब्यावर; भा० हि०, पृ० ५६, व० १९३२।

सम्यक्त्व कौमदी— अनु० टी० पं० तुलसीराम का० ती०, प्र० हिन्दी
जैन साहित्य पुस्तक कार्यालय बम्बई; भा० सं० हि०, पृ० २५८, व० १९१५,
आ० प्रथम।

सम्यक्त्व कौमदी—अनु० टी० पं० तुलसीराम का० ती०, प्र० जैन ग्रन्थ
रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० १४८, व० १९२८, आ० प्रथम।

सम्यक्त्वादर्श—लेखक क्षुल्लक सूरिसिंह, अनु० रवीन्द्रनाथ जैन, प्र०
...नेवरदास जैन रोहतक, भा० सं० हि०, पृ० ९६, व० १९४२, आ०
...म।

सम्यग्दर्शन की नई खोज—ले० स्वामी कर्मानन्द; प्र० जैन प्रगति ग्रंथ
माला सहारनपुर; भा० हि०, पृ० ८०, व० १९४६।

स्याद्वाद परिचय—लेखक पं० अजितकुमार, प्र० अकलंक प्रेस मुलतान,
भा० हि०, पृ० २८, व० १९३९, आ० प्रथम।

स्याद्वाद मंजरी—ले० मल्लिषेण सूरि, संपा० दामोदरलाल गोस्वामी,
... संस्कृत बुकडिपो बनारस, भा० सं०, पृ० २२०, व० १९००, आ०
...म।

स्याद्वाद मंजरी—लेखक हेमचन्द्राचार्य, टी० मल्लिषेण, हि० अनु० पं०
...दरलाल व वंशीधर, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० सं० हि०,
...२१८, व० १९१०, आ० प्रथम।

स्याद्वाद मंजरी—ले० हेमचन्द्राचार्य, टी० मल्लिषेण, अनु० संपा० प्रा०
...चन्द्र शास्त्री, प्र० परमश्रुत, प्रभावक मंडल बम्बई भा० सं० हि०, पृ०
..., व० १९३५, आ० द्वितीय।

सरल जैन धर्म (पहला भाग)—संपा० भुवनेन्द्रविश्व, प्र० सरल जैन
ग्रन्थमाला जबलपुर; भा० हि०, पृ० १६।

सरल जैन धर्म (दूसरा भाग)—संपा० भुवनेन्द्रविश्व, प्र० सरल जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रंथमाला जबलपुर, भा० हि०, पृ० २८, व० १९३९, आ० प्रथम।

सरल जैन धर्म (तीसरा भाग)—संपा० भुवनेन्द्र विश्व, प्र० सरल जैन ग्रन्थ माला जबलपुर, भा० हि०, पृ० ४०, व० १९३८, आ० प्रथम।

सरल जैन धर्म (चौथा भाग)—संपा० भुवनेन्द्र विश्व, प्र० सरल जैन ग्रन्थ माला जबलपुर, भा० हि०, पृ० ७६, व० १९३९, आ० प्रथम।

सर्वधर्म समभाव—लेखक पं० दरबारी न्या० ती०; भा० हि०, पृ० २१ व० १९४१।

सरल जैन विवाह विधि—लेखक मनोहरलाल जैन का० ती० प्र० सेठ गिरधारीलाल हरप्रशाद छुहरी, भा० हि० सं०; पृ० ७६, व० १९३६, आ० द्वितीय।

सरल नित्य पाठ संग्रह—संग्रह० कस्तूरचन्द शास्त्री, प्र० दुलीचन्द पन्नालाल कलकत्ता, भा० हि०, सं०; पृ० १४३; व० १९२९, आ० द्वितीय।

सर्वज्ञस्तवन सटीक—लेखक जयानन्द सूरि, भा० सं०, (दशभक्त्यादि संग्रह में प्र०)।

सर्वार्थसिद्धि—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि; संपा० जिनदास शास्त्री, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर; भा० सं०; पृ० ३२२; व० १९३९, आ० तृतीय।

सर्वार्थसिद्धि—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि; प्र० कलापाभरमप्पा निटवे कोल्हापुर; भा० सं० पृ० २७९; व० १९१७, आ० द्वितीय;—पृ० ४७६; व० १९०३, आ० प्रथम।

सर्वार्थसिद्धि वचनिका—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि; टी० पं० जयचन्द छावड़ा; प्र० कलापाभरमप्पा निटवे कोल्हापुर, भा० हि० सं०, पृ० ६०० व० १९११।

सर्वार्थसिद्धि (तत्वार्थवृत्ति)—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि, टी० पं० जयचन्द्र छावड़ा, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि० सं०, पृ० ८०४; आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वार्थ सिद्धि वृत्ति—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि, अनु० टी० बा० जगरूप-सहाय वकील, प्र० महेशचन्द्र एण्ड को० जैन ग्रन्थ डिपो एटा, भा० सं० हि०; पृ० १५७४, व० १९२३–१९२६; आ० प्रथम।

सरस्वती पूजा (भाषा)—भा० हि०; व० १९०७।

सरस्वती स्तवन—लेखक नाथूराम प्रेमी, भा० हि०; व० १९०७।

सनूना पूजन (आदिनाथ स्तोत्र व कथा सहित)—ले० पं० बाबू लाल, प्र० जैन सभा फीरोजपुर; भा० हिन्दी, पृ० १६, व० ० १९१०।

सलूनोत्पत्ति कथा—प्रकाशक दिग० जैन एसीसियेशन मेरठ सदर, भा० हिन्दी; पृ० १०।

सवालात तेरापंथियों के बीस पंथियों से—भा० हिन्दी, पृ० ६।

स्वतंत्रता का सोपान—लेखक ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचंद किशनदास कापड़या सूरत; भा० हिन्दी, पृष्ठ ४२५, व० १९४४, आ० प्रथम।

स्वर्गीय हेमचंद्र—लेखक संपा० यशपाल जैन प्र० हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय वम्बई, भा० हिन्द्री, पृष्ठ १६०, व० १९४४, आ० प्रथम।

स्वरूपचंद नाम माला व अनेकार्थ नाममाला—लेखक स्वरूपचंद जैन स्वामी, प्र० भानुकुमार सर्व सुख हितैषी आयुर्वेदीय फार्मेसी भिंड, भा० हिंदी, पृष्ठ ९५, व० १९४२ आ० आ० प्रथम।

स्वरूप संबोधन—लेखक अकलन्क देव, भा० सं०, व० १९१५।

स्वसमरानंद अथवा चेतन कर्मयुद्ध—संपा० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचंद किशनदास कापड़या सूरत, भा० हिंदी, पृष्ठ ८१, व० १९२३, आ० प्रथम।

स्वात्मानुभव मनन—ले० धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वयं, भा० हिंदी, पृ० ९६ व० १८९१।

स्वानुभव दर्पण (सटीक)—लेखक योगीन्द्र; देव अनु० प्र० मुंशी नाथूराम लमेचू, भा० हिंदी, पृष्ठ ५३; आ० प्रथम, व० १८९९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वयंभूस्तोत्र—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० संपा० पं० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा, भा० सं० हिंदी, पृष्ठ , व० , आ० प्रथम।

स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा—ले० स्वामी कार्त्तिकेय, सं० टी० शुभचन्द्र भट्टारक, हि० टी० पं० जयचन्द्रजी; प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्था कलकत्ता, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० २६०, व० १६२१, आ० प्रथम।

स्वामी कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा—ले० स्वामी कार्त्तिकेय, सं० टी० शुभचन्द्र भट्टारक, संपा० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० गांधी नाथारंगजी आकलूज, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० २०४, व० १६०४, आ० प्रथम।

स्वामी समन्तभद्राचार्य—ले० पं० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २६७, व० १६२५, आ० प्रथम।

सहज सुख साधन—ले० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मूलचंद किसनदास कापड़या सूरत, भा० हि०, पृ० ३६२, व० १६३६, आ० प्रथम।

सहजानंद सोपान—ले० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०; पृ० २७४, व० १६३७; आ० प्रथम।

सहनशील चंदन—ले० पं० राजमल लोढा, प्र० जैन साहित्य कार्यालय मंदसौर, भा० हि०, पृ० १६।

संकट हरण व दुःख हरण विनती—ले० कवि वृन्दावन, प्र० जैन ग्रंथ प्रचारक पुस्तकालय देवबंद, भा० हि० पृ० ६, व० १६२६, आ० द्वितीय।

संक्षिप्त जैन इतिहास (प्रथम भाग)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १३२, व० १६३६, आ० दूसरी।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग २, खंड १)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० २६६, व० १६३२, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग २, खंड २)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० हि०, पृ० १८१; व० १९३४, आ० प्रथम।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग ३, खंड १)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १५४, व० १९३७, आ० प्रथम।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग ३, खंड २)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १६४, व० १९३८, आ० प्रथम।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग ३, खंड ३)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १६६, व० १९४१, आ० प्रथम।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग ४)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०।

संक्षिप्त जैनरामायण (पद्य)—ले० कवि मनरंगलाल, प्र० चंद्रसेन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० ६२, व० १९२४, आ० प्रथम—पृ० ८८, व० १९२६, आ० दूसरी।

संक्षिप्त नित्य पूजा—संपा० बी० एल० चैतन्य बुलन्दशहरी, प्र० ज्ञानेश्वरी संपा० बिजनौर, भा० हि०, पृ० ३२; व० १९२६।

संगठन का बिगुल—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैन संगठन सभा देहली, भा० हि०, पृ० २८, व० १९२५, आ० प्रथम।

संयम प्रकाश (प्रथम किरण-पूर्वार्द्ध)—ले० सूर्य सागर आचार्य, संपा० श्रीप्रकाश व भँवरलाल, प्र० आचार्य सूर्यसागर दिग० जैन ग्रन्थमाला समिति जयपुर; भा० हि० सं०, पृ० १६८, व० १९४४, आ० प्रथम।

संयम प्रकाश (द्वितीय किरण-उत्तरार्द्ध)—ले० सूर्य सागर आचार्य, संपा० श्रीप्रकाश व भंवरलाल, प्र० आचार्य सूर्य सागर दिग० जैन ग्रंथमाला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समिति जयपुर, भा० हि० सं०, पृ० ११४, व० १६४५, आ० प्रथम।

संयुक्त प्रान्त के प्राचीन जैन स्मारक—संग्र० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० हीरालाल जैन एम. ए. प्रयाग, भा० हि०, पृ० १११, व० १६२३, आ० प्रथम।

संशय तिमिर प्रदीप—ले० उदयलाल काशलीवाल, प्र० स्वयं बड़नगर, भा० हि०, पृ० १७०, व० १६०६, आ० द्वितीय।

संशय वदन विदारण—ले० शुभचन्द्र भट्टारक, अनु० पं० लालाराम, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० १४४, व० १६२३, आ० प्रथम।

संसार और मोक्ष—ले० बा० ऋषभदास बी. ए., अनु० दयाचन्द्र गोयलीय, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० १६, व० १६१५, आ० प्रथम।

संसार दुःख दर्पण—ले० ज्योति प्रसाद जैन, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ३२, व० १६३८, आ० पांचवीं।

सँसार दुःखदर्पण और नरक दुःख दर्शन—ले० ज्योतिप्रसाद व पं० भूधरदास, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १५, व० १६३५, आ० चौथी।

संसार में सुख कहां है—ले० वाडीलाल मोतीलाल शाह, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० १०८।

संस्कृत पंच स्तोत्र—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद; व०१८६६, भा० सं०।

संस्कृत प्राकृत नित्य नियम पूजा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, व० १८६८, भा० सं० प्रा०।

संस्कृत प्रवेशिनी (प्रथम भाग)—ले० पं० श्रीलाल जैन, प्र० भारतीय जैन सिद्धाँत प्रकाशिनी संस्था कलकत्ता, भा० सं०, पृ० २०८, व० १६१६ आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्कृत प्रवेशिनी (द्वितीय भाग)—लें० पं० श्रीलाल जैन, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्था कलकत्ता, भा० सं०, पृ० १७६, व० १९१६; आ० प्रथम।

संस्कृत भाव संग्रह—ले० पं० वामदेव, भा० सं०, (भाव संग्रहादि में प्र०)।

संस्कृत हिन्दी शब्द रत्नाकर—लें० विहारीलाल चैतन्य; भा० सं० हि०, पृ० ११२।

सागार धर्मामृत (भव्य कुमुद चन्द्रिका टीका सहित)—लें० पं० आशाधर, संपा० पं० मनोहरलाल; प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० २४६, व० १९१५, आ० प्रथम।

सागार धर्मामृत (पूर्वार्द्ध)—ले० पं० आशाधर, अनु० पं० लालाराम, प्र० दिग० जैन पुस्कालय सूरत, भा० सं० हिं०, पृ० ३१२, व० १९१५, आ० प्रथम।

सागार धर्मामृत (उत्तरार्द्ध)—ले० पं० आशाधर, अनु० पं० लालाराम, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० सं० हि०; पृ० २२३, व० १९१६, आ० प्रथम।

सागार धर्मामृत सटीक—ले० पं० आशाधर, टी० पं० देवकीनन्दन शास्त्री, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० सं० हि०, पृ० ३१९, व० १९४०, आ० प्रथम।

सादगी और बनावट—लें० ज्योति प्रसाद जैन, प्र० प्यारेलाल चन्दूलाल जगाधरी, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२३, आ० प्रथम।

साध्वी (पद्य)—लें० गुणभद्र कविरत्न, प्र० दुलीचंद परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४०।

सामाजिक चित्र—प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

सामायिक—संपा० मुनि हर्षकीर्ति, प्र० दिगम्बरी समस्त संघ भावनगर, भा० सं० प्रा०; पृ० ९९, व० १८९७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामायिक पाठ—ले० अमित गति आचार्य, टी० पं० जयचन्द्र छावड़ा, प्र० मुनिअनन्तकीर्ति ग्रन्थमाला समिति बम्बई, भा० हि०, पृ० ६५, व० १९२४, आ० प्रथम।

सामायिक पाठ—ले० अमितगति आचार्य, अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़या सूरत, भा० सं० हि०, पृ० २४, व० १९२६, आ० दूसरी।

सामायिक पाठ और मेरी भावना—ले० अमितगति आचार्य व पं० जुगल किशोर मुख्तार, अनु० कस्तूरचन्द छावड़ा, प्र० दुलीचन्द पन्नालाल कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० ३१, व० १९३९, आ० पंचम।

सामायिक भाषा—ले० पं० महाचन्द, प्र० बा० ज्ञानचन्द लाहौर, भा० हि०; पृ० १८; व० १८९७।

सामायिकानन्द पाठ—ले० रूपचन्द जैन, प्र० ज्ञानचंद इटावा, भा० हि०, पृ० ८, व० १९३४, आ० प्रथम।

सार्वधर्म—ले० पं० गोपालदास बरैया, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ५५, आ० प्रथम।

सार समुच्चय (मूल)—ले० कुलभद्र, भा० सं०, (सिद्धांत संग्रह में प्र०)।

सार समुच्चय टीका—ले० कुलभद्राचार्य; टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० सं हि०, पृ० २३२, व० १९३७; आ० प्रथम।

सावय धम्म दोहा—ले० देवसेन आचार्य, अनु० संपा० प्रो० हीरालल जैन, प्र० कारंजा जैन पब्लिकेशन सोसाइटी कारंजा, भा० अप० हि०, पृ० १२५, व० १९३२, आ० प्रथम।

सिद्धि प्रिय स्तोत्र—ले० देवनन्दि, भा० सं०, (काव्यमाला सप्तमगुच्छक में प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धान्त सूत्र समन्वय—ले० पं० मक्खन लाल न्या० ल०, प्र० दिग० जैन पंचायत बम्बई, भा० ०हि, पृ० १७०, व० १९४७।

सिद्ध चक्र पूजा व ड़ी तथा अठाईरासा—ले० पं० द्यानतराय व विनय कीर्ति, प्र० मा० शिवराम सिंह रोहतक, भा० हि०, पृ० ४८, व० १९४०, आ० प्रथम।

सिद्ध चक्र मंडल विधान—ले० शुभचन्द्र भट्टारक, प्र० सेठ राजकुमार सिंह म० व० इन्दौर, भा० सं०, पृ० १७५, व० १९४४।

सिद्ध चक्र विधान—ले० कविवर संतलाल; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० हि०; पृ० ३६८, व० १९४३, आ० द्वितीय।

सिद्ध भक्ति—ले० पूज्यपाद भा० सं०, (दशभक्त्यादि संग्रह में प्र०)

सिद्ध क्षेत्र पूजा संग्रह—संग्र० मास्टर कुन्दन लाल, प्र० मूलचंद किशन दास कापड़या सूरत, भा० हि०, पृ० ३२८; व० १९४४, आ० चतुर्थ; पृ० १४४; व० १९२१, आ० द्वितीय।

सिद्धान्त समीक्षा (भाग १, २, ३,)—लेखक प्रो० हीरालाल, पं० फूलचन्द्र, पं० जीवंधर, प्र० हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०, पृ० व० १९४५-४६।

सिद्धांत सारादि संग्रह (२५ विभिन्न सं० प्रा० ग्रन्थों का संग्रह)—संपा० पं० पन्ना लाल सोनी, प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रन्थ माला समिति बम्बई, भा० सं० प्रा०, पृ० ३६५; व० १९२३, आ० प्रथम।

सिद्धांतसार—ले० जिनचंद, टी० ज्ञान भूषण, भा० सं०. (सिद्धांत सरादि संग्रह में प्र०)

सिद्धि सोपान—ले० पूज्यपादा चार्य, (सिद्ध भक्ति)—अनु० संपा० पं० जुगलकिशोर मुख्तार प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०; पृ० ४८, व० १९३३, आ० प्रथम (अन्य स्थानों से और भी संस्करण प्रकाशित हुए हैं)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीता का बारह मासा—प्र० बा० सूरजभान वकील, भा० हि०, व० १८६८ ।

सीता चरित्र—ले० दया चन्द्र गोयलीय, प्र० जैन साहित्य भंडार लखनऊ भा० हिं०, पृ० ६२; व १६१७; आ० प्रथम ।

सुकमाल चरित्र—ले० सकल कीर्त्ति आचार्य, हि० टी० पं नाथूलाल, प्र० ज्ञान चन्द जैनी लाहौर, भा० सं० हि०, पृ० १४२; व० १६११ ।

सुकमाल चरित्र—ले० सकल कीर्त्ति आचार्य, हि० टी० पं नाथूलाल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी सं०, पृ० १३८, आ० प्रथम।

सुकमाल चरित्र—ले० सकल कीर्त्ति आचार्य, हिन्दी टी० पं० नाथूराम, प्र० भाषा हिन्दी, पृ० १३२ ।

सिर सिर वाल कहा—ले० रत्न शेखर सूरि, अनु० संपा० एन० जी० सुरु, भाषा प्रा०; व० १६३३—पूना ।

सुख और सफलता के मूल सिद्धान्त—लेखक दयाचन्द गोयलीय, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३०, वर्ष १६१७।

सुगम जैन विवाह विधि—लेखक संपा० किशन चन्द्र जैन, प्र० चन्दन लाल, भा० सं० हिन्दी, पृ० ८०, व० १६३२ ।

सुकमाल चरित्रसार—लेखक ब्रह्मनेमिदत्त, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २२, व० १६१५, आ० प्रथम ।

सुख सागर भजनावली—लेखक ब्र० शीतल प्रसाद, प्रकाशक मूलचन्द किशनदास कापड़या सूरत, भा० हि०, पृष्ट १५२; वर्ष १६१६, आ० प्रथम।

सुखानंद मनोरमा नाटक—

सुगंधदशमी कथा—लेखक ब्र० श्रुतसागर; प्रकाशक जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता भाषा हि०; पृ० १६ ।

सुगंधदशमी कथा (पद्य)—लेखक ब्र० श्रुतसागर, प्रकाशक वीर जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० २०, व० १६४२, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुगंध दशमी व्रत कथा—लेखक पं० खुशाल चन्द्र; प्रकाशक हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० १४, व० १६३४, आ० प्रथम।

सुगुरु शतक भाषा—प्रकाशक बा० सूरज भान वकील देवबंद, भा० हि०; व० १८६८।

सुदर्शन (अहिंसा मार्तण्ड)—लेखक पीताम्बर दास जैन, भा० हिन्दी, व० १६४०।

सुदर्शन चरित्र—लेखक सकल कीर्त्ति, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १०६, आ० प्रथम।

सुदर्शन चरित्र (सचित्र)—संपा पं० परमानन्द, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० १४६।

सुदर्शन नाटक—लेखक मूलचन्द वत्सल, प्र० साहित्य रत्नालय बिजनौर, भा० हि०, पृ० ११२, व० १६२७, आ० प्रथम।

सुदृष्टि तरंगिणी—लेखक पं० टेकचन्द्र, प्रकाशक जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० ६५०, व० १६२६, आ० प्रथम।

सुदृष्टि तरंगिणी—लेखक पं० टेक चन्द्र, प्र० पन्नालाल चौधरी काशी, भा० हि०, पृ० ६८३, व० १६२८।

सुधर्म श्रावकाचार—लेखक सुधर्म सागर; टी० पं० लालराम, संपा० पं० मक्खन लाल, प्र० सेठ जीवाराज उगर चंद गांधी सोनगढ़, भाषा सं० हि०, पृ० ५०२, व० १६४०।

सुन्दर ज्ञाल—ले० ज्योति प्रसाद जैन, भा० हि०, पृ० १६, व० १६२१।

सुधर्म श्रावकाचार समीक्षा—लेखक पं० परमेष्ठि दास, प्रकाशक मूलचंद किशनदास कापड़िया सूरत, भाषा हिन्दी, पृ० ११८, व० १६४३, आ० प्रथम।

सुधर्मोपदेशामृतसार—लेखक कुंथ सागर आचार्य, अनु० पं लालाराम, प्र० आचार्य कुंथसागर ग्रंथ माला शोलापुर, भा० हि० सं०, पृ० १७४, व० १६४०, आ० प्रथम।

सुबोधरत्न शतकम्—लेखक माणिक्य मुनि, प्रकाशक शीतल प्रसाद वैद्य,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देहली, भा० सं०, पृ० २७, व० १९१५।

सुबोधि दर्पण (रत्नत्रय धर्म प्रकाश)—लेखक पं० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० दिग० जैन पंचान लाकरोड़ा, भाषा हि०, पृ० ७६, व० १९३६, आ० प्रथम।

सुभाषितरत्न संदोह—ले० अमितगति आचार्य, संपा० पं० काशीनाथ शास्त्री व भावदत्त शास्त्री, प्र० निर्णयसागर प्रेस बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० १०४, व० १९०३, आ० प्रथम।

सुभाषितरत्न संदोह—ले० अमितगति आचार्य, अनु० पं० श्रीलाल का० ती०, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० २८२, व० १९१७, आ० प्रथम पृष्ठ २४३, व० १९३९, आ० द्वितीय।

सुभाषित शतकम्—संव्य० अनु० पं० माणिक चन्द्र, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० सं० हि०, पृ० २८, व० १९४५, आ० प्रथम।

सुमन संचय—संग्र० ब्र० प्रेमसागर, प्र० दैनीप्रसाद गुलाब चंद रंपुरा, भा० हि०, पृ० ७२, व० १९४१, आ० प्रथम।

सुलोचना चरित्र—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ११५, व० १९२४; आ० प्रथम।

सुवर्ण सूत्रम—ले० कुंथसागर, प्र० उत्तम चंद केवलचंद दोशी ईडर, भा० सं० पृ० २४, व० १९४१, आ० प्रथम।

सुशीला उपन्यास—ले० पं० गोपालदास बैरया, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३१२; व० १९१४; आ० प्रथम।

सुसराल जाते समल पुत्री को माता का उपदेश—संपा० पं० दीपचन्द वर्णी; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० हि०, पृ० ४७, व० १९४३, आ० अष्टम।

सुहाग रक्षक विधान—ले० मोतीलाल पहाड्या; भा० हि०, पृ० ११३ व० १९२४।

सूत्र पाहुड़ (सूत्र प्राभृत)—ले० कुन्द कुन्द; भा० प्रा० सं०, (अष्ट पाहुड़ व षटप्राभृतादि संग्रह में प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूक्त मुक्तावली—ले० सोमप्रभाचार्य, टी० हर्षकीर्तिसूर, संपा० ब्रजवल्लभ शास्त्री, प्र० स्वयं संपादक अहमदाबाद, भा० सं०, पृ० ७३, व० १८६७, आ० प्रथम।

सूक्तमुक्तावली—ले० सोमप्रभाचार्य; हि० अनु० (पद्य) पं० बनारसीदास, संपा० मुन्शी अमरनसिंह, प्र० स्वयं संपा० सोनीपत, भा० हि०, पृष्ठ ४०, व० १८६३।

सूक्तमुक्तावली—ले० सोमप्रभाचार्य; अनु० पं० बनारसीदास व कुँवरपाल, टी० पं० लालाराम, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० १००; व० १९१२, आ० द्वितीय।

सूक्ति संग्रह—ले० कवि राक्षस; भा० सं०, पृ० ६, व० १९३०।

सूर्य प्रकाश—ले० नेमिचन्द्र भट्टारक, टी० संपा० ब्र० ज्ञानचन्द्र; प्र० गांधी मिया चन्द देवचन्द प्पेडे शिरसकर नातेपुते, भा० सं० हि०, पृ० ४१३; आ० प्रथम।

सूर्य प्रकाश परीक्षा—पं० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जौहरी मल सर्राफ़ देहली, भा० हि०, पृ० १६०, व० १९३४, आ० प्रथम।

सूआ बत्तीसी—ले० भैया भगवती दास; प्र० दिग० जैन धर्म पुस्तकालय लाहौर; भा० हि०, पृ० ८; व० १९१४।

सेठी सुदर्शन की कथा—प्र० जैन ग्रन्थ प्रचारक पुस्तकालय देववंद; भा० हि०, पृ० ८।

सेठी जी के मामले में लोकमत—प्र० भारत जैन महामंडल; भा० हि०, पृ० ८०; व० १९१५।

सोनापीर यात्रा विवरण (सचित्र)—ले० द्वारका प्रसाद, प्र० दिग० जैन धर्म प्रभावती सभा साँभालेक; भा० हि०, पृ० ३३, व० १९१८; आ० प्रथम।

सोमा सती नाटक—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १६।

सोलह कारण धर्म—ले० पं० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० मूलचन्द किशन दास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कापड़िया सूरत, भा० हि० पृ० १३७, व० १६४३, आ० तृतीय।

सोलह कारण व्रत कथा पूजा—ले० पं० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० हुकमी चन्द डोलिला; भा० हि०, पृ० २६, व० १६३८।

सौभाग्य भजन माला—ले० सौभाग्य मल दोशी; प्र० स्वयं अजमेर भा० हि०; पृ० २१; व० १६२७; आ० प्रथम।

सौभाग्य रत्न माला—ले० पं० चन्दाबाई; भा० हि०; पृ० ११८, व० १६१६।

सृष्टि कर्तृत्व मीमांसा—ले० पं० गोपालदास बरैया; प्र० जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ३१ व० १६१२, आ० प्रथम।

सृष्टि कर्तृत्व मीमांसा—ले० पं० गोपालदास बैरया; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हि०; पृ० ३१, व० १६२८, आ० प्रथम।

सृष्टि वाद परीक्षा—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा इटावा; भा० हि०, पृ० ८।

हनुमान चरित्र नात्रिल भूमिका—ले० प्रकाशक मास्टर विहारी लाल बुलन्दशहर, भा० हि०, पृ० ३१, व० १८६६ आ० प्रथम।

हनुमान चरित्रनात्रिल भूमिका (भाग)—लेखक प्र० मास्टर विहारीलाल बुलन्दरशहर, भा० हि०; पृ० ३१, व० १८६६।

हम दुःखी क्यों हैं—ले० पं जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०; पृ० ३२, व० १६२८, आ० प्रथम।

हमारा उत्थान और पतन—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० हिन्दी विद्या मंदिर देहली, भा० हि०, पृ० १४४, व० १६३६।

हमारी कायरता के कारण—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैन संगठन सभा देहली, भा० हि०, पृ० ३०; वर्ष १६३७; आ० प्रथम।

हमारी शिक्षा पद्धति—लेखक पंडित कैलाश चन्द्र; प्रकाशक जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ५३, व० १६३२, आ० प्रथम।

हमारे दुःखों का प्रधान कारण—लेखक पंडित जुगल किशोर मुख्तार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शक जैन संगठन सभा देहली; भा०, हि०, पृ० ३२, व० १६२८, आ० थम।

हरिवंश पुराण—जिनसेना चार्य, हि० टी० पं० दौलतराम जी, प्रकाशक नवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ५३५, व० १६३३।

हरिवंश पुराण—लेखक जिनसेनाचार्य; टी० पं० दौलतराम जी, प्रकाशक तचंद जैनी लाहौर, भा० सं० हिन्दी; पृ० १०००, व० १६१०।

हरिवंश पुराण—लेखक जिनसेनाचार्य; अनु० पंडित गंजाधर लाल, प्र० रतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्था कलकत्ता, भा० हिंदी, पृ० ६२७, व० ० प्रथम।

हरिवंश पुराणम् (प्रथम खंड)—लेखक जिनसेनाचार्य; संपा० पंडित दर-री लाल न्या० ती०; प्रकाशक माणिक चन्द्र दिग० जैन ग्रंथ माला समिति बई; भा० सं०, पृ० ४४८, व० १६३०, आ० प्रथम।

हरिवंश पुराणम (द्वितीय खंड)—लेखक जिनसेनाचर्य, संपा० पंडित री लाल न्या० ती० प्रकाशक माणिक चन्द दिग० जैन ग्रंथमाला समिति बई भा० हि०; पृ० ३७४; व० १६३० आ०, प्रथम।

हरिवंश पुराण समीक्षा—लेखक बा० सूरजभान वकील; प्रकाशक चन्द्र जैन वैद्य इटावा; भा० हि०, पृ० ५८; वर्ष १६१८; आ० प्रथम।

हम और हमारा कर्तव्य—लेखक प्रकाशक उत्तम चन्द्र जैन मेरठ; भाषा पृ० ८; व० १६२२।

हस्तिनागपुर कीर्तन—संग्र० प्र० सुमतप्रशाद जैन प्रचारक मुजफ्फर नगर, हि०, पृ० ३२, व०, १६४२।

हस्तिनागपुर महात्म—लेखक मंगलसेन जैन विसारद, प्र० दिग० जैन कालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०; पृ० ५२, व० १६३८; आ० प्रथम।

हित की बात– प्र० जैन तत्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृष्ठ ३२,

हित शिक्षा—लेखक वाड़ीलाल मोतीलाल शाह, अनु० भैयालाल जैन, हिन्दी, पृष्ठ ११६, व० १६१६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हितैषी गायन—प्र० जैन ग्रंथ प्रभाकर कार्यालय सागर, भाषा हिंदी, व० १६२३, आ० प्रथम।

हितैषी गायन रत्नाकर— प्र० भारतहितैषी पुस्तकालय सीकर; भाषा हिन्दी, पृ० ६८; आ० प्रथम।

हितैषी भजन संग्रह—प्र० मनीराम नथूमल जैन, भा० हि०, पृ० १४।

हिन्दी छहढाला—लेखक कवि दौलतराम, टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० हि०, पृ० ६४, व० १६३७, आ० आठवीं।

हिन्दी जैन पद्यावली—प्र० जैन धर्म प्रसारक संस्था नागपुर; भा० हि०, पृ० १७, व० १६२६, आ० प्रथम।

हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास—ले० पं० नाथूराम प्रेमी; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६६, व० १६१७, आ० प्रथम।

हिंदी जैन साहित्य का इतिहास—लेखक बा० कामता प्रसाद जैन, प्र० भारतीय ज्ञान पीठ काशी; भा० हि०; व० १६४७।

हिंदी पद्यात्मक श्री ऋषभपुराण व संक्षिप्त गद्यात्मक आदि—संपा० मा० विहारी लाल चैतन्य, प्र० शांति चन्द्र जैन बिजनौर, भा० हि०; पृ० १८८, व० १६२६, आ० प्रथम।

हिंदी भक्तामर—लेखक अमृत लाल जैन चंचल, प्र० सिंघई प्रेमचन्द जबलपुर भा० हि०, पृ० ४८; व० १६३७; आ० द्वितीय।

हिंदी भक्तामर और प्राण प्रिय काव्य—संपा० प्र० पन्नालाल जैन; भा० हि०; पृ० ३८; व० १६१४।

हिंदी साहित्य अभिधान लेखक—लेखक शान्ति चन्द्र जैन, प्र० स्वल्पार्घ ज्ञान रत्न माला कार्यालय बारावंकी, भा० हि०; पृ० २०, व० १६२५ आ० प्रथम।

हिंदी साहित्य अभिधान लेखक (द्वितीय अवयव)—लेखक विहारी लाल चैतन्त, प्र० स्वल्पार्घ ज्ञान रत्न माला कार्यालय बारावंकी, भा० हि०, पृ० ११२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व० १९२५, आ० प्रथम।

हिंदी जैन विवाह पद्धित—संपादक कुलवंत राय जैन, भा० हि०, पृ० १८, व० १९३६।

हिन्दू कोड और जैन धर्म—प्र० वर्धमान ज्ञान प्रचारिणी समिति इन्दौर, भा० हि०; पृ० १८, व० १९२१ आ० प्रथम।

हीराबाई—लेखक बा० सूरजभान वकील, भा० हि०, पृ० २४।

होली संग्रह और प्रभाती संग्रह—संग्र० तथा प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, भा० हि०, पृ० २४, व० १९०२; आ० प्रथम।

हितोपदेश रत्नावली—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कर्यालय ब्यावर; भा० हि०, पृ० ४०, व० १९२४।

क्षत्र चूड़ामणि—लेखक वादीभसिंह आचार्य, संपा प्र० टी० एस० कुप्पुस्वामी शास्त्री, तंजौर, भा० सं०, पृ० १४३, व० १९०३।

क्षत्र चूड़ामणि—लेखक वादीभसिंह आचार्य, अनु० मुंशीलाल एम. ए., सं० नाथूराम प्रेमी; प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हिंदी पृ० १४८, व० १९१०; आ० प्रथम।

क्षत्र चूड़ामणि—लेखक वादीभसिंह आचार्य हि० टी० पं० निद्धामल, प्र० स्वयं टी०, भा० हिंदी, पृ० २६२, व०, आ० प्रथम।

क्षत्र चूड़ामणि (पूर्वार्ध)— लेखक वादीभसिंह आचार्य; हि० टी० मोहन लाल जैन का० ती०, प्र० सरल प्रज्ञा पुस्तक माला मंडावरा; भाषा हिन्दी, पृ० २५, व० १९३२; आ० प्रथम।

क्षत्र चूड़ामणि (उत्तरार्ध)—लेखक वादीभसिंह आचार्य, टी० मोहन लाल जैन का० ती०, सरल प्रज्ञा पुस्तक माला मंडावरा; भा० हिन्दी, पृ०—व० १९४०, आ० प्रथम।

क्षपणासार—देखो—लब्धिसार।

त्रिभंगी सार—ले० तारण तरण स्वामी; टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० सेठ ... जैन आगासौंद; भाषा हिन्दी, पृष्ठ १३५, व० १९३६, आ० प्रथम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिलोक प्रज्ञप्ति—देखिये तिलोय पण्णुति ।

त्रिलोक सार—ले० नेमीचन्द्र सि. च., सं० टी० माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव, संपा० पं० मनोहरलाल, प्र० माणिक चन्द्र दिग० जैन ग्रंथमाला समिति बम्बई, भा० प्रा० सं०, पृ० ४२५, व० १९२८, आ० प्रथम ।

त्रिलोक सार—ले० नेमीचन्द सि. च., हि० टी० पं० टोडरमल, संपा० पण्डित मनोहरलाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० प्रा० हि०, पृ० ३६५, व० १९१८, आ० प्रथम ।

त्रिशला नदंन—ले० प्र० भगवत् जैन, भा० हिन्दी, पृष्ठ १८ ।

त्रिषष्टि स्मृति शास्त्रम्—ले० पं० आशाधर, संपा० मोतीलाल, प्र० माणिकचंद दिग० जैन ग्रंथ माला बम्बई, भा० सं०, पृष्ठ १७८, व० १९३७।

त्रेष्ठ श्लाका पुरुषों के नाम—ले० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०, व० १८९८ ।

त्रैवर्णिकाचार—ले० सोमसेन भट्टारक, अनु० पण्डित पन्नालाल सोनी, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० स० हिन्दी, पृ० ३९८, व० १९२५, आ० प्रथम ।

त्रैलोक्य तिलक व्रतोद्यापन—ले० पण्डित पन्नालाल जैन सा० आ०; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हिन्दी, पृ० ३८, व० १९४३, आ० प्रथम।

त्रिवेणी—ले० व. प्र० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन आरा, भा० हि० ।

ज्ञान कोष—संग्र० बा. धनकुमार चंद जैन, प्र० रोशनलाल जैन आरा, भाषा हिन्दी, पृ० १८५, व० १९३७, आ० प्रथम।

ज्ञान चन्द्रोदय नाटक—ले० पन्नालाल जैन, प्र० जैन हितैषी पुस्तकालय बम्बई, भाषा हि०, वर्ष १९०१ ।

ज्ञान दर्पण (पद्य)—ले० शाह दीपचंद, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६९, व० १९११, आ० प्रथम ।

ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्र—अनु. संपा० पण्डित रामव्यास पांडेय ज्योतिषाचार्य, प्र० जैन सिद्धांत भवन आरा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान समुच्चय सार—लेखक तारणतरण स्वामी, टी० ब्र० शीतलप्रसाद, सेठ मन्नूलाल, आगासौंद, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५०४, व० १६३५, आ० प्रथम।

ज्ञानसागर दिगम्बर जैन पूजा—लेखक घनीराम बैरया; प्र० सोभाराम लुराम नरवर, भाषा हि०; पृ० ७, आ० प्रथम।

ज्ञान सार—लेखक पद्मसिंह मुनि, टी. पण्डित त्रिलोकचन्द्र, प्र० दिग० पुस्तकालय सूरत, भाषा प्रा. सं. हिन्दी; पृष्ठ ४६, व० १६४४ आ० प्रथम, (संस्कृत छाया व भाषा छन्दानुवाद सहित)।

ज्ञान सूर्योदय—लेखक प्र० लालता प्रसाद जैन घुढेले कायमगंज, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६६, आ० प्रथम।

ज्ञान सूर्योदय (प्रथम भाग)—ले० बाबू सूरजभान वकील, प्र० नौंदमल जमेरा रा० ब०, भाषा हि०, पृ० ८०, व० १६२६, आ० नवीन।

ज्ञान सूर्योदय (द्वितीय भाग)—लेखक बाबू सूरजभान वकील, प्र० जैन मंडल देहली, भाषा हि०; पृ० ७६, वर्ष १६२६; आ० प्रथम।

ज्ञान सूर्योदय नाटक—लेखक वादिचन्द्र सूरि, अनु० नाथूराम प्रेमी, प्र० ग्रंथरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा सं० हि०, पृ० १०४, व० १६०६, आ० प्रथम।

ज्ञानानंद भजनाकर—प्र० पण्डित मक्खनलाल प्रचारक देहली, भाषा हि०, ३२, वर्ष १६३८, आ० सातवीं।

ज्ञानानंद रत्नाकर—ले० व प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, भाषा हिन्दी, ६२, व० १६०२।

ज्ञानानंद रत्नाकर (द्वितीय भाग)—लेखक व प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, खेमराज श्री कृष्णदास बम्बई, भाषा हि०; पृ० ६७, वर्ष १८६५।

ज्ञानानंद श्रवकाचार—लेखक रायमल्ल, प्र० सद्बोध रत्नाकर कार्यालय सागर, भा० हि०, पृ० २६२, व० १६१६, आ० प्रथम।

ज्ञानार्णव—लेखक शुभचन्द्राचार्य, अनु० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ४४७, व० १९२७, आ० प्रथम ।

ज्ञानोक्त प्रमाण—लेखक धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० ५२, व० १८८२, आ० प्रथम ।

ज्ञानोदय (प्रथम भाग)—ले० पण्डित पन्नालाल, प्र० स्वयं सुजानगढ़, भा० हि०, पृ० २९, व १८९१, आ० द्वितीय ।

ज्ञानोदय (द्वितीय भाग)—लेखक पं० पन्नालाल, प्र० स्वयं सुजानगढ़, भा० हि०, पृ० ३५, १८९१, आ० द्वितीय ।

जैन धर्म पर प्रकाशित महत्वपूर्ण भाषण [हिंदी]

कुंवर दिग्विजय सिंह (इटावा १४-३-१९१०) ।

डा० हरमन जेकोबी (सन् १९१३ ई०) ।

डा० लक्ष्मीचन्द्र जैन (भा० दि० जैन परिषद् के ८वें अधिवेशन में) ।

डा० वान ग्लेजनेयं (सन् १९१३) ।

डा० सतीष चन्द्र विद्याभूषण (२७ दिसम्बर १९१३ ई० काशी स्या. विद्यालय में) ।

डा० टी० के लड्डू

डा० वी० एल० अत्रेय

पं० जुगलकिशोर मुख्तार (हस्तिनापुर, १६-११-१९२६) ।

पं० अम्बादास शास्त्री (संस्कृत-सागर सतर्क सु० त० पाठशाला के ७वें अधिवेशन पर) ।

पं० गणेश प्रसाद वर्णी (पपौरा, सन् १९२७ ई०) ।

पं० गोपाल दास बरैया (मार्च सन् १९१२)

पं० माणिकचन्द्र कौन्देय (इंदौर, सन् १९२०) ।

पंडिता चन्दाबाई (कानपुर, २-४-१९२१) ।

प्रो० फणिभूषण अधिकारी (काशी, २६-४-१९२५) ।

बा० अजितप्रसाद (दि० जैन प्रान्तिक सभा बम्बई के १२वें अधिवेशन में)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बा० अमोलक चन्द्र (भिंड, १८-६-१९३३) ।
बा० छत्रपाल (भिंड, १७-६-१९३३) ।
बा० जयभगवान जैन (एटा १८-४-१९३०) ।
बा० पद्मसिंह जैन (बुलन्दशहर, ३०-४-१९३२) ।
बा० प्यारेलाल वकील (बड़ौत ३-४-१९२७) ।
बा० बहादुरसिंह सिंघी (मार्च सन् १९३२) ।
बा० भोलानाथ मुख्तार दरखशां (इटावा ८-२-१९३१) ।
बा० भोलानाथ मुख्तार दरखशाँ (गोहाना, १५-१०-१९३४) ।
बा० लालचन्द्र एडवोकेट (हस्तिनापुर १०-११-१९३७) ।
बा० „ „ (परिषद अधिवेशन सतना)
बैरिष्टर चम्पतराय जी (लखनऊ, ६-२-१९२२) ।
राजकुमार मोहन बल उपनाम बलदेव सिंह जी
रा० सा० द्वारका प्रसाद (मुजफ़्फ़र नगर १-४-१९११) ।
रा० सा० नेमदास (अम्बाला, २५-५-१९३६) ।
लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक (३० नवम्बर १९०४ बड़ौदा)
श्रीमती एनी बेसेन्ट (मद्रास, दिसम्बर १९०१) ।
श्रीमती लेखवती जैन मुजफ्फर नगर, १०- -(१९३५) ।
बा० साहु जुगमन्दर दास (सहारन पुर, ३०-१२-१९३२)
साहु शान्ति प्रसाद (लखनऊ परिषद अधिवेशन, अप्रेल १९४४)
साहु सलेक चन्द्र (कानपुर, १-४-१९२९)
सेठ ज्वाला प्रसाद जी महेन्द्रगढ़ (देहली; १७-४-१९३२)
सेठ ज्वाला प्रसाद जी महेन्द्रगढ़ (बड़ौत, २७-१२-१९३२)
सेठ पद्मराज (खामगाँव, अप्रेल सन् १९१२)
सेठ माणिक चन्द्र हीराचन्द्र (श्रवण बेल्गोला, २६-३ १९३०)
सेठ लाल चन्द्र सेठी (कलकत्ता, २६-११-१९२०)
सेठ हीराचन्द्र नेमचन्द्र (इन्दौर, ४-४-१९१४)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेठ हुकम चन्द्र जी (१० फरवरी १६१० दि० जैन महासभा अधिवेशन सम्मेद शिखर)

सेठ हुकम चन्द्र जी (पालीताणा, सन् १६१३)

स्वामी राम मिश्र शास्त्री (काशी; सन् १६०५)

ला० बनारसीदास एम. ए. (१६०४ ई०)

रा० रा० वासुदेव गोविन्द आपटे—

———

जैन सामायिक पत्र पत्रिकाएँ

वर्तमान में चालू जैन पत्र पत्रिकाएँ निम्न प्रकार हैं—

अनेकान्त—मासिक; हिन्दी, संपा० पं० जुगलकिशोर जी मुख्तार प्र० वीर सेवा मंदिर; सरसावा; जि० सहारनपुर (यू० पी०); जन्म सन् १६१० ई० वा० मूल्य ४)।

आत्म धर्म—मासिक; हिंदी, संपा० रामजी माणेक चन्द दोशी वकील, प्र० आत्म धर्म कार्यालय मोटा आंकड़िया, काठियावाड़, जन्म १६४५ ई०, वा० मू० ३);—गुजराती संस्करण भी निकलता है।

उत्कर्ष—मासिक; हिंदी, प्र० लमेचू महासभा की ओर से वटेश्वर दयाल बकवेरियाँ; भिंड मंडी, ग्वालियर, पुनः जन्म १६४७ ई०।

खंडेलवाल जैन हितेच्छु—पाक्षिक, हिन्दी; संपा० पं० नाथूलाल व पं० भँवर लाल, प्र० श्री भारत दिग० जैन खंडेलवाल महासभा के लिये, रंगमहल इन्दौर, जन्म १६२० ई०, वा० मू० २)।

जिनवाणी—मासिक, हिंदी, संपा० फूल चंद जैन सारंग, प्र० जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़, जयपुर राज्य जंम १६४२ ई०, वा० मू० ४)।

जैन गजट—साप्ताहिक, हिंदी; संपा० पं० वंशीधर शास्त्री (सोलापुर) प्र० भारत, दि० जैन महासभा के लिये पं० बाबूलाल, नई सड़क, देहली; जंम १८६५ ई०, वा० मूल्य ३।।)।

जैन गजट—मासिक, अंगरेजी, संपा० बा० अजित प्रसाद एम. ए. एल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एस. बी., प्र० आल इण्डिल जैन एसोसियेशन के लिये, अजिताश्रम लखनऊ, जन्म १९०४ ई०, वा० मू० ३)।

जैन जगत—मासिक, हिन्दी, संपा० हीरासव चवड़े, जमनालाल विशारद आदि, प्र० भारत जैन महा मंडल के लिये हीरासाव चवड़े वर्धा, जन्म अप्रेल १९४७ ई०; प्रति अंक मू० ।) ।

जैन प्रचारक—मासिक, हिंदी, प्र० भारत० जैन अनाथ रक्षक सोसाइटी जैन अनाथाश्रम, देहली, जन्म १९०९ ई०; वा० मू० ३)

जैन प्रभात—मासिक, हिंदी, संपा० व प्र० ईश्वर चंद्र जैन एम. ए., न० ४० इमली बाजार, इंदौर, जन्म १९४५ ई०, वा० मू० २)।

जैन प्रभात—मासिक, हिंदी; संपा० पं० मुन्नालाल सा० आ०, प्र० श्री गणेश दिग० जैन संस्कृत विद्यालय सागर, जन्म २५ मई १९४७ ई०, वा० मूल्य ३)।

जैन बोधक—पाक्षिक, हिंदी, संपा० पं० मक्खन लाल व पं० वर्धमान पार्श्वनाथ, प्र० स्व० रावजी सखराम दोशी स्मारक संघ, ७५ पूर्व मंगलवार शोलापुर; जन्म सितम्बर सन् १८८४ ई०, वा मू० ३।।),—इसका मराठी संस्करण भी निकलता है।

जैन महिलादर्श—मासिक, हिंदी, संपा० म० र० ब्र० पंडिता चन्दाबाई आरा जैन बाला देवी; प्र० भारत दिग० जैन महिला परिषद के लिये मूलचंद किसनदास कापड़िया सूरत; जन्म १९२२ ई०; वा० मूल्य ३।)।

जैन मित्र—साप्ताहिक, हिन्दी; संपा० व प्र० मूलचंद किसनदास कापड़िया सूरत, जन्म १८९९ ई०, वा० मूल्य ५), यह श्री दिग० जैन प्रांतिक सभा बम्बई, का मुख पत्र है।

जैन संदेश—साप्ताहिक; हिंदी, संपा० व प्र० बलभद्र जैन, मोती कटरा आगरा, जन्म १९३६ ई०, वा० मू० ४), यह श्री भारत दिग० जैन संघ मथुरा का मुख पत्र है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तरुण जैन संघ बुलेटिन—मासिक, हिंदी; प्र० मंत्री तरुण जैन संघ, कलकत्ता, जन्म १९४६, अमूल्य ।

तेरा पंथी युवक संघ बुलेटिन—मासिक, हिंदी, प्र० मंत्री तेरापंथी युवक संघ लाडनूं, प्रति मू० ।) ।

तारण बंधु—मासिक, हिंदी, संपा० बाबूलाल डेरिया, प्र० राम लाल पांडे इटारसी, जन्म १९३८ ई०, वा० मू० २॥=), अखिल भारत तारणपंथी नव-युवक मंडल का मुख पत्र ।

दिगम्बर जैन—मसिक, हिंदी गुजाराती मिश्रित, संपा व प्र० मूलचंद किसनदास सूरत, जन्म १९०७ ई०, वा० मू० २॥) ।

दी जैन एण्डीक्वेरीदी—षाण्मासिक; अंगरेजी; संपा० डा० ए. न. उपाध्ये प्रो० हीरालाल आदि, प्र० दी सैन्ट्रल जैना ओरिपटल लायब्रेरी आरा, जन्म १९३४ ई०, वा० मू० ४); यह पत्र श्रीजैन सिद्धान्त भास्कर के साथ संयुक्त निकलता है ।

दीजैन होस्टल मैंगजीन—त्रैमासिक, हिन्दी अंगरेजी, प्र० जैन होस्टल अलाहावाद ।

पंडित सूर्योदय—मासिक, हिन्दी, संपा० पं० खूब चन्द, चौपाई बम्बई, प्र० फूलचन्द हीराचंद शाह सोलापुर, जन्म जनवरी १९४७, वा० मू० २),

प्रगति आणि जिन विजय—साप्ताहिक, मराठी व कन्नड, संपा० भूपाल अप्पा जी चौगुले, प्र० भूपाय देवेन्द्रपा चौगुले, ६१६ मठगली बेलगांव, जन्म १९०३; वा० मू० २॥)

महावीर संदेश—पाक्षिक, हिन्दी; संपा० केशरलाल जैन अजमेर, प्र० प्रबंध कारिणी कमेटी श्री दिग० जैन अतिशय क्षेत्र महावीर जी (जयपुर राज्य), जन्म मई १९४७ ई० ।

लोक जीवन—मासिक, हिन्दी, संपा० यशपाय जैन प्र० लोक जीवन कार्यालय ७/३६ दरियागंज देहली, जन्म १९४५, वा० मू० ६) ।

वीर—साप्ताहिक हिन्दी, संपा० बा० कामता प्रसाद व पं० परमेष्ठीदास प्र० वीर कार्यालय, ऋषिभवन फैज बाजार देहली, जन्म १९२५ ई०; वा० मू०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारत दि० जैन परिषद का मुख पत्र है।

वीर लोक शाह—मासिक, हिन्दी, संपा० विजय मोहन जैन, प्र० शिवनाथ मल माहटा जोधपुर, जन्म १९४४ ई०, वा० मू० ३)।

वीर वाणी—पाक्षिक, हिन्दी, संपा० पं० चैनसुखदास न्या० ती०, प्र० भंवर लाल जैन, मनिहारों का रास्ता, जयपुर, जन्म अप्रैल १९४७ ई०; वा० मू० ३)।

वैद्य—मासिक; हिन्दी; संपा० विष्णुकान्त जैन वैद्य, प्र० हरिशंकर जैन वैद्य, मुरादाबाद, जन्म, १९२० ई०, वा० मू० ३)।

मानसी—मासिक, हिन्दी; प्र० वर्द्धमान सहित्य मंदिर लखनऊ, जन्म ई १९४७, वा० मू० १५)।

श्री जैन सत्यप्रकाश—मासिक, गुजराती हिन्दी; संपा० चीमनलाल गोकलदास शाह, प्र० श्री जैन धर्म सत्य प्रकाश समिति, घी काँटा रोड, अहमदावाद, जन्म १९३६ ई०, वा० मू० २)।

श्री जैन सिद्धान्त भास्कर—षाण्मासिक, हिन्दी, सम्पादक बा० कामता प्रसाद पं० के भुजबलि शास्त्री आदि, प्र० जैन सिद्धान्त भवन आरा (बिहार), जन्म १९३३ ई०, वा. मू० ४) (जैन एण्टी क्लोरी सहित)।

श्वेताम्बर जैन—मासिक, हिन्दी, प्र० जवाहरलाल लोढ़ा मोती कटरा आगरा; पुनः प्रकाशित जून १९४७।

सनातन जैन—मासिक, हिन्दी; संपा० अक्षयकुमार जैन, प्र० मंगतराय जैन 'साधु' मुख्तार बुलन्दशहर, जन्म १९२७ ई०; वा० मू० २)।

संगम—मासिक, हिन्दी, संपा० स्वामी कृष्णानन्द व सूरज चन्द्र, प्र० सत्याश्रम वर्धा, जन्म १९४२ ई०, वा० मू० ३)।

सिद्धि—मासिक, हिन्दी, संपा० व प्र० रा० वै० सिद्ध सागर, ललितपुर, जन्म १९३२ ई०।

हितेच्छु—साप्ताहिक, हिंदी, संपा० बा० कैलाशचंद्र जैन, प्र० हितेच्छु कार्यालय, वीरड़ी का रास्ता जयपुर सिटी, जन्म १९४४ ई०; व० मू० ५)।

हिन्दी मार्तण्ड—मासिक, हिन्दी, संपा० मैनावती 'मैना', प्र० विमल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहिंसा कुञ्ज, तोपखाना अलाहवाद; जन्म अप्रेल १६४७ ई०, वा० मू० ३)।

ज्ञान—मासिक, हिंदी, संपा० सागर चंद जैन, प्र० मामन सिंह वैद्य प्रेमी देहली, जन्म मई १६४७ ई०, वा० मू० १)।

उपर्युक्त ३६ पत्रों के अतिरिक्त निम्नलिखित ४३ पत्रों के अस्तित्व का और पता चलता है, किन्तु उनके विषय में जानकारी नहीं है—

आत्मानंद प्रकाश, ओसवाल सुधारक, ओसवाल नवयुवक, कच्छी दशा ओसवाल प्रकाश जैन, जैन जवाहिर, जैन ज्योति, जैन ध्वज, जैन धर्म प्रकाश; जैन पथ प्रदर्शक, जैन प्रवचन, जैन प्रकाश, जैन बन्धु (हिंदी और गुजराती), जैन युग, जैन विकाश, जैन शिक्षण संदेश, जैन संसार (उर्दू), जैन सिद्धांत, जैन हेरल्ड, जैसवाल जैन, जीवन ज्योति, जीवन सुधा, झलक, तरणरवा, तारण पंथ दि० खंडेलवाल जैन हितेच्छु, धर्मरत्न, परिवर्तन, परिचय पत्रिका, बुद्धिसागर, प्रभात, महाराष्ट्रीय जैन (मराठी), रत्नाकर, विवेकाभ्युदय कन्नड, वीर शासन, वीर संदेश, शाँति वैभव, शाँति सिन्धु, शिक्षण पत्रिका, सिद्ध चक्र; समय धर्म, सत्य प्रकाश, अने स्वदेश, स्थानकवासी जैन।

इन उपर्युक्त ८२ पत्र पत्रिकाओं में से संभव है कुछ एक बन्द भी हो गये हों और कई एक ऐसे है जो इसी वर्ष चालू हुए हैं या होने की सूचना है।

जो जैन पत्र पत्रिकायें भूतकाल में अल्पाधिक समय तक चालू रहकर अब बंद हो चुकी है. उनकी सूची निम्न प्रकार है :—

अहिंसा (वनारस), आत्मानन्द, आत्मानन्द जैन पत्रिका; आदर्श, आदर्श जैन, आदर्श जैन चरित्र, आदर्श जैन चरित माला (अम्बाला), आनन्द, उत्कर्ष, ओसवाल, ओसवाल अभ्युदय, कच्छी जैन मित्र, काव्याम्बुधि, कुमार, खडेलवाल जैन, गोग्रास, गोला पूर्व जैन, चन्द्र प्रकाश, चन्द्र सागर, छात्र (मेरठ), जागृति, जाति प्रवोधक (झाँसी), जाति प्रवोधक (आगरा), जिन वाणी (बंगला, कलकत्ता), जिन वाणी (हि०), जिन विजय (कन्नड), जीमालाल प्रकाश, जैन, जैन आदर्श, जैन संघासंसार, जैन एडवोकेट, जैन कुमार (मेरठ), जैन जगत, जैन जागृति, जैन जीवन, तत्त्व प्रकाशक, जैन तत्त्व प्रवेशक, जैन दर्शक, जैन दिवाकर, जैन धर्म प्रकाश, जैन धर्म ज्ञान दीपक; जैन धर्मोदय, जैन नारी हित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ारी, जैन पताका (कलकत्ता), जैन पताका (अहमदाबाद), जैन पत्रिका, जैन प्रकाश; जैन प्रकाशक, जैन प्रदीप (उर्दू-देव वन्द), जैन प्रभात, जैन प्रभाकर (बनारस), जैन प्रभाकर (लाहौर), जैन प्रभादर्श, जैन प्रबोध, जैन प्रभाव, जैन बन्धु (हिंदी), जैन बंधु (मराठी); जैन बंधु (कन्नड), जैन भाग्योदय, जैन भास्कर, जैन मार्तण्ड (मराठी) जैन मार्तण्ड (हिंदी), जैन मुनि, जैन युवक, जैन रत्नमाला, जैन रिव्यु जैन वर्तमान, जैन वारविलास (मराठी), जैन विजय, जैन विजय रतंग, जैन विद्या, जैन विद्या दानोपदेश प्रकाश (मराठी), जैन विवेक प्रकाश, (श्वेताम्वर- भ्युदय), जैन शासन, जैन श्वेताम्वर कान्फ्रेन्स हेरल्ड, जैन समाचार (दो), जैन समाज, जैन समाज सुधारक (मद्रास , जैन समालोचक, जैन साहित्य संशोधक जैन सिद्धान्त, जैन सुधारक, जैन सुधारस, जैन हितेच्छु (दो), जैन हितैषी, जैन हित उपदेशक (उर्दू), जैन ज्ञान प्रकाश; जैनी (देहली), जैनोदय, जैसवाल जैन, तारणपंथ, तरुण जैन, दशा श्रीमाली हितेच्छु, देश हितैषी, देशभक्त, धर्मादिवा कर, धर्मध्वज, धर्माभ्युदय, नारी हितकारी, नुक्ता, पद्मावती पुरवाल, पद्मावती संदेश, प्यारी पत्रिकाँ, परवार बन्धु, परवार हितैषी, प्रगति (मराठी), प्रजा वंधु, प्रभात, प्रभावना, प्रवचन वचनामृत, पल्लीवाल जैन; पुण्य भूमि, पोल पत्रिका, बुद्धि प्रभा; भारत भानु (पूना), भारतभानु (सिरोही), भारत हितैषी, महिला भूषण, मधुकर, मारवाड़ी ओसवाल, मारवाड़ी जैन सुधारक, मुनि, रतलाम टाइम्स, रंगीला, वन्दे, जिनवरम (मराठी), विजय धर्म प्रकाश, विनोद, विविध विचार माला, विश्व बन्धु, वीर वाणी, वीर संदेश, वीशा श्री माली हितेच्छु, श्रावक, श्राविका सुवोध, श्री वर्द्धमान, श्वेताम्वर जैन, श्वेताम्बर स्थानकवसी कान्फ्रेन्स प्रकाश, सत्यवादी, सत्य संदेश, सत्योदय सद्धर्म; सद्धर्म भास्कर, सनातन जैन, समालोचना, स्याद्वाद केशरी, स्याद्वाद सुधा, स्याद्वादी सर्वार्थ सिद्धि (कनड़ी) सर्वोदय, स्त्री सुख दर्पण, सार्वधर्म, सैत वाल जैन; सैतवाल जागृति, हिन्दी जैन, ज्ञान प्रकाश, हिन्दी समाचार, हूमड़ वन्धु, सम्यक्त्वर्धक कच्छी जैन, कच्छी दशा ओसवाल दर्पण, तरुण कच्छ, महावीर (पूना), महावीर (सिरोही), समालोचक ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उर्दू पुस्तकें

अग्रवाल वंसावली—ले० सुमेर चन्द जैन अग्रवाल, प्र० हीरालाल पन्ना लाल जैन देहली, पृ० ४०, व० १९२५।

अटकल पच्चू (ट्रैक्ट हिस्से ५)—ले० व प्र० बा० मामचन्द राय जैनी; देहरादून।

अद्भुत राम चरित्र—ले० पति नैनसुखदास, प्र० ला० होशियार सिंह सुनपत, पृ० ३६, व० १९१५, आ० अव्वल।

अनमोल मोती—ले० शंभूनाथ जैन कांधलवी, प्र० जोतीप्रसाद जैन देव बंद; पृ० ५२, व० १९१२; आ० अव्वल।

अनमोल रत्नों की कुंजी (हिस्सा अव्वल)—ले० बिशंभरदास झंझानवी संपा० अजुध्या प्रसाद जैनी, प्र० जोहरी मल देहली, पृ० ४०, व० १९१७; आ० अव्वल।

अनमोल रत्नों की कुंजी (हिस्सा दोयम)—ले० विशंभरदास झंझानवी, पृ० ६४, व० १९१८।

अनापूर्वी—प्र० संपादक "जैन" देहली; पृ० ३४।

अमोलक ऋषि महाराज की सवाने उमरी—ले० विशंबरदास, प्र० ला० गुर परशाद जैन तोशाम (हिसार), पृ० १४४ व० १९२५, आ० अव्वल।

अहिंसा—प्र० जीवदया विभाग जैन महा मंडल लखनऊ, व० १९१५।

अहिंसा धर्म याने गास्पल आफ़ वर्धमान—ले० महर्षि शिवव्रत लाल वर्मन; प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १४४; व० १९३२।

अहिंसा धर्म पर बुजदिली का इल्जाम—ले० बा० शिव लाल मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १९२८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहिंसा परचार—अर्थात् गोश्तखोरों के ऐतराजात का दन्दां शिकन जवाब ०बाबू परमानंद जैन अ० मा० नन्दलाल, पृ० ७२, आ० अव्वल।

अहिंसा याने तमाम जानवरों से बिरादराना मुहब्बत—प्र० जीव दया भाग; जैन महा मंडल लखनऊ, व० १९१५।

आदाबे रियाज़त याने बाइस परीसह—ले० बा० भोलानाथ दरख़्शाँ, ० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० २४, व० १९२९, आ० अव्वल।

आदीश्वर भगवान श्री रिखबदेव जी महाराज का मुख्तसिर जीवन चरित्र—अनु० गोपी चन्द जैनी 'भानु'; प्र० आत्मानंद जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला पृ० ६६; व० १९१६।

आबदार मोती—ले० शिव बरतलाल, प्र० नन्दकिशोर 'अवधूत' लाहौर, पृ० १८६, व० १९२५, आ० अव्वल।

आईनए अफ़आल दयानन्द (अल्मारूफ़ तर्जुमा दया नंद छल कपट दर्पण)—ले० पं० जीया लाल चौधरी, प्र० जोतिषरत्न पवित्र औषधालय फ़र्रुख़ नगर; पृ० २०८; व० १९२५, आ० अव्वल।

आईनए हमदर्दी—ले० ला० पारसदास, प्र० खुद देहली; पृ० ३३४, व० १९१६, आ० अव्वल।

आरज़ुए खैर बाद (मन्ज़ूम)—(मेरी भावना का तर्जुमा)—ले० बा० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६; व० १९२५।

इत्तहादुल्मुख़ालफ़ीन—ले० चम्पराय जैन बैरिस्टर, पृ० ३६४; व० १९२२ आ० अव्वल।

इन्सानी गिज़ा—प्र० जीवदया विभाग जैन महा मंडल लखनऊ, व० १९१५।

ईश्वर विचार—ले० नत्थन लाल गुड़गांवे वाले; प्र० खुद देहली, पृ० ४८; व० १९२९।

एडरेस—बा० लाल चन्द्र जैन एडवोकेट; रोहतक; सन् १९३१ ई०।

क्या ईश्वर ख़ालिक़ है—(बतर्ज़ लावनी)—ले० बा० जोती परशाद;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ८, व० १९२५।

कर्म जीव बन्धन--लेे० बा० सुल्तान सिंह जैन वकील, प्र० खुद मेरठ, पृ० २६, श्रा० अव्वल।

कलामे पैकां–ले० ला० झुन्नुलाल लाल साहब, प्र० जैनमित्र मंडल देहली, पृ० ८; व० १९२५।

केवल ज्ञान–ले० हुकम चन्द जैनी, प्र० श्री आत्मानंद जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ३८, व० १९१८।

खयालाते लतीफ़ (अमितगति आचार्य के सामायिक पाट का तर्जुमा)—ले० बा० भोलानाथ मुख्तार दरखशां, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० २४, व० १९२८; (मनजूम)

खुलासा मजाहब—ले० बा० सुमेर चंद जैनी, पृ० २४, व० १९२०।

ख़िदमत ते ख़ल्क–ले० रा० ब० पारस दास देहली।

ग्यारह पति हिस्सा अव्वल
ग्यारह पति हिस्सा दोयम
ग्यारह पति हिस्सा सोयम
} ले० शीतलदास जैन बी० एम०, प्र० खुद पानीपत, पृ० ३७६, व० १९२४-१९२५।

ज्ञान गुलशन बहार उर्फ़ आत्म हितकार—ले० फ़कीरचन्द जैन देहली, प्र० खुद पृ० ३०; व० १९२१।

ज्ञान सूरज उदै (दो हिस्से)—ले० बा० सूरजभान वकील; प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ६४, व० १९२५, श्रा० अव्वल।

गाय की फरयाद—प्र० जीव दया विभाग जैन महामंडल लखनऊ; व० १९१५।

गुलज़ारे तखय्युल या रूबाईयात दरखशाँ (मान तुंग कृत भक्तामर स्तोत्र का तरजुमा)–ले० बा० भोलानाथ दरखशाँ, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६; व० १९२५, श्रा० दोयम।

गुलज़ारे रूहानी—संपा० मा० विशम्भरदास, प्र० कपूरचन्द हिसार, पृ० ६४, व० १९२९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुलदस्तए अकीदत—ले० चन्दूलाल जैन 'अख्तर', प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० ९६, व० १९३३।

गुलदस्तए जैन धर्म—ले० विशम्बरदास जैन, प्र० खुद, पृ० ७४; व० १९०५।

गुलदस्तए जैन भजन माला—संक० बा० कस्तूरीलाल जैनी; प्र० जैन भजन क्लब बुढ़ाना, पृ० ३४, व० १९०१।

गौहर बेबहा—ले० महर्षि शिववरतलाल, प्र० जैन संगठन सभा देहली, पृ० १६, व० १९२६, आ० अव्वल।

चिकागो प्रश्नोत्तर—ले० विजयानन्द सूरि; अनु० व प्र० नत्थूराम जीरा (पंजाब); पृ० २५५; व० १९१५।

जल्वए कामिल—ले० योगीन्द्र आचार्य, अनु० भोलानाथ मुख्तार दरखशाँ, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ६६, व० १९२९; आ० अव्वल।

जल्वए मजहब—ले० सुमेरचन्द जैन एकाउन्टेन्ट; प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० २०; व० १९२४, आ० सोयम।

जिनेन्द्र मत दरपन—ले० बा० बनारसीदास एम० ए०; प्र० जैन यंग मेन्स एसोसियेशन इलाहाबाद; पृ० २४।

जैन इतिहास—ले० पंडित प्रभूदयाल जैन तहसीलदार देहलवी; प्र० खुद अम्बाला; पृ० २६६, व० १९०२, आ० अव्वल।

जैन करम फिलासफी—ले० बा० रिखबदास जैन वकील मेरठी; प्र० जैन मित्रमंडल देहली; पृ० ३२; व० १९२४।

जैन कौम की तरक्की का राज—ले० बा० दयाचन्द बी. ए., प्र० ला० ...राम मंगतराम सर्राफ अम्बाला, पृ० १६, व० १९१५।

जैन गुलदस्तए राग हिस्सा अव्वल अल्मारूफ जुगल विलास—ले० मु० जुगलकिशोर जैन 'महु', प्र० खुद बडौत (मेरठ); पृ० ४८, आ० अव्वल।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन तत्व दरपन—ले० स्वामी रतनचन्द्र जी, प्र० लाला नन्नूलाल रामलाल जैनी पटियाला, पृ० ५०८, व० १९१७; आ० अव्वल।

जैन तत्व परकाश—ले० लाला नथूराम; प्र० जैन कुमार सभा जीरा, पृ० ५७, व० १९१९, आ० अव्वल।

जैन दूसरों की नजर में—संक० डी० सी० ओसवाल, प्र० पी० डी० जैन मंत्री श्री महावीर जैन लायबरेरी स्यालकोट; पृ० १२, व० १९१९।

जैन धर्म—ले० महर्षि शिवबरतलाल, प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० १७६, व० १९२८, आ० अव्वल।

जैन धर्म (सी० एस० मेघकुमार के अंग्रेजी लेख का तरजुमा)—अनु० विद्यारतन बी० ए०, प्र० लाला गुरदासचन्द्र जैन; पृ० ३९, व० १९२५, आ० अव्वल।

जैन धर्म अजली—ले० लाला दीवानचंद जैनी, प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० ५६, व० १९२८।

जैन धर्म की कदामत—लेखक दीवानचंद जैनी, प्र० श्री जैन सम्मति मित्रमंडल रावल पिंडी, पृ० २८; व० १९२५, आ० अव्वल।

जैन धर्म की कदामत—लेखक नत्थूराम, प्र० आत्मानंद जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० २८, व० १९१७; आ० अव्वल।

जैन धर्म की अजमत—ले० बा० रिखबदास जैन मेरठी, प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० ३२, व० १९२६।

जैन धर्म दीगर मजहब से क्यों आला है—ले० प्रभुराम खत्री, प्र० जैन सन्मति मित्रमंडल रावल पिंडी, पृ० ३०, व० १९१४, आ० अव्वल।

जैन धम वाले किसकी परस्तिश करते हैं—ले० बा० रिखबदास जैन मेरठी, प्र० जैन मित्रमंडल देहली, व० १९२६, आ० अव्वल।

जैन धर्म वो परमातमा—ले० बा० रिखबदास जैन मेरटी प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० ४८, व० १९२३, आ० दोयम।

जैन ममजहब के ३२ सूत्रों का खुलासा—लेखक ला० सुमेरचन्द जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकाउन्टटेन्ट पटियाला; प्र० खुद, पृ० ९२, व०, १९२७. आ० अव्वल।

जैन मत नास्तिक मत नहीं है और जैन फिलासफा के छः जौहर—(मि० हर्बर्टवारन के अंग्रेजी लेख का तरजुमा)—अनु० चन्दूलाल जैन अख्तर; प्र० प्रेम वर्धिनी जैन सभा नजफ़गढ़, पृ० ३२, व० १९२३, आ० अव्वल।

जैन मत सार या हिन्दु मत इख्तसार—ले० ला० सुमेरचन्द जैन, प्र० खुद० पटियाला, पृ० ३२२, व १९१६, आ० अव्वल।

जैन रतन माला के तीसरे और चौथे रतन—ले० ला० नेमचन्द जैन, प्र० खुद देहली, पृ० १६, व० १९२५।

जैन वृतान्त कल्पुद्रुम—ले० शिवबरतलाल बर्मन एम० ए०, प्र० खुद लाहौर, पृ० ४८।

जैन वैराग्य शतक—अनु० मा० बिहारी लाल बी० ए०, प्र० खुद बुलन्दशहर, पृ० २४, व० १९०३।

जैन साधुओं की बरहनगी (बैरिस्टर चम्पतराय की अंग्रेजी किताब का तरजुमा)—अनु० बा० भोलानाथ मुख्तार; प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० १८, व० १९३१, आ० अव्वल।

जैनियों को नास्तिक कहना भूल है—ले० हंसराज शास्त्री, अनु० हुकमचन्द जैनी, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक सोसाइटी अम्बाला शहर; पृ० ३५; व० १९२४।

जैनी आस्तिक हैं—ले० नत्थूराम, पृ० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला शहर, पृ० ४०, व० १९१५।

जैनी नास्तिक नहीं—ले० डी० सी० ओसवाल, प्र० मन्त्री महावीर जैन लायब्रेरी स्यालकोट, पृ० १६, व० १९१९।

जैनी नास्तिक नहीं हैं इसपर विचार—ले० नत्थूराम जैनी, प्र० खुद जीरा, पृ० ३४।

जैनला—ले० वैरिस्टर चम्पतराय, प्रकाशक हीरालाल पन्ना लाल जैन देहली, मूल्य १)

डूबती नैया—ले० दीवान अज समन्दरी, प्र० जैन सोसाइटी लाहौर,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृ० ३२, व० १९१३, आ० अव्वल।

तड़पदार मोती—ले० शिवबरतलाल वर्मन, प्र० जे० एस० सन्तसिंह एँड सन्स लाहौर, पृ० १७६।

तनदरुस्ती और खुराक—प्र० जीवदया सभा जैन महा मंडल लखनऊ, व० १९१५।

तरदीद गोश्त—प्र० भारत जैन महा मंडल, पृ० ४०, आ० अव्वल।

दयानन्द कुतर्क तिमिर तरनि अलमारूफ गौहर बेबहा—ले० मुनि लब्धि विजय; प्र० लब्भूराम जैनी जीरा (फिरोजपुर), पृ० ११२, व० १९१०, आ० अव्वल।

दयास्वीकार माँस तिरस्कार—ले० बुधमल पाटनी, प्र० भारत धर्म महामंडल लखनऊ, पृ० १०२, व० १९१४।

दिल्लगी का वस्ता अलमारूफ नसीहतों का गुलदस्ता—ले० ला० नत्थूराम जैनी, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला शहर, पृ० २०, व० १९१६, आ० अव्वल।

दुखे हुए दिल की फरियाद—ले० खैरख्वाह कौम, बा० जिनेश्वरदास 'मायल', प्र० श्री जैन उपकारक पुस्तकालय, पृ० ८, व० १९०६, आ० अव्वल।

देव गुरु धर्म का स्वरूप—ले० नत्थूराम जैनी प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ७०, व० १९१८, आ० अव्वल।

धर्म की जड़ सदा हरी—ले० दीवानचन्द ओसवाल, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ३२; व० १९१७, आ० अव्वल।

धर्म वीर श्रीपाल नाटक—प्र० श्री दिगम्बर जैन उपदेशक सोसाइटी देहली, पृ० ७०, व० १९२३, आ० अव्वल।

नशीली चीज़ें और उनके बेजा स्तैमाल के बदनतायज—ले० ला० विहारीलाल, प्र० एस० सी० जैन अमरोहा, पृ० ३२, व० १९१६।

नायाब गौहर—ले० महर्षि शिवबरतलाल वर्मन, प्र० जैन मित्रमंडल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

...हली, पृ० ३२, व०, १६२६, आ० अव्वल।

नेमनाथ जी का ब्याहला (बहर मसनवी)—ले० व प्र० बा० लखपत...र जैनी, कैसरगज मेरठ; पृ० १६।

नौतत यानि जैन फिलासफी—लें० नत्थूराम जैनी, प्र० आत्मानन्द ...न ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ६२, वं० १६२१।

पहला महावरत (अहिंसा)—ले० डी० सी० ओसवाल, प्र० मन्त्री श्री ...हावीर जैन लायब्रेरी स्यालकोट; पृ० १२, व० १६१६।

फरयाद बेवगान—ले० बा० भोलानाथ दरखशाँ बुलन्दशहरी।

फरायज इन्सानी—ले० बा० शिवलाल जैनी मुख्तार, प्र० जैन मित्रमंडल ...ली, पृ० १६, व० १६३०।

फरायज इन्सानी या मनुष्य कर्त्तव्य—लेखक व० प्र० सुमेरचन्द जैन ...डवोकेट अम्बाला, पृ० १११, व० १६२५; आ० अव्वल।

फैसलेजात व तवारीख मुत्तलिक श्री जैन दिगम्बर वाके हस्तिनापुर—...प्र० बा० सुल्तानसिंह जैनी वकील मेरठ, पृ० १६, व० १६०६।

ब्रह्मगुलाल चरित्र—देखिये बैराग कौतुहल नाटक।

ब्रह्मचर्य—ले० बा० रिखबदास जैनी वकील मेरठ, प्र० जैन मित्रमंडल ...ली, पृ० १०, व० १६२४, आ० अव्वल।

बारह मासा श्री नेमीश्वर भगवान व श्रीराजमती—प्र० श्री जैन ...ं भास्कर सभा रावलपिंडी, पृ० २८; व० १६८८, आ० अव्वल।

बाल बोध—ले० डी० सी० ओसवाल; प्र० मन्त्री श्री महावीर जैन ...यब्रेरी स्यालकोट; पृ० १२, व० १६१६।

बीर चारित्र (बतर्ज रामायन राधेश्याम)—ले० हेमराज; प्र० श्वेताम्बर ...नकवासी जैन सभा होशियारपुर; पृ० १२८; व० १६२४; आ० अव्वल।

बीर नामा (मनजूम)—ले० व० प्र० बा० भोलानाथ मुख्तार दरखशां ...लन्दशहर; पृ० ५२; व० १६१२, आ० अव्वल।

बैराग कौतूहल नाटक (हिस्सा अव्वल)—ले० ला० मंगतराय; प्र० मा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिहारीलाल बुलन्दशहरी; पृ० ३०, व० १६०१।

वैराग कौतूहल नाटक (हिस्सा दोयम)--ले० ला० रविचन्द्र; प्र० मा० बिहारी लाल, बुलन्दशहरी पृ० ४०, व० १६०६।

भगवान महावीर और उनका वाज़—ले० बा० शिवलाल मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ३३, व० १६२७।

भगवान महावीर की तालीम और उसका असर—ले० चम्पतराय जैनी बैरिस्टर, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १६४१।

भगवान महावीर के जश्ने वलादत की रूएदाद—प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ४८, व० १६२८।

भगवान महावीर के जीवन की झलक—ले० राय बहादुर जुगमन्दरलाल जज, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ३२, व० १६२५, आ० अव्वल।

भगवान श्री अरिष्ट नेमिनाथ—ले० मानिक चन्द जैन; प्र० श्री जैन समिति मित्र मंडल रावलपिंडी, पृ० ३४, व० १६२८।

भजन पंकज पराग—ले० ला० मुन्शीराम; प्र० ला० रखाराम भावड़े, पृ० ३२, आ० अव्वल।

भविसदत्त तिलका सुन्दरी नाटक—ले० व प्र० बा० न्यामतसिंह जैनी हिसार; पृ० ८८, व० १६१६, आ० अव्वल।

भोज प्रबन्ध नाटक [हिस्सा अव्वल]—ले० व प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्दशहरी; पृ० २२, व० १६०३, आ० अव्वल।

मजमूए दिलपज़ीर—ले० बा० चन्दूलाल जैन अख्तर, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ८, व० १६२५।

मरने से डर क्या—ले० जोतीप्रशाद देवबंद, प्र० खुद, पृ० १६, वर्ष १६२०।

मुशायरा मय रिपोर्ट—प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ३२, व० १६३०।

महारानी रिखब सेना—ले० ला० हुकमचन्द जैन, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ४८, व० १६१७, आ० अव्वल।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मांस अहार हिस्सा अव्वल)—ले० डी० सी० ओसवाल, प्र० मन्त्री महावीर जैन लायब्रेरी स्यालकोट, पृ० १२; व० १६१६।

मांस भक्षण निषेध [हिस्सा दोयम]—ले० बा० नानकचन्द वैरागी, प्र० जैन सभा मालेर कोटला, पृ० ४६, व० १६१३।

मिथ्यात नाशक नाटक [हिस्सा अव्वल]—ले० पं० रिखवदास, प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्दशहरी, पृ० ५०, व० १८६६।

मिथ्यात नाशक नाटक [हिस्सा दोयम]—ले० पं० रिखवदास, प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्दशहरी, पृ० ८४, व० १६००।

मिथ्यात नाशक नाटक [हिस्सा सोयम]—ले० पं० रिखवदास, प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्दशहरी; पृ० ११६, व० १६०१।

मुक्ति—ले० प्रिंस हाफ मून, प्र० डा० परशादी लाल देहली, पृ० ३२।

मुकद्दमा जैन मत समीक्षा—सं० प्र० बा० प्यारेलाल वकील देहली, पृ० ११, व० १६०५।

मुरक्कश्र इबरत—ले० बा० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ४८, व० १६३४।

मूर्त्ति पूजा मंडन—ले० पं० मेहरचन्द, प्र० जैन प्रचारिणी सभा सोनीपत पृ० ८, व० १६०६ आ० दोयम।

मेरी भावना (नज्म)—ले० ला० झुन्नूलाल जौहरी, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ८, व० १६२५ आ० अव्वल।

मेरी भावना—ले० पं० जुगलकिशोर, मुख्तार प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ११, व० १६३६, आ० शशतुम [छठी]।

मोक्ष का रास्ता—ले० मिट्ठनलाल जैन, प्र० खुद देहली, पृ० ४८, व० १६२६।

मोह जाल—ले० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० जैन मित्र मंडल देहली; पृ० ८; व० १६२४, आ० अव्वल।

योगसार मारूफ़ व रम्ज़े म्ज़ हकीकत—ले० योगीन्द्राचार्य, अनु० मा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विहारीलाल, प्र० एस० सी० जैन बुलन्दशहरी, पृ० ३६, व० १६२३, आ० अव्वल।

रहनुमा उर्फ़ जैन धर्म दरपन—ले० बा० रिखबदास बी० ए०, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १९२५।

राम चरित्र—ले० ला० भोलानाथ दरखशां, प्र० मा० विहारीलाल, अमरोहा, पृ० १०४, व० १९०५।

रिसाला सुखकारी—मौसूमा मुद्दआ शादी [न० १]—ले० ला० प्रभूदयाल, प्र० खुद, पृ० १६।

रिसाला सुखकारी—मौसूमा मुद्दआ शादी [न० २]—ले० ला० प्रभूदयाल, प्र० खुद, पृ० २४।

रिसाला सुखकारी—मौसूमा मुद्दआ शादी (न० ३)—ले० ला० प्रभूदयाल, प्र० खुद, पृ० २४।

रिसाला सुखकारी—मौसूमा मुद्दआ शादी [न० ४]—ले० ला० प्रभूदयाल, प्र० खुद; पृ० १६।

रूहानी तरक्की का राज़—ले० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १९३५।

रूहानी तरक्की का राज —ले० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० जौहरी मल जैन सर्राफ देहली, पृ० १६, व० १९३६, आ० दूसरी।

लावनी कर्ता खंडन का फोटू—ले० ला० जोतीप्रशाद; प्र० खुद; पृ० ८, व० १९०४।

लुत्फे रूहानी उर्फ आत्मिक आनन्द—संपा० मा० विशम्भरदास, प्र० ला० गुरप्रशाद जैन तोशाम [हिसार], पृ० ५६, व० १९२३।

वर्ण या जात क्या चीज़ है—ले० बा० रिखबदास वकील, प्र० जैन ट्रैक्ट प्रचारक मंडल कीरतपुर, पृ० १६, व० १९१८, आ० प्रथम।

वीर अकलंक देव—ले० ला० शेरसिंह नाज, प्र० ला० प्यारे लाल देवी सहाय देहली, पृ० ६४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शास्त्रार्थं नजीबाबाद—प्र० मोहकम लाल जैन देहली, पृ० ६४ ।

शाहरा निजात (यानि जैन धर्म के मुतालिक सवालो जवाब)—अनु० चन्दू लाल जैन अख्तर, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ३२, व० १६२४, आ० अव्वल ।

शुमाली हिन्द की जैन डायरेक्टरी—संपा० दीपचन्द जैन, प्र० जैन संसार आफ़िस देहली, पृ० ३०४, व० १६४० ।

सच्चे मज़हब की इब्तदाई बातें—ले० डब्लू० जी० ट्राउट, अनु० पं० भगतराम शर्मा, पृ० २४, व० १६४१ ।

सच्चे मोतियों की लड़ी—ले० श्रीमती पार्वती देवी, संपा० ला० दीवानचन्द, प्र० जीवदया फंड रावलपिंडी, पृ० २४, व० १६२१, आ० दोयम ।

सनातन जैन दर्शन प्रकाश (अलमारूफ नौतत्व पदार्थ)—ले० ला० मोहन लाल वकील; पृ० ५३४; व० १६०२ ।

सप्त व्यसन या हफ्त अयूब—ले० सुमेरचन्द जैन एकाउन्टेंट, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १६२५ ।

स्तुति व प्रार्थना—ले० व० प्र० मुन्शी रामप्रसाद 'राम'; पृ० ८, व० १६२४ ।

स्त्री शिक्षा—ले० व प्र० दयाचन्द्र गोयलीय जयपुर; पृ० ५०, व० १६०६ ।

संकट हरन या मुसद्दसे वीर—ले० दिगम्बर प्रशाद मुख्तार, प्र० जौहरी मल जैन सर्राफ देहली; पृ० १६, आ० दोयम ।

सरगुज़शते कौम (मनज़ूम)—ले० बा० भोलानाथ मुख्तार; प्र० जैन संगठन सभा देहली, पृ० १६, व० १६२५ ।

स्वामी दयानन्द और वेद—ले० स्वामी कर्मानन्द; प्र० दिगम्बर जैन शास्त्रार्थ संघ अम्बाला छावनी; पृ० ४८, व० १६३६, आ० अव्वल ।

सहरे काज़िब—ले० ला० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली पृ० ४०, व० १६२६ ।

सिल्के सद जवाहर[यानि जैन वैराग शतक मनज़ूम]—ले० प्र० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ३२, १६२६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीता जी का बारह मासा—ले० यती नैन सुखदास, अनु० व० प्र० मा० बिहारी लाल बुलन्द शहर, पृ० ३२, व० १८९० ।

सुख कहां—ले० ला० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० मुसद्दीलाल बाबूराम शामली, पृ० ८, व० १९२३ ।

सुख कहाँ—ले० ला० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० जैन मित्र मण्डल देहली, पृ० ८; व० १९२४, आ० अव्वल ।

सुबह सादिक अलमारूफ अनवारे हक़ीक़त—ले० फकीर माइल, प्र० ला० महाबीर प्रशाद डाक वाले देहली, पृ० ४० ।

सूखा हुआ चमन कैसे हरा हो सकता है यानि हम और हमारा फर्ज—ले० नत्थूराम जैनी, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला शहर, पृ० ४०, व० १९२१ ।

हकीकते दुनिया (नज़्म)—लेखक बा० भोलानाथ दरखशां; प्र० जैन मित्र मण्डल देहली, पृ० १६, व० १९२७, आ० अव्वल ।

हकीकत माबूद (नज़्म)—ले० बा० भोलानाथ दरखशां, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १९२८ ।

हनुमान चरित्र (हिस्सा अव्वल)—ले० व प्र० मा० बिहारी लाल बुलन्द-शहरी, पृ० १४८ ।

हनुमान चरित्र (हिस्सा दोयम)—ले० व प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्द-शहरी, पृ० १०२ ।

हनुमान चरित्र (हिस्सा सोयम)—ले० व प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्द-शहरी, पृ० ९२, व० १९०३; आ० अव्वल ।

हमदर्दे मुल्क—ले० दिगम्बर दास जैन, प्र० खुद, पृ० ८०, व० १९२६ ।

हमारा रूहानी रहबर यानि जैन तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का मुख्तसिर जीवन चरित्र—ले० दीवानचन्द ओसवाल, प्र० जैन ट्रैक्ट सोसाइटी लाहौर, पृ० ३२, व० १९१७ ।

हयाते वीर (नज़्म)—ले० दबीरे कौम ला० भोलानाथ मुख्तार,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १९२८।

हयाते रिषभ (नज़्म)—ले० दबीरे कौम ला० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १९३१, आ० अव्वल।

—)o(—

मराठी भाषा की पुस्तकें

अन्य धर्मापेक्षा जैन धर्मतील विशेषता—अनु० श्री आनन्द ऋषि जी, पृ० ३६, व० १९२८।

अमित गति श्रावकाचार— अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ४१५, व० १९१४।

आत्मोन्नतिचां सरल उपाय—ले० आनन्द ऋषि; पृ० ५१, व० १९२७।

उपसका चार—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे; पृ० ६४, व० १९०४।

उपासकाध्ययन (रत्न करडं श्रावका चार)—अनु० नाना रामचन्द्र नाग, पृ० २४, व० १९२२।

कुन्दा कुन्दाचार्यांचे चरित्र—ले० तात्या नेमिनाथ पांगल, पृ० २७, व० १९०६।

क्रिया मंजरी—अनु० कलाप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० १२८, व० १९०८।

गोमट्टसार (कर्म कांड)—अनु० नेमचन्द्र वाल चन्द्र गांधी, पृ० ५२३, व० १९२८।

जैन दर्शन व जैन धर्म—ले० हर्वर्ट वारेन, अनु० आनन्द ऋषि, पृ० ३२, व० १९३८।

जैन धर्मामृत सार (२ भाग)—ले० नेमिचन्द्र सीताराम, पृ० ७६, व० १८२९।

जैन धर्मांचे अहिंसा तत्त्व—अनु० आनन्द ऋषि, पृ० २२ व० १९२९।

जैन धर्मा विषयी अजैन विद्वानाचे अभिप्राय (भाग १)—अनु० आनन्द ऋषि, पृ० ६७; व० १९२८।

जैन धर्मा विषयी अजैन विद्वानाचे अभिप्राय (भाग २)—अनु० आनन्द ऋषि; पृ० ३६; व० १९२८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन धर्मादर्श—ले० रावजी नेमचन्द शहा सोलापुर, पृ० २३२; व० १९१० ।

जैन धर्म शिक्षावली (३ भाग)—ले० नाना राम चन्द्र नाग ।

त्रैवर्णिका चार—अनु० कलप्पा भरमाप्पा निटवे; पृ० ७५६; व० १९१०

द्रव्य संग्रह—अनु० प० पन्नालाल बाकलीवाल, पृ० ८५, व० १९०० ।

दश भक्तिः—अनु० पं० जिनदास; पृ० ३७०, व० १९२१ ।

द्विज वदन चपेट—ले० अज्ञात, पृ० २४ ।

धर्मशर्माभ्युदय—अनु० रा० रा० कृष्णा जी नारायण; पृ० ७३ ।

नन्दीश्वर भक्ति—अनु० पासू गोपाल फड़कुले, पृ० ४२, व० १८६४ ।

पद्म नन्दि पंच विंशातिका—अनु० गांधी बहाल चन्द कस्तूर चन्द, पृ० २५१; व० १८९८ ।

प्रतिष्ठा तिलक—अनु० अज्ञात, पृ० ८११, व० १९२४ ।

प्रश्नोत्तर माणिक्यं माला—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ६४, व० १९०४ ।

पात्र केसरी स्तोत्र—अनु० पं जिनदास शास्त्री; पृ० ८८, व० १९२० ।

प्राचीन दिगम्बर अर्वाचीन श्वेताम्बर—ले० तात्या नेमिनाथ पांगल ।

भाषण—श्रीमती राजुबाई गुंजेटीकर, अध्यक्षा जैन महिला परिषद अधिवेशन सांगली, सन् १९२२ ई० ।

महापुराण—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ३२७०, व० १९१८ ।

मराठी जैन पद्यावली—संग्र० नथमल चान्द मल जी, पृ० १५, व० १९२९ ।

महावीर चरित्र—ले० अज्ञात, पृ० १३७, व० १९३१ ।

माझी भावना—अनु० रेखचन्द तुलजाराम शहा, पृ० १६; व० १९२८ ।

मूल प्रतिक्रमण—अनु० जिनदास शास्त्री, पृ० ४८, व० १८९७ ।

योग प्रदीप—अनु० अज्ञात, पृ० ३४, व० १८९७ ।

रत्न करंड श्रावकाचार—अनु० अज्ञात, पृ० ४६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रक्षा बंधन कथा—ले० मुंशी नाथूराम लमेचू, पृ० २४, व० १९१२।

रयणसार—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ३६, व० १९०७।

लघु अभिषेक—अनु० पासू गोपाल फड़कुले, पृ० ४३, व० १९०५।

व्यंतरांचा आराधने पासून नुकसान—ले० हीराचन्द नेम चन्द दोशी, पृ० २४, व० १९१७।

वैराग्य शतक—अनु० आनन्द ऋषि जी, पृ० ३५, व० १९२७।

श्रावका चार—अनु० बावगौंडा भुज गौंडा पारीख, पृ० ३२८, व० १९४३।

श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र—अनु० जिनदास शास्त्री, पृ० ८८, व० १९२०

सज्जन चित्त वल्लभ—अनु० रा० रा० बालचन्द कस्तूर चंद्र, पृ० १०; व० १८९७।

समाधि शतक—अनु० रावजी नेमचंद शाह, पृ० १२४, व० १९११।

सागर धर्मामृत—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ६२८, व० १९१५।

सागार धर्मामृत—अनु० अज्ञात, पृ० ३१३।

सामायिक सार्थ—अनु० आर. एन. शाह, पृ० ४६, व० १८९,।

सुभाषितावलि: सार्थ—अनु० रा० रा० बालचन्द कस्तूर चन्द, पृ० ९८, व० १८९७।

स्वयंभू स्तोत्र—अनु० पं० जिनदास शास्त्री, पृ० ३१०, व० १९२०।

—०—

गुजराती भाषा की पुस्तकें

अध्यात्म महावीर—ले० गांधी गोकुलदास नानजी, अनु० हरिलाल जीवराज, पृ० ४८; व० १९३२।

अध्यात्मिक विकास क्रम—ले० पं० सुखलाल संघवी; पृ० ८०, व० १९२४।

अनित्य पञ्चाशत—अनु० हरिलाल जीवराज भाई, पृ० ९६, व० १९४७

अमृत वाणी—ले० कानजी स्वामी, पृ० ६८'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अलोचना पाठ सटीक—अनु० भाईलाल कपूरचंद, पृ० २४; व० १९०६।
आत्म ज्योति (भाग १)—ले० श्रीमद्राजचंद्र, पृ० ५२, व० १९३६।
आत्म ज्योति (भाग २)—ले० श्रीमद्राजचन्द्र, पृ० २०८, व० १९३८।
आत्म प्रभा—ले० अज्ञात, पृ० ५२; व० १९३७।
आत्म सिद्धि—ले० श्रीमद्राज चंद्र, पृ० २१३, व० १९१८।
आत्म सिद्धि शास्त्र—ले० श्रीमद्राजचन्द्र, पृ० २५६, व० १९३७।
आनन्दघन देवचन्द्र चौवीसी—ले० आनन्दघन जी, पृ० ६४।
आपणे आपणी स्थितिमा शुँ संतोष राखवो जोइए—संपा० मूलचंद किशनदास, पृ० ४८, व० १९१४।

ईश्वर कर्त्ता खंडन—ले० अज्ञात, पृ० ४८, व० १९१०।

उत्तर हिन्दुस्थान मां जैन धर्म—ले० चीमन लाल जयचन्द शाह; अनु० फूलचन्द हीराचन्द, पृ० ३८७, व० १९३७।

कुन्द कुन्दचार्य चरित्र—अनु० मूल चन्द किशन दास कापड़या; पृ० ५३, व० १९१३।

खोराक अने तन्दरुस्ति—ले० छगन लाल परमा नन्द दास, पृ० ३२, व० १९१३।

ग्रंथ परीक्षण—ले० पं० जुगल किशोर मुख्तार, अनु० दोशी जीवराज गौतम पृ० १२३, व० १९१५।

जैन कौण थई सके—ले० पं० जुगल किशोर मुख्तार, अनु० मूल चन्द किशनदास, पृ० १८; व० १९३२।

जैन गुर्जर कविओ (प्रथम भाग)—ले० मोहन लाला दुलीचन्द देशाई, पृ० ६५६; व० १९२६।

जैन गुर्जर कविओ (द्वितीय भाग)—ले० मोहन लाल दुलीचन्द देशाई, पृ० ७८८, व० १९३१।

जैन दर्शन—ले० मुनि न्यान विजय, पृ० ११७, व० १९१८,
जैन दृष्टिए ब्रह्मचर्य विचार—ले० पं० सुखलाल व पं० बेचर दास, पृ०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृ, व० १९३१ ।

जैन धर्मनी माहिती—ले० हीरा चन्द नेमचन्द; अनु० हर जीवन रामचन्द शाह, पृ० ८६, व० १९११ ।

जैन वस्तीनी वर्तमान दशा—ले० फूलचन्द्र हरिचन्द, पृ० ६८, व० १९२८ ।

जैन साहित्यनी संक्षिप्त इतिहास—ले० मोहन लाल दुलीचन्द देशाई, पृ० १०८०, व० १९३३ ।

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—ले० पं० गोपाल दास बैरया, अनु० हरि लाल जीवन राज; पृ० २२४, व० १९३८ ।

जैन ज्ञान महोदधि—संपा० त्रिभुवन दास, पृ० ५२; व० १९२० ।

जीव विचार—लेखक दोशी नाथा लाल सौभाग्य चन्द्र, पृ० ४८, व० १९१४ ।

तत्वार्थ सूत्र—टी० पं० सुखलाल, पृ० १४४, व० १९३० ।

त्रेपन क्रिया विवरण—ले० मूल चन्द्र किशन दास कापड़िया, पृ० २०, व० १९१९ ।

देव कुल पाटक—ले० विजय धर्म सूरि, पृ० २४, व० १९१५ ।

धर्म प्रबोधिनी—अनु० भाई लाल कपूर चन्द, पृ० ४६, व० १९०९ ।

पंच कल्याणक पाठ—अनु० मूलचन्द किशन दास, ३१; व० १९११ ।

पंचमी महात्म्य—अनु० लाल चंद्र भगवान दास, पृ० ४२, व० १९२० ।

पंचेन्द्रिय संवाद—ले० जीवन लाल किशन दास, पृ० ४८, व० १९११ ।

पर्युषण क्षमापण—ले० कानजी स्वामी; पृ० ४८, व० १९३२ ।

प्रकरण माला—(विविध संग्रह)—पृ० ४३२, व० १९०८ ।

प्रतिष्ठा कल्प—पृ० ४८ ।

प्राकृत व्याकरण—ले० पं० बेचरदास, पृ० ४५३, व० १९२५ ।

प्राचीन दिगम्बर अर्वाचीन श्वेताम्बर—ले० तात्या नेमिनाथ पांगल, पृ० ३६, व० १९११ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पवित्रताने पंथ—ले० मणिलाल नथुभाई दोशी, पृ० १२८, व० १९२७।
बाल बोध जैन धर्म (२ भाग)—अनु० मूल चन्द किशन दास, पृ० २३, व० १९१५।
बुद्ध अने महावीर—अनु० नरसिंह भाई पटेल, पृ० ५८, व० १९२५।
भगवान महावीर—ले० अज्ञात, पृ० १२, व० १९३४।
भट्टारक मीमाँसा—ले० मूलचन्द किशन दास कापड़िया, पृ० ४८, व० १९११।
भद्रबाहु संहिता—अनु० भीमसिंह माणेक, पृ० २२०, व० १९०३।
मनोरमा—अनु० मूल चन्द किशन दास, पृ० १०४, व० १९११।
मुनि दिग्दर्शन—ले० अज्ञात, पृ० १६, व० १९१०।
मोक्ष शास्त्र (तत्त्वार्थ सूत्र)—टी० सेठ राम जी माणेकचन्द दोशी, प्र० जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट सोनगढ़, पृ० ९००; व० १९४७।
राज्य प्रश्न—ले० अज्ञात, पृ० ३८४; व० १९१७।
रूप सुन्दरी—अनु० मूल चन्द किशन दास कापड़िया, पृ० ६६, व० १९१४।
वनस्पति पुरातन महत्त्व—ले० छगनलाल परमानन्द; पृ० ३३।
वैराग्य रत्न माला—ले० अज्ञात, पृ० २४।
श्रावका चार (पद्म नन्दि कृत)—अनु० मगन बहेंन, पृ० ४३, व० १९०७
श्राविका सुबोध—अनु मूलचन्द किशन दास, पृ० १२०, व० १९१४।
श्रीमद्राजचंद्र (२ भाग)—ले० संपा० मनसुख लाल्ल किरत चन्द्र पृ० ८०८; व० १९२५।
श्री महावीर जीवन—ले० सुशील, पृ० १२८, व० १९१४।
विस्तार शील रक्षा—अनु० कुँवर मोती लाल रांका, पृ० ४०; व० १९१६।
शील सुन्दरी रास—ले० शाहगडुसा सेवकदास, संपा० मूलचन्द किसनदास पृ० ३६, व० १९११।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुँ ईश्वर जगत्कर्त्ता छे—अनु० मूलचन्द किसन दास, पृ० १५, व० १२।

सम्यग्ज्ञान दीपिका—अनु० शाह सोमचन्द अमथालाल कलोल, प्र० स्वा- मंदिर सोनगढ़, पृ० १७६, व० १६४७।

समय सार—अनु० कानजी स्वामी, व० १६४६।

समय सार—अनु० हिम्मत लाल जेठा लाल शाह, पृ० ६४०, व० १६४०।

सर्वेन्द्र म कंदली—ले० विमला चार्य, अनु० अज्ञात, पृ० २२, व० १८।

समाधि मरण पत्र—ले० पं० गणेश प्रसाद वर्णी, अनु० गोंगियालाल लाल, पृ० ३३।

साध्वी सुदर्शना नाटक—ले० मोहन लाल मथुरा दास शाह, पृ० ६८, १६३१।

सुबोध पद्य रत्नावली—ले० अनु० अज्ञात पृ० ६४, व० १२१।

सूरीश्वरअनेसम्राट—लेखक विद्याविजय, पृष्ठ ४६७, व० १६१६।

हेम चंद्राचार्य—ले० धूमकेतु, पृ० २३४, व० १६४०।

—०—

बंगला भाषा का जैन साहित्य

अनेकान्त वाद—ले० प्रो० सात कौड़ी मुखर्जी; प्र० विश्वकोष।

आचार्य जिन सेन—ले० शरत्चन्द्र घोषाल एम० ए० बी० एल०। प्र० वासी।

जिनेन्द्र मत दर्पण—अनु० उपेन्द्रनाथ दत्त।

जीव—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य एम० ए० बी० एल०, प्र० जिनवाणी।

जैन इतिहास समिति—अनु० ललित मोहन मुखोपाध्याय।

जैन कथा—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य।

जैन तत्त्वज्ञानओ चारित्र—अनु० उपेन्द्रनाथदत्त, प्र० बंगीय सर्व धर्म काशी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन तत्त्वसार संग्रह—अनु० संपा० ईश्वरचन्द्र शास्त्री।

जैन मिरत्न—ले० प्रो० चिन्ता हरण चक्रवर्ती काव्य तीर्थ, प्र० भारत वर्ष।

जैन दर्शनेआत्मवृत्ति निचय—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० साहित्य संवाद।

जैन दर्शनने कामंवाद—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य प्र० जिनवानी।

जैन दर्शने धर्मओ अधर्म—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

जैन दृष्टिए ईश्वर—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० जिन वानी।

जैन दिगेर तीर्थंकर—ले० अमृतलाल शील, प्र० मानसी ओ मर्म वानी।

जैन दिगेर दैनिक षटकर्म—ले० प्रो० चिन्ता हरण चक्रवर्ती, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

जैन दिगेर षोडश संस्कार—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० विश्ववानी।

जैन धर्म—लै० रामदास सेन, प्र० ऐतिहासिक रहस्य पत्रिका।

जैन धर्म—ले० उपेन्द्रनाथदत्त, प्र० बंगीय सर्व धर्म परिषद काशी।

जैन धर्म—अनु० ०पेन्द्रनाथ दत्त (लो०मा० तिलक के लेख का अनुवाद), प्र० वंगीय सर्व धर्म परिषद काशी।

जैन धर्म—ले० प्रो० अमूल्यचरण, प्र० नव्यभारत।

जैन धर्मेनारीर स्थान—ले० प्रो० सात कौड़ी मुखर्जी, प्र० रूपनन्दा।

जैन धर्मेर वैशिष्टय—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० भा० दिग० जैन परिषद बिजनौर।

जैन न्याय—ले० स्व० हरिहर शास्त्री, प्र० बंगीय साहित्य परिषद।

जैन पद्म पुराण—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती; प्र० बंगबिहार धर्म परिषद।

जैनपुराणे वारार्तिक्रपाचरित्र—ले० स्व० हारिहर शास्त्री

जैन पराणे श्रीकृष्ण—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० जिनवानी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन पुरुष काहिनी—ले० स्व० नगेन्द्रनाथवसु, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

जैन मत—ले० रामदास सेन, प्र० ऐतिहासिक रहस्य पत्रिका।

जैन सम्प्रदाय—ले० संपादक उद्बोधन, प्र० उद्बोधन।

जैन सामायिक पाठ स्तोत्र—अनु० उपेन्द्रनाथ दत्त, प्र० वंगीय सर्व धर्म परिषद काशी।

जैन साहित्यो नाम संख्या—ले० विभूति भूषणदत्त, प्र० बंगीय साहित्य परिषद पत्रिका।

जैन सिद्धान्त दिग्दर्शन—अनु० उपेन्द्रनाथदत्त, प्र० बंगीय सर्व धर्म परिषद काशी।

द्वादशनु प्रेक्षा—ले० शरच्चन्द्र घोशाल, प्र० जिनवानी।

दीपमालिका—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० एजुकेशन गजट।

दीपावली ओ भ्रातृ द्वितीया पर्व—ले० शिवचन्द्र शील; प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

नीति वाक्यामृत—टी० ईश्वरचन्द्र शास्त्री।

परेशनाथ—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती; पं० शिशुसाथी

प्रमाणाथ—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

पार्श्वनाथ चरित्र—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० तत्वबोधिनी।

पुरुषार्थ सिद्धि उपाय—अनु० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० बंग विहार अहिंसा धर्म परिषद।

बौद्ध ओजैन साहित्ये कृष्ण चरित्र—ले० रमेशचन्द्र मजुमदार; प्र० पंच पुष्प पत्रिका।

भगवान पार्श्वनाथ—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० जिनवानी।

भारतीय दर्शन समूहे जैन दर्शनेर स्थान—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० जिनवानी।

महामेघवाहन खारवेल—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य प्र० जिनवानी।

महावीर—ले० मतिलालराय, प्र० युगगुरु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रक्षाबंधन (उपाख्यान)—लें० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० एजुकेशन गजट।

लिच्छवि जाति—

विजय धर्म सूरि—ले० अमूल्य चरण विद्याभूषण, प्र० 'वानी'।

श्रावक दिगेर आचार—अनु० हरिचरण मित्र, प्र० श्रावकोद्धारिणी सभा कलकत्ता।

स्याद्वाद—ले० प्रो० हरिमोहन भट्टाचार्य, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

सार्व धर्म—अनु० उपेन्द्रनाथदत्त, प्र० बंगीय सर्वधर्म परिषद काशी।

हिन्दुओ जैन काल विभाग—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० 'कायस्थ समाज' पत्रिका।

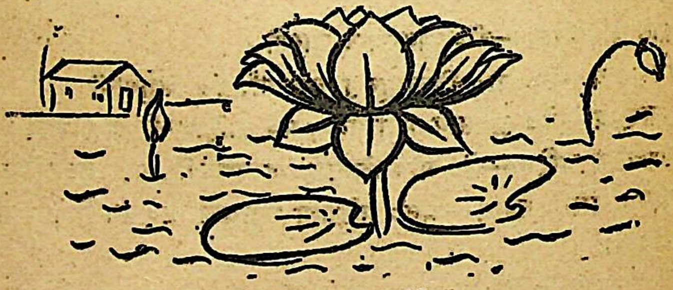

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Jaina Literature in English

Abhidhana Chintamani of Hem chandra—Ed. Ram Das Sen.

Account of the Jains—C. Mackenzie

Account of the Jains in India—Sultan Singh Jaini

Account of the Jain temples on MountAbu—A. Burnes.

A Comparative Study of the Indian sceience of Thought from the Jaina Stand point—Harisatya Bhattacharya.

A complete Digest of Cases with Jain Law—Champat Rai Bar-at-law,

Address at the tenth anniversary of Syadvada Jain Mahavidyalaya—T. K. Laddu,

Adhyatma-Tatwa-aloka—Trad. & Ed. Nyaya Vigaya and Moti Chand Mehta.

A Descriptive Catalogue of Sanskrit Mss. in the Library of the Calcutta Sanskrit College-vol, X Jaina Manuscripts—Harishkesha Sastri and Nilamani Chakravarti.

A Dictionary of Jaina Biography—Umrao Singh Tank.

Against Animal Sacrifice—Krishnagiri B. Rao.

A message of Peace to a World full of unrest—Sri Tulse Ramji.

Akbar and Jainism—Ramaswami Ayengar.

A Jaina Account of the End of the Vaghelas

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

of Gujrat—G. Buhler.
A Lecture on Jainism—1902. Benarsi Das M. A.
A Literary Bibliography of Jaina Omnasticon—Dr. John Klatt.
An Alphabetical list of Jain Mss. in the Oriental Library of the A. S. B.—
Animal Protection—Hari Ram.
Amitgati's Subhasita Samdoha—R. Sehmidt J. Hertel.
An Insight into Jainism—Champat Rai Bar-at-law,
An Insight into Jainism—Rikhar Das Jaini B. A.
An Introduction to Jainism—A. B. Lathe.
An Epitome of Jainism—Puran Chandra Nahar & K. C. Ghosha.
Andhra Karnata Jainism—B. Sheshagiri Rao.
Ancient India—(4 Vols.)—T. L Shah.
Anekartha-Sangraha of Hem Chandra—Ed. Th. Zachariae.
A Pandit's Visit to Gaya (1820)—J. Burgess.
Apbhramsa Literature—Prof. Hira Lal Jain.
A Peep Behind the Veil of Karma—C. R. Jain.
Ardha Magadhi Reader—Benarsi Das M. A.
A Review of the Heart of Jainism—J. L. Jaini Bar-at-law.
Antagada dasao and Anuttara Vavaiya Dasao—Ed. L. D. Barnett.
Appreciation and Reviews—Pub. D. J. Parishad Publishing House, Delhi.
A Short History of the Terapanthi Sect of the Swet order Jains—Chhogmal Choprah.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

A Scientific Interpretation of Christianity—C. R. Jain.

Ashta Pahuda or Eight Presents—Trad. Jagat Prasad.

Atmanu-shasana—Trad. J. L. Jaini.

Atma Dharma— C. R. Jain.

Atma Ramayana—C. R. Jain.

Atma-sidhi—C. R. Jain.

A Treatise on Jain law and Usages—Padma Raj Jain.

Aupatika Sutra—Ed. E. Leumann.

Bhadrabahu and Sravan-bel-gola—Lewis Rice.

Bhadrabahu, Chandra Gupta and Sravan-bel gola—J. F. Fleet.

Bhavis-yatta-kaha—Ed. Trad. C. D. Dalal M. A.

Bright Ones in Jainism—J. L. Jaini.

Bhagwan Mahabir=Kamta Prasad Jain.

Catalago dei manaseritti Gianici di Firenze (Florentine Jain manuscripts)—F. L. Pulle.

Catalogue of English books in the Jain Sidhant Bhavan Arah—Suparswa Das..

Catalogue of Indian Collections in the Museum of Fine Arts Bostan, part IV—'Jaina Paintings and Manuscripts'—Dr. A.K. Coomarswami.

Catalogue of Mss. in the Jain Bhandars, Jaselmere—C. D. Dalal.

Chandra-Prabha-charitra of Virnandin—Ed. M. M. Pt. Durga Prasad.

Contribution of Jainism to Philosophy, History and Progress—V. R. Gandhi.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Cosmology Old and New—Prof. G. R. Jain M. Sc.

Christianity Rediscovered—C. R. Jain.

Das Mahanisitha sutta—Dr. Walthur Sehubring.

Das Kalakacharya Kathanakam (German)—Dr. H. Jacobi.

Der Jainismus (German)—Dr. H. V. Glasenepp.

Desi-nama-mala of Hemchandra—Ed. R. Pischel & G. Buhler.

Die indische secte der Jaina (German)—G. Buhler.

Die sekte der Dschains (Jains)—(German)-O. Feistmantel.

Diet and Health—Chhagan Lal Parmanand Das Nanavati,

Digambara Jain Iconography—James Burgess C. I. E.

Digambara Jains—G. Buhler.

Discourse Divine—C. R. Jain.

Divinity in Jainism—Harisatya Bhattacharya.

Djainisme—Sylavan Levy.

Doctrines of Jainism—Rikhab Das.

Dr. Hermann Jacobi on Jainism—H. Jacobi.

Dravya Sangraha—Ed. & Trad. S. C. Ghsal M. A. B. L.

Essai de Bibliographie Jaina (French)—A. Guerinot.

Essays and Papers of Dr. A. N. Upahhye (9/— Dr. A. N. Upadhye.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Extracts from the Journal of Col. Mackenziea. Pandit—J. Burgess.

Faith, Knowledge and Conduct—C. R. Jain.

First Principles of the Jaina philosophy—H. L. Jhaveri.

Four and Twenty Elders—C. R. Jain.

Fragments from an Indian Student's Diary—J. L. Jaini.

Gems of Islam—C. R. Jain.

Gadya-chintamani of Vadibhasimha—Ed. Trd. S. Kuppuswami Sastri.

Geneological Tree illustrating the Chronology of Jain Religion—

Glimpses of a Hidden Seience—C. R. Jain.

Gommat Sar (Jiva kand)—Ed. & Trad. J. L. Jaini.

Gommat Sar (Karma Kand Pt. I)—Ed. & Trad. J. L. Jaini.

Gommat Sar (Karma Kand Pt. II)—Ed. & Trad. Br. Sital Prasad and Ajit Prasada.

Hathi-gumpha Inseription of Kharvela—Ed. K. P. Jayaswala.

Heritage of the last Arhat—Dr. Charloti Krauze.

Historical Facts about Jainism—Magan Lal shah.

Historical Jainism—Dr. Bool Chand.

History and Literature of Jainism—U. D. Barodia.

History and Religion of the Jains—V. R. Gandhi.

History of Kanarese literaure—E. P. Rice.

How to make your life sublime—B. D Jain.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Humanitarian Outlook—M. K. Devaraj, M. A., B. L.

Immortality and Joy—C. R. Jain.

Inscriptions at Sravan Belgola—Lewis Rice.

Inscriptions of Sravan-Bel-gola—R. Narsimhachariar.

Inscriptions of Udayagiri khandgiri—Pt. Bhagwan Lal Indra ji.

Inscriptions of Udayagiri kaand Jine—Dr. K. P. Jayaswal.

Interpretation of Jaina Ethics—Dr. Charlotte Krauze.

Introduction to True Religion—W. G. Trott.

Indian Psychology of Perception—Dr. J. N. Sinha, Meerut College.

Indian Realism—Dr. J. N. Sinha, Meerut College.

Jain Bibliography No. 1—R. B. Paras Dass.

Jaina Bibliography—B. Chhote Lal Jain.

Jain Conceptions—C. R. Jain.

Jain culture—Pub. D. J. Parisad Publishing House Delhi.

Jaina Gem Dictionary—J. L. Jaini.

Jaina Historical Studies—U. S. Tank.

Jain Confession—C. R. Jain.

Jaina Monuments of India—T. N. Ram Chandran, M. A.

Jaina Literature in English—Jyoti Prasad Jain, M. A., LL. B.

Jaina Iconography—B. C Bhattacharya.

Jaina Iconography—H. D. Sankalia M. A., Ph. D.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Jaina Inscriptions—P. C. Nahar.
Jaina Insariptions at Sravan-Bel-Gola—L. Rice
Jaina Itihas Series no. 1 (History of Gwaliar)—Benarsi Das M. A.
Jain Jatakas—Prof A. C. Vidyabhushan.
Jain Jatakas—L. Benarsi Das M. A.
Jaina Law—J. L Jaini, Bar-at-law, Chief Justice Indore.
Jaina literature in Tamil—Prof A. C. Chakravarti, M. A., I. E. S.
Jaina Logic—C. R. Jain
Jain Penance—C, R. Jain.
Jaina Psychology—C. R. Jain.
Jain Puja—C. R. Jain.
Jaina References in the Budhist literature—K. P. Jain.
Jain References in Dhamma-Pada. K. P. Jain.
Jain Sutras—Ed. & Trad. Dr. Hermann Jacobi.
Jain Universe—
Jain Vairagya shataka—Bihari Lal Jain.
Jainism—C. S. Meghakumar.
Jainism—Champat Rai Barrister.
Jainism as Faith and Religion—Sree Chand Rampuria.
Jainism the Oldest Living Religion—Jyoti Prasad Jain, M. A., LL. B.
Jainism and Karnatak Culture—S. R Sharma.
Jainism—Herbert Warren.
Jainisme—Dr. A Guerinot,
Jainism, 28 Labdhees or Miraculous Powers—Gulal Chand.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Jainism and Dr. H. S. Gour's Hindu Code—J. L. Jaini, Bar-at-law.

Jainism and Dr. H. S. Gour's Hindu Code —C. R Jain, Bar-at-law.

Jainism and World Problems—Dr. Beni Prasad.

Jainism in Indian History—Dr. Bool Chand.

Jainism in Kalingadesa—Dr. Bool Chand.

Jainism or the Early Faith of Asoka—Dr. E. W. Thomas F. R. S.

Jainism Not Atheism—H. Warren.

Jainism in North India—C. J. Shah.

Jainism in Western Garb as a Solution to Life's Great Problems—H. Warren.

Jina-Ratna-kosa—Prof. H. D. Valenkar.

Jasahar-chariu—Ed. Prof. Hira Lal Jain, M. A., D. lit.

Joindu and His Apbhramsa Works—Dr. A. N. Upadhye.

Judgments in Tirtha cases—

Judgment in Paras Nath Hill Civil Suit—

Kathakosa (of Harisena) or the Treasury of Stories—Ed. & Trad. C. H. Tawney.

Kaleidoscope Indian of Wisdom—Charlote Krause.

Kalpa Sutra and Nava Tatwa—J. Stevenson.

Karnatak-kavi-charite—R. Narsinghacharya.

Key of Knowledge—Champat Rai Jain Bar-at-law.

Kirtikaumudi of Someswaradeva—Trad. A. Haack.

Kshatra-chudamani of Vadibhasimha—Ed. Trad Kappuswami Sastri.

Kumar pala Charitra of Hem Chandra—Ed. Shankar

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Panduranga.

Kural of Tiruvuluvar-Fragments—E. Ariel.

La doctrine des etres vivants dans la religion Jaina—A. Guerinat.

Laghu-Bodhamrita-sar—Trad. Moti Chand Banswara.

Lecture on Jainism—Benarsi Dass M. A.

Lecture on Jainism—J. L. Jaini.

Life of Hanuman—Pt. Pirbhu Dayal.

Life of Hem Chandracharya—

Life of Mahavira—M. C. Jain.

Life Story of the Jain Savior Parrwa Nath—Maurice Bloomfield.

Life in Ancient India from the Jain Agamas—Prof Jagdish Chandra Jain M. A., PH. D.

Lifting of the Veil (Pt. I)—C. R. Jain.

Lifting of the Veil Pt. II—C. R. Jain.

Linganusasana of Hem Chandra—Ed. R. O. Franke.

List of Sanskrit, Jain and Hindi Mss.—Pub. Govt. Press, Allahabad.

Logic for Boys and Girls—C. R. Jain.

Lord Arishta-Nemi—Harisatya Bhatatcharya.

Lord Mahavira—H. Bhattacharya.

Lord Mahavira—Dr. Bool chand.

Lord Mahavira and some other Teachers of his time—K. P. Jain.

Lord Parswa—H. Bhattacharya.

Lord Rishabha Deva—Champat Rai Jain.

Mahavira, His Life and Teachings—Dr. Bimal Charan Law.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Marriage in Jain Literature—
Mediaeval Jainism—Dr B. A. Saletore.
Mithyatwa Khandan—Prem Chand.
Modern Jainism—Mrs. S Stevenson.

Mount Abu and the Jain Temples of Dailwara—J. U. Yagnik.

My Thoughts—Ratan Lal Jain.
Mantrashastra and Jainism—Dr. A. S. Altekar.
Mind and Its Mystry—Sri Kaluram ji.

Naya Kumar Chariu—Ed. Prof. Hira Lal Jain.
Neelkesi—Ed. & Trad. Prof A. Chakravarti M. A.
Nijatma-sudhi-Bhavana—Trad. B. C. Manika Lal.
Niyama-sara—Ed. & Trad. Uggar sain Jain M. A., LL. B.

Note and Jaina Mythology—J. Burgess.
Notes on the Sthanakavasis—Seeker.
Nyaya, the Science of Thought—C. R. Jain.

Omniscience—C. R. Jain.

On the Authenticity of the Jaina Tradition—G. Buhler.

On the literature of the Swetambaras of Gujerat—J. Hertle.

Outlines of Jainism—J. L. Jaini.

Pacifism and Jainism—Pt. Sukhlal Sanghavi.
Paiyalacchi-nama-mala of Dhanpala—Ed. G. Buhler.
Pampa Ramayana—Ed. Lewis Rice.
Panchastikaya-sara—Ed. & Trad. Prof A. Charavarti M. A.

Paresnath Piggary Case Judgment of Bengal High Court, 1893.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Pariksha mukham—Ed. & Trad Dr. S. C. Vidyabhushan (Bib Ind.)

Parmatma-Prakasha of Jogindu—Trad. L. Rikhab Das B. A.

Pilgrimage to Parasnath by C. Mackenzies Pandit (1820)—J, Burgess.

Practical Dharma—C. R. Jain.

Pramana-naya-tatwaloka-alamkara—

Prehistoric Jaina Paintings—Jyoti Prasad Jain M. A., LL. B.

Political Thought in Pre-Muslim India—Jyoti Prasad Jain.

Presidential Address—(1924) of Dr. Ganga Nath Jha M. M.

Presidential Address—(1927) of Dr. B. L. Atreya.

Principles of Jainism—Br. Sital Prasad.

Proceedings of the 2525th Mahabir Jayanti celebrations by Jain Mitra Mandal, Delhi.

Pure Thoughts or Samayika Patha—Trad. B. Ajit Prasad M. A., LL. B.

Purushartha-sidhiupaya—Trad. Ajita Prasada M. A., LL. B.

Quelques Collections de livers Jainas—A. Guerinot.

Ratnakaranda-sravakachar—Trad. Champat Rai Jain.

Reminisciences of Vijaya Dharma Suri—Vijaya Indra Suri.

Repertoire at Ehigraphic Jaina—Guerinot.

Rishabhadeva, the Founder of Jainism—C. R. Jain.

Religion-Its Universal Necessity—Sri Tulsiram ji.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Sabda-mani-darpan of kesiraj—Ed. F. Kittel.

Sacred Phifosophy—C. R. Jain.

Samant Bhadra's Date and Dr. Pathak—Pt. Jugal Kishore Mukhtar.

Samayasara—Trad. R. B. Jagmandar Lal Jaini Bar. at-law.

Samayika or the Way to Equanimity—B. L. Garr.

Sanmati Tarka—Trad. A. B. Athavle and A. S. Gohani M. A.

Sapta-bhangi-Nyaya—L. Kanno Mal M. A.

Sapta-bhangi-tarangini of Vimal Das—Ed. P. B. Anantacharya.

Sanyas Dharma—C. R. Jain.

Satrunjaya Mahatmya—James Burgess.

Samadhi (of saint Charitra Sena)—Trad. Kamta Prasad Jain.

Sayings of Lord Mahavira—K. P. Jain.

Sayings of Vijaya Dharma Suri—Charlotte Krause.

Selections from Atma Dharma of Br. Sital Prasad, C. R. Jain.

Shraman Bhagwan Mahavir—

Six Dravyas of Jain Philosophy—F. R. Lalan.

Sketches of Distinguished Oswal Families—U. S. Tank.

Some Distinguished Jains—U. S. Tank.

Some Historical Jain Kings and Heroes—Kamta Prasad Jain.

Some Notes on Digambara Jain Iconography—J. L. Jain,

Sravan-bel-gola—R. Narsimhachar, M. A.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Sravan-bel-gola—C. S. Mallinath.

Sravan-bel-gola, its Importance—Seth Padma Raj.

Studies in Jainism (Pt I)—Dr. H. Jacobi.

Studies in South Indian Jainism—M. S. Ramaswami Ayengar. and B. Sheshagir Rao.

Syadvada-Manjari—Ed. and trad. Prof. Jagdish Chandra M. A.

South Indian Jainism—M. S. Ramaswami Ayengar M. A.

Sources of Karnatak History-Vol. I—S. Srikantha Sastri.

Sitatnvasal Jaina Care Paintings—L. Ganesh Sharma.

Sources of the History of Karnataka, Pt. I—Sri Kantha Sastry.

Tatwarthadhigama Sutra Ed. & trad. J. L. Jaini.

Tatwarthadhigama Sutra Ed. and trad. J. L. Jaini.

The Address of Dr. Phani Bhushan Adhikari.

The Address of Dr. T. K. Laddu (1914)

The Address of Champat Rai Jain Bar-at-law.

The Address of Dr. R. G, Bhandarkar.

The Change of Heart—C. R. Jain.

The Chicago-Prasnottara—Vijayanand Suri.

The Digambara Saints of India—S. C. Ghosal M. A. B. L.

Teertha Pavapuri—P. C. Nahar.

The Confluence of Opposites C. R. Jain.

The Gospel of Immortality—C. R. Jain.

The Ganita sar-sangraha—Ed. M. Rangacharya M. A.

The Heart of Jainism—Mrs. S. Stevenson.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Va

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

The House-holder's Dharma—C. R. Jain.

The Indian Sect of the Jainas—G. Buhter, trad. J. Burgess.

The Jain Law—C. R. Jain Bar-at-law.

The Jain law of Inheritence and Adoption—J. L. Jaini Bar-at law.

The Jaina Pattavalis—Ed. R. Hocrnle.

The Jain Philosophy—V. R. Gandhi.

The Jaina Philosophy of Non Absolutism—Dr. Satkori Mukerji.

The Jains of India—J. L. Jaini.

The Jain Stupa and other Antiquities of Mathura—Dr. V. A. Smith.

The Jain Sutras (S. B. E.)—Ed. F. Max Muller.

The Jaina System of Education—Dr. D. C. Dass Gupta

The Jain Theory of Karma—C. R. Jain.

The Karma Philosophy—B. F. Karbhari.

The Mystery of Revelation- C. R. Jain,

The Nyayavatar—Ed. S. C. Vidyabhushan.

The Nyaya Karnika—Trad. Mohan Lal Desai.

The Nudity of Jain Saints—C. R. Jain.

The Origin of the Swetambara Sect—Pub. D. J. Parishad, Delhi.

The Place and Importance of Jainism—G. Pertold, Ph. D.

The Prabandha Chintamani—Ed. and trad. C. H. Tawney.

The Practical Path—C. R. Jain.

The Path—Sri Tulsiramji.

The Priority of Jainism over Budhism—Rustamji

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Baror ji Parukh.
The Real Nature of Parmatma—N. S. Agarkar.
The Right Solution—C. R. Jain.
The Self Realization—J. L. Jaini.
The Six Dravyas of Jain Philosohpy—H. Warren.
The Speech of H. H. the Maharaja of Mysore (1925)
The Srawacs or Jains—F. Buchanon Hamilton
The Srawacs or Jains—J. Delmaine.
The Study of Jainism—L. Kanno Mal M. A.
The Way to Nirwan—J. L. Jaini.
The Yoga Philosophy—B. F. Karbhari.
Tracts of Mathew Mckay—Pub Mahavira Publications, Aliganj Etah.
True Way to Liberation—Dr. Talbot.
Uttaradhyayan Sutra —Ed. J. Charpentier.
Uttaradhyayan Sutra and Sutra kritanga (Jain sutras Pt. II)—Ed. H. Jacobi.
Vijaya-dharma Suri—Dr. L. P. Tessitori.
Vir Vibhuti—Trad. A. B. Bhattacharya.
What India Thinks of the Case of Pt. Arjun Lal Sethi.
What is Jainism—Kanno Mal M. A.
What is Jainasm—C. R. Jain.
Where the Shole Pinches.—C. R. Jain.
Whom the Jains Worship—L. Rikhab Das B. A.
World Philosophy of the Jains—Dr. H. Von Glasenapp.
World Problems and Jaina Ethics—Dr. Beni Prasad.
Booklets and tracts of—The Mahavir Publieation Aliganj, Etah.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2. The Jaina Cultural Institute, Banaras.
3. The Terapanthi Swetambar Sthanakvasi Cong. Calcutta etc. etc.

Journals and Magazines—Several papers in the past.

The Jaina Antiquary (Six monthly)—Pub. by the Central Jaina Oriental library, Arrah (Bihar).

The Jaina Gazette (monthly)—Ed. Ajit Prasad M. A. LL. B., pub. from Ajitashram, Lucknow.

The Jaina Hostel Magazine (monthly)—Pub. by the Jain Hostel, Allahabhad.

Besides the above publications, numerous articles, papers and notes on various aspects of Jainism and Jainology have been published in the different research journals, magazines, Proceedings of oriental and historical conferences, Gazetteers, Archaeological survey Reports etc. both in India and abroad by a number of renowned scholars, Indian as well as European. The references to these can be found in the—(1) Essai de Bibliographica Jaina, a very comprehensive work in French. Dr. A. Guerinot Ph. D. It deals with references upto 1905 A. D. The work is, however, out of print at present, and an English edition of the same is earnestly needed.

(2) Jain Bibliography no 1., by R. B. Lala Paras Das of Delhi. It deals with some 1214 works having Jain references and published upto 1930 A. D., but mentions only the page numbers of the references.

(3) Jaina Bibliography by B. Chhote Lal Jain,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Calcutta. It deals with references found in literature published between 1905 and 1925 A. D.

(4) Jinaratanakosa—Ed. by Prof. H. D. Valenkar, and published by the Bhandarkar O. R. Institute, Poona. It is an alphabetical register ot Jain works and authors, and gives an account of most of the available or known Jain Mss.

Since 1925, much standard literature having useful Jaina references, has been published, but unfortunately no Jaina bibliography relating to it has yet been prepared which is an urgent necessity.

Persons interested in the study or research of Jainism or any branch of Jainology, may refer for the respective information and literature to the following:—

1. All India Digambar Jain Parishad Office, Dariba Kalan Delhi
2. Bhartiya Gyan Pitha Banaras.
3. Jain Cultural Research Society, Banaras.
4. The Central Jaina Oriental Library (Jain siddhanta Bhavan), Arrah (Bihar).
5. The Central Jaina Publishing House, Ajitashram, Lucknow.
6. The Jain Mitra Mandal, Dharampura, Delhi.
7. Vir Sewa Mandir., 21 Daryaganj, Delhi, This last being a best reputed Jaina Research Institute, equipped with an adequate library and run by its founder Director Acharya Pt. Jugal Kishore Mukhtar.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिशिष्ठ

१. सार्वजनिक जैन पुस्तकालय, शास्त्रभंडार

वे ग्रन्थागार जिनमें जैन धर्म सम्बन्धी विविध विषयक साहित्य, मुद्रित तथा हस्त लिखित, पर्याप्त मात्रा में संगृहीत है, और जिसका उपयोग सदस्यों एवं स्थानीय व्यक्तियों के अतिरिक्त इतर स्थानों में रहने वाले विद्वान् भी डाक आदि द्वारा कर सकते हैं—

१. ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, बम्बई।

२. ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, झालरापाटन।

३. जैन सिद्धान्त भवन, आरा (विहार)।

४. श्री वर्द्धमान पब्लिक लायब्रेरी, धर्मपुरा देहली।

५. श्री यशोविजय जैन पुस्तकालय, बेलन गंज, आगरा।

६. समन्तभद्र–भारती-भवन, वीरसेवामन्दिर, सरसावा (हाल देहली)।

उपर्युक्त प्रख्यात पुस्तकालयों (जिनमें से प्रथम तीन की मुद्रित ग्रन्थ सूचियें—कैटेलाग-भी प्रकाशित हो चुके हैं) के अतिरिक्त प्रायः प्रत्येक नगर व कस्बे में जहाँ जहाँ जैनियों की वस्ती है, एक न एक छोटा बड़ा जैन पुस्तकालय और पाठनभवन भी मोजूद हैं।

यद्यपि प्रत्येक जैन मन्दिर में एक शास्त्र भंडार अवश्य ही होता है। जिसमें अधिकांशतः हस्तलिखित ग्रन्थ ही रहते हैं, किन्तु जैन हस्तलिखित ग्रन्थों के प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण भंडार निम्नलिखित स्थानों में हैं:——जयपुर, देहली, ईडर, नागपुर मूडविद्री श्रवण वेलगोल, कारंजा, पाटन, जैसल्मेर, सूरत, कोल्हापुर अजमेर इत्यादि।

जैन ग्रन्थों की ज्ञात हस्तलिखित प्रतियों का परिचय नीचे लिखे ग्रन्थों से प्राप्त किया जा सकता है:—(१) जिन रत्न कोष–प्रो० हरिदामोदर वेलङ्कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एम० ए० द्वारा प्रणीत तथा भंडार कर प्राच्य मंदिर पूना द्वारा प्रकाशित (गवर्नमेंट ओरियंटल सीरीज, क्लास सी० न०४)

(२)जैन ग्रन्थ सूची—वीर सेवा मन्दिर, सरसावा द्वारा प्रकाशित।

(३) ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, बम्बई की रिपोर्टें

(४) कर्णाटक कविचरिते—आर० नरसिंहाचार्य कृत, तथा कर्णाटक जैन कवि के नाम से पं० नाथूराम जी प्रेमी द्वारा अनुवादित।

(५) जैन गुर्जर कविओ (२ भाग—श्री एम० डी० देसाई, बम्बई द्वारा प्रणीत)

जैन साहित्य के इतिहास के लिए (१) हिंन्दी जैन साहित्य का इतिहास पं० नाथूराम प्रेमी कृत तथा जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई से प्रकाशित। (२) हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास—बा० कामता प्रसाद जैन द्वारा लिखित और भारतीय ज्ञान पीठ, काशी द्वारा प्रकाशित। (३) कर्णाटक जैन कवि। (४) तामिल भाषा का जैन साहित्य (अंग्रेजी) प्रो० ए० चक्रवर्ती कृत। (५) जैन साहित्यनोइतिहास (गुजराती)—श्री मोहनलाल देसाई कृत।

२. जैन साहित्यिक संस्थाएं

वे संस्थाएं जिनमें या जिनके द्वारा ग्रन्थ निर्माण, टीका, अनुवाद, सम्पादन, प्रकाशन आदि कार्य होते हैं। इनमें से कई एक में जैन साहित्य एवं इतिहास सम्बन्धी खोज शोध अनुसन्धानादि कार्य भी होते हैं। निम्नलिखित ऐसी सर्व ही संस्थाएं प्रायः सार्वजनिक, निस्स्वार्थ एवं सेवाभावी हैं, उनके संचालन में व्यावसायिक दृष्टि नहीं है—

(१) अम्बादास चवरे दिगम्बर जैनग्रन्थमाला, कारंजा।

(२) आगमोदय समिति सीरीज, सूरत।

(३) आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी, अम्बाला शहर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) आचार्य श्री कुंथ सागर ग्रन्थमाला, सोलापुर ।
(५) आचार्य सूर्यसागर ग्रन्थ माला, जयपुर ।
(६) ऋषभ जैन प्रकाशन संस्था, फल्टन ।
(७) कंकुबाई पाठ्य पुस्तक माला ।
(८) कारंजा जैन पब्लिकेशन सोसाइटी, कारंजा ।
(९) चम्पावती जैन ग्रन्थ माला, अम्बाला छावनी ।
(१०) जीवराज दोशी ग्रन्थ माला, सोलापुर ।
(११) जैन आत्मानन्द सभा सीरीज, भावनगर ।
(१२) जैन कल्चरल सोसाइटी, बनारस ।
(१३) जैन धर्म प्रसारक सभा सीरीज, भावनगर ।
(१४) जैन मित्र मंडल, धर्मपुरा देहली ।
(१५) जैन रिसर्च इंस्टीट्यूट, यवत माल ।
(१६) जैन साहित्य सेवा मंडल, सोलापुर ।
(१७) जैन साहित्योद्धारक फंड, अमरावती ।
(१८) जैन स्वाध्याय मन्दिर, सोनगढ़ (काठियावाड़) ।
(१९) जैन सिद्धान्त भवन, आरा ।
(२०) दिगम्बर जैन परिषद पब्लिकेशन हाउस, दरीबाकलां, देहली ।
(२१) देवचन्द लाल भाई पुस्तकोद्धार फंड सीरीज, बम्बई व सूरत ।
(२२) परमश्रुत प्रभावक मंडल (श्रीरायचन्द्र जैन शास्त्र माला), बम्बई ।
(२३) भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था, कलकत्ता (हाल महावीरजी)
(२४) भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ, मथुरा ।
(२५) भारतीय ज्ञान पीठ, दुर्गाकुंड, बनारस ।
(२६) माणिकचन्द्र दिगम्बरजैनग्रंथमालासमिति, हीराबाग बम्बई ४ ।
(२७) मुनि श्री अनन्तकीर्ति-ग्रन्थमाला, बम्बई ।
(२८) यशोविजय जैन ग्रन्थ माला, बनारस व भावनगर ।
(२९) वीरग्रंथमाला, सांगली ।
(३०) वीरसेवामन्दिर, ग्रंथमाला और सन्मति-विद्या-प्रकाशमाला, सर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सावा जि० सहारनपुर (हाल २१ दरियागंज देहली)।

(३१) श्री वर्णी जैन ग्रन्थमाला, बनारस।
(३२) सन्मति ज्ञान प्रचारक जैन समिति, बनारस।
(३३) सरल जैन पाठमाला, जबलपुर।
(३४) सिंघी जैन ग्रन्थ माला, अहमदाबाद व कलकत्ता।
(३५) सेठ फूलचन्द जवरचन्द गोधा चेरिटी फंड, इन्दौर।
(३६) सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस, अजिताश्रम, लखनऊ

३. जैन पुस्तक विक्रेता

जो व्यावसायिक दृष्टि से अपने स्वयं के प्रकाशनों तथा अन्य प्रकाशकों और संस्थाओं के जैन प्रकाशनों को भी विक्रियार्थ अपने यहाँ रखते हैं—

(१) जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, कलकत्ता।
(२) जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई।
(३) जैन साहित्यप्रसारक कार्यालय, बम्बई।
(४) दिगम्बर जैन पुस्तकालय, चन्दावाड़ी, सूरत।
(५) दिगम्बर जैन पुस्तकालय, मुजफ्फर नगर।
(६) वर्धमान साहित्य मन्दिर, लखनऊ।
(७) वीर साहित्य मन्दिर लि०, देहली।
(८) सरस्वती पुस्तक भंडार, हाथी खाना, रतनपोल, अहमदाबाद।
(९) ला० पन्नालाल जैन अग्रवाल, न० ३८७२, चर्खेवालान, गली कन्हैयालाल अत्तार, देहली।

४. वर्तमान के ग्रन्थप्रणेतादि साहित्यसेवी विशिष्ट जैनविद्वान्

पं० जुगलकिशोरजी मुख्तार सरसावा; पं० नाथूरामजी प्रेमी बम्बई, पं० सुखलालजी बनारस; मुनिजिनविजयजी बम्बई; पं० बेचरदासजी अहमदाबाद; डा० ए० एन० उपाध्ये कोल्हापुर; रा० ब०, ए० सी० चक्रवर्ती मद्रास, डा० बनारसीदास लाहौर; डा० हीरालाल जैन मुजफ्फरपुर; पं० गणेशप्रसाद जी वर्णी; महात्मा भगवान दीन जी; बा० कामता प्रसाद जी अलीगंज (एटा);

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं० वंशीधर जी न्यायलंकार इन्दौर; पं० माणिक चन्द्र जी न्यायाचार्य फीरोजाबाद; पं० मक्खनलाल जी न्यायलंकार मुरैना; पं० चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ जयपुर, पं० कैलाशचन्द्र जी शास्त्री बनारस; पं० महेन्द्रकुमार जी न्यायाचार्य बनारस; पं० फूलचन्द जी सिद्धान्त शास्त्री बनारस; पं० लालाराम जी शास्त्री; पं० खूबचन्द्र जी बम्बई; श्री सी० जे० शाह बम्बई; श्री टी० एल० शाह जी अहमदाबाद, श्री एम० एल० देशाई अहमदाबाद; मुनि कल्याण विजयजी, मुनि पुण्यविजय जी; श्रीकानजीस्वामी, मुनि चौथमल जी; मुनि आत्माराम जी; मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, पं० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री सोलापुर, पं० परमेष्ठीदास जी ललितपुर, पं० दरबारीलाल जी न्यायाचार्य पं० पन्नालाल जी साहित्याचार्य सागर; पं० नाथूलाल जी साहित्यसूरि इन्दौर; पं० राजेन्द्रकुमार फीरोजाबाद; पं० अजितकुमार शास्त्री देहली; डा० कुमारी सुभद्रादेवी, पंडिता चन्दाबाई आरा; प्रो० घासीराम जैन ग्वालियर; प्रो० जगदीश चन्द्र जैन बम्बई; ला० अयोध्याप्रसाद जी गोयलीय डालमियानगर; रामजी मानिक चन्द दोशी सोनगढ़; श्री अगरचन्द जी नाहटा बीकानेर; पं० के० भुजवलि शास्त्री मूडबिद्री; पं० उग्गरसेन एम० ए० रोहतक; बा० छोटेलाल जी कलकत्ता; डा० बूलचन्द्र जैन बनारस; पं० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य आरा; पं० परमानन्द शास्त्री देहली श्री हीरासाव चवरे वर्धा; श्री जमनालाल विशारद. श्री दौलतराम मित्र इन्दौर; बा० जयभगवान जी वकील पानीपत; पं० सुमेरचन्द दिवाकर सिवनी; श्री यशपाल जैन देहली; पं० दलसुख मालवणिया बनारस; प्रो० गो० खुशालचन्द जैन बनारस; मुनि चतुरविजय जी; श्रीमती जी० के० जैन सा० भू०, क्षुल्लक सिद्धसागर जी; मुनि कान्तिसागर जी; पं० भंवर लाल न्यायतीर्थ जयपुर; पं० हीरालाल शास्त्री; पं० परमानन्द सा० आ०; पं० लालबहादुर, शास्त्री पं० बलभद्र जैन; पं० पन्नालाल सोनी. पं० सत्यंधर आयुर्वेदाचार्य; एम० एम० महाजन वकील अकोला; बा० नानक चन्द एडवोकेट रोहतक; डा० ज्योतिप्रसाद जैन एम० ए० एल० बी० लखनऊ, पं० जिनदास पार्श्वनाथ फडकुले, शोलापुर; पं० मिलापचन्द कटारिया केकड़ी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. वर्तमानके जैन साहित्यसेवी प्रसिद्ध अजैन विद्वान

प्रो० हरिसत्य भट्टाचार्य; श्रीशरतचन्द्र घोषाल; डा० कालीपद मित्र, डा० सातकौड़ी मुखरजी; प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, डा० भास्कर आनन्द सालेतोर; प्रो० एच० डी० वेलन्कर; डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल, डा० मोतीचन्द्र जी; डा० एच० डी० सांकलिया; डा० कालीदास नाग; डा० डी० सी० दास गुप्ता; डा० जे० एन० सिन्हा; प्रो० रामा स्वामी आयंगर; प्रो० बी० शेशा-गिरिराव; श्री पी० के० गोडे; एम० गोविन्द पै०; डा० शामा शास्त्री, श्री किशनदत्त वाजपेयी डा० वेनीमाधवदास, डा० वी० राघवन; श्रीयुत टी० रामचन्द्रन डा० एच० सी० सेठ. प्रो० शिवेन्द्र नाथ घोषाल; प्रो० सुरमा मित्र; बा० अ० नारायण मोटेश्वर खरे; के माधवकृष्ण शर्मा; प्रो० विघुशेखर भट्टाचार्य; बी० जी० भट्टाचार्य; अमूल्य चरण सेन विद्याभूषण त्रिभूति भूषणदत्त, प्रबोधचन्द्र बागची; अशोककुमार भट्टाचार्य, एम० एन० देशपांडे; श्री कमलाकान्त उपाध्याय; श्री हरनाथ द्विवेदी; श्रीयुत त्रिवेणीप्रसाद, श्री कंठ जी शास्त्री; डा० एस० एन० दास गुप्ता, प्रो० नलिनी विलोचन शर्मा, पं० जगन्नाथ तिवारी, प्रो० एन० वी० शर्मा, डा० सुकुमार रंजनदास, श्रीयुत प्रमोदलाल पाल, डा० एस० सी चटर्जी, इत्यादि ।

नोट—उपर्युक्त जैन तथा अजैन जैन साहित्य-सेवी विद्वानोंकी सूचीसे यह अभिप्राय नहीं है कि मात्र नामाङ्कित विद्वज्जन ही जैन साहित्य सेवा कर रहे हैं और जैन धर्म में अभिरुचि रखते है । उल्लिखित सज्जनों के अतिरिक्त भी अनेक जैन अजैन विद्वान यह कार्य कर रहे हैं । यहां तो केवल उन्हीं विद्वानों का नामोल्लेख कर दिया गया हैं जो इस समय तक पर्याप्त प्रसिद्ध हैं और दृष्टि में सर्वाधिक आये हैं अथवा आ रहे हैं । ऐसे और भी लेखक जो प्रमाद या अज्ञानवश छूट गए हों उनके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं ।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवश्यक निवेदन

समस्त जैन लेखकों, प्रकाशकों एवं साहित्यिक संस्थाओं से निवेदन है कि वे अपने द्वारा लिखित, अनूदित, संपादित, संकलित, मुद्रित, प्रकाशित ग्रन्थों-पुस्तकों के सम्बंध में पूरा विवरण नीचे लिखे पते पर भेजने की कृपा करें। विवरण में निम्नलिखित तथ्य होने चाहियें:—१. पुस्तक का नाम २. मूल लेखक, अनुवादक, टीकाकार, संपादक, संकलनकर्त्ता आदि के नाम–पूरे पते सहित, ३. प्रकाशक का पूरा नाम एवं पता, ४. मुद्रक का नाम एवं पता ५. भाषा, ६. विषय, ७. पृष्ठसंख्या ८. आवृत्ति एवं मुद्रित संख्या, ९. मूल्य १०. विशेष विवरण, यदि कुछ हो । इस पुस्तक के द्वितीय संस्करण को सर्वाङ्गपूर्ण बनाने के लिये यह जानकारी अपेक्षित है । जो महानुभाव अपनी पुस्तकों की एक एक प्रति ही भेज देने की कृपा करेंगे उनके हम अत्यन्त आभारी होंगे और तब उनके लिये अलग से उक्त विवरण भेजने की ज़रूरत नहीं रहेगी ।

निवेदक

पन्नालाल जैन अग्रवाल

२८७२, मोहल्ला चर्खेवालान गली कन्हैया लाल अत्तार (दिल्ली)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुद्धि-पत्र

बिन्दु-विसर्गादि की साधारण तथा सहज-बोध-गम्य अशुद्धियों को छोड़कर छापेकी शेष अशुद्धियों का शुद्धि-पत्र निम्न प्रकार है:—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२	वैशिष्टय	वैशिष्ट्य
३	२	जन साहित्य	जैन साहित्य
४	१	समयापयुक्त	समयोपयुक्त
"	१७	सहस्त्र	सहस्र
५	१८	जैन ग्रन्थ नामावली	जैन ग्रन्थावली
६	७	सूचियें में प्रकाशित	सूचियें प्रकाशित
"	१३	किन्तु महावीर जी	महावीर जी
"	१५	प्रशास्ति	प्रशस्ति
"	१६	तप्यारी	तय्यारी
७	१५	रचियताओं	रचयिताओं
६	१५	अतिलेखकों	प्रति लेखकों
"	२१	अक्षण्ण	अक्षुण्ण
"	२३	तत्तद संस्कृति	तत्तद् संस्कृति
१२	१	विज्ञान	विद्वान्
१३	अन्तिम	किन्तु	जैन
१५	७	स्वातन्त्रय	स्वातन्त्र्य
१७	१३	अपेक्षा-और	अपेक्षा
२२	१३	कत्री	कर्त्री
२३	१७	आवश्यता	आवश्यकता
"	८	तत्तद समाज	तत्तद् समाज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४	१७	सहस्त्राब्द	सहस्राब्द
२५	६	उपलल्ध	उपलब्ध
२६	२	चालर्स	चार्ल्स
,,	१६	विल्फ डका	विल्फ डको
,,	१८	१६ शताब्दी	१६वीं शताब्दी
२७	२३	राजकाय	राजकीय
२८	१२	पूज्यनीय	पूजनीय
२८	१७	जाता जाता था	जाता था
,,	अन्तिम	होने कारण	होने के कारण
२६	१	विनय	अविनय
,,	५	अविष्कृत	आविष्कृत
,,	१२	प्रमाणीकता	प्रामाणिकता
,,	२०-२१	नियतानुसार	नियमानुसार
,,	२५	महाक्षयों	महाशयों
३०	१६	१६५०	१६४७
३१	११	१८५७	१८७५
३२	२५	अंगविशेष	अंगविशेष की
३६	५	जैन समाज	दिगम्बर जन समाज
,,	११	इटाया	इटावा
,,	१२	चतन्य	चैतन्य
३८	७	लेखक के	इन पंक्ति लेखक के
४६	५	रचनाएं संख्या	रचनाएं जितनी संख्या
४७	१८	वर्णीमय	वर्णीत्रय
,,	अन्तिम	अधिष्ठातातृत्य	अधिष्ठातृत्व
४८	१६	व्यवसायिक दोनों	व्यवसायिक अव्यवसायिक दोनों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६	६	सफल	सफल याग
५०	८	रामचन्द्र	रायचन्द्र
५४	२२	प्रगति का बहुत कुछ	प्रगति का सम्बन्ध है उसका बहुत कुछ
"	२२-२३	इसी पुस्तक के अन्त में प्रकाशित स्वतंत्र लेख से	इसी भूमिका के अन्त में (पृष्ठ ६८-७२) दिए हुए तद्विषयक लेखसे,
५५	७	तपा	तथा
५६	१९	संख्याओं	संस्थाओं
५८	२०-२१	सार्वं संस्थाने	सार्वजनिक संस्थाने
५९	११	स्वातन्त्र	स्वातन्त्र्य
६१	२२	जन हितेच्छु	जैनहितेच्छु
६२	२	जन	जैन
६३	१४	सामायिक	सामयिक
६४	११	१३०३	१३००
६५	१४	स्तोत्र स्तुति	(८) स्तोत्र स्तुति
"	२३	शिक्षा	शिक्षा १०३
"	२५	विपय-विभाजन	विषय-विभाजन
६६	२-९	षाठ मासिक	षाण्मासिक
"	४	६६	७६
"	१६	वीर वाणा	वीरवाणी
६७	१५	जिन	इन
"	२३	निर्माण करने के	निर्माण के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६८	१६	दृष्टि में वह उपनिषद्	दृष्टि में उपनिषद्
६९	१२	प्रच्य तत्व	प्रत्न तत्त्व
"	१७	जन धर्म	जैन धर्म
"	२४	दान देना	योग दान देना
७१	४	संस्करणों प्रकाशन	संस्करणों के प्रकाशन
"	५-८	प्रमाणिक-प्रमाणीक	प्रामाणिक
"	६	कभी पूर्ति	कमी पूर्ति
"	११	देहली	सरसावा (देहली)
"	१४	जन महाराष्ट्री	जैन महाराष्ट्री
"	१५	पूर्ववती	पूर्ववर्ती
"	१६	'वलासवई कहा'	'विलासवई कहा'
"	१८	ाथमिक	प्राथमिक
"	फुटनोट	अपलाम	उपनाम
"	"	जेना सेटी क्वोरी	जैन एंटीक्वेरी
७२	८	भेद स भी	भेद से भी
"	१३	नियुंक्तियों	नियुंक्तियाँ
७३	२	कर्तव्य	कर्तृत्व
"	८	गत दशंक	गत दशक
७४	फुटनोट	जो इन्दु के मांगं सार	जोइन्दु के योगसार
७५	६	उद्रम	उद्गम
"	१९	काम चलान से लिए	काम चलाने के लिए
७६	८	चरणों	चारणों
"	१७	भेद पक	भेदपरक
७७	२३	अतएवर्ष भारत व	अतएव भारतवर्ष

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७८	२३	ग्राच्य विक्षों	प्राच्यविदों
७९	१	के अत्यन्त विशद	के साथ अत्यन्त विशद
"	२	वि० मू० उक्त	वि० मू० ने उक्त
"	२२-२३	युक्तयानुशासन	युक्त्यनुशासन
८१	१०	जैनग्रंथ नामावली	जैन ग्रंथावली
८२	२०-२१	हीरावन्दा ओझा	हीराचन्द ओझा
८३	२०	ज्ञान तिथियों	ज्ञात तिथियों
८६	२३	जनसंघ	जैन संघ
८९	१८	प्राप्ति	प्रगति
"	अन्तिम	७-२१ दरियागंज	२१ दरयागंज
९१	१०	लघीस्त्रयम्	लघीयस्त्रयम्
९३	१७	अध्यात्माष्टयाम्	अध्यात्माष्टकम्
९४	१४	पदमानुवाद	पद्यानुवाद
	१५	१९२४	१९१४
९५	७	१९४२	१९२२
	१८	पृ०	पृ० १७
	१९	पृ०	प्रकाशित
९९	२०	छिन्द राडा	छिन्दवाडा
१०१	१३	१९२६।	१९२५;आ० प्रथम
"	१४	—आ० प्रथम	—
१०२	अन्तिम	९१८	१९१८
१०५	११	पृ० १४९	भा० हि०; पृ० १४९
१०६	२३	१८३२	१८३
१०८	२१	१८८९	१८९८
१०९	६	२९	३९
१०९	११	१८३९	१९३९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०९	२०	१८८६	१८९६
११२	१६	कर्म प्रगति	कर्मप्रकृति
„	१६	भाषा;	भाषा प्रा०;
११३	४-६	ले० उग्रादित्याचार्य प्रथम	ले० ब्र० सुन्दरलाल, प्र० स्वयं मुरादाबाद; भा० हि०; पृ० ६६, व० १९३५; आ० प्रथम
„	२१-२३	कल्याण लोभना	कल्याणालोअणा
	„	(कल्याण लोचना)	(कल्याणालोचना)
११४	५	प्रा० र०	सा० र०
„	१७, २०	सर्वधर्माचार्य	शर्ववर्माचार्य
„	२३	प्र० २२३६	पृ० २३६
„	२४	स्वामी काद मल;	स्वामी कानमल
११७	१३	कुन्थु स्वामी	कुप्पुस्वामी
„	१४	सुब्र ह्मन्य	सुब्रह्मण्य
„	„	नेटसमन	नेटसनं
१२४	१६	अक्षात	अज्ञात
१२६	१०	प्र० भा०	प्रा० भा०
१२७	२	२९; व	२९०; व० १९३६, आ० प्र०
१२८	३	पं० सद्बोध रत्नाकर	प्र० सद्बोधरत्नाकर
१२९	६	जिन शतकार	जिनशतकम्
१३२	अन्तिम	भारतेन्दु हरिश्चन्द	हरिश्चन्द्र
१३७	११	१९९६	१९३६
१४८	१३	देवनन्दि (महाकृति)	अभयनन्दि (महावृत्ति)
„	१५	जोगशिक्षा	जोगीरासा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४९	६	णोयकुमार चरिउ	णायकुमारचरिउ
"	८	सं० हिन्दी	प्रा० हिन्दी
"	२१	पृ० २१३	पृ० २१६
१५२	४	जैन संस्कृत संरक्षक	जैन संस्कृति संरक्षक
"	"	भा० हि०	भा० प्रा० हि०
"	८	भा० प्र० हि०	भा० हि०
३५६	१९	२०६	६
१५७	१८	संग्रह	संग्राहक
१६३	२	२१२ वर्ष १९४९	२०८; वर्ष १९४०
१६७	२४	१८४२	१९४२
६६८	१	बा०	ब्र०
१६९	७	१९२८	१९२२
१७०	१८,२१,२४	भा०सं० हि०	भा० सं०
१७३	२२,२३	पन्नालाल, संपा० मनोहरलाल बाकलीवाल	पन्नालाल बाकली वाल; संपा० मनोहरलाल
"	२४	व० ९१४	व० १९१४
१७४	११	पट्टावली समुच्चय	पट्टावलीसमुच्चय
१७६	१७	१९२	१९१२
१८१	२०	पाठ्यय पूजा संग्रह	पाठ्य पूजा संग्रह
"	२६	प्रा०	प्र०
१८५	१५	१९३१	१९३३
१८६	१६	ब्याहला बहु	ब्याहली बहू
१९०	७	बोध प्राभृन्म	बोधप्राभतम्
१९३	अन्तिम	पृ० ८०	पृ० २०
१९४	१५	प्रं०	ग्रं०
१९६	१६	पा०	संपा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६६	२०	१३३	१६४३
२०५	४	१८४०	१६४०
२०६	२१	टीत० ए०	टी० ए०
२०६	२	४६२	४३२
"	अन्तिम	रत्म कवि	रत्न कवि
२१२	६	१८१६	१६१६
"	१६	८०	८
"	२५	१६६६	१६१६
२१८	१५	व० १६०	व० १६०८
२२१	अन्तिम	११०	११७
२२६	१	सिद्धान्त सागदि	सिद्धान्तसारादि
२२७	११	भा० पृ० ३२ हि०	भा० हि०, पृ० ३२
२२८	२	१६१५	१६१५; आ० तृतीय,
२३६	१	गोपाल सहाय	गोपालसाह
२३७	१६	पूज्य पादाचार्य,	पूज्यपादाचार्य, सं० टी० प्रभाचन्द्राचार्य,
"	१७	भाषा सं० ग्रं०	भाषा सं० हि० ग्रं०
२३८	२१	सम्यक् दीपिका	सम्यक् ज्ञानदीपिका
२३६	४	साहित्य पुस्तक	साहित्य प्रसारक
२३६	२०	पृ० २३८	पृ० २१८
२४०	३	व० १६३८	व० १६३६
"	६	पं० दरबारी	पं० दरबारीलाल
२४१	६	सनूना पूजन	सलूना पूजन
२४२	८	संपा०	हि० टी०, संपा०
"	२२	व० १६२६	व० १६४३
"	२५	सूतत	सूरत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४६	१६	सिद्धान्त संग्रह	सिद्धान्त सारादिसंग्रह
२४७	२०	सिद्धान्त सरादि	सिद्धान्तसारादि
२४८	६	नाथूराम	नाथूलाल
„	११	सिर सिर बाल कहा	सिरिसिरि बालकहा
२४६	१३,१५	सुदृष्टि वरंगिणी	सुदृष्टितरंगिणी
२५०	१०	संपा०	संक०
२५१	१, ७	सूक्त मुक्तावली	सूक्तमुक्तावली
„	२२	सोनाहीर	सोनागिर
„	२३	धर्म प्रभावती सभा,	धर्मप्रभावनी सभा
„	„	साभी लेखक	सांभर लेक
२५२	१०	सृष्टि कतृव्य मीमांसा	सृष्टिकर्तृत्वमीमांसा
„	१६	(भाग)	(दो भाग)
२५३	८	व०	व० १६१६
२५४	५	नथूमल	नन्नूमल
„	१५	आदि	आदिपुराण
२५५	१७	व०,	व० १६२१
„	२२	सरल प्रज्ञा पुस्तक माला	प्र० सरल प्रज्ञा पुस्तक माला
२५६	१	तिलोयपण्णुति	तिलोपण्णत्ती
„	२	त्रैविध देव	त्रैविद्यदेव
„	१३	त्रैवणिकाचार	त्रैवर्णिकाचार
„	१८	देक्षेन्द्र प्रसाद	देवेन्द्रप्रसाद
२५७	६	कुढेले	बुढेले
२५८	१४	ग्लेजनेय	ग्लेजनेप
२५६	१७	१०–१६३५	१०-५-१६३५
„	१६	लखनख परिशद	लखनऊ परिषद्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५९	२०	१६२६	१६२१
२६०	३	(पाली तारख)	पाली तारा;
"	१८	खन्देलवाल जन हितेच्छ	खण्डेलवाल जैनहितेच्छु
"	२२,२४	जंम	जन्म
२६१	३	हीरासव चवड़े	हीरासाव चवडे
२६२	१०	जैन एण्डी क्वेरीदी	दी जैन एण्टी क्वेरी
२६२	११	जैना ओरिपटल	जैन ओरियंटल
"	२१	अजमेर	अजमेरा
"	२४	यशपाय	यशपाल
२६३	२	लोकशाह	लौंकाशाह
"	३	माहटा	नाहटा
२६३	१६	एण्टी क्लोरी	एण्टीक्वेरी
"	२६	बीरड़ी	वोरडी
२६४	५	जानकारी	विशेष जानकारी
"	२४	बीमालाल प्रकाश	जीयालाल प्रकाश
"	२५	जैन संघासार	जैनेतिहाससार
"	२६	जैन दर्शक	जैनदर्शन
२६६	६	पति	यति
२६७	१	दन्दां शिकत	दन्दांशिकन
२६९	१३	खल्वए मजहव	खुलासाए मजहव
२७०	अन्तिम	जैन ममजहव	जैन मजहव
२७१	१९	पु०	प्र०
२७३	"	१९८८	१८९८
२७५	अन्तिम	बरम्जे म्ज हकीकत	ब रम्जे हकीकत
२७७	११	नोत तत्व	नो तत्त्व
२७८	२	१८९८	१८९९
२७९	१८	१९२८	१९३८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७९	२०	१६३८	१९२८
„	२२	१८२६	१८९९
२८०	४	भैवर्णिकाचार	त्रैवर्णिकाचार
२८१	१५	व० १८६	व० १८६७
२८२	२५	न्यान विजय	न्यायविजय
२८३	६	जन साहित्यनी	जैन साहित्यनो
२८४	२२	श्री महावीर जीवन	श्री महावीर-जीवन विस्तार
„	२३	विस्तार शीलरक्षा	शीलरक्षा
२८५	१३	व० १२१	व० १९२१
„	१४	४६७	४१७
२८६	६	जैन दर्शनने कार्मवाद	जैन दर्शने कर्मवाद
„	२६	वारार्ति कृपा चरित्र	वर्णित कृष्णचरित्र
२८७	११	द्वादशतुप्रेक्षा	द्वादशानुप्रेक्षा
„	१७	प्रमाणाय	प्रमाण
289	15	Vigaya	Vijaya
290	11	Rikhar Dass	Rikhab Das
„	Last	Swet order	Swetambar
294	9	Kaand jine	Khandgiri
301	16	Ed. and trad. J. L. Jaini	(Bib. Ind. Dr. S. C. (Vidya Bhushan)
302	2	Buhter	Buhler
303	23	Jainasm	Jainism
304	27	1214	1294

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन मित्र मंडल के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

१	श्री भूवलय ग्रन्थ राज सर्व भाषा मयी ग्रन्थ (संसार का आठवां आश्चर्य)	५)
२	नर से नारायण	१)
३	उपदेशसार संग्रह (आचार्य श्री देशभूषण महाराज के उपदेश-)	
	प्रथम भाग	२)
	द्वितीय ,,	२)
	तृतीय ,,	२)
	चतुर्थ ,,	२)
४	ग्रन्थराज भूवलय के पठनीय श्लोक	।)
५	नारी शिक्षादर्श	।।।=)
६	भगवान महावीर का हृदयग्राही तिरंगा चित्र	।)
७	चौदह गुणस्थान चर्चाकोष	१)
८	भगवान महावीर (आचार्य श्री देशभुषण जी)	।)
९	भगवान महावीर (प्रो० सुशील कुमार दिवाकर)	।)
१०	भजन शतक	।)
११	मोतियों की लड़ी—उर्दु में (महावीर जयन्ती पर पढ़ी गई नज्मों का संग्रह)	।।)
१२	श्री भगवान के प्रति श्रद्धांजलियां	=)
13.	What Jainism Stands For (Dr. Hira Lal Jain)	=)
14.	Some Historical Jain Kings and Heroes	१)
15.	Jain Institutions in Delhi. (L. Panna Lal Jain)	।)
16.	Pure Thoughts (सामायिक पाठ)	।)
१७	श्री भूवलयान्तर्गत जय भगवद् गीता	।)
१८	जैनमतसार -उर्दू	।।)

प्राप्ति स्थान

जैन मित्र मंडल, धर्मपुरा, देहली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi